



मुजेव्याहरकरक्यंलाया ॥ हुयासुबैकावखतसखीउन  
 अंमासैफरियादकरी ॥ छो० ॥ ४ ॥ कोपहोयकर  
 तारसखीरीतिरियाजूणवणादीनी ॥ कईतरहकीमा  
 याममताकायाबीचलगादीनी ॥ कैयूंकंदुखधनदौल  
 तकाखाननहींपैरणपावै ॥ कैयूंकंसंतानकादुखड़ापट  
 कपटकशिरमरज्यावै ॥ कैयूंकूरूपकुरूपकादुखड़ादे  
 खदेखमुखपिसतावै ॥ कैयूंकंदुखड़ाहैप्रीतमकाकदेन  
 हँसकरबतलावै ॥ कैयूंकंदुखड़ासासनणदकारहणन  
 पावैहैघरमें ॥ कैयूंकंदुखड़ाहैसासरमेंकैयूंकंदुखड़ाहै  
 पीरमें ॥ मेरेदुखएकछोटाकंथकादियाजिसानादिया  
 देई ॥ छो० ॥ ५ ॥ इसदुनियांमैंमजाबड़ाहैच्यारचीजका  
 हैभारी ॥ अवलभजनहरीकाकरनादूजैपुनकाउपका  
 री॥ तीजैखाणाखूबपदारथखुसीआतमाहोज्यावै॥ चौ  
 थीमोजचतुरनारीघरवोनरकदेनदुखपावै ॥ गोविंदरा  
 मउस्तादमेरेगुणराजीहोकरशिखलाया ॥ छोटेकंथ  
 काख्यालउजीरारसकीरंगतमेंगाया ॥ कहैउजरीोपां  
 चबरसकरसबरकह्यामेरामानपरी ॥ ओरूकाप्रीतम

# नयाबारामासिया

लावणी संग्रह.

संस्कृत तथा हिंदुस्थानी पुस्तकें मिलनेका



दि०—कालकाद्वित्री रोड, रामबाड़ी-मुंबई

हरिप्रसाद भगीरथजी इन्होंने छ० प्रसिद्ध किया.





॥ श्रीः ॥

# नया बारामासिया लक्षणा

संग्रह प्रारम्भः

सकुनीकोबारामासियो ॥ टेर ॥ ॥ सखीसकुन  
बिचारोप्यारोदिलज्यानीकबघरआवसी ॥ लग्यो  
मासअबचैतचतुरचितसेजपियाकीआती ॥ शंकररि  
पुकीत्रासकठिनमोयनितप्रतिआनसताती ॥ रंगकी  
रैनजरासीलागैबेरंगवरसलखाती ॥ दोहा ॥ तड़फत  
बिरहनकामनी, कंथबसैपरदेश ॥ आनसतावेसेजमें,  
तोमोयबैरीमदनहमेश ॥ कहूंजोवनमस्तानी ॥ प्यारो  
॥ १ ॥ लग्योमासबैसाखसखीगरमीसेजीघबराता ॥ ज  
बखोलूंरंगमहलअटारीहवाखानदिलचाता ॥ कोमल  
बदनमदनकाझोलाभोपैसह्यानजाता ॥ बिनप्रीतम  
फीकोलगै, रूपसेजसिणगार ॥ गुलगुलाबऔरअत्तर  
छिक्क्यो, गरमीकाअंतनपार ॥ चीरभीजैअसमानी ॥

॥प्यारो ॥२॥ जेठमासकीधूपरूपकियाचंदवदनसे  
 कारा ॥ किणसंगमाणूरुतजोवनकीघरनहींपीवपि  
 यारा ॥ देखूंसेजफटतहैछतियांचितनहींलगेहमारा॥  
 कहोसखीकैसेवने, मदनमरोडतअंग।विरहनतनकी  
 तपतमिटै, जबरमूंपियाकेसंग ॥ रंगमाणोसुरजानी॥  
 प्यारो ॥३॥ आषाढमासगयेछांडनिरदर्ईरुतवरपाकी  
 आई॥ घनगरजतलरजतसृगनैनीवरजतकामसताई  
 पिवपिवमतकरदुष्टपैयातुझकूंरामदुहाई ॥ दमकत  
 बैरनदामनी, चमकरहीचहुंदेश॥अवधरआवोपीवपि  
 या, मैकरूमदनकीपेस ॥ माणज्यूंतानकवानी॥प्या  
 रो ॥४॥ सावणसजसिणगारनारनितवागांझूलण  
 जावै॥कुमकुमवरणीपिवचितहरणीतरुणीतीजमना  
 वै॥तुमबेदरदीपीवजीवक्यौंविहरनकोतरसावै ॥ चं  
 द्रवदनमृगलोचनी, पिवसंगकरतकिलोल ॥ खटकत  
 तेगसमानकलेजो, सुनसखियनकावोला॥रैनमोयवर  
 सलखानी॥प्यारो ॥५॥ भादवमाससहीनहिंजा  
 बैकामदेवकीतेजी ॥ लियोसोकविलमायआजतकप

तियांलिखनहिंभेजी ॥ करूंचावनहिलगैदावक्यूंभूले  
 कंथमगेजी ॥ पलपलमुशकिलसेंकटै, घडियांबरसस  
 मान ॥ चौमासेकीरैनवन, कोयलकरतहैरान ॥ पि  
 यानहिंप्रीतपिछानी ॥ प्यारो ॥ ६ ॥ मासकुंवारआ  
 सप्रीतमकीकरैनारंगभीनी ॥ जरापडतनहिंचैनप  
 रीनैरतीकंथबसकीनी ॥ जानूंपिवपरतिरियासेंवर्हा  
 जायमहोवतकीनी ॥ दधिसुतनिपजैस्वातिसे, बरपैअ  
 मृतधार ॥ पलकाबायाहोतअमोलक, लीजोकंथविचा  
 र ॥ तकीमतनारविगानी ॥ प्यारो ॥ ७ ॥ कार्तिककेल  
 करैसवकामणहोमदमेंमत्तवारी ॥ धन्यभागलक्ष्मी  
 जीपूजैअपनेपिवसंगप्यारी ॥ आवोकंथमहमेंतमदन  
 तनसरदकरतलाचारी ॥ हेतुलसीमातेस्वरी, तुमरोमेरे  
 ध्यान ॥ दीज्योसुमतीकृपाकर, आवैप्रीतमचतुरसुजा  
 न ॥ मनोरथपूरभवानी ॥ प्यारो ॥ ८ ॥ मंगसरमाससेज  
 विचलागैपिवबिनसरदअत्यंत ॥ कंपैनाजुकगातपरी  
 काबजैवतीसुंदंत ॥ व्यापतकामहरामस्यामक्योवैठे  
 जायनिचंत ॥ मैमदमातीमहलमें, खडीनिहारुकंथा ॥

अरजकरुंधरआवनिरदई,मोयसगुणीराकंथ ॥आन  
 धणअंगलिपटानी ॥ प्यारो ॥ १९ ॥ लग्योमासअवपो  
 सजोशजोवनकोतेजअपार ॥ कोणसुणैबिनमरददई  
 येबुरीसरदकीमार ॥ ठंडीलहरजहरसीलागैमहरकरो  
 भरतार ॥ रजनीराचैचंदसै,मणिसेंबासिकनाग ॥ का  
 मणराचैकंथसै,प्यारेजिनसेअमरसुहाग ॥ आवोमतक  
 रनादानी ॥ प्यारो ॥ १० ॥ माघमासरंगरागकरतस  
 बघरघरहोतउमंग ॥ सजसिणगारनाररितुमाणैलेप्री  
 तमकूंसंग ॥ फरकतनैनसजनघरआसीकरसीसेजार्  
 ग ॥ धणधूमतगजराजज्यूं,होमदमेंमस्तान ॥ करूंआ  
 जमिजमानीमहलविच.देऊंजोवनकोदान ॥ देरमतक  
 रसहलानी ॥ प्यारो ॥ ११ ॥ फागणमासआशप्रभु  
 पुरीअवप्रीतमघरआया ॥ ज्यूंबागांविचदेखकेतकी  
 भवरबदनलिपटाया ॥ रमांफागधनभागहमारासेजां  
 रंगवरसाया ॥ दासप्रल्हादीरामको, सोनीहीरानं  
 द ॥ जोडकलाभरपूरइश्कमैं, गावैअंमरचंद ॥ रा  
 गचात्रकमनमानी ॥ प्यारो ॥ १२ ॥

## बारामासियोप्रारंभः

॥टेर॥ नितमदनसतावैजी जुगभरमोयरैनपियो  
परदेसमें ॥दोहा॥ सबसषियांमिलदुरगापूजैचैतमास  
केमाई ॥ निरणीगोरझुवाराहितसैसुहागभागकेताई  
बिरहसंतावैपिवपरदेसांजतनकरुंइबकाई ॥आंगनफू  
लीसषियांफिरैज्युंफूलीबनबेल ॥ मैदिनकाइंकठिन  
सषीरी, रैनलगैमोयसेल॥कंथघरछैनांमेरो ॥ जुग०॥  
॥ १॥ लग्योमासबैसाखसषीसबकेलकरैपिवसागै ॥  
पाडोसणकाचिरतदेषमेरीदूणीविरहनजागै ॥ अपणे  
दिलसैदेषसषीरीभूखसकलनैलागै ॥ मुजविरहनकुं  
छोडकैपीवगयोपरदेसाचठीमदनकीफौजबदनबिच  
दैवैत्रासहमेस ॥ कहंदुषकिणरेआगै ॥ जुग० ॥ २॥  
जैठमासकश्यपसुतसूरजअदकोतेजदिखावै॥पडैधूप  
कुमलावैरूपसखीयोदुषसह्योनजावै॥आवैपसीनूतन  
रंगभीनूंझीणूचीरसुहावै॥ हवामहलकेबीचमैसूतीपि  
लंगविछाय ॥ सुपनेमैसांजनमिल्यासमोयलीनीकंठ

लगाय ॥ जागमेरोमनपिसतायो ॥ जुग० ॥ ३ ॥  
 आसाडमासबरषारुतबदलीभरभरल्यावैपानी॥गरजै  
 घनआभाविचविजलीचिमकैचउंदिसकानी ॥ सो  
 इगरजमैरहूंअकेलीपासनहींदिलज्यानी ॥ घोरनारी  
 केकारणै, वरसैइंद्रहमेस॥मैबिरहनव्याकुलवरषारुत  
 पियोबसैपरदेस ॥ भईकेकलमखानी ॥ जुग० ॥ ४ ॥  
 सावणसपीतीजसबपैलहरषकरैभोतेरा ॥ चउंदिसघ  
 टागगनमैछाईबरसतनीरघणेरा ॥ तडफूरैननहिंचैन  
 अकेलीरैनदुषीमनमेरा॥चौमासेकीरैनमैमोय लीनी  
 विरहसंताय ॥ परण्योपीवनिरदईछोडकर रह्योदिसा  
 वरछाय ॥ आयनहिलीन्यूबेरो ॥ जुग० ॥ ५ ॥ भादु  
 नीरघणेरोवरसेघटाझुकीनिसकारी॥दादरमोरजोर  
 विरषाकोसोरकरैअतिभारी ॥ आदीरातकूबोलैपपै  
 यामोयव्याकुलकरडारी ॥ रेनिरदईपापीपपैयापीवपी  
 वमतकूक ॥ थोडोथोडोसीलागतहैअवमोयदीनी  
 फूक ॥ कूकपिवपिवकरडारी ॥ जुग० ॥ ६ ॥ करूंआ  
 सआस्योजपीवकीमैजोवनमदछाकी ॥ समदसतावै

सीपसषीरीआसपूरमघवाकी ॥ ऐरुतपरपिवजीपर  
 देसांतनमैकछुयनवाकी ॥ जोवनमोतीओसकापिर  
 तांलगैनबार ॥ प्यारीछोडपरदेसकुमावैदोलतमैधर  
 कार ॥ नारतरसैघरवाकी ॥ जुग० ॥ ७ ॥ कातिकमां  
 यसरदरुतसरसीतनकोमलकुमलाता ॥ बिनामरदरु  
 तशरददेषकरजरदबदनहोज्याता ॥ औरसषीप्रीतम  
 संगहितस्यूपूजैलछिमीमाता ॥ करूंबरतआडोनहिं  
 आवैपिवबिनमुसकलरात ॥ बरतकरूंअसनाननेम  
 स्यूपूजंतुलसीमात ॥ करमकेलिखीबिधाता ॥ जुग०  
 ॥ ८ ॥ मंगसिरमैमोयदेषअकेलीआनसताईदावै ॥ कंपे  
 अंगपीवनहिसंगसबसरदबदनहोजावै ॥ चलैभवनमें  
 पवनअकेलीकुणमोयकंठलगावै ॥ मोयअकेलीछांड  
 कैसखीनितजाडोदुषदेत ॥ जोकोइपिवनेजाकहेसतू  
 अबतोमनमेंचेत ॥ नारघरकागउडावै ॥ जुग० ॥ ९ ॥  
 पोसजोसजाडोभारीबेहोसमोयकरदीनी ॥ कोमल  
 गातप्रानतककंपैयाकायारंगभीनी ॥ तडफैज्यानप्रा  
 नपतिप्रीतमआयषवरनहिलीनी ॥ सरदीसैंतनथरहरै

सजी, सारीरैनतमाम ॥ पिवपरदेसीसेतीजोडी किस  
 बिदलिपीकलाम ॥ काममोयव्याकुलकीनी ॥ जुग०  
 ॥१०॥ माघमासरंगरागकरैसबरुतबसंतदरसाई ॥ व  
 सनजरदकोओसरओरमिलसोवैलोगलुगाई ॥ मेरेमन  
 बीहरषआजभयोपतियांपिवकीआई ॥ बांचतपति  
 यांपीवकीमनमेंभयोउमंग ॥ इवघरआसीकंथसखीरी  
 नितमाणूंगीरंग ॥ बाटुंगीरंगवधाई ॥ जुग० ॥११॥  
 फागणप्रीतमघरांपधान्याजदमेंअदासँवारी ॥ मैंहोरी  
 साजनसैंपेलीलेलेरंगपिचकारी ॥ घूंगटपोलकपोलचू  
 मपिवकरीसेजकीत्यारी ॥ सेजरमीसिणगारसैद्रगनै  
 ननसेभाल ॥ द्वादसमाससंवततेतीसाकथकहैनानू  
 लाल ॥ मिलीप्रीतमसैप्यारी ॥ जुग० ॥ १२ ॥

बारामासियोप्रारंभः ॥

॥ टेर ॥ जोंबनमैंप्यारीबिरहनमतवारीपिवपरदे  
 सैंमें ॥ दोहा ॥ सारदमातातुजेमनाताबरदायकहनु  
 मान ॥ गोरीसुतगणपतनैसुमरूंदेवैबुद्धिओरग्यान ॥



उठैभोरपूजैनिरणीगोरयेसबसषियांधरध्यान ॥ चैत  
 चपेलीषिलरहीसजीगुलैवांसगुलझार ॥ सषीसबले  
 वैपियासंगभार ॥ नारमैधरुंकिसीबिदधीर ॥ नैनाट  
 पकैनीरपीवबिनउठैकलेजेपीर ॥ भीजरहीरंगकीसा  
 री ॥ बिरहन ॥ १॥ लग्योमासवैसाषसषीसबआषाती  
 जमनावै ॥ अपणाअपणापिवसंगप्यारीहंसहंसहुसन  
 लुटावै ॥ मेरापियापरदेससषीरीपलकनींदनहिंआवै ॥  
 पलकनींदनहिंआवैसषीरीपिवबिनपडैनचैन ॥ सहे  
 ल्योसुनोहमारावैन ॥ बैनमैकिनसंगजीबिलमाऊं ॥  
 स्यामहुयामैजायहैलमें पिलंगघालसोज्याऊं ॥ पीव  
 बिनपडगइकारी ॥ बि. ॥ २॥ जेठमहीनोलागियोसजी  
 गरमीसेघबरावे ॥ कश्यपसुतसूरजतपैसमोसूंधूपसही  
 नईजावै ॥ तातीपवनबदनबिचलागैनाजरतीनईभा  
 वै ॥ सषीमैदिनदिनसूकीजाऊं ॥ पडीमैपीवकोध्या  
 नलगाऊं ॥ जीमैपरदेसकीनार ॥ जोबनआणसता  
 ईमुजकूंडबकेकरुंबिचार ॥ तडफरहूंनाजकनारी ॥  
 बिरहन ॥ ३॥ लग्योअसाढवरसाकोगाइरांढद्रजका

रीचढाई ॥ चिमकैजोबीजतनरह्योछीजमनैशिवारि  
 पुआणसताईमेहवरसैअपारसंगनईभरतारमुसकल  
 सैरैनबिताई ॥ मुसकलबीतीरैनसखीरीयोदुखसयोन  
 जावै ॥ पियाविनकुनमोयकंठलगावै ॥ सषीमैकेहरलं  
 कीनारी ॥ इबघरआवोवालमासथेमानोअरजहमा  
 री ॥ नारकरतीलाचारी ॥ विरहन ॥ ४ ॥ सावण  
 सुरंगप्रीतमकेसंगसबसखियांझूलनजावै ॥ तीजांकी  
 भारयेकरैनारमल्लाररागनितगावे ॥ बोलैदादरमोर  
 क्याकरूंजोरदिलसुनकेस्योरपिसतावै ॥ कारीघटा  
 गगनयेछाईगरजैधरणीनाथ ॥ अकेलीरहूंपियोनहिं  
 साथ ॥ रैनसषीमुसकलसैरहावीत ॥ मदनमरोडेबदन  
 कूसंजदवालमआवैचीत ॥ पियानहिंसुदलईह्वारी ॥  
 विरहन ॥ ५ ॥ भादूहैनोलागियोसमोयपिवदीनी  
 छिटकाय ॥ आभोछारह्योगगनमैंसइणदीनीझडील  
 गाय ॥ अरदरातकीबोलपपैयोमुजकूंलईजगाय ॥  
 पिवपिवकरैपपिहरोसमेरेतनमैंभवैदुधार ॥ विलकर  
 ह्रीमैरंगभीनीनार ॥ सषीमेरेकामदेवकोजोर ॥ थांवि

नह्यारावालमासयामुसकलसेहोभोर॥ सेजमोयलागै  
 पारी ॥ बिरहन ॥ ६॥ लग्योमासआस्योजसखीरी  
 जोवनबीत्योजावै॥ समदबीचमेंसपिरहतहैबूंदस्वात  
 कीचावै॥ कामदेवकीअगनपियाबिनअंगमेंनहींसमा  
 वै॥ अगनबृहकीनाडटैसमनेदिनदिनघणीलपावै ॥  
 पियाबिनकुणमेरीतपतमिटायै॥ सषीसबपूजतहैदस  
 रावो ॥ छाडोधनकोलोभपीवथेयेकबरसुरतदिपावो  
 आमज्युं पकरहीनारी ॥ बिरहन ॥ ७ ॥ कार्तिक  
 माससबसपियांमिलकेप्रातसमैउठनाहावै॥ सजसो  
 लासिणगारनारयेअंगमेंअतररमावै॥ लिछमीपूजैहै  
 लमेंसजीमोतियनचोकपुरावै॥ लिछमीपूजैकामनीस  
 येलेप्रीतिमनेसाथ ॥ करैयेपिवसंगप्यारीबात सषीमें  
 किणसंगमाणूरंग॥ केयाचूकहूईमेरीकेपड्योभजनमै  
 भंग॥ स्याममोयक्यूरैविसारी ॥ बिरहन ॥ ८॥ मंग  
 सरमैप्रीतमबिनसजनीमुसकलरैनहोआई ॥ ठंडील  
 हरबदनमैपटकैजाडाआणसताई ॥ भवक्योकामभो  
 गबिनतरसैहैलनमैंकुमलाई॥ पिवबिनतडफूमहलमैं

सजीज्युंमछलीबिनपाणी ॥ नारमैपिवबिनरहूँदिवा  
 नी ॥ सषीमैनितउठकागउडाऊं ॥ मेरेमनमैऐसी  
 आवैपियापाउडकेजाउं ॥ पंखबिनउड्योनजारी ॥ वि  
 रहन ॥ ९ ॥ पोसरहूँबैहोससरदसेपिवबिनकामसतावै  
 ॥ हैविरहनकीमोतरैनमैसेजषाणनेआवै ॥ जाछायो  
 परदेसनिरदईमेरोजीतरसावै ॥ मेरोजीतरसावैसषी  
 रीनिसदिनरहूँउदास ॥ सरदमैदेवैकामतिरास ॥ पास  
 मेरेनहींरह्योदिलज्यानी ॥ योजोवनऐसैढलज्यावैजै  
 सैओसकोपानी ॥ ढल्यांफेरूपिसतारी ॥ १० ॥ मा  
 धमहीनोलग्योसषीसबओडैजरददुसाला ॥ रितुवसं  
 तदरसाईपियाजीघरघरउडैगुलाला ॥ उठैविरहकील  
 हरबदनमैसुनकररागधुमाला ॥ कुंजाज्युंकुरलाऊंस  
 षीमेरेमुषपरजरदीछाई ॥ आजमेरेपिवकीपतियांआ  
 ई ॥ हरषमैगईवचावणनार ॥ विप्रवांचकरयुंकह्योस  
 थारोघरआसीभरतार ॥ जीवमेरोभयोहुँस्यारी ॥ ११ ॥  
 फागनमैपिवघरांपधान्यामिटीसकलदुषदाई ॥ रंगम  
 हलमैजायचावसेफुलडांसेजबिछाई ॥ वचनबोलहं

सखेलपीवजीबातांमांयलगाई ॥ पिवसंगवैठैल्लैलमें  
सपीतनमैपडीसिलाई ॥ पीवमनेसेजामैलिपटाई ॥  
जीमेरेहोगयामनकाचाया ॥ गीगराजसारस्वतब्राह्म  
णद्वादसमासबणाय ॥ पीवसंगरमीपियारी ॥ विरहना ॥

## दसमासियोप्रारंभः

॥ टेर ॥ जिवडोघबरावैबालमतोयमालमनापरपीड  
की ॥ दोहा ॥ पहलोहैनूलागियोसजीइबधणैरैगई  
न्हई ॥ मैं बालकसमझीनहिंतोमेरीचिरचाकरैलुगाई  
॥ नणदकहैकितनादिनबीत्यासाचकहोभोजाई ॥ सा  
थणओरसहेलियांबकबकहंसतीमोय ॥ दोराणीमस  
लोकियोतोतूइबक्योंजीवल्हकोय ॥ चावसैबांटवधाई  
॥ बालम ॥ १ ॥ दूजोहैनूलागियोसजीकुसकैपेटहमा  
रो ॥ सोऊजदनिद्रानहिंआवैअनजललगैपारो ॥ आ  
ठपहरचोसटघडीसमेरोजीवरहैअनसारो ॥ अनसारै  
कायाभईइबकेकरूंउपाय ॥ पूंच्योअंसपेटकेमांईलि  
योक्लेजोछाय ॥ पागईकाचोपारो ॥ बालम ॥ २ ॥

तीजोहैनोलागियोतोजीकछुयेकऊंचोआयो॥हुयोनू  
 रवेनूरपरीकोछिपतोनहींछिपायो॥अरजकरूंक करता  
 रपिंडकैयोकेपापलगायो॥कूणसुणैकिसकूंकहूंझाल  
 उठैभरपूर॥बालमटोपोझैरकोसयोहुयागेरकरदूर॥  
 मेरीसासूकोजायो॥बालम॥३॥चौथैमाससांसके  
 सागैचालैहूकधणेरी॥भान्योहोगयोपेटविधाताया  
 केआफतगेरी॥आठपहरचोसटघड़ीसमेरेमुखकलसां  
 जसवेरी॥कदेकजागूंपड़रहूंपलकलगैनाहिनैन॥कि  
 संकूकहूंदरदकीवतियांनहींविदनमैंचैन॥सुणोसबस  
 षियांमेरी॥बालम॥४॥पांचउंहैनूलागियोसपेडुमें  
 चटकोचालै॥वदामपिस्तादाषष्ठवारीमेवापरचि  
 तचालै॥साथणकरैपराबवालमोसेजामैंदिनघालै॥  
 हायदर्ईकैसीभईविनासरमकीवात॥नेडाघालैवाल  
 मोसमेरोथरहरकंपैगात॥रहीनासोवणहाली॥वाल  
 म॥५॥छठोहैनूलागियोसमेरेमुखपरपड़गीछाया॥  
 नपकेसागैखूनपड़ैमेरीपीलीपड़गीकाया॥किसकूंदे  
 ऊंदोससपीमैंहाथांकामकुमाया॥क्यूंसोऊंसंगपीवके

क्यूँऐसीगतहोय ॥ भोलापणमेंमतलबवणगयोषवर  
 पड़ीनहिंमोय ॥ कन्योसोइचोडेआयो ॥ बालम ॥ ६ ॥  
 लाग्योमाससातउहकीगतपोलसुणाऊंतोय ॥ पुल्लु  
 लपडैघागरोदिनमेंआंगीफाटैदोय ॥ पूरोहोगयोबो  
 जपेटमेंइबऐंकोकेहोय ॥ हायदईकैसीभईदेस्यूंआज  
 सराप ॥ चिंत्यालागीजीवकेसयौकिसविदकटसीपा  
 प ॥ अंदेसोमोयकूंआयो ॥ बालम ॥ ७ ॥ पूरोमास  
 आठऊंलाग्योजदऐसीदुखपाई ॥ नहींमरदकीछांयप  
 डणघूंकरडीसोगनपाई ॥ फेरूंऐसोकामकरूंतो नहिंअ  
 सलकीजाई ॥ पलो नछुऊंमरदकोसाखीश्रीभगवान ॥  
 इतनादिनसमझीनहींसजीइबमेंलियाइमान ॥ करूं  
 तोरामधुहाई ॥ बालम ॥ ८ ॥ नोऊंहैनूंमंजआदिकै  
 सिषरचंद्रमाआयो ॥ पीड़ाभोतपेटमेंचालीजीवघणूडु  
 खपायो ॥ मेरेकूंमालुमनहींतो जीकिसविदबालकजा  
 यो ॥ चेतहुयोघड़ीदोयस्यूंआंखगईजबपुल ॥ नीची  
 होकरदेषणलागी तोरूंकोसोफूल ॥ उठाकरकंठलगा  
 यो ॥ बालम ॥ ९ ॥ दसवैहैनैजलवापूजीतातेजल

सैन्हाई ॥ हलदमिलाकरपीठीमसलीतनपरआइस  
 फाई ॥ गूंदसूठकालाडूपायाफेरूंकामसताई ॥ बाल  
 कनेगोदीलियोपिवसंगसुतीजाय ॥ प्रेमसुषभोजकक  
 हैसमैदेषीजिसाबुणाय ॥ कहीमोययेकलुगाई ॥ बा  
 लम ॥ १० ॥ इतिदसमासियोसंपूर्ण ॥

## चात्रकचटकीलीका बा० प्रा०

श्रीगणेशाय नमः ॥ टेर ॥ क्यूंस्यामविसारीजीचा  
 त्रकचटकीलीधणमतवारियां ॥ दोहा ॥ पैदाकरी  
 शिष्टकूं जिनकाअबललेतीनांव ॥ हेमसुतापतिताके  
 सुतकूंसुमन्यांसारैकांम ॥ सचेगुरुदेवनकूंईवमैंहितसें  
 करूंसलाम ॥ चैतचतरनीसवपियाप्यारीपूजतहैगण  
 गोर ॥ निसदिनसांजकठननितभोर ॥ सखीसवमन  
 मैहरषवधायो ॥ मैतेरीतावेदारपियाहकनाहकजीत  
 रसायो ॥ भईकेचूकहमारीजी ॥ १ ॥ चात्र ॥ लग्यो  
 मासैवसाषबागमैकमलफूलकुमलावै ॥ अधिकधू  
 पकातेजपियामेरोहन्योबागअलसावै ॥ बागवानके



सींचेसेतीकलीकलीखिलजावै ॥ कली कली खिल  
जावैबागमेंसींचेसैफलपावै ॥ पियाजीबिनसींचेपि  
स्तावै ॥ पियाजीमेंदिननसूकीजाऊंवे मातातेरा  
हाथसूमडारूपैसैहंडवाउं॥ डिगीनाकलमतिहारीजी  
॥ २ ॥ चात्र ॥ जेठमासजंगलकोसूकोपीपलसींच  
णजाती।पड़तीधूपधरणिसबतपतीकोमलबदनजला  
ती॥एकपियाकेकारणेसमेंनितउठदेवमनाती ॥ सांझ  
हुयांमोयसेजअटारीसन्मुखआवैखाण॥रैनमोयलागै  
बरससमान ॥ अधिकमेरेबिरहअगनकोजोर ॥ पंखो  
लेऊंहाथकहूंमेंमुसकलसेतीभोर ॥ पियाजीमेरीउम्मर  
बारीजी ॥३॥ चात्र ॥ साड़महीनालग्यानारपरदेसी  
कीपिसतावै॥ भगवतरूसैमिनखपैतोतिरियाकीजूण  
बणावै॥ और घणेरो रूसैलारपरदेसीतणीलगावै ॥  
परदेसीकीनारकोतोयोजिवड़ोधरैनधीर ॥ रोजबर  
खारुतबरसैनीर ॥ पीड़मेरेउठीबिरहकीदूणी ॥ निजर  
मिलावोछाड़करीक्यूपत्रीबिनाअलूणी ॥ घटीकेश्या  
हीतुमारीजी ॥ ४ ॥ चात्र॥ सावणमहिनालागियास

इंदराजाझड़ीलगाई ॥ विरहकीधाईवादलीतो  
 मेरेआनअटारीछाई ॥ आदीरातपपैयैवैरीपिवपिव  
 कूकलगाई ॥ कूकलगाईगगनमेंतोयोउडतोफिरै  
 अकाश॥पीवमेरोसुणसुणछीजतमास ॥ पड़ीमैंविरह  
 कीमारीनार ॥ याबोलीऐसीलगेतोमोयज्यूंवरछी  
 कीधार ॥ साणपेचढीदुधारीजी ॥ ५ ॥ चात्र ॥  
 भादूरैनअंधेरीबिजलीचिमकैगरजैधनमें ॥ चात्रक  
 नारसेजमैंतड़फेनानतहैउसधनमें ॥ हथलेवेकीचोरक  
 रगयोपीरनसमजीमनमें ॥ पीरनसमजीप्रीतमप्या  
 रे ॥ जाछायोपरदेसजीयोजोबन रहैनाहमेस ॥ पि  
 याजीयोदिनदिनबीत्योजावै ॥ ओसरकेचूकेसेपिया  
 जीफेरमोसरनहिपावै ॥ आपजीत्यामैंहारीजी ॥ ६ ॥  
 चात्र ॥ आस्योजमैंरऊअकेलीविरहकीमारीनार ॥  
 तिरियाजूणमतदीजियेतोमैंअरजकरूंकरतार ॥ माई  
 बापभाईबंदकुटुमकोईनाराजीपरवार ॥ एकपतीपैस  
 बरकियोमनेउनबीदीनीत्याग ॥ देखोहीणहमाराभा  
 ग ॥ विपतमोयकैसीभगवतदीनी ॥ सवसखियांद

सरावोपूजैमैरहीकरमकीहीनी ॥ निरदर्हपिवकीना  
 रीजी ॥ ७ ॥ चात्र ॥ कातिकमैसबसखीचावकर  
 करकेसेजसवारै ॥ अपणैअपणैप्रीतमपरपियाप्यारी  
 जोवनवारै॥धरधरलक्ष्मीपूजाविप्रकरावैपूजनसारै॥  
 मैप्रीतमकेकारणेतोनितबूजूपंडितजोशी ॥ पीवको  
 कबधरआवणहोसी ॥ बतावोऐसोमोयउपाव ॥ जोति  
 सपव्योजोतसीबूज्योवैबीदेदियोजाब ॥ बेदकोइहु  
 योनजारीजी॥८॥चात्र ॥ मंगसिरमैपीवकेकारणजो  
 गनकोभेसवणाऊं ॥ भगवांकरल्यूकापडातोमैतन  
 मैखाखरमाऊं ॥ मतवालीजोगनवनूतोमैपिवकूंदूढ  
 करल्याऊं ॥ पिवनेल्याऊंदूढकरतोमैफिरुंदेसदेसनमै  
 बभूतीधारलेऊंकेसनमै ॥ रऊंमेरेपिवप्यारेपाजाय ॥  
 कबूकबूमनकरैसखीरीमरुंझहरविसखाय॥निंदैगीदु  
 नियांसारीजी ॥ ९ ॥ चात्र ॥ पोसपियोपीसैकैका  
 रणजापरदेसांबसियो ॥ नांजाणूंकोईबंगालणकैजुल  
 मजालमैफसियो ॥ बैरनरैनमोयसरदकठनहैकामदे  
 वमोयडसियो ॥ कामदेवकीदवासखीरीबिनप्रीतमन

हिं होय ॥ निरदई नित झिक झोलै मोय ॥ पिलंग पर  
 षड़ी पड़ी पिस ताऊं ॥ देछाती के तलै गीं डवो कर के स  
 बर सो ज्याऊं ॥ सेज मोय लागै खारी जी ॥ १० ॥  
 चात्र ॥ माघ मास में गया सूक संग की सखियां कांचेरा ॥  
 कोई सो सनी शालू ओडै कोई रंग सुनेरा ॥ कोई गुलावी  
 ओडै दुपट्टा कोई वसंती गैरा ॥ मै प्रीतम के कारण पुजूं स  
 कर माई ॥ आज मेरे पीव की पत्री आई ॥ ठीलना मै क  
 रूं बचाण की ॥ सिद्ध श्री मै लिखी पीव फागण में आण  
 की ॥ आज सजलई अटारी जी ॥ ११ ॥ चात्र ॥ फा  
 गण मास फतेहुई मेरे पीव जी सुरत दिखाई ॥ करीर सोई  
 विप्र जिमाया पूरी दिछणा द्याई ॥ चास्या झाड़ गिलास  
 अटारी अंदर सेज बिछाई ॥ गोविंद राम उस ताज कूं तो  
 मै हित स्यूं करूं सलाम ॥ नारकास न्याम नोरथ काम ॥  
 उज्जरै बारामासि योगायो ॥ पिव प्यारी सूहर पभयोज  
 द अंग सुं अंग मिलायो ॥ बहै रंग की पिचकारी जी ॥  
 ॥ १२ ॥ चात्र ० ॥

## विधवाकोबारामासियोप्रारंभः

॥ टेर ॥ मैफिरूंदुख्यारीप्रीतमविनझूठोजुगमैजाव  
 णो ॥ दोहा ॥ लग्योमासआसाडसहेल्योहोणहारकीबा  
 त ॥ इंदरगरजैबिजलीचिमकैहोतअंधेरीरात ॥ रात्यू  
 नीरचोसन्यांचालेदेषठुलीसाहाथ ॥ देखठुलीसाहा  
 थदुखीहैजीवडो ॥ योभरजुवानीकैबीचदगोदियोपीव  
 डो ॥ मैफि ॥ १ ॥ सावणतीजसीजारा नैमेरीछातीभर  
 भरआवै ॥ रोलीमैदीदेखचुनडीनैनानीरनमावै ॥ प  
 काकपड़ापैरूंतनपरजीवभोतदुखपावै ॥ जीवभोतदु  
 खपावैओडूंचीरजी ॥ मेरोगैणांगांठीमांयरह्योनंहीसी  
 रजी ॥ मैफि ॥ २ ॥ भादूह्मीनैचोमासैकाकरैज्यानव  
 रसोर ॥ बोलीषटकैबलैकालजोचलेनमेरोजोर ॥ ओ  
 रसपीप्रीतमसंगपोडैमैईरामकीचोर ॥ मेंइरामकीचोर  
 केअबलानारमें ॥ नहींरह्योभरतारआजसंसारमें ॥  
 मैफि० ॥ ३ ॥ कुंवारकलपनालगीजीवकेऊमरसुदको  
 दुषडो ॥ कन्याकनागतपविकासजीसूककरहोगइलक

डो ॥ देषसरदसरणांटोवैगयोफूव्योहायकरमडो ॥ फू  
 व्योहायकरमडोपापहैलैरको ॥ तोवातोवापाऊंधमू  
 कोझहरको ॥ मैफि ॥ ४ ॥ कातिकमाईवरतकन्यामैठ  
 डेजलसूंन्हाई ॥ तुलसीजीकेदिवलोचास्योफकतपीव  
 केताई ॥ रामदयारापीनहींसंमेरीचूडीनांयसुन्हाई ॥  
 चूडीनांयसुन्हाईरामडवोयदी ॥ जनमकरमसंसार  
 बिहारसपोयदी ॥ मैफि ॥ ५ ॥ मंगसिरह्नीनोलागि  
 योसजीपवनचलतहैसीली ॥ रात्यूंसोऊंएकलीतोमैं  
 करकैटांगाभेली ॥ जदजागूंजदवांयसह्नालूंषुडकत  
 हैनारेली ॥ षुडकतहैनारेलीसुणोसंगकीसखी ॥ ऐं  
 फूटेकरमकैमांयविधाताकेलिखी ॥ मैफि ॥ ६ ॥ अ  
 गहनबीत्योपोसलग्योयाठंडीलहरसतात ॥ चडीजवा  
 नीवालमषोस्योबुरीकरीबेमात ॥ सुन्हागभागमेंचुड़  
 लोतोजीगयोपीवकेसाथ ॥ गयोपीवकेसाथरामइव  
 केकरूं ॥ पाडोसणकादेखरूपछिपतीफिरूं ॥ मैफि ॥  
 ॥ ७ ॥ माघमहीनैवसंतपंचमीरंगरागकाचाला ॥ आ-  
 टीनालमैणबिनमेरीजुरड़ीपड़गईवाला ॥ ओरपीवस

बसागैलेगयोएकछोड़गयोमाला ॥ एकछोड़गयोमा  
 लाषड़ीयाफेरसूं ॥ परण्योडैकीगैलकगावागेरसूं ॥ मै  
 फि ॥ ८ ॥ फागणकाहैमसतमहीनाघरघरमैरंगराग ॥  
 मुजकूंकरीदीविधवारामजीकिणसंगखेलूंफाग ॥ चडी  
 जवानीनाडैसमेरोबिरहलगावैआग ॥ बिरहलगावै  
 आगकेअबमैकेकरूं ॥ मेरोसूनोहैसिणगारझहरबिस  
 पामरूं ॥ मैफि ॥ ९ ॥ चैतमासकरआसगौरमैपूजीछीचि  
 तलाय ॥ देषूंगौरनाचलैजोरमेरोजोवनझोलाषाय ॥  
 चलीनारकरकेसिंगारसबपूजणसेडलमाय ॥ पूजैसेड  
 लमायहरषउपजावती ॥ चलैनमेरोजोरषड़ीपिसताव  
 ती ॥ मैफि ॥ १० ॥ बैसाषामैदेखुंआंखांसूनो लागै ह्यै  
 ल ॥ विधवानारीसदादुष्यारपिड्योरामजीगैल ॥ फाटै  
 छातीहूंमदमातीदेखदईकाखेल ॥ देखदईकाखेलग  
 रमव्यापैधणी ॥ याहैपंषाकीबहारयादआवैधणी ॥ मै  
 फि ॥ ११ ॥ लग्योजेठमेरोबलैपेटयापडैआकरीघू  
 प ॥ देषचांदनीपिलीकामनीकोननिहारैरूप ॥ ऊबी  
 रोऊंधड़ीनसोऊंपीवनहींमहबूब ॥ पीवनहींह्यैबूबसे

जहैसूलसी ॥ बिधवामतकरराममेरीज्यूंझूरसी॥मैंफि  
 ॥ १२ ॥ बीत्यावारामासविचाराइवस्यामीकेजाती ॥  
 पोथीलेऊंहरगुणगाऊंगीतापढ़करआती ॥ सुसरोमे  
 रोचालांगारोजिणरोधडकोखाती ॥ जिणरोधडको  
 खातीसाचमैंकैयस्यूं ॥ स्यामीजीकीआजबगीचीजा  
 यस्यूं ॥ मैंफि ॥ १३ ॥

### बारामासियोप्रारंभः

॥ टेर ॥ बालमघरआवोजीसूनीसेजांमैंजिवड़ोना  
 लगै ॥ दोहा ॥ चैतचित्तवसरहेनित्तमेरेमिंतदिलुकैमां  
 ई ॥ सबसषीऔरपूजतीगौरमेराजोरचालतानाई ॥  
 सरदीकाअंतआईरुतवसंतमेराकंथमोयबिसराई ॥ सु  
 नियोसहेलीरहूंसेजअकेलीजोवनआनसताई ॥ बा० ॥  
 ॥ १ ॥ ग्रीषमबैसाषलगरहीआसमेरीसासमुजेवत  
 लाती ॥ मुषडोहैताबक्यूंफीकीआबमैंजावदेतसर  
 माती ॥ आईआषातीजबटरहीचीजमैंदेपदेपपिसता  
 ती ॥ ग्रीतमअग्यानतड़फतीज्यानापिवलिपनहिंभेजी



पाती ॥३॥ बालम ॥ जेठजुगतसेरहूंधूपसहूंकहूंकि-  
सीसैबात ॥ पड़तीहैधूपकुमलातारूपबेकूपसजनतर  
सात ॥ बिनदेपेनैनसुणियोरीबैननाहिचैनरैनपरभात  
घरआवोस्यामव्याप्याहैकामयेजोबनबीत्याजात ॥  
बालम ॥ साढसरसमैरहीतरसनहिंदियादरसपिवमो  
कूं ॥ अजहुँनआयेपरदेसांछायेपिवकिणबिलमायो  
तोकूं ॥ सुरजह्वाराजमेरीतुमसैलाजमैआजआपकूं  
धोकूं ॥ बिहरकीहूलतनचुबतीसूलजोबनकिसबिध  
रोकूं ॥ ४ ॥ बालम ॥ सावणसुरंगनहिंपियासंग  
व्याप्याअनंगसपिमेरे ॥ तीजांकीभारसबकरसिंगार  
भरतारआपणाहेरे ॥ बरषाकाजोरघनगरजैघोरबोल  
तामोरचौफेरे ॥ पापीपपैयाक्याकरुंदेषपिवपिवकी  
वाणी टेरे ॥ ५ ॥ बालम ॥ भादूकीमोजजलबरसैरो  
जसपीकामफौजचलआई ॥ बादलअपारछाईहैझुझा  
रहुसियारबिरहमनदाईसुणगरजकानसोहैनिस्यान  
चलैव्यारधारझरलाई ॥ बायुसँवारबिजलीतरवारसो  
मोबिरहनपरवाई ॥ ६ ॥ बालम ॥ कुँवारकठनकि

याहियापियाविनजियाधरैनहिंधीर ॥ फीकोसिंगार  
 सबगईभारगलहारसीरकोचीर ॥ नहिंजराचैनआवैन  
 बैनमेरैनैनवरसरह्यानीर ॥ पिवघरआवोवीत्योदसरा  
 वोभोतभयेबेपीर ॥ ७ ॥ वालम ॥ कातिककरतस  
 प्रीवरतटरैनहीपलकनप्यारेपीकी ॥ दिवालीकीभा  
 रपूजैसंसारभरतारविनासबफीकी ॥ मनमैपिसतावत  
 मदनझुलावतइबरुतआवतसीकी ॥ नहींपियासाथसु  
 णियोरीवातमैकहूंकोनसेजीकी ॥ ८ ॥ वालम ॥  
 मंगसिरमंझारचलैठंडीबारपड़ताठठारचोफेरी ॥ सर  
 दीनजातसुनियोरीवातलगरातदीनभोतेरी ॥ ज  
 लविनमैमीनरहताहैदीनसपीसोगतहोगईमेरी ॥ पी  
 वभयेअग्यानतड़फतीज्यानचितलगैनसांजसवेरी ॥  
 ॥ ९ ॥ वालम ॥ पोसरहैवेहोससजनविनचढ़याजो  
 सजोबनका ॥ नाहमसैरंगवीत्याउमंगपिवकन्यासं  
 गसोकनका ॥ सरदीकाझोलमनरहैडोलसुनसुनकै  
 बोलदुरजनका ॥ घरआवोसैय्यांगलडारोवैय्यांपि  
 वमेठअंदेसामनका ॥ १० ॥ वालम ॥ माघमा

दनरहाजागल्यारसर्षीफागपेलणोहोवै ॥ करमैगुला  
लबजरहीतालगाकरधुमालमनमोवै॥होकरनिचंतपे  
लैंबसंतसंगकंथलेयकरसोवै ॥ घरआवोस्यामव्याप्या  
हैकामप्रियाबाटतुमारीजोवै॥११॥ बालम ॥ फागणमै  
आसआवनकीप्यासयेमस्तमासजोरीका॥जोबनका  
सिवतडफताजीवपिवआणमिल्यागोरीका ॥ हेलूकै  
बीचरंगरहीसींचमचरह्योकीचहोरीका ॥ कररहीरंग  
बालमकैसंगपेलतीख्यालहोरीका ॥१२॥ बालम ॥  
मासतेरवांअधिकऊछाकागोरीअदासुंवारी॥बालम  
कैसाथगलघालबाथप्रीतमसंगसोहेप्यारी ॥ जगुति  
बाडीऔरऊदाकीगावणकीहुंसियारी॥ सहरह्यैणसर  
बीचमैतोकथाकैताजगनपुजारी ॥ बालम ॥ १३ ॥

### बारामासियोप्रारंभः

॥ देर ॥ घरआमदछकियाथारीधणऊबीबाटनिहार  
ती॥दोहा ॥ जेठमासजिवलगैनमेरोगरमीपड़तबिसे  
सा॥तातीपवनतेजजोबनकोकायादहेहमेस॥ थांविन

गोरीकासायबासहानेसूनोलागैदेश ॥१॥ साढमास  
 वरषाकीकोयलबोलैइमृतवाणी ॥ गरजतइंद्रनींदन  
 हिंआवैपिवबिनभईदिवानी ॥ सेजांपोछंएकलीसमेरी  
 चडतीपियाजवानी ॥२॥ सावणमासरैनअंधियारीद  
 ईपपैयेकूक ॥ पियापियाकरमोयसतावैसागरयेनसू  
 क ॥ कैसैछाड़गयेबालमक्याहुईहमारीचूक ॥३॥ भा  
 दूघटाउमँगचढ़आईबरसैमूसलधार ॥ जोवनकीमद  
 मातीतिरियागावैरागमलार ॥ सुनसुनवातांप्रेमकी  
 मेरेहोयकलेजापार ॥४॥ आस्योजामैंसपनोआयोमा  
 झलढलतीरात ॥ सेजांमेंहिलमिलपिवतुमसैकरीप्रेम  
 कीबात ॥ मुखजोवतखुलगयेनैनइवकैसैहोपरभाता ५  
 कातिकनहींकिसीकैसारैजोवनआनसतावै ॥ मछली  
 ज्युंतडफूंहैलामैंपलकनींदनहिंआवै ॥ तुमविनधण  
 रासायबातोप्यारीनैकोणरिझावै ॥६॥ मंगसिरमैंमन  
 मेरोनलागैआपविनाकेहोय ॥ छैमहिनाकाकोलकि  
 याथाबरसबीतगयादोय ॥ व्याकुलरहैदरसविनदुखि  
 यानैनमरैहैरोय ॥७॥ पोसरहानहींहोसठंडसैथरहर

कं पै काया ॥ दिन दिन जो बन ढल्यो जात ज्युं ढलती दि-  
 न की छाया ॥ सेजां पोड्ये कली थानै किण सो कण भर-  
 माया ॥ ८ ॥ माघ लगी है आग बिरह की तुम बिन कूण  
 भुजावै ॥ घर घर उड़ै गुलाल देख कर मेरा जी हुलसावै ॥  
 काम देव को प्यो काया मैं अनपाणी नहिं भावै ॥ ९ ॥ फा-  
 गण आप दिसावर बैठे किण संग खेलूं फाग ॥ जो बन दि-  
 ना च्यार को पीछे जाय ठिकाणे लाग ॥ इब घर आवो बा-  
 ल मास धण खड़ी उड़ावै काग ॥ १० ॥ चैत चैन नही रै-  
 न दिवस को सुरत नहिं है तन की ॥ इब घर आवो प्रीत मप्यार  
 आस लगी दरसन की ॥ आप बिनान गदी का बीरा  
 कूण सुणै ह्यारामन की ॥ ११ ॥ वैसा खांब सहुई काम  
 के जो बन आनसतात ॥ कागद बांचत प्रीत मप्यारा चढ़  
 आज्यो इण स्यात ॥ झाली राम की जोड़ कला है मुल कूं  
 मैं बिख्यात ॥ १२ ॥ मिती सुणो सावण सुदी तिथ तेर  
 स सोमार ॥ संवत है उगनी सकामानो सब संसार ॥ येक  
 बार को लिख्यो सजन तुम सम जो सो सो बार ॥ १३ ॥

## अठारामासियोप्रारंभः ॥

॥ टेर ॥ थानेसाचसुणावांप्यारीपरदेसांजावांका  
मणी ॥ दोहा ॥ अलखनामकरतारमनाऊंतुमकीज्यो  
प्रतिपाला ॥ चंदसुरजकाचिरागरचदियावडीरोसनी  
वाला ॥ दधअक्षरकूंटालियेतोमाईनगरकोटकीजुवा  
ला ॥ चैतमहीनूलागियोसप्यारीमैंसमझाऊंतोय ॥  
कामनीसीखदिवादेमोय ॥ प्यारीथानैकहैतुमारोपी  
व ॥ निकमांवैठ्यांकामनीसहारोपलकनलागैजीव  
नारकोईकारचलावां ॥ प्यारी ॥ १ ॥ टेर ॥ प्यारी  
नैप्यालोदेतांझैरकोथानैदयानआवैजी ॥ दोहा ॥ शि  
ष्टपतीकरतारकूसमैंसवकैपैलीमनाऊं ॥ कहूंअठारा  
मासवनाकरगुरुकीअग्यापाऊं ॥ चैतमहीनूलागियो  
सथानैकहतीचात्रगनारी ॥ करोमतपरदेसांकीत्यारी  
समजतूमोयसुगणीरापीव ॥ जाणगईमैंथारोलगरह्यो  
परदेसणसूंजीव ॥ बुलायोउसकोजावैजी ॥ २ ॥ प्यारी ॥  
लख्योमासवैसापवाततूभोलीकररहीनार ॥ निक

माबैठ्यांघरगृहसतीकानहींचलताकारबिहार ॥  
 बड़ाबड़ाकोडीधजलापीकरणजाबैरुजगार ॥ बैठ्यां  
 बैठ्यांकोठारकोटडीसारानीमडजात ॥ पिवथानेकहै  
 समजकीबात ॥ नहेलीतुमतनपडरीबाद ॥ औरक  
 छूसमजैनहिंजाणैयेकसेजांतणोसवाद ॥ तनैतोह्येसम  
 झावांजी ॥ ३ ॥ प्यारी ॥ बैसाषांमैंदईभौतसीसोगन  
 ह्यारैताई ॥ धनदोलतफिरफिरहोज्यावैजोबनआवै  
 नाई ॥ पाणापीणाषेलणासदिनच्यारजगतकेमाई ॥  
 हाथजोड़अरजीकरूंसथेमतीमानज्योरोसाबातमेरी  
 सुणियोकरकेहोस ॥ जुवानीकांटापरकाओस ॥ बासू  
 कैवाढलकैकैसेपावैजायहजारूंकोस ॥ फेरपीछैपिस  
 तावैजी ॥ प्यारी ॥ ४ ॥ जेठमहीनाकहीतूजाणीजोब  
 नकीसाचीबात ॥ पीसाबिनभाईबंदकिसीकानहींपि  
 ताओरमात ॥ पीसाबिनघरकीतिरियानैपीवजमसूंबु  
 रोलषात ॥ पीसासूंसबरंकबादस्यासाराबड़ाकुहावै  
 पीसाबिनानकोईबतलावै ॥ भाईसूटालोदेज्याभाण ॥  
 पीसाबिननहिंआदरनरकादेपरदेसांजाण ॥ कमाकर

पीसोल्यावांजी ॥ ५ ॥ प्यारी ॥ जेठमासमतजाय  
 पियारावरजरहीथारीप्यारी ॥ बंगालामैनारवड़ी  
 बंगालणजादगारी ॥ कोईरांडविलमालेवैगीयोडरमु  
 जकूंभारी ॥ परदेसाराचालणासपिवैवणाविषमउजा  
 ड ॥ नारबिनकुणकरैथारीसार ॥ उठेकोपाणीबड़ो  
 खराब ॥ मीठोफीकोषाणेसेनहिरहैबदनपरआव ॥ अं  
 गकारोपड़जावैजी ॥ प्यारी ॥ ६ ॥ लग्यासाडअवक  
 छूनबिगडैगैलैआतांजातां ॥ कोईमिनपसैकरानहीं  
 ह्येबिनमतलबकीबातां ॥ कछूनबिगडैनाररसोईदाल  
 भातकीखातां ॥ परतिरियाऐसीगिणासजीधरकैसुत  
 कीमाता ॥ करानहींवासूंदूजीबात ॥ सखीअलवेली  
 मानमेरीसीष ॥ बिकतीचीजबजारकीस प्यारीकेले  
 बाकोदोस ॥ बेपारीह्येकहलावांजी ॥ ७ ॥ प्यारी ॥ साड  
 महीनाकहीसांचप्याराबडीजातसाहुकार ॥ भरीजुवा  
 नीमैंछांडीथेतोबिलकतडीसीनार ॥ आंखमींचकर  
 धकोदेजावैधनमाईधरकार ॥ पैलीपरणैचावसूसधन  
 दौलतखूबलगावै ॥ फेरमजधारामैंछिटकावै ॥ यूही-



जायजवानीबीत ॥ पियायाकूणगावकीरीत मनेतोम  
तछिटकावोजी ॥ ८ ॥ प्यारी ॥ सावनमहीनूसुनअ  
लबेलीझूठीबातबणावै ॥ मैकेकरीनईरीतप्यारीस  
बपरदेसांजावै ॥ कोईपांचकोइसातकोईदसबारावर  
सबितावै ॥ मैजावंपरदेसरहूँनहिंछैमहीनासूंबाद ॥ रा  
खजेबातहमारीयाद ॥ लगीमोयकालीजीकीआसा ॥  
अफीमकेआखरमैप्यारीपडज्यासाबलपासा ॥ छठे  
महीनेघरआवांजी ॥ प्यारी ॥ ९ ॥ सावणमैमतजाय  
दिसावरकरांबीनतीथारी ॥ जुवानीदिनदसरहैपिया  
थेपीड़नसमजीह्वारी ॥ थेपगमेलोपागडैसमैमेलुहि  
येकटारी ॥ इसीकदेनहींमाणीनांककीनकबेसरबीट्ट  
टी ॥ कदेनहींरंगवाड़ीसीलूटी ॥ कदेनहींकवाणकी  
ज्युंताणी ॥ चंदरहारदूट्योनहींसमनेंइसीकदेनहिंमा  
णी ॥ बातकरकरबिलमावोजी ॥ प्यारी ॥ १० ॥ भादूसु-  
दीसप्तमीकोमुहुरतमिसरजीकाड्यो ॥ मैसेजीमैजा  
यपरीकैसागैसबरसबाड्यो ॥ तड़फतसैजांमांयकबूतर  
सोनेकोसौछाड्यो ॥ इसदुनियाकेबीचमैसदेखोलाल

चबुरीबलाय॥समज्योनहींकिसीसूंजाय ॥ लाग्योरहै  
 नितउद्योहमेश ॥ प्यारीछोडीसोवतीसहैकीनी  
 सिद्धगणेश ॥ सुगनसबआछापायाजी ॥ ११ ॥ प्यारी॥  
 भादूमहीनासेजांमैंसूतीनेनिंदराआगी॥आदीढलती  
 रातपीवसूतीसेजांमैंत्यागी ॥ देखूंअंखियांखोलअके  
 लीमैंतडफूंमदभागी ॥ बणियाणीकेपीवकीससारासूं  
 छातीतेज ॥ छोड़देबिछीबिछाईसेज॥सेजपरसूतीछो  
 डीप्यारी ॥ पीवबिनआवैसामनसखावननेसेजअटा  
 री ॥ पीवबिनकामसतावैजी ॥ प्यारी ॥ १२ ॥ ला  
 वणी मांडभैरवी ॥ टेर ॥ पीवबिनकामसतावैसखी  
 भैरोतनुउमीरजोबनवारो ॥ करछलबलकीवातछोड़  
 सूतीनेगयोप्रीतमध्यारो ॥ भादूसुदीमैंगयोपियाअव  
 आस्योजांलाग्योआकरके ॥ सेजभोगनहिंकियोपि  
 यामोयकांडकरीअबव्याकरके ॥ हाथजोड़कैकहीभो  
 तमेरेप्रीतमकूंसमझाकरके ॥ मैंकहीलाखनहिंसुनीये-  
 कगयोचलतीवातबनाकरके ॥ डरूंअकेलीप्रीतमवि-  
 नमेरीधरकधरकछातीधरके ॥ कारीभईसेजकाजर

सूंअंखियांआवैभरभरके ॥ पीवबिनअंखियांअलसा  
नी॥मैंबालमबिनभईदिवानी॥गयोछोड़मुजेदिलज्या  
नी ॥ सखीमेंरीबीतीजायजवानी ॥ तड़फतड़फकैग  
योसखीमोयआस्योजां हैनूसारो ॥ १ ॥ कर० ॥ का  
तिकमेंनितनेमकरूंमैंतेरोतुलसीमाई ॥ झारीभरतो  
यताजामैंगंगाजलसेसिंतीचवाई ॥ मुजबिरहनीकीद  
यातेरेदिलमांयकछूनहिंआई ॥ परदेसीपिवदियोमो  
यतूभुलाभुलाकैबिलमाई॥जोबनझोलाखायघटाज्युं  
सावनकीनभमैंछाई ॥ उमगउमगकरआवैबिनावरसे  
नहिंहोतीसुखदाई ॥ सखीलछमीपूजैसारी ॥ रलमि  
लप्रीतमसूंप्यारी ॥ येकमैंईकेरामकीमारी ॥ मेरीसू  
नीपड़ीअटारी ॥ नावपड़ीमजधारनजरनईआवैमोय  
खेवनहारो ॥ करछ० ॥ २ ॥ मंगसरमहनोलग्योसखी  
सिणगारकरछेआला॥ पहनजड़ाऊसुनहरीगहनाप्री  
तमसंगपीवैप्याला॥ कोईभारबेसरकीलैवैकोइनारमो  
हनमाला ॥ कोईहारहिवड़ापैडालाकोईकोईबालका  
ला ॥ कोईसीसफूलजड़ाऊकोईमसतगपैबिंदीडाला

कोईझूमखाऔरसिरलियाकानूमैंपहनेवाला।कोईवा  
 जूबंदवारी।नोगरीबंदओरपुहुचीनारी।कोईपहनआ  
 रसीप्यारी।कोईहाथफूलमतवारी ॥ मोयकाठकीदेके  
 मालाबस्योपरदेसांहतियारो ॥ कर० ॥ पोहमहीना  
 पियाकी प्यारीसबसखियांकरतीसिनगार॥कईतरां  
 कैरंगकाडुपटाऔड्यांकररहीवहार ॥ कोईपोमचा  
 पालीकाओडैकोईलहरीयालीकांदार॥कोईसुरखचूं  
 दड़ीओडतीकोइमोतियाकीलेवैभार॥कोईवनारसी  
 वालाओड्यांकोईचांदाकीबुदकीदार॥कोईओडैगो  
 ठटावाला॥कोईलीलकसुमलकाला॥नहींमैंसारारंग  
 सझाला॥रहाअनेकगुपतनिराला॥मोयभगवांदे  
 गयोपीवकरूमैंओड़ओड़केगुजियारो॥करछ०॥५॥  
 माहमहीनावसंतपंचमीसखीरागसारीगावै॥पीलुवर  
 बाधनासरीझिझोटीगोरीदरसावै॥कोईपुरवीभीवा  
 मारूजंगलागावतसुखपावै॥कोईकाफीकबानकि  
 दारातैलंगखमायचसुलजावै॥कोईरामकलीसोह  
 नीपरजकालंगडाभैरवमनभावै॥कोईरागआसावरी

गावैबिलावलसारंगसुरअजमावै ॥ बिनसुरपदकबून  
 आवै ॥ विद्याचवदाबीं कहलावै ॥ छैरागछत्तीसरागनी  
 व्यानकरूंकवलगसारो ॥ १७ ॥ कर० ॥ फागणमहीनै  
 फिकरमिटगयोमेरोपिवपरदेसांसूंआयो ॥ मैपूछीमन  
 कीबातकामकरकेपरदेसांसूंल्यायो ॥ कहैपीवआपां  
 कोलकन्योसोभगवतअपणूंनिरभायो ॥ सवालाखको  
 नफोमोयकालीजीसहैमैंद्यायो ॥ कहैपीवकरपुन्यका  
 मनीक्यानेजिवडोललचायो ॥ सेजसिंगारकरअलबे  
 ली ॥ आयऊबीनईनहेली ॥ सेजामैंपीवसंगखेली ॥ क  
 थकहैउजीरोतेली ॥ गोविंदरामगुरुमिल्याकरोकरता  
 रपारहियेउजियारो ॥ कर० ॥ १८ ॥

## बारामासियोप्रारंभः ॥

॥ टेर ॥ कुणअंगलिपटावैजीवाबलपरणाईछोटा  
 कंथनै ॥ दोहा ॥ साडमासजोवनप्रकासमेरैआससेज  
 कीलागी ॥ सेजनकीभारमैं करसिंगारचलीनारहंसग  
 तसागी ॥ आगैछोटाकंथनासाध्योतंतसूत्योनिचंतनि

द्राआगी ॥ कहाकरूंरामतनव्याप्योकामतिरियामैंत  
 डफूंमदभागी ॥१॥ सावणसुरंगमनमैंउमंगपिवसंगर  
 मैंसबप्यारी ॥ ओढेज्योचीरदमकैसरीरनहिंपीरसुखी  
 संसारी ॥ करैइंद्रधोरबोलैवनमैंमोरचढीजोरघटानि  
 सकारी ॥ छोटेकीनारजीतबध्रकारहोतनमैंपारकटा  
 री ॥२॥ भादूकीभाबरसैअपारनरनारसेजमिलसो  
 वै ॥ मेंदुखीनारकरदईकरतारछोटोभरतारजोवनखो  
 वै ॥ बिरहाकीपीरमेरोसहैसरीरभरनैननीरहियोरोवै ॥  
 पीवकरैबातनहिंआवैपासजिवड़ोउदासमेरोहोवै ॥३॥  
 आस्यौजदेखवेमातलेखमेरीकरमरेखचोड़ैआई ॥ ई  
 दरकोगाजसिंपनकैकाजह्वाराजबूंदबरसाई ॥ पीवआ  
 वैपासनहींकरैबातमेरेमुखपरजरदीछाई ॥ हतियारा  
 बापतोयचुंसरापछोटैनैआपपरणाई ॥ ४ ॥ काति  
 कमैंबोलदिलखोलखोलकरतीकिलोलपियाप्यारी ॥  
 पूजनकरायहैलनमैंजायरह्यारंगउडायनरनारी ॥  
 केकियोपापमैंजरूंआपओतापमदनकीमारी ॥ दियो  
 पीवललनाकेआईमनातूहैबिधनानाकारी ॥ ५ ॥ मंग

सिरमैमैनदुखलाग्योदेनअकुलायैनैनजलबरसै ॥ क  
रूकेउपावबायूकोभावतनधावतीरसोदरसै॥सखियां  
कोभवनसंगजाहिगवनबनठनकैकरैदिलभरसै ॥ यो  
हीबियोगहैछोटोलोगमेरीज्यानभोगबिनतरसै॥६॥  
लग्योपोससरदीकोजोसबेहोसहोयघबराऊं ॥ केकरू  
रामहैछोटोस्यामदुखदेवैकामकुमलाऊं ॥ बिरहाकी  
अणीचुभतीहैघणीकेआणबणीपिसताऊं ॥ पीवरह्यो  
सोयमैरोयनिमाणीहोयहायरहज्याऊं॥७॥ मस्तमाध  
मैकरैरागसबभागपुरसनरनारी॥होरीकीचालगावैध  
मालसुरताललगैमोयप्यारी ॥ साजनकैसंगसखीकरै  
रंगछकछाकीअनंगवारी ॥ पिवआवैपासनहींबूजैबा  
तकेकरूनाथब्रहमारी ॥ ८ ॥ फागणमैफबीकिरत्यां  
सीसबीसखियांकीछबीअतिन्यारी ॥ भररंगकीझोरी  
साजनसंगगोरीखेलतहोरीपिवप्यारी ॥ पिववारोभेष  
सरमाऊंदेखमैकरमरेखकीहारी॥ सबसखीगामहीणो  
कलामयेकमैहीरामकीमारी ॥ ९ ॥ चैतचलीसबभां  
तभलीकररंगरलीसखीसारी ॥ कैलासतणीशिवकी

घरणीनहीनिरणीनीतझुवारी ॥ आंकोकटैनहियो  
 कैसंजोगकियोपिवछोटोदियोकेविचारी ॥ मैंकहूंवा  
 पतोयदेस्यूसरापघटैकलापसूंप्यारी ॥ १० ॥ वैसा  
 खमासजोवनप्रकासआकाससैगरमीवरसै ॥ वालम  
 कूंजोयदिलरह्योरोयसखिसोयनैनमेरातरसै ॥ मैंदेखूं  
 कंधदुखहीअनंतकुचआनमलैकुनकरसै ॥ ११ ॥ जेठ  
 मैंधूपपड़तीअनूपसुंदरसरूपछविछाई ॥ निद्राकेगह  
 लसूतीथीमहलजाछोटैछैलजगाई ॥ घूंगटकूंखोलदे  
 ख्योकपोलहंसबोलबोलउरलाई ॥ रसकीसीचाल  
 कहैनानूलालमैंब्रहनबालसुखपाई ॥ १२ ॥

### बारामासियोप्रारंभः

॥ टेर ॥ थारीजोवैछैवाटपियारीआज्यापरदेशी  
 सेजहमारी ॥ दोहा ॥ निराकारनिजरूपमनाऊंसृष्टी  
 कारखवाला ॥ एकबृंदपाणीकीसेतीवागअमोलक  
 पाला ॥ शुभगुणदेवोहमेशभवानीनग्रकोटकीज्वा  
 ला ॥ अरजकरांछांसुघडनरेशजी वाईजीराबीराआ



वाणयाकरोनीहारादेस ॥ लग्योचैत्रथारोचतुरबाग  
 अलशावै ॥ बिनबागवानकेसिंचेफलनहिंपावै ॥ पाणी  
 बिनाप्रेमकेजीहारासूकैबागहजारी ॥ आज्या ॥ १॥  
 बैसाखांमैभईबावरीबिरहकीमारीनार ॥ घरकाजाणै  
 तापतेजरोल्यावैवैद्यअपार ॥ नब्जदेखकैतापबतादे  
 मिलतासोइगंवार ॥ दवाहमारीथारेपाशजीबाईजीरा  
 बीराजीदेकेपूरोनीहारीआश ॥ आशपूरथारीप्यारी  
 इबाबतावै ॥ परदेसांस्यूआयांतुर्ततापमिटज्यावै ॥ थे  
 भंवराल्हेकेतकीसजथिकेशरह्येक्यारी ॥ आ० ॥ २ ॥  
 जेठजीवमैजाणकैसजीआवोपीवघरहारै ॥ प्यासी  
 मरतीआत्मासह्यारीपीवहिपीवपुकारै ॥ पहलीधोखो  
 क्युंदियोसजीइशीमनाछीथारै ॥ जैथारीमनशाथीक  
 छुऔरजीबाईजीराबीराजीतोक्युंपरणैछाचितचोर ॥  
 अबमतछिटकावोतुमबिननहींठिकाणो ॥ जीथारोपु  
 न्यबधैगोएकबारशेजामांणो ॥ सेजांमाणोबालमासमै  
 ताबेदारतुमारी ॥ आ० ॥ ३॥ आगयासाइसुहावणा  
 सह्यारोचितथारामैलागा ॥ जोतुमअसलसींपियामो

तीहमरेसमकातागा ॥ ज्योतुमआछासुवर्णहोतोहो  
 छांअशलसुहागा ॥ ज्योतुमवणजावोबनघनघोरजी  
 परदेशीप्याराजीमैंबनघनकीमोर ॥ जोतुमवणजावो  
 सागरनदियांअच्छी ॥ कोईह्वेसागरनदियांकीभूरी  
 मच्छी ॥ जोतुमचौपड़पासाछोतोह्वेछांश्यारमतवारी  
 ॥ आ० ॥ ४ ॥ सावनमासपासनहींप्रीतमसेजपड़ीमे  
 रीसूनी ॥ सुणकोयलकीकूककलेजेहूकबिरहकीदूनी  
 खुरंटऊखेड़जखमकासयोबोलैपपैयोखूनी ॥ खूनी  
 डोनांवपियाकोटेरैयोजलतीअग्निमैंफूसभुवाररगेरै ॥  
 फूसपड्यांसूंदूणीदूणीजागै ॥ सेजांमैंजिवड़ोएकपल  
 कनहिंलागै ॥ पलपलभारीहोरहीसमैंखाकरमरूंक  
 टारी ॥ आज्या० ॥ ५ ॥ भादूमासभावरखपिवमैंश  
 रणतिहारीआई ॥ पांचपंचदेवीचमैंसमनैथारीलारल  
 गाई ॥ अबक्याचूकपड़ीमेरेमैंतुमक्युंनिजरचुराई ॥  
 कोरातोकागदलिखलिखघालो ॥ मतलबहारैकोजी  
 एकहरफनहिंडालो ॥ नईनारकोपलपलजोबन  
 छीजै ॥ तूंदमडारोलोभीबातांसूनहिंरिजै ॥ री

जगयाकोइओरनारपरतासूंमोयबिसारी॥ आज्या०  
 ॥ ६ ॥ आसोजांमैंआपपियानहिंअपणामनस्यूंजा  
 णो॥ खर्चीखर्चघणेरीनारथेचंगीचंगीमाणो॥ ह्मेथारी  
 तरियांकरीतोजीकठेलगैठीकाणो ॥ थेकरल्योशोही  
 खटाजाह्वारेकरबोमेजीवोएकवातनहिआव ॥ आ  
 वोघरमतजीतरसावोह्वारो ॥ मैंधुरदरगास्यूंपल्लोप  
 कड्योथारो ॥ थारीह्वारीलगीपीवजीधुरदरगास्यूंया  
 री ॥ आज्या० ॥ ७ ॥ कातिकमासशरदरितुमोयकूं  
 शेजांमांयसतावै ॥ शूनीलागैकोटडीसमोयसेजखा  
 णनैआवै॥ शरदपूंन्यूकीरैनचानणीदेदेत्राशहटवै॥ से  
 जडल्यांमैंमोयहटावैजी बाईजीराबीरापापीडैनैदया  
 येन आवै ॥ दयाविचारोतुमप्रीतमसुणलीज्यो ॥ भग  
 वतकेलेखेएकबारदरशणदीज्यो ॥ दरशणद्यौबाईजी  
 राबीरामैंतडफूंदुखियारी ॥ आ० ॥ ८ ॥ मंगशिरम-  
 हिनोलाग्योपियाजीमैंअरजकरूंछूथानै ॥ जैसीहोय  
 दिलोमैंथारैजैसीलिखद्योह्वानै ॥ आखरचौड़ेआयसी  
 सथेमतनाराषोछानै ॥ ओलैछानैकीनहींवातजीचो

हैथेसोवोछोजीशोकणतीरैसाथ ॥ शोकणतीरोसाथ  
 पियाछिटकावो ॥ कांटामतवालममारगकैमाईवा  
 वो ॥ रतीरतीकोहिसाबलेसीधर्मरायवलकारी ॥  
 आ० ॥ ९ ॥ पोशशमजपणमेंशरनपिवरखप्यारीसे  
 सीर ॥ आवणनहींवणैतोथारीलिखभेजोतसवीर ॥  
 देखदेखमुखआपकोसहारेवँधैकलेजेधीर ॥ धीरकले  
 जैबंधज्याह्यारैजीथेनहींआवोतोजीमेंमरस्युंआंगण-  
 थारै ॥ मैंमरज्यावूँऐसीमनमैंआवै ॥ आगलगोथारी  
 दौलतमोयनहींचावै ॥ दौलतसागैनहींचलैपिवधरीर  
 हैइतसारी ॥ आज्या० ॥ १० ॥ माघमहीनारागसखी  
 सबउमँगउमँगकरगावै ॥ मेरीवाँईआंखसकुनीफर  
 कतमोयलखावै ॥ रेसमकानाड़ाकीगांठमेरीसरकस  
 रककरजावै ॥ अंगियांकीकसढीलीहोती ॥ येवेसरमेरी  
 कासजैसवायामौती ॥ मोतीसजरह्याह्यैरकरीबुराई ॥  
 इतनेमैंपत्रीपरदेशीकीआई ॥ पत्रीमैंपीवयूँलिपीस  
 ह्येआवाचात्रकनारी ॥ आज्या० ॥ ११ ॥ फागणमहि  
 नोआयोरंगभीन्योरँगकीन्योकरतार ॥ घरआयोपर

देशीप्रीतमहोरह्यामंगलाचार ॥ छिड़क्योअतरअपा  
रमहलमैंकीनीसेजतयार ॥ मैंप्रीतमसैकीनीबात  
जी हंस हंसकर काड़ीरात ॥ गोविंदरामगुरुजीका  
ग्यानबतायो ॥ योउजीरोतेलीबारामासियोगायो॥  
प्रीतमस्थूप्यारीभिलीसकोईमहरकरी बनवारी ॥  
आज्या० ॥ १२ ॥

### बारामासियोप्रारंभः

॥ टेर ॥ जोशीजीसुगनविचारोजीकदआसीप्री  
तमप्यारो ॥ दोहा ॥ अवलनांवउसीकालेतीजिनरच  
दईसंसार ॥ दौयनमैंसिवसुतकूंरटकरकरतामंगल  
चार॥तीजागरूमनाऊंसाचादेवेबुद्धिअपार ॥ चैतच  
तरचंपाकलीपियाजीह्वाराजलबिनरहीअलसाय ॥  
पानीसींचोप्रेमकोपियाजीह्वारातुरतहरीहोज्याय ॥  
तुरतहरीहोज्यावैबालमह्वारा ॥ जीयोबागलखीणूंच  
तुरापियाजीथारा ॥ पक्याखडासबीपीवरसयेटपकै  
न्यारोन्यारो ॥ जीक ॥ १ ॥ बैसाखामैंबसकररापी

कामदेवबलवंत ॥ लगतीपीडतेजजोवनकोव्यापैका  
 मअनंत ॥ सेजांमैंदिनघालैहृत्यारोरतीनारकोकंथ ॥  
 रतीकंथजोरचढ्योसहेल्योयोपलकनधरतोधीर ॥ को  
 मलतनपरमारतोसहेल्योयोसाधसाधकरतीर ॥ तीर  
 माररह्योमैंमनमैंपिसताऊं ॥ जीपरदेसीपीवविनसेजां  
 मैंदुखपाऊं ॥ सेजांमैंदिनघालैसखीमेरोनाजुकजोव  
 नवारो ॥ जीक ॥ २ ॥ जेठमहीनैजुवालातपतीअन  
 पाणीनहिंभावै ॥ परणगयोपरदेशीपीवथारेदिलमैंद  
 यानआवै ॥ येकतेजगरमीकोदूजोजोवनआणसतावै ।  
 जोवनझोलाखारह्योभँवरजीज्यूंजलदेततरंग ॥ विना  
 मोजकुमलारह्योभँवरहारोवदनगुलावीअंग ॥ वदन  
 गुलावीहोयरह्योनारको ॥ जोवनआंकसविननाड  
 टतोपीवप्यारीको ॥ सेजांमैंदिनघालैसखीयोकामदे  
 वहतियारो ॥ जीक० ॥ ३ ॥ साडमहीनूलग्योसखीइं  
 दराजासजीसवारी ॥ धनधनतोयधरानारीतूहैइंद  
 रकीप्यारी ॥ इंद्रलोककईकोड़कोसआयआसापूरी  
 थारी ॥ मेरोपीवपरदेसमैंसखीरीयेवैठ्योहोयनचीत ॥

बिपतसहणनैमैं करीं सहेल्योये परदेसी सै प्रीत ॥ प्रीत  
 सखी परदेसी पीवसे जोड़ी ॥ करनहीं जाणी उनमें रीखीं  
 चखीं चकरतोड़ी ॥ इबधर आज्या पीवरै नादिन लगर  
 ह्योइष्टु ह्यारो ॥ जीकद० ४ ॥ सावनसूनी देखे सेज  
 मेरी पलक लगन नहीं पावै ॥ कारी पीरी घटा अटारी ऊ  
 पर बसण अवै ॥ नित निरदर्प पीहरो सेज पीवका ब  
 चन सुणावै ॥ पिया पिया करतो फिर रह्यो सहेल्योये औ  
 र नदू जो बोल ॥ दरदवंत की जखम को सहेल्यो नहीं बेदर  
 दीने तोल ॥ तोलनाहिं बेदर दीने सखी पावै ॥ पीवपी  
 बकर पापी दाजे परलूण लगावै ॥ दाजे ऊपर लूण लगा  
 रह्यो यो पापी हतियारो ॥ जीकद० ॥ ५ ॥ भादू मैं गया  
 भूल भवरथे जा परदेसां माई ॥ कर डालंगण ह्ये करास पि  
 वथे मिल बाकै ताई ॥ धन जोवन बिलसण नैर चदिया दी  
 नाना थगुं साई ॥ कोल बचन कर गया भंवर ले दोम्हीना  
 कोनाम ॥ ओर कछूसम जो नहि पीया जीथ पनै छै दमडा  
 सै काम ॥ तज दमडा कोला भजोगै छै आणूं ॥ जी नही  
 परदेशी थे पीर पराई जाणूं ॥ पीर बिरह की आकर बाल

ममोरील्हैरउतारो ॥ जीक० ॥६॥ आस्योजामैंआंग  
 णऊबीनारउड़ावैकाग ॥ योजोवनदिच्यारकोसफि  
 ररसतेजासीलाग ॥ रुतवंतीसैभोगकरेबिनहुंमैलग  
 ज्याआग ॥ बिनरुतइणसंसारमैमँवरजीनिमजैकोइय  
 नबीज ॥ रुतकाबायानीपजैमँवरजीवोमोतीअसल  
 अबीज ॥ चात्रकहोसोआसेजामैंसोवै ॥ मूरखधनको  
 लोभीयूंहीजवानीखोवै ॥ मूरखसेंतीसीरपढ़्योसखि  
 यूंहीजायेजमारो ॥ जीक० ॥७॥ कातिकमैंनितनेमक  
 रुमैतेरोतुलसांमाई ॥ प्रातसमैमैंऊठकैगंगाजलसेती  
 सिंचवाई ॥ परदेसीपीवदियोथेह्यानैइसीविदागीघाई ॥  
 लिछमीयातापूजकैसखीरीसारीकररहीभोगविलास  
 ॥ मेरोपीवजीजाकियोसहेल्योह्यारीयेपरदेसांकोवा  
 स ॥ बासकन्योपरदेसांकोनहिंआवै ॥ रुतसरदीकीआ  
 गईदूणूंकामसतावै ॥ देषसरदकीरातमदनमोदेकैच  
 द्योनगारो ॥ जीकद० ॥८॥ मगसरमैम्रगनैनीकोयल  
 बैनीकररहीप्यार ॥ कुचकपोलहोरह्यापरीकागोरागु  
 लैअनार ॥ फिरआकरकेकरोमँवरयाबीतीजायबहा



र ॥ लाखरुपैयाकीचीजः खखीतैधो डकोड़कीरात ॥  
 सबरकरूसोजंयेकली भँवरमैधरछातीपरहात ॥ सबर  
 कन्योथेअबतोप्रीतमआवो ॥ जीपरदेसीपीवमतमज  
 धाराछिटकावो ॥ नावपड़ीदरियावमैसटुकआकरदे  
 वोनीसहारो ॥ जीकद० ॥ ९॥ पोसपरीनैत्यागदर्दपि  
 याकेआईतकसीर ॥ थारोह्यारोकन्योबिधाताउंमरत  
 ककोसीर ॥ धापगयादिनदोयमैसह्यारीनणदबाईरा  
 बीर ॥ कामडिगावैसिद्धनैहत्यारोयोदुष्टकसाईनीच ॥  
 आयअचानकमारतोभँवरमैरेडंकसूंडीकैबीच ॥ डं  
 कबूरोबिच्छूसैतेजलगावै ॥ आयअचानकमेरेअंगके  
 माईरोळमचावैगजहसतीसुंदरबणीसनहीह्यावतआ  
 कैत्यारो ॥ जीक० ॥ १०॥ माघमासमेरेकैलासीपततुम  
 बेड़ामेरासनंद ॥ जटाजूटसिरगंगबिराजैमसतकऊप  
 रचंद ॥ परदेसीकीनारकैससेजामैकरोअनंद ॥ सेजसुरं  
 गीथेकरोहमारीजीवोसीतापतह्याराज ॥ जगत्यान्यो  
 ग्रहमारकैरखीछीथेद्रोपतसुताकीलाज ॥ लाजरखी  
 थारीसांचीसकलाई ॥ जीइतनामैपतरीपरदेसीकी

आई ॥ पतरीमेंयुंलिखीकहीथेप्यारीसेजसंवारी ॥ जी  
 क० ॥ ११ ॥ फागणहीनैसहायकरीमेरेपरगंगामाई ॥  
 करताकरताहर्षसवारीपरदेसीकीआई ॥ दासीभेजी  
 सहरमेंसकेसरकीपुड़ीमंगाई ॥ रंगवनायोकेसन्धोपि  
 यासेमैखेलीकरकरचाव ॥ सेजबिछाईहैलमेंआवा  
 जीखेलायेकचोसरकोडाव ॥ गोविंदरामगुरुमुजकूं  
 ग्यानबतायो ॥ तेलीउजिरोकथबारामासियोगायो ॥  
 नरनारी आसूदाखेल्याखूबख्यालमतवारो ॥ १२ ॥

### बारामासियोप्रारंभः

मोयमदनझुलवैसुंदरकुमलावेवालमसेजमें ॥ सुर  
 सतसुमरूगणपतआदभवानीवेदविलास ॥ एकदं  
 तऔरशीसचंद्रमाजगमगजोतप्रकाश ॥ सुरनरमु  
 निजनकरैध्यावनापूरैमनकीआस ॥ १ ॥ लग्यामा  
 सआषाढआजमेरेपियामिलनकीमनमें ॥ धरनीउ  
 मगहुयीहरियालीइंदरगरजैघनमें ॥ पियकाशब्दप  
 पैयोबोलैविरहनमावैतनमें ॥ विरहनमावैतनमेंमा

अलारातिया ॥ केहरलंकीनारजोवनमदमातिया  
 ॥ १ ॥ सावनबारतिव्हारतीजकोरमैपीवसंग  
 नारी ॥ रैनअंधेरीबिजरीचिमकैघटाघमरुरकारी ॥  
 खडीनिहारूवाटपीवकीमैविरहनमतवारी ॥ मैविरह  
 नमतवारीसुंदरकामनी ॥ चिमकैगोरोगातकेजैसे  
 दामनी ॥ २ ॥ भादूइंद्रघणैरोबरसैनदियांनीरन  
 मावै ॥ दादरमोरचकोरवनूमैकोयलशब्दसुनावै ॥  
 बृहकीबूंदलगैतनमांहींपलकनीदनहिंआवै ॥ पल  
 कनीदनहिंआवैनित्तहमेसजी ॥ मैकिणसंगकाटूरैन  
 पियोपरदेशजी ॥ ३ ॥ आस्योजमहेनुमोजको सजी  
 बरसैइमृतधार ॥ स्वातबुदस्यूंमोतीनिपजैकामनमु  
 खसिणगार ॥ कामदेवकायामैब्याप्यौदेखसरदकी  
 भार ॥ देखसरदकीभारकरूकेजीवको ॥ मेरर  
 हैरातदिनध्यानकेसुमरणपीवको ॥ ४ ॥ कातिकका  
 मणदीपमालकालिछमीतणूंतिव्हार ॥ पूजनकरैपी-  
 वसंगतिरियाकरसोलाशिनगार ॥ आईसरदबिन  
 मरदनारकोजीतबछैधरकार ॥ जीतबछेधरकारकेऊ

बीवारणै ॥ मैकरूंवरतअसनानपीवकेकारणै ॥ ५ ॥  
 मंगसरमगनहुयोमनमेरोसुंदरसेजसंवारे ॥ किनसंग  
 बातकरांतनमनकीजाड़ोजुलमगुदारै ॥ जोवनआ  
 णचड़योगिगनारेनहिंकिसीकेसारै ॥ नईकिसीकेसारे  
 समदकीझालहै ॥ मेरापियाबसैपरदेशविगानामा  
 लहै ॥ ६ ॥ पोसमहीनूलागियोसमेरामनमैंघणूंउ  
 छाव ॥ सरदीलागैसोड़मैंसमेराठिरेपियाविनपाव ॥  
 ठंडीलहरबदनमैंखटकैज्यूंवरछीकोघाव ॥ ज्यूंवरछी  
 कोघावबिलम्याशहलमैं ॥ जलविनतड़फूंमीनज्यूंसुं  
 दरसेजमैं ॥ ७ ॥ माघमहीनावसंतपंचमीघरघरउ  
 डतअबीर ॥ करैनारसवभारपीवसंगओड़वसंती  
 चरि ॥ दिनदिनकागउड़ावतिसमेरोसूक्योजायश  
 रीर ॥ सूक्योजायशरीरघणादिनलाइया ॥ कोईपर  
 देशांकीनारकंथविलमाइया ॥ ८ ॥ फागणनारसु  
 व्हागनल्यावेभरकेसरकीझोरी ॥ बाहरभीतरकंथ  
 नदीखैकिणसंगखेलैहोरी ॥ रंगपिचकारीलगैहिये  
 परफिरेहरखतीगोरी ॥ किनसंगखेलैहोरीभरपिच

कारियां ॥ इबघरआवोकंथउडीकैप्यारिया ॥ ९ ॥  
 सरदगईगरमीरुतआईचैतचत्रमनभावै ॥ चंपामर  
 चाकेतकीसकाईभूरारह्यालपटावै ॥ पूजाईसरगोर  
 जासमैनिरणीचित्तलगावै ॥ निरणीचित्तलगावैअर  
 जसुनलीजिये ॥ इबघरआवोकंथढीलनाकीजिये  
 ॥ १० ॥ लग्योमासबैशाखसहेल्योसींचतहैएकबन  
 की ॥ प्रातसमैबड़पीपलपूजूकरूंध्यावनाशिवकी  
 ॥ लगीआसआवनकीमेरैभोतदिनांसैपिवकी ॥  
 भोहोतदिनांसैपिवकीइबघरआयसी ॥ करसोला  
 सिणगारभँवरलपटायसी ॥ ११ ॥ धूपपड़ैधर  
 तीतपैसकाईजेठमासअधकारी ॥ कुलमैसूरजउगी  
 यासपिवसेजपधान्याह्वारी ॥ उमगरहीसुंदरहैलां  
 मैज्यूंकेसरकीक्यारी ॥ ज्यूंकेसरकीक्यारीसेजरंग  
 भारकी॥मानूचतुरसुजानककलीअनारकी ॥ १२ ॥

बारामासियोरजनीको ॥

॥ टेर ॥ साजनबिनरजनीवरससमानजीदिनागिण

गिणकाडूं ॥ चैतचपेलीरायकेतकीखिलरह्याकँवल  
 बसंती ॥ काचीकलीअलीरंगराचीकोयलकेलकरं  
 ती ॥ चतुरनारगलहारहजारीचपलाज्युंझिलकंती॥  
 किरत्यांकोसोझूमखोसाखियनपूजैगोर ॥ बृहनजलै  
 महलअकेलीपीवविनचलैनजोर ॥ भोरभईमुसकल  
 सजनी ॥ सा० ॥ १ ॥ वैसाखांधनकेसरफूलीभंव  
 रबासनालेवै ॥ सरदसुहावैचीरगुलावीगरमझकोला  
 देवै ॥ कामदेवकीनावसखीरीविनप्रीतमकुनखेवै ॥  
 सुगनमनावैगोरडीआखातीजतिव्हार॥मेरादरदकी  
 कोयीनबूजैवेददींभरतार ॥ लिषीसोविधनाटेवै ॥  
 ॥ सा० ॥ २ ॥ जेठमासप्रीषमऋतुआयीकोमलअं  
 गपसीजै ॥ टपकैनूरकुचापरवसेअंगियांकोकसभी-  
 जै॥छायरह्योपरदेशनारकोदिनदिनजोवनछीजै ॥ ध  
 नजोवनगजराजज्युंधूमैरंगरेठान ॥ आंकसद्योनाआ  
 णपियाजीप्रीतमचतरसुजान ॥ चलोचातरगरवीजै  
 ॥ सा० ॥ ३ ॥ लग्योमासआसाडसखीइंदराजाक  
 रीचढायी ॥ सबजरंगप्रश्ववीकूंदीन्यूरुतअपनीदरसा

यी ॥ जराकधीमूंबोलपपैयातुजक्यामिलैभलायी ॥  
 पीवपीवपापीमतकरपंछीजातअज्ञान ॥ जौमेरेहोवै  
 पासआजमैमारुंतीरकवान ॥ आनमुझेक्यारेसतावै  
 ॥ सा० ॥ ४ ॥ सावनसखीझरोखावैठीकामनकंथ  
 निहारै ॥ करसोलासिनगारनारप्रीतमपरजोबनवारै ॥  
 जोबनआनचढ्योगिगनारेनहींकिसीकैसारै ॥ कर  
 पदमैंदीरचरहीसखियनखेलैतीज ॥ आपविनाआ  
 छीनहींलागैधनचतुरंगीबीज ॥ मदननहींकिनकैसारै  
 ॥ सा० ॥ ५ ॥ भादुंडंगगनमैंगरजैनदियांदैतझि  
 कोरा ॥ लगरहीझडीखडीमगजोवूंभीजतहैतनगो  
 रा ॥ साजनबिनासयानहीजावैशंकररिपुकाजोरा ॥  
 घड़ीचैननहींदेतहैरतीकंथबिसराम ॥ नाजिकजीव  
 पीवपरदेसांयाकेलिखीकलाम ॥ शामघरआवोमोरे  
 ॥ सा० ॥ ६ ॥ लग्यामासआश्रयोजपीवकाकबघर  
 होसीआना ॥ सीपसमंद्रामोतीनिपजैअनारकासा  
 दाना ॥ रंगरूपजोबनदिनदसकापिवबिनहोतपुरा  
 ना ॥ पीवपुरानामतकरैफेरनवाकबहोय ॥ लुलरही

लालकवानज्यूसधनदीपककीसीलोय ॥ आवपलदे  
 रनलाना ॥ सा० ॥ ७ ॥ विरधावीतशरदरुतआयी  
 कातिककामसतावै ॥ नरनारीलिछमीजीपूजैहंसहंस  
 हुस्नलुटावै ॥ शीतलसेजपियाविनलागैकोमलतन  
 घवरावै ॥ तुलसीकीसेवाकरीकरांवरतअसनान ॥  
 बरदीज्योपरमेसरीसमेरीअरजसुनोदेकान ॥ पीवमे  
 रोकदधरआवै ॥ सा० ॥ ८ ॥ मंगसिरचावकरैमृग  
 नयनीआवोदिलभरमेरा ॥ दिलकीअगनभुजापरदे  
 शीकछूनविगडैतेरा ॥ तड़फैज्यानमदनकीमातीमुस  
 कलहोतसबेरा ॥ रैनअंधेरीनाकटैव्याकुलहोतपि  
 रान ॥ खड़ीमनाऊंदेवमहलमेंजानतहैभगवान ॥  
 नहींदूजैकूंबेरा ॥ सा० ॥ ९ ॥ पोसदोसकिनकूंदे  
 वुंसजनीकरमनकीगतन्यारी ॥ भूषण्यासनिद्रानहीं  
 आवैकामदेवकीमारी ॥ कोमलज्यानपीवविनतड़फै  
 सरदजरदकरडारी ॥ सरदजरदकरडारदीक्युंकरका  
 डूरात ॥ धड़कधड़कछातीकरैसमेरावोलैवतीसूदां  
 त ॥ कंथधरआवहजारी ॥ सा० ॥ १० ॥ माघव



संतकंथबिनकामणबूजैकोइनदिलकी ॥ सबजचीर  
घरउड़ेअबीरमैंजोवूंबाटसाजनकी ॥ सबसखियांप्री  
तमसंगजावैरुतमानैजोवनकी ॥ धणकाचीकचना  
रहैबदनंगुलाबीरंग ॥ पतियांआयीपीवकीसमेरेदि  
लमैंभयोआनंद ॥ आसअबपूरीतनकी ॥ सा० ॥  
॥ ११ ॥ फागणमासपियाघरआयारंगकीसेजसंवा  
री ॥ चंचलनारहरखतीडोलैजोवनकीमतवारी ॥  
मुखपरमांगनैनविचकाजलभररंगकीपिचकारी ॥ सा  
जनआयाहेसखीसान्यामनकाकाम ॥ किरपालक्ष-  
मीनाथकीसकहैप्रोतप्रल्हादीराम ॥ भावसैआनं  
दकारी ॥ सा० ॥ १२ ॥

सूरजमहिमाकोबारामासियो ॥

॥ टेर ॥ कश्यपसुतसूरजमहिमाबेदनविचथारीहो  
रही ॥ दोहा ॥ चैतमासमैंआदिगदाधरनिरमलज्ञान  
बताया ॥ जगदंबाकीकिरपासेतीज्ञानहिरदैविचछा  
या ॥ गणपतिजीकोसुमरणकरकेशरणगुरुकीआया ॥

सबदेवनकुं व्यायकरहाथजोड़शिरनाय ॥ मंगलकैआ  
 धीनहोयकेसंकटमेढोआय ॥ ढेरकरशब्दसुनाया ॥  
 महिमा० ॥ १ ॥ अतिश्रेष्ठवैशाखमासमेंभानूनामकहा  
 यो ॥ अदितिकेऔतारधारकरसूरजवंशवधायो ॥  
 सबदेवनमेंकलासूरजकीशेषशारदागायो ॥ नारदजी  
 अस्तुतिकरैबीणालेकरहाथ ॥ माघमाससुहावणासवै  
 ऋतुवसंतकेसाथ ॥ शरणथारीमेंआयो ॥ महि० ॥ २ ॥  
 ज्येष्ठमासमेंसूर्यतपतहैधूपपड़तहैभारी ॥ प्रत्यक्षदेवपृ  
 थ्वीकेऊपरपूजतहैनरनारी ॥ श्रावणमासघोड़ाकैऊप  
 ररथकीहैअसवारी ॥ तुमहीजगकेनाथहोसबकेदीन  
 दयाल ॥ मकराकृतकुंडलपनेगलवैजंतीमाल ॥ रूप  
 कीशोभान्यारी ॥ महि० ॥ ३ ॥ साढ़मासमेंवरुणरू  
 पहोयपृथ्वीतृष्णामेटै ॥ दादुरमोरपैयाबोलैबदकां  
 जलमैलेटै ॥ चात्रकअरजकरैसूरजसैकर्मलिख्याकु  
 णमेटै ॥ जैसेतरफैरैनमेंकदीउगैलाभान ॥ दर्शनसैअघ  
 कोटबिनासैदीपैजदभगवान ॥ चित्तकीआसामेटै ॥ म  
 हिमा० ॥ ४ ॥ श्रावणमासमेंइंद्ररूपहोयवर्षाकीनीभा

री ॥ बादलवरसैविजलीचिमकैझड़ीलागरहीन्यारी ॥  
 सहस्रकिरणसैजलकूँशोष्येइबछोड़नकीत्यारी ॥ शं-  
 करजीअस्तुतिकरैब्रह्मावेदउचार ॥ विष्णुरटैनिसदि  
 नजोतुमनैथारीजोतअपार ॥ सृष्टिकेपालनहारी ॥ म  
 हि० ॥ ५ ॥ अतिसुंदरभादूकामहिनाधर्मरूपजबभान ॥  
 वर्षावर्षेनदियांचालैरहैसवायामान ॥ अतीतापजोक  
 रैदिवाकरअरजसुनोदेकान ॥ तुमबिनदूजोकोनहैमे  
 रेनाथमहाराज ॥ सबजुगकेकरतारहोराषोमेरीलाज ॥  
 भगतकेदिलकीजानूं ॥ महि० ॥ ६ ॥ कँवारमासमें  
 स्वातबुंदकीसीपकरतहैआस ॥ चातकजोपुनिपीपी  
 बोलैजलकीलगरहीप्यास ॥ अरजकरांमहाराजसैतो  
 मेढोमनकीत्रास ॥ जगईश्वरकिरपाकरीराषीसबकी  
 लाज ॥ जैसैराषोलाजहमारीसारोक्युंनकाज ॥ ना  
 मसैदुःखबिनासै ॥ महि० ॥ ७ ॥ कातिककृपाभई  
 सूरजकीमनकीपूरीआस ॥ राक्षसदुर्गमहादुष्टनको  
 नित्यकरोतुमनास ॥ साठहजारऋषीश्वरतुमरीस्तुति  
 करतहैंपास ॥ इंद्रादिकसबदेवताओरसबीसंसार ॥

शेषसांवजाकूरटैनिराकारओंकार ॥ जपेसैदुःखविना  
 सै ॥ महि० ॥ ८ ॥ अगहनमासमेंशरदपड़तहैशीत  
 लगतहैभारी ॥ पहलीपूजनकरुंतुमारीभरकरजलकी  
 झारी ॥ सबसैश्रेष्ठआपहोसूरजमहिमाथारीन्यारी ॥  
 सूरजनामसुहावणाभाजियेवारंवार ॥ जोथानैननिश्चै  
 रटैजाकाहोयउधार ॥ जपैचोरासीसारी ॥ महि० ॥  
 ॥ ९ ॥ पोसमासमेंभुसीहोयकरनिर्मलद्रष्टीदीज्यो ॥  
 भक्तजानकैआपदिवाकरमोपरकिरपाकीज्यो ॥ तुम  
 समर्थसबदेवशिरोमणीसबहीनैसुपदीज्यो ॥ वारिजसु  
 नसतपुत्रकैजन्मलियोह्वाराज ॥ तपओरसत्यओधर्म  
 कोगौबिप्रनकेकाज ॥ अरजइतनीसुनलीज्यो ॥ म  
 हि० ॥ १० ॥ माघमासमेंमगनहोयकरसूरजवंशव  
 षानू ॥ कर्णशनिश्चरयमसुग्रीवासूरजपुत्रतुमजानू ॥ य  
 मुनातपतीपुत्रीप्यारीसुतसावर्णिमानू ॥ सूर्यवंशहैअ  
 तिघणोमोसैकह्योनजाय ॥ सूक्ष्मकरकैमैंकह्योशरणतु  
 ह्वारीआय ॥ कन्योहैश्रेष्ठवषानू ॥ महि० ॥ ११ ॥ फा  
 गणमेंकिरपाकरीसूरजतेरामासुवणाया ॥ जोबैकुंठा

निश्चैजासीप्रेमसहितजिनगाया ॥ अष्टसिद्धिनवनि  
धिकेदातामेरेमनतुमभाया ॥ जोगावैसीपैसुनैमनवां  
छितफलदेत ॥ जदतुमतोकिरपाकरोसबकादुखहरले  
त ॥ आपमेरेमनभाया ॥ महि० ॥ १२ ॥ अधिकमास  
मैसेखावाटीमध्यसहरसुषदाई ॥ टीबाबसईनामनग्रको  
अजीतसिंघमहाराई ॥ गोड़बिप्रनमैनामयज्ञदत्तजि  
नयास्तुतिबणाई ॥ गणेशीलालहैनामजिनूकेप्रेमसहि  
तजिनगाई ॥ रसअग्निग्रहचंद्रमैनभजोमासकेमाय ॥  
एकादशिगुरुवारनैपूरणकथाबणाय ॥ सूरजकीस्तु  
तिगाई ॥ महिमावेदनविचथारीहोरही ॥ महि० ॥ १३ ॥

## बारामासियोप्रारंभः ॥

॥ टेर ॥ जसुमतकोजायोतूंक्यूंबिलमायोवैरनकू  
बरी ॥ दोहा ॥ आयोमासअसाडसखासबऊधोकूंसम  
झायो ॥ तुमहोसखास्यामसुंदरकूंयोसंदेसपुंचायो ॥ ज  
लदीकरोकूंचमथुराकूंकहांमतदेरलगायो ॥ करपा  
तीदीज्योकुटनीकेजिनमोहनबिलमायो ॥ जसुमत०

॥१॥ आयोसावणमासदामनीधनमैंचिमकतजोरारैन  
अंधेरीकरैगरजनाकोयलदारदुरमोर ॥ तीज्यांतनूति  
व्हारनारसबझूलतरेसमडोर। मोयोचेरीकंसकीतोह्या  
रोनटवरनंदकिसोर ॥ जसुमत० ॥२॥ लगियोभादू  
संगनहिंजादूअबतोदयाविचार ॥ करीचढाईइंदरा  
जानेबरसैमूसलधार ॥ लगतबूंदज्युंवानवदनमैंखट  
कतहैज्यूसार। बृजबनितासवविरहनीतोयेबृजमोहन  
करतार। जसुमत० ॥३॥ लग्योकुँवारविचारदिलूमैंवि  
लखतहैंसवनार ॥ भूखप्यासऔरसुधबुधविसरीमात  
पितासंसार ॥ विरहपियामोहनवियोगकीपलकनछाँ  
ड़तलार ॥ दरसदियेविनस्यामवामसवबूड़रहीमज  
धार ॥ जसु० ॥४॥ कातिकमैंकामनसवहरखैदीपमाल  
कीरात ॥ लिछमीकीपूजाकरैतोसवलेप्रीतमकूँसात ॥  
मधुकरछाँड़केतकीभूल्योजाविलम्योवनपात ॥ घेतडं  
फेविनश्यामहमारीकोइयनबूजैवात ॥ जसु० ॥५॥ अ  
गहनमासतासुहितगोपीमंजतजमुनातीर ॥ करैउपा  
सत्रासदेतनकूँमनकूँव्यापीपीर ॥ स्यामवियोगजोगत

पसादेंसबगोकुलकीहीर॥रहीतरसद्योदरसपरसकैसी  
 तलकरोसरीर॥जसु०॥६॥लग्योमहीनोपोसपिया  
 रोमोहलियोतूंचेरी॥चढियोलसकरसीतमीतबिन  
 आनचहूंदिसघेरी॥कंपैगातनाथनैजलदीभेजमती  
 करदेरी॥होयचैनमुखकटैरैनसुनुबैनबैनमुखहेरी॥  
 जसु०॥७॥लग्योमहीनोमाहनारसबचीरबसंतीधारै॥  
 ह्येरहीतरसबिनदरससरसप्रीतमकीवाटनिहारै॥लि  
 योरयाममथुरामैंथामयोक्बकौबैरनिकारै॥कुटलक  
 ठोरकंसकीदासीकछूदयानहींथारै॥जसु०॥८॥फागु  
 णफागरच्योबृंदावनउड़तअबीरगुलाल॥अगरकपूर  
 कुंकुमाकेसरभररहेरंगकेताल॥बिनप्राणनाथकुणसु  
 णैवातह्यारैतनकाबुराहवाल॥तूकरैरंगमोहनकैसंग  
 ह्यारेखटकतछातीसाल॥जसु०॥९॥आयोमासचैत  
 कोधरनीफूलरहीचहूंऔर॥फिरैहरखतीनारपियासं  
 गपूजतहैगणगोर॥तड़फैजलबिनमाछलीतोमैज्युंबि  
 ननंदकिसोर॥उठैलहरकरमहरनारमतहोसायबकी  
 चोर॥जसुम०॥१०॥लग्योमासबैसाखआनगरमी

सैजीवघबरायो ॥ हंसछोड़मुक्ताअबीजकूंचुगनजुवा  
रीध्यायो ॥ सिंघदोसतीकरीस्यालसैरतीनहींसरमा  
यो ॥ लगीलाजबृजराजकाजकेकुवरीकंथकहायो ॥  
॥ जसु० ॥ ११ ॥ लग्यो जेठज्वालातपतीरहिधूपधरन  
पैछाय ॥ चीरपीतनकूंकरोतोह्यारोवदनरह्योकुम  
लाय ॥ नोसतसहस्रगोपिकावृजकीरहीनैनझडला  
य ॥ चलतपसीनोअंगसंगहोयस्यामतवीदुखजाय ॥  
जसु० ॥ १२ ॥ अधिकमासआयोअसाड़इवादिलमैंकियो  
बिचारा ॥ लिखपतियांदीनीऊधोकूंकहीभोतसमझार ॥  
आखरकानप्राणहैह्यारोभोगपांचदिननार ॥ शि  
वप्रसादयहकरैबीनतीआवोसिरजनहार ॥ जसु० ॥ १३ ॥

अथ द्रौपदीकोबारामासियो ॥

परतंग्याराखोजादूपतिगरुडासनचड़ध्याइयो ॥  
॥ दोहा ॥ सारदमातचैतचितध्याऊंपूरणब्रह्ममुरारी ॥  
अजामेलगृद्धगणिकात्यारीगोतमऋषिकीनारी ॥ हा  
थजोड़केकरूंजोबीनतीराखोलाजहमारी ॥ दोऊक



रजोब्ज्यांवीनऊंजादुकुलबीचदिनेस ॥ सनकादिकना  
 रदभजैतोथानैरैरातदिनसेस ॥ भिलणीअधमउधा  
 री ॥ जादूपति ॥ १ ॥ लग्योमासबैसाखेबेदकहैतुम  
 होपतितउधारण ॥ जलडूबतगजराजउवाच्योबिड  
 दआपणेकारण ॥ इबकैडुपदसुताकीबरियांआवोजी  
 गिरवरधारण ॥ कौरवसुतकीनीसभाकुमतिहदैधरि  
 लीन ॥ द्यूतकरमकरहड्योराजमेरोपांचूपतिबसकीन  
 ॥ पूंचियोभगतांकारण ॥ जादूपति ॥ २ ॥ जेठ  
 हाथकरजौडकहूंमैमहामुनियनकीदासी ॥ भीसमपि  
 तामहाब्रह्मग्यानीदुष्टसभामतिनासी ॥ लोचनहीनसु  
 णैचुपमारयांज्युंबकनदीनिवासी ॥ द्रोणाचारजमति  
 घटीबिदुरसुणैधरध्यान ॥ किरपाचारजकुलगुरुतो  
 जांकीषडगहोयगईम्यान ॥ अरजसुणियोअबनासी ॥  
 जादूपति ॥ ३ ॥ आसाडधनघटादुष्टनकीआईनांवक  
 हुंसबहीका ॥ चिंडालचौकडीदुर्योधनकीमंत्रीकरणस  
 रीका ॥ खोटाकामरच्याइनशकुनीकरदियापांडव  
 फीका ॥ हेकरुणानिधिबीनतीसुणियोचित्तलगाय ॥ दुष्ट

दुसासनचीरउतारैकरियोबेगसहाय॥रूपधरआवोह  
 रीका ॥ जादू० ॥ ४॥ श्रावणनाथहाथकरटेरूसुणियो  
 जादुकुलनायक ॥ घनज्यंगरजतदुष्टदुसासनलगतव  
 चनजनुसायक ॥ राखोलाजआजअबलाकीतुमसा  
 अथसबलायक ॥ श्रवणपूरपुरतासुतातासुपतीजगदी  
 स ॥ बेगपधारोसांवरातोह्यानैनिश्रोविसवावीस ॥  
 आपभगतांवरदायक॥जादू ० ॥ ५ ॥ भादूनदीउम  
 गहिबडोधननैननीरझरीलाई ॥ हेगोविंदसरनमैतेरी  
 मनेनिराधारछिटकाई ॥ सकलसभामुखंनीचोकर  
 लियोभूमीसुरतलगाई ॥ सकलसभचित्रामकीज्युं  
 लिखदीतसबीर ॥ कुंनसुणैकिनसैकहूंतोयोदुष्टउता  
 रतचीर ॥ स्यामतोयनिद्राआई ॥ जादू० ॥ ६॥ कुं  
 वारकठिनदिलकियोसांवरेकिसविदसंकटजासी ॥  
 बिरदविचारअरजसुनियोमैंजादूपतिकीदासी ॥ कु  
 बज्याकुटिलकंसकीचेरीकीनीभगतजरासी ॥ सीदी  
 करदीकूबरीनेकलगायोहाथ ॥ तनकप्रीतकेकारणैतो  
 वाकेधरांपधारेनाथ॥जलदीआवोत्रजवासी॥जादू०॥

॥७॥ कर्तिककृपाकरो गिरधारी मेरा कर जसारो ॥ क  
पटसभा बिचके इनहीं बौलै मन कै मांय बिचारो ॥ ध्रुवप  
हलाद बिभीशण त्यार थाइ बजीत्यो जसमतहारो ॥ दो  
उअक्षर चढ़तीन पैतीन सुणे जद च्यार ॥ दोउ चढ़ बैठे  
च्यार पै तोइ बतीन पाच पै त्यारा ॥ अरज इतनी उरधारो ॥  
जादू० ॥ ८॥ अगहन आस लगी दिल भीतर अब तो गिर  
धर आवो ॥ आसा मुखी आस कर ध्यावै मतना जी लल  
चावो ॥ बिड़द बिचार भगत पतरा खोनाह कलोग हं  
सावो ॥ कर्दम सुतना तीबधू त्यारी चरन छुवाय ॥ आवो  
हुपद सुताहित कारण कहाँ छिप बैठे जाय ॥ कृष्ण मोय  
सुरत दिखावो ॥ जा० ॥ ९॥ पोसरोस दिल माय विसा  
रूं पूरव पाप कुमाया ॥ चवदा भवन येक पतिसब कावेद  
पुराण न गाया ॥ पंचानन ओतार पांच पति मोय सुगुणि  
नै पाया ॥ नारी धरम कै कारणै येक बसन ह्वाराज ॥ रा  
खेलाज आज बनवारी आपस कल सिर ताज ॥ अहोग  
जकाज सिधाया ॥ जादू० ॥ १०॥ माघमगन मन गद  
गद बानी सुगन होत मोय नीका ॥ माया जाल फँस्यो जु

गसारोकोईनायकिसीका ॥ नेतिनेतिनिगमागमगा  
 वैसाचानावहरीका ॥ दुनियांमतलवस्वारथीप्रीतन  
 जाणैकोय ॥ साचेदिलसायबभजैतोवाकेदुखकायेक  
 होय ॥ मिटावोसंकटजीका ॥ जा० ॥ ११ ॥ फागण  
 मासआसगिरिधरकीआंखफरूकैवाई ॥ टेरगईजददृ  
 पदसुताकीठेठद्वारकाताई ॥ रुकमणकैसंगचोपडखे  
 लैकृष्णमहलकैमाई ॥ करस्यूपासाडालतांमुखसैक  
 ह्योअनंत ॥ भीमसुताअरजीकरैतोह्यानैभेदवतावो  
 कंथ ॥ पासमैअनंतनाई ॥ जादू० ॥ १२ ॥ मासतेरवै  
 कालीमातामोयभरोसोथारो ॥ कुंजलालवजलालल  
 डावोसीखोसुनोजीबिचारो ॥ ऊदोजोसीप्रेममगनकहै  
 सुणियूंवचनहमारो ॥ कलकत्तेकैवीचमैतेरामासियो  
 बुणाय ॥ झूथोजोशीप्रेममगनसैगाताभाववताय ॥  
 स्याममेराकारजसारो ॥ जादूपतिगरुड़ा ॥ १३ ॥

छोटाकंथकीलावणी.

॥ टेर ॥ कामदेवकीप्यारीविधनामैविरहनअल

सायरही ॥ छोटाकंथकीलैरलगादईलिखतीलिख  
 तीभूलगई ॥ मैंतोबरसपचीसलियामेराछोटाकंथसा  
 डेबारा ॥ घरकैबामणकामकियानहींमाईबापकाक  
 छुसारा ॥ जबसेतीमेरीहुईसगाईजबसेतीमोयनहींबे  
 रा ॥ पंडितसाहोकाडबस्तपांचैकारचदीन्याफेरा ॥  
 बनाभ्रातव्यानैकूंआयेबड़ेबड़ेसाहूकारा ॥ आनंदकरे  
 उच्छाहव्याहमैंमायाबांटीअप्रंपारा ॥ सखीसहेलीनिर  
 खणआईजदफेराहोनेलाग्या ॥ हथलेवैमैंहाथपकड़  
 लियोछोटाकंथरौनैलाग्या ॥ किसकूंदेऊंदोससपीमे  
 रैकरमहीनकीकलमभई ॥ छोटा० ॥ १॥ फेराद्याक  
 रकरीलारहुवामाईबापसबनिरयाला ॥ मैंआनसा  
 सकापैरदावरईबैठभवनमेमैंबाला ॥ सासड़मनमैंहर  
 पकियोमोयेभोतभोतआसीसदई ॥ मैंमनमैंयूंकहीसा  
 सतूनिपटबांझड़ीक्यूनरही ॥ मैंबाबलघरकन्याकँवा  
 रीमिलताऔरसवायाजी ॥ हीराकैगलपथ्थरबांधकर  
 धारामैंसरकायाजी ॥ पांचसातदिनदेकैबीचमैंकदेक  
 देसेजांआवै ॥ मोयहांयेहांयेक्यूंक्यूंक्यूंकहकरमुजकूँ

बतलावै ॥ सुणसुणकरयेवातसखीमैंमनहीमनमौंसिल  
 गरही ॥ छो. ॥ २ ॥ सिरेअटारीसुंदरमैंउसअंदरसेज  
 विछालीनी ॥ सीसीभरदोअत्तरगुलावकीसेजनमैं  
 छिड़कालीनी ॥ हुयाबखतसोनेकाकंथभेराआनपि  
 लंगपरबैठगया ॥ नांवलियाजदमोगकरणकाजदगो  
 दीमैंलेटगया ॥ मीठीमीठीवातसखीरीप्रीतमसुजकूं  
 बतलावै ॥ कछूकछूसरमावैउसकेकछूकछूमनमैंआ  
 वै ॥ पकड़कैदोन्यूहाथसखीमैंछातीउपरगेरलिया ॥  
 अनकीमनभैरहीसखीउनअपणामुखड़ाफेरलिया ॥  
 सारीरैनगईवीतसखीउनहायकहीयेननायकही ॥  
 छो. ॥ ३ ॥ एकपापमैंकियासखीरीतिरियाजूणक  
 रतारकरी ॥ दूजापापसूंसुजकूंभगवतछोटाकंथको  
 नारकरी ॥ बारोजोवनमानैनाईअवएँकोकेहोयदई ॥  
 हीनपुरसकीलारलगादईदूजेघरसैंखोयदई ॥ सखी  
 सहेलीदोरजिठाणीतानामोरैयूंकहती ॥ छोटाकंथ  
 कीनारसेजमैसोकरयूकीयूरहती ॥ एकरोजमैंपकड़  
 सैजमैंछोटाकंथकूधमकाया ॥ तेरीमेरीकदकीवैरता

होबूदातेरापियाहोजुवानपरी ॥ चतुरनारनैलईमान  
येकहीउजरीबातसही ॥ छे० ॥ ६ ॥

## पणिहारीकीलावणी प्रा० ॥

॥टेरा॥पनघटकैऊपरखड़ीपूछतीनारी॥तेरीगईसु  
रतकुमलायधूपकीमारी ॥ तेराकिदरसेआनाहुवाकि  
दरहुआजानी ॥ यागरमपड़तअतिधूपसूरतकुमला-  
नी॥पीपलकीछायावैठमेरेदिलज्यानी ॥ मैकाडूठंडा  
डोलपीवोतुमपानी ॥ घड़ीदोयवैठज्याथाकऊतरज्या  
थारी॥तेरी०॥१॥ परदेसीकहैसुणयारचतुरतुमनारी॥  
तैनेपेंचादोयसमसेरसारकीमारी ॥ मेरेलगीकलेजे  
चोटजषमहुआभारी ॥ कोविनवतलायांनहीहोणकी  
थारी ॥ तूमेरीजानकूंघचासरणमैथारी ॥ तेरी०॥२॥  
तिरियाकहतीवेअदवसेनहींवतलाना ॥ मेरीछोटीन  
घदललैरभिरचजूंजाना ॥ घरघड़ाउतारूंल्यूंगीदरद  
काम्याना ॥ तुमवैदवनोमेरेघरकीतरफकूंआना ॥ ऊं  
चादरवाजामहलजगाहैभारी ॥ ते० ॥ ३ ॥ घरघ

झाउतारादरदनाकपरधरती ॥ सासूपुछैबहूकोनद  
 रदसैमरती॥मेरेउठाकलेजैदरदजियानीसरती ॥ आ  
 तड़फड़ककरमरूपिलंगपरपड़ती ॥ कोईबैदबुलावो  
 ज्यानबचैनहींहारी ॥ तेरी० ॥ ४॥ सासूकहतीहैबे  
 टाजीतुमआवो॥तेरीबहूकेऊठ्योदरदबड़ोपिस्तावो॥  
 तुमदेरकरोमतजलदीसहरकूंजावो ॥ येकअच्छाशा  
 नाबैददूंदकरल्यावो॥ईनेअच्छीकरदेइनामदूंगाभारी  
 ॥तेरी० ॥ ५॥ योघरबाहरज्योनिसरसहरकूंजाता ॥  
 आगेपणघटवालायारवोहीमिलज्याता ॥ योघरबाह  
 रकाभेदउसेवतलाता ॥ मेरीबहुकूंअच्छीकरदेइनाम  
 पाता॥उंनेअच्छीकरदेइनामदूंगाभारी॥ तेरी० ॥ ६॥  
 येपरदेसीनेअपनेघरकूंल्याया ॥ अपनीज्योबहुकाहा  
 थउसेदिपलाया ॥ येकहैपरदेसीसबीभेदहमपाया ॥  
 दोघड़ीमैंअच्छीकरूंबैदकाजाया ॥ इनअच्छीकरदूं  
 इनामल्युंगाभारी ॥ तेरी० ॥ ७॥ बाछोटीनणदधर  
 धीरसुरतपैछानी ॥ ओपणघटवालामरदवोहीसहला  
 नी॥भाबीकैइनकैआंखलगीमैंजानी ॥ उठमिललेभा



बीआयातेरासहलानी ॥ चलमैंयहांकिसीकूंवातक  
 हूंनहींथारी ॥ तेरी० ॥ ८ ॥ परदेसीयारअवकर  
 ज्यामनकाचाया ॥ जराऊंचीमैड़ीदेखापिलंगविछवा  
 या ॥ चोफेरपिलंगकैपड़दाखूवखिंचाया ॥ उसपड़  
 देमैंपरदेसिनेबुलवाया ॥ टुकधीरजधरदिलज्यानद  
 वाद्यूंथारी ॥ तेरी० ॥ ९ ॥ उसपड़देमैंपरदेसीनेरं  
 गमाणा ॥ पणउनदोऊकाभेदकोइनहींजाणा ॥ ति  
 रियानहींकिसकीकहारंककहाराणा ॥ येपरदेसीकी  
 श्रीतजीवकाजाणा ॥ तिरियाकहतीसुणजखममीट  
 ईथारी ॥ तेरी. ॥ १० ॥ येसायरवातसांभरकेक  
 हीयेसारी ॥ पणसांभरसहरतोसदावसोगुलझारी ॥  
 येखुसीरहोसांभरकानरओरनारी ॥ गणघनाघनाके  
 साकंबररषवारी ॥ कहघनाघनाजगदंबेसरणमैंथारी  
 ॥ तेरीगईसुरतकुमलायधूपकीमारी ॥ ११ ॥ सं. ॥

तुकनगिरकीलावणीप्रारंभः ॥

मतजावोजीपियापातरकेपड़ोगेफंदमें ॥ होजाय

गरमकारोगसमजलेवोमनमें ॥ तेरीबालपनेकीज्वा  
नीहायकुमलावै॥क्याकरूंसजनपणमुजेनींदनहिंआ  
वै॥अन्नपाणीलागैजहेरनाजनहिंभावै ॥ मेरेपाकेदो  
यअनारआमकुणषावै ॥तुमजावोगेपातरकेघरमेंधूल  
हैधनमें ॥होजाय ॥ १॥ येहैपैसेकीप्रीतमेरेदिलज्या  
नी ॥ कोईलोकसुनैंगेबातरहैनहिंछानी ॥ तेरेमनमें  
कैसीबातकहोनादानी ॥ येजोबनहैदिनचारसेजपो  
हडौनी ॥मैंसोसोबारसमझाऊंचित्तरपघरमें ॥ होजा  
य० ॥ २॥ येमारैनैनकाबाणतुजे समझावै ॥ पैसेकै  
पातरसोसोसोगनखावै ॥ जिनकाधनहोवेहरामउसी  
घरजावै ॥ मैंसोसोबारसमझाऊंसरमनहिंआवै ॥ मेरा  
लिख्याविधातालेपआई इसघरमें ॥ होजाय० ॥ ३ ॥  
येतुकनगीरमहाराजजिनूँकाकहना ॥ क्याबजैचंग  
चौतालदिषणमेंरहना ॥ येजसुलालकेछंदअजबना  
गीना ॥ येरांडजातसैमोबतकदेनहिंकरणा ॥ यूँ  
कहैकिरतमुख्यालमतीपड़फंदमै ॥ होजाय० ॥ ४ ॥

## लावणीसेठाणीकीप्रारंभः

॥टेरा॥मैंतजआईमाईबापसुणोप्रीतमकैताईजी॥  
 धणछांडगयेपरदेशपियाजावसेममाईजी॥मैंतड़फूसा  
 रीरैनसेजमैंकामसतावै॥मैंदिनकूंउड़ाऊंकागकवीवा  
 लमधारआवै॥यहभयोइस्कदरियावन्यावकुनपारलं  
 घावे॥नादईविधातापंखउड़योमोसेनहिंजावे॥पिवव  
 सैंसमंदरपारमिलनकैसैवनआवे॥मेरेलगीविरहकी  
 आगपियाबिनकूनभुजावे॥मेरेप्रानपियाकेदेसअन्न  
 पानीनहिंभावे॥मैंसुणीकंथकीवातनारघालीघरमाई  
 ॥१॥मेरेमनमैऐसीआवैअवीजोगनवनजाऊं॥मैंभग  
 वांकरल्यूंभेसअंगविचखाखरमांऊं॥मैंउडूंपियाकेदेश  
 द्वारपरधूनीजलाऊं॥मैंमृगछालाकासुन्दरआसनतले  
 बिछाऊं॥मैंकोईरीतसेअपनेपियाकूपसबुलाऊं॥मैंदेख  
 सूरतबालमकीहँसहँसगलैलगाऊं॥मैंकोडीधजसाहू  
 कारकीलड़कीभऊकुहाऊं॥क्याकरूंजगतसैडरूंअवी  
 जाअलखजगाऊं॥मैंसुणीकंथकीवात०॥२॥नामा  
 ईबापकूदोशदईमोयवडोठिकाने॥सुखलिख्याकरम

काहोयसबीयाबेदबखाने ॥ लिखदियाबिधाताअंक  
 होयआंकापरवाने॥मेरीचडीजवानीछांडपियाजीगये  
 कुमाने॥मेरोजोबनअलौजायकूणसेजारंगमाने॥मेरे  
 बहैनैनसेनीरतालभरगयेसिराने॥नणदलकूंभेजीसा  
 समहलमैंआईजगाने ॥ मेरादेखबदनकाहालहोस  
 नारह्याठिकाने ॥ धण. ॥३॥ मैंकियाअगाडीपापजू  
 णतिरियाकीपाई ॥ मोयपरदेशीकीसुणोबिधाताकरी  
 लुगाई ॥ मोयछांडगयेपरदेशपीवकीनीचतुराई ॥ क  
 रछैहैनाकोकोलफेरनहींसुरतदिखाई ॥ मैंधोखेमांई  
 सुनोउमरसबयूँईगुमाई । मैंइसबिददुबलीभईपियामो  
 कूँछिटकाई ॥ याझालीराभकीजोडकलासबकेमनभा  
 ई ॥ दुसमनकैचेराऊपरतोजाफिरगईशाई॥धण०॥४॥

## तपसीकीलावणी ॥

मैंदेख्यातपसीएकसुनोरीबेणासुनोरीबेणा ॥ मैं  
 होऊंगीबैरागणआजलुटादेऊंगैणा ॥ एकभस्मीसो  
 है अंगजटासिरभारी ॥ एकचेलाउसकेसंगबडाअधि

कारी ॥ वोबोलैमुखसैराभसुणैनरनारी ॥ मैधरसैनिक  
 लीवाहरविरहकीमारी ॥ ह्यारीसासलडैधरवीचझग  
 डकरहारी ॥ ह्यारोजियाधरैनाधीरजोवनमतवारी ॥  
 अनपाणीलागैजहरनीदनहिनैणा ॥ मैहोऊंगीवै० ॥  
 ॥ १ ॥ मैतजूंसोलासिणगारसालडूसाला ॥ मैभस्मी  
 रमाऊअंगगलेसृगछाला ॥ मैतजदेऊंकंकणपनाहिरा  
 औरलाला ॥ मैतीखेतिलकवनायहाथलेउमाला ॥  
 मैकसूलाललंगोटवालसिरकाला ॥ मैजायजमुना  
 केतीरजगाऊज्वाला ॥ मैतजूंमहलमकानजंगलकार  
 हणा ॥ मैहोऊंगीवै० ॥ २ ॥ मैटूटूवारामासरातऔ  
 रदिनमै ॥ मैधूपगिणूनहिंशीतफिरूसववनमै ॥ मैटूडे  
 आवूकैपहाडअरेवनवनमै ॥ ज्यांवडीगुफाघनघोरमि  
 लानहिउनमै ॥ कहांछिपकरबैठ्याजायलगागेसैना ॥  
 मैहोऊंगीवै० ॥ ३ ॥ मैकुलकीछोडीलाजविहरकीमारी ॥  
 मेरेलग्नाप्रीतकावाणकरूंमैक्यारी ॥ मैपूजूंपंडित  
 वेदऔरब्रह्मचारी ॥ ज्यहांजोगीजंगमनाथवडेदंडधा  
 री ॥ मैपडीइस्ककेमांयकरैकुणन्यारी ॥ मैकरूंलाख

बखसीसमिलेजटाधारी ॥ एकलेनरसिंधकानावमो  
तीकाकहणा ॥ मैंहोऊंगीबै० ॥ ४ ॥

## द्रोपदीकीलावणीप्रारंभः ॥

मेरीआजलाजमहाराजगईतनसारी ॥ राखोपतिअ  
पनेहाथनाथबनवारी ॥ अतिअधमनाथदुश्शासनबं  
शकठोरी ॥ जिनपकरेहमारेकेशनाथबरजोरी ॥ लग  
योकोखनपासचीरखैंचोरी ॥ नहिंकरेकछूवहकानस  
भाकीओरी ॥ कहैदुर्योधनखलबैठजांवमेरीनारी ॥  
राखो०॥ १ ॥ तबकहैद्रौपदीबोलोदुष्टसभारी ॥ मिटजै  
हैतेरीराजपाटसबसारी ॥ सुनिहुपदसुताकेबचनअ  
धमअतिभारी ॥ कहीदुसासनलेवोनाचीरउतारी ॥  
करखैंचतमेरोचीरलाजगईसारी ॥ राखो० ॥ २ ॥ कीनी  
करुनानिधनाथकरनैकानी ॥ नाद्रोनाचार्यजीकछु  
गिलानउरमानी ॥ मोयनाथभीष्मबतायकहीपहि  
चानी ॥ देखैंठाढ़ेनाकहैंधर्मकीबानी ॥ करुनानिधान  
भगवानभक्तहितकारी ॥ राखो० ॥ ३ ॥ प्रल्हाद

काजनरसिंहरूपप्रभुधारी ॥ छिनमैहरनाकुशअसुर  
 नाथसिंहारी ॥ तुमअजामीलमोरध्वजपीपातारी ॥ लै  
 केमथुराअवतारकंसकोमारी ॥ अवकहांगयेमहारा  
 जहमारीवारी ॥ राखो० ॥ ४ ॥ सुनिकेपुकारभगवानभ  
 क्तहितकारी ॥ प्रभुभयेचीरमैआनिप्रगटवनवारी ॥  
 बाढोवोवेपरमानचीरअतिभारी ॥ हारादुःसासनदुष्ट  
 बीरबसकारी ॥ करुणानिधानभगवानविपतप्रभुटा  
 री ॥ राखो० ॥ ५ ॥ कसवेकुतलुपुरखूबअमलदारी  
 है ॥ पंडितप्रशादपितुअदलआजभारीहै ॥ वंदिश  
 द्वारिकाप्रशादकलमजारीहै ॥ करसेंप्रभुटारीविपत  
 नाथगिरधारी ॥ राखो० ॥ ६ ॥

## लावणी वसंतकीरंगतलंगडी.

॥ टेर ॥ ॥ इसवनकेदरम्यानविलकरहीज्यानहमा  
 रीयेकखरी ॥ कहारूपविछडगयाआनमोयवसंतमै  
 क्याविपतपरी ॥ अव्वलमैएकलग्यादागमातास्यूं  
 बिछोवारामकिया ॥ बनोबाससहनेकाहमारेसागेमो

सीकामकिया॥ फिरहमरूपवसंतभ्रातआयाइसबनमें  
 आरामकिया ॥ मोयसरपडस्याजदछोड़गयाभाईनि  
 ष्टकलामकिया ॥ फेरगोरजामाताइमृतप्यालासिंभु-  
 स्यामादिया ॥ सरजीवनकरगयेमहरकरफेरहमैवरदा  
 नदिया॥ सैरा॥ फिरवहास्थूंसहरमिसरकाकिनारामैलि  
 या ॥ पैराबीलगताथावहांमोयअंदरनहींजानेदिया॥  
 फिररातकूंडेराहमाराबारजंगलमैदिया ॥ वहांसिंग  
 आयाएकउसकामारमैटुकड़ाकिया ॥ फिरकोतवा  
 लकूंहुईखबरआयापासहमारेउसीघरी ॥ कहा॥१॥सिं  
 गकूंमान्यासुन्याजबीउसकोतवालकेखुसीभई ॥ मो  
 यगेरकैदमैंआपराजापाजायइनामलई ॥ इतनेमैंएक  
 सोदागरराजासूंआनकेअर्जकही ॥ मेराझाजअटाकि  
 यादेवोबलमिनखकीतुमरीलागसही ॥ कोतवालमेरी  
 कायाकूंउससोदागरकेपेसदई॥सोदागरराजीहोगया  
 भेटदईमाहाराजसई ॥ सैर ॥ उससोदागरकूंमैंकहीमो  
 यमारमतसिरताजजी॥सिवजीकामोयवरदानहैचल  
 ज्यासीतुमराझाजजी ॥ मैंफेरटलादियाझाजकेवाच



ल्याभाजूंभाजजी ॥ पुत्तरकन्यामोयधर्मकाउनदेखके  
 अंदाजजी ॥ मोयसोदागरलड़काकरकेराख्यावातक  
 हृदईखरी ॥ कहा ॥ २ ॥ सोदागरकरपुत्रमोयदरियां  
 वपारलेध्यायाजी ॥ झाजनगरीकेरावकीपुत्रीमोय  
 व्याल्यायाजी ॥ सुंदरसुघड़मिलीसहजादीभगवतमे  
 लमिलायाजी ॥ आतूंकिकथाकामैंउनकूंसारहालसु  
 नायाजी ॥ सोदागरमेरीनारकूंतकफिरमनमैंपापउठा  
 याजी ॥ बहूतैसागरमैंमेरेकूंपापीधक्काद्यायाजी ॥ मैर ॥  
 सोदागरकरकेपापमोयसागरकेमांडलवादिया ॥ वो  
 लेकेउसमेरीनारनेमिसरसहरमैंजादिया ॥ सिंभूकरी  
 किरपामोयबहांतखताएकभिजादिया ॥ मैवैठउसप  
 रसहरमिसरकाकिनाराजालिया ॥ मैवहास्युंएकमा  
 लिनकेघररहामहरकरतारकरी ॥ कहा ॥ ३ ॥ भग  
 वतकीकिरपास्युंसहरमिसरमैंहमसवआनरिया ॥ न  
 हींखबरकिसीकूंआपकरतारहीमेलमिलायदिया ॥ मै  
 तोरहाएकघरमालणकेभाईवहांकाराजकिया ॥ सो  
 दागरलेकरआयअपनेघरमैंबिसरायलिया ॥ सोदागर

नैपापबिचान्याराणीकातोजरैजिया ॥ दुखसंकटमे  
 टसीआनभगवानकरीहैमोपैदया ॥ सैर ॥ स्व  
 बरकोईकूनहींदाताकायेसबरव्यालजी ॥ संजोगआ  
 पमिलायसीभगवानकरप्रतपालजी ॥ गुरुगोविंदरा  
 ममेध्यासबमेराजंजालजी ॥ स्योबक्सजीगुरदेवपा  
 लईप्रहटीकीचालजी ॥ तेलीकहैउजीरकरीउसबस  
 तऊपरमहरहरी ॥ ४ ॥ कहा० ॥

## लावणीराजाचंदकी रंगतखडी ॥

करताकरैसोहोयपलकमैंओरदूजेकोचलैनवल ॥  
 कहैचंदकरतासूंडरियेकरतनलावैधरीऔरपल ॥ पल  
 मैंपूनघणेरीचालैपलमैंपचाहलेनदल ॥ पलमैंमहल  
 मालियाकरदेपलमैंकरदेटीवाथल ॥ पलमैंकूपत  
 लावसुकादेपलमैंकरदेजलहीजल ॥ पलमैंसनैभी  
 खमंगादेजिनकेलावरलसकरदल ॥ ओहैऐसासर्ज  
 नहारा॥बाकीजगमगजोतअपारा ॥ संगराणीदोय  
 पुत्रहमारा ॥ मैलेकरसंगसिधारा ॥ अंजलपाणीम

नीहुयाजदपलमैसहरसैगकानिकल ॥ १ ॥ कहै० ॥  
 पलमैजोसठपलटनटालैपलमैसैरकेसांकलगल ॥ प  
 लमैसफाकरैपरबतकूपलमैदेषेचलतेहल ॥ पलमै  
 चोरनकेधनहोवे पलमैकटैउसीकागल ॥ पलमैधरसूं  
 बाहरकाड़ेजैसेकाड़ेराजानल ॥ अबनलकूंदियोकद  
 वाई ॥ वैनदसावोदसाआई ॥ बाकीराणीदेईछुटवा  
 ॥ उनपासूंभीषमगाई ॥ पड़गयोकष्टदृष्टजवआई ॥  
 पलमैकिसमतगईउथल ॥ कहैचंद० ॥ २ ॥ वावनरू  
 पध्यारेभगवतयानेदानदियोजदराजावल ॥ सुकरा  
 चारजबड़योनालमैबिगाड़ीजिनकीसिकल ॥ प  
 लमैआंखफुड़ाकैनीकल्योजिनकूँउपजीनहींअकल ॥  
 पलमैखोदियोरूपविप्रकोदेपमिसलकूँहंसीसकल ॥  
 सकलकूँहासीआई ॥ क्यूँजाकेआंपफुड़ाई ॥ राजाव  
 लीकीकरीसहाई ॥ भगवतकूँनइसुहाई ॥ असलकूँ  
 कमसलकरैपलकमैकमसलकूँफिरकरैअसल ॥ कहै  
 चंद० ॥ ३ ॥ पलमैरूपनरसिंधध्यारकैपलमैपंभसूंपडा  
 उछल ॥ हिरनाकुसकोउद्रफाड़कैकाड़योभगवतआ

योपलमैनिकल ॥ पलमैभगतप्रह्लादउबाच्योपलमै  
होलकागईजलबल ॥ जिनकेसनमुषसमरथदाताप  
लमैसहायकरीलगीनपल ॥ जाकेतावनीड़ेआता ॥  
वाकीभगवतभीड़कराता ॥ दरजीगोविंदरामकथा  
गाता ॥ मुरसदकूंसीसनिवाता ॥ सबगुनियनकोचा  
करहूंमैसुनोसायरोमेरीगल ॥ कहैचंद० ॥ ४ ॥

## लावणी पानीमेंपुतलीलडनेकी ॥

पानीमेंपुतलीलड़ेभेदनापावे ॥ कोईसच्चागुरुका  
चेलाखोलछंदगावे ॥ मच्छरनेहाथीमाराचातुरीभा  
ई ॥ कीड़ीकूंदेखहाथीकीज्यानघबराई ॥ कीड़ीनेकि  
याउपावअकलदोड़ाई ॥ इशहाथीकूंलेगईगिरानाल  
केमांई ॥ ऐउलटाछंदकाजुबाबतुजेनहींआवे ॥ कोई  
॥ १ ॥ मक्खीनैमोरचामारफोजकूंघेरी ॥ मकड़ीनै  
लशकरकाटछावणीगेरी ॥ सालूनेकियासिणगार  
सिंगअसवारी ॥ बगलेनेकियीथीजलमेंमछीसेया  
री ॥ मीड़कनेमारीलातजुंटरजावे ॥ कोई ॥ २ ॥

कौवेपेवाननिशानीकलेजेलागी ॥ टीटोड़ीठुमकसु  
 नायसेतउठजागी ॥ सिकरेपेकियायेदावचड़ीलेआ  
 गी ॥ कुत्तेकीगरदनबिल्लीपकड़करभागी ॥ बगलेपैवै  
 ठीभेंसविशनपदगावे ॥ कोई ॥ ३ ॥ बनपत्तरछावैवेलवा  
 डखाज्यावे ॥ बेमुखकामुरदानदीनहानेजावे ॥ घोड़ेपे  
 गधाकैसैकदमसिखलावे ॥ बकरीनेमारानारभेटले  
 जावे ॥ गुरुतुकनगीरकेख्यालघटारंगछावे ॥ कोई ॥  
 ॥ ४ ॥ कलगीवालेकुंफड़मेंजवाबनहींआवे ॥ कथन  
 येख्यालगोपालतानसैगावे ॥ कोई ० ॥ ५ ॥

बालमनहिंआयेको बारामासियो ॥

पिवजीनेकुणसोतणभरमायोरैबालमनहीआयो ॥  
 गणपतगवरीकासुतमेरीकरोबुद्धिविस्तार ॥ सारो  
 कांजआजपारवतीमातासीलकँवार ॥ चैत्रमासयौ  
 रांकोपूजनकररहैसबनार ॥ सखियांपूजैंगारेज्या  
 करकरमनमैचाव ॥ पिवनिरदईपासनईअबकरिये  
 कूणउपाव ॥ जायपरदेसाछायोरै ॥ बाल ० ॥ १ ॥

बैसाषाकैमांयरातदिनगरमीमायपसीजूं ॥ करअ  
 खानसंबारीजाकरबड़पीपलनेपूजूं ॥ पित्तरदेवम  
 नाऊंनितकीपढ़ियापंडितबूजू ॥ पंडितपोथीखोल  
 केकहोनेसुगनविचार ॥ कितादिनाकेमायघरानै  
 आवैगोभरतार ॥ मेरीसासुकोजायोरै ॥ बाल० ॥  
 ॥ २ ॥ जेठमहीनैमांयरैनदिनचैननहींदिनरात ॥  
 गोरसैकालोहोगोमेरोकेसरवरणोगात ॥ विनबाल  
 मभोराजीवकीसजीकोईनबूजैबात ॥ कोईबातनई  
 बूजैदुखियाविरहननार ॥ जायबस्योपरदेसा  
 माईबोमतलबकोयार ॥ भेदउसकोनइपायोरै ॥  
 बाल० ॥ ३ ॥ लग्यौमासआसाडसखीमेरोबाल  
 मघरनइआवै ॥ घरकीखांडछोडकरमुखगुडचो  
 रीकोखावै ॥ जानअकेलीसेजमायपिवआकरका  
 मसतावै ॥ कामसतावैसेजमैदुखपावैछेजीव ॥ भ  
 रजोबनकेमांयमोयकूछोडदिईहैपीव ॥ फेरकागद  
 नईआयोरै ॥ बाल० ॥ ४ ॥ सावनमेमनभावन  
 घरनहींआयौतीजतिहार ॥ फिरैसहेलीहोअलबेली

तनसजकैसिनगार ॥ तीजमनावैसेजामाईरमैपीव  
 संगनार ॥ पिवसंगसोवकामनीपूरैमनकीआस ॥  
 मैनिरभागणपड्डंएकलीलेलेलावासांस ॥ रूपसव  
 रोयगुमायोरै ॥ बाल० ॥ ५ ॥ भाढूमैईंदरआयो  
 चढैरावतअसवारी ॥ कामदेवसैडरतीसोगीचड़  
 करहैलअटारी ॥ मतनाकरियेरामकिसीनैपरदेसी  
 कीनारी ॥ परदेसीकीनारकोजीवोछैधरकार ॥ दु  
 खकीबातसुणैकुणमेरीविरहनकरैपुकार ॥ कंथमू  
 रखपरणायोरै ॥ बाल० ॥ ६ ॥ आस्योजकैमायपी  
 वकूंप्यारीलिष्योसँदेस ॥ नैसज्युंजाणज्युंआयधरांकूवै  
 मैजावोबिदेस ॥ धनजोवनसुगभोगकिसीकारहता  
 नईहमेस ॥ सदानहींकिकैरहेधनजोवनादिनच्यार ॥  
 मोसरमगयाकेरकेकरसीओकरमूढगंवार ॥ मनैव्या  
 हकरक्युंल्यायोरै ॥ बाल० ॥ ७ ॥ कातीगमाय  
 दिवालीमातापूजाकरस्यूतेरी ॥ सरदीकीरुतल  
 गीदेखकरछातीधड़कैमेरी ॥ घणजोवोतोजलदी  
 आवोमतीलगावोदेरी ॥ देरकरोमतआणकीथारो

भलोकरैगोराम ॥ जोवनगयाफेरधनतेरोआवैगो  
 केकाम ॥ जिवआछयोतरसायोरै ॥ बाल० ॥ ८ ॥  
 मंगसिरमैमहमंतरैनकूंजाडोजुलमगुजार ॥ जोघर  
 होतोकंथआजमैनईकिसीकैसार ॥ पिवबिछावोहैसे  
 जामैबाणबिरहकामार ॥ बाणबिरहकामारकरकर  
 दीनीबेहोस ॥ हाथपसारुंतोईनावाडूकंथहजारू  
 कोस ॥ कमाकरभलोखुवायोरै ॥ बाल, ॥ ९ ॥  
 अबकेजतनबणाऊंसजनीलाग्योपोसमहीनो ॥ पापी  
 पीवघरांनईआयोलिखलिखकागददीनो ॥ कामण  
 करकिणसोकहमारेपीवनेबसमैकीनो ॥ बसमैकीनो  
 पीवनैबिलमाकरसोसाथ ॥ कामदेवकीआगसैतोमै  
 बलतीहूंदिनरात ॥ बड़ोकोईपापकमायोरै ॥ बाल०  
 ॥ १० ॥ माघमहीनामांयपियाबिनकुणसंगरमूब  
 संत ॥ मतजोवनदिनघालदिवानाघरांनईमेरोकं  
 थ ॥ आजकालमैबालमकोमैखडीनिहारुंपंथ ॥  
 पंथनिहारुंपीवकोआसीवीसवाबीस ॥ सोलाबरस  
 कीऊमरमेरीबालमबरसपचीस ॥ जोडकरतारमी



लायोरै ॥ बाल० ॥ ११ ॥ फागणमासभागणु  
 समेरेआणपतीनेलायो ॥ सूरजउग्योआजसुवर  
 नकोंबालमदरसादिखायो ॥ चुनचुनकलियासेजवि  
 छाईसबसिणगारबणायो ॥ सजसिणगारसनमुखख  
 डीबालमपकड़योहाथ ॥ भरकरवांहपिलंगपरलेली  
 माणीसारीरात ॥ रैनभररंगवरसायोरै ॥ बाल० ॥  
 ॥ १२ ॥ अदिकमासकैमांयसखीमैकरतीधरमअ  
 पार ॥ पूरबपुनपरतापैसतोमेरोआणमिल्योभरता  
 र ॥ मुखकूंकेतोलप्रीतकोजाणैचात्रगनार ॥ वा  
 रामासबलदेवकीसमजैनारसुजान ॥ गरूरामपरता  
 पहमारोसबहीकलानिधान ॥ चरणमैसीसानिवायो  
 रै ॥ बाल० ॥ १३ ॥

नालीके सोदेको कवित ॥

नालीकोसोदोयेतोखोटोरुजगारभोताकियाहैउ  
 पावजगतदोलतकेकुमानका ॥ बादलकोजोरदेपल  
 गावैलगाईभालसूकीमैबिचारकरपाईवालपानका ॥

भुतकासाबाकलाकुमाईमै। भरकतनायचडज्यावबीर  
 फीरमारचाटीमाणका ॥ प्रेमकहैसाचीबातइनमै  
 नायफरकसारछांटदेखभागै॥ जाणुग्रहणमायधाणका  
 ॥ १ ॥ नालीकेसोदामायफंसीफिरैसारीज्यहानवि  
 नालिषीलछमीनईहोतीकंगालका ॥ पांचसातरुपि  
 याकोसैकडीबनायलेस्यूँएसैबिचारजाणूधरआयोस  
 ह्यालका॥ पोदेवस्वरचीजबहोययज्यावझाडसाहीसोच  
 सीरधुणफिरधरजावचालका ॥ नालीकेसोदामायला  
 गनुकसानसबकोराजहलवाईनफोकुंजडीदलालका।  
 ॥ २ ॥ बड़ेबड़ेइजतदारइनामअसरफीदेषछोडरुजगार  
 चितसोदमैनगावहै ॥ मालकीखरीदीमैनफोपावैआ  
 नीकोअसैबिचारबिनाकुमायोधनआवैहै ॥ दिनकी  
 तोभूखप्यासरातकीगुमावनीदकंचनसीकायाखड्यो  
 तावडसुकावैहै ॥ लायनुकसानजदमागतागुमावस्यां  
 नप्रेमकहैऐसेनरपाछैपिछतावैहै ॥ ३ ॥ कामनी  
 कहैछैकंथ आजकयूंउदासचेरो पूछमत्तप्यारीकछुकैन  
 मनआवैहै ॥ येअनालीचाल्यांतंनचोगणोघड़ायदेस्यूँ

तेरोदेगैनोइजतमांगतांगुमावैहै ॥ फकतकड़ीकोछो  
 डऔरसावकलेज्यावगैणमांगतनाउतरयारसोदमझु  
 कावैहै ॥ प्रेमकहैऐसेडीलवावकाहोकेभीलरातफाड़  
 भागटीकसनांवसैकटावैहै ॥ ४ ॥

## ॥ ममाईका कवित प्रारंभ ॥

देखममाईकूंतवियतहोगइखुससहरवड़ाभारीहैका  
 ठाकामकानजूं ॥ जालोझिरोषूकैकांचकेकवाड़लगे  
 ऊपरषपरेलगेनीचेसेटकीदुकानजूं ॥ गादीतकियाम  
 संडपेटीफानुसभईवैठेमुनीमलेतेदेतेभुगताणजूं ॥ रा  
 तकू रोकड़ियोसूत्यो सीसकारकरपायज्यायपटमल  
 पीसूकरताहरानजूं ॥ १॥ मूजीमुनीमकिरपणपासरहै  
 रोकड़ियोदोनूदुषपावैपिलंगमोसनासंगाताहै ॥ पि  
 ताकेसरदानब्राह्मणबुलावैं येकथोड़ोसोभोजनपाजि  
 सकूंजिमाताहै ॥ आनोदेदीषणाकोरषपुण्यसंकरायत  
 नोदसकाषुडदावांटरियाउठजाताहै ॥ सेठनैलिष  
 रुपियासोलग्यासलूणनैझालासुणादेपाजैसीकविता

बनाताहै ॥ २ ॥ रोवैरसोयोसूकोच्यारकोमहीनोपा  
 वैसगोसामानदेषआपमोलल्याताहै ॥ आदिदला  
 लीलेजिसकूंबतावैसोदोकाडदलालगालमुषपरसुणा  
 ताहै ॥ सोलासैरुपियामाडैभहीमायपरचपातैआदा  
 लगावैबाकीदोऊबांटपाताहै ॥ आठदसडुकानूपरस  
 मसारूपुण्यहोत ॥ झालसु० ॥ ३ ॥ बाकीदुकानू  
 कारोकड़ियामुनीम दोनूदाणुधरमादाकोचोरीस्यूंषा  
 ताहै ॥ लेणूनादेणोसमजकरजोकुमाईमैंजुलमकरझूं  
 ठाआकभईमैसिराताहै ॥ ब्राह्मणउमेदगारआवैआ  
 सीसदेइकुछनईबोलेमाथतोड़ीचड़ताहै ॥ जनमकाकं  
 गालयेक्याजाणैपुण्यसार० ॥ झालसु० ॥ ४ ॥ अंम  
 लकादलालफीकातीपाहैबीसतीसबाकीकाघणासट्टा  
 घरकोधुमताहै ॥ पेटीलेबेंचउसकैबदलैदुतरफाषा  
 भावकलकत्तास्युंतारमैमंगताहै ॥ अकललड़ावैभो  
 तकिसमतनईजोरकरैलागनुकसानजदअलगबठजा  
 ताहै ॥ ऐसैगुजरांनकरेपेदाहैथोड़ाकझालसुणादेखा  
 जसीकबिताबनाताहै ॥ ५ ॥

## मैदी प्रारंभः ॥

मैदीबाईबाईबालूडारीरते ॥ प्रेमरसमैदीराचणी ॥  
 मैदीसीचीसीचीजलजमनारनीर।प्रेमरसमैदीराचणी।  
 मैदीउगीउगीपानदुपान ॥ प्रेमरसमैदीराचणी ॥  
 मैदीसीचीसीचीकाचदूध ॥ प्रेमरसमैदीराचणी ॥  
 मैदीउबीसोहैगुलक्यारीकैवीच ॥ प्रेमरसमैदीराचणी॥  
 मैदीचुटीचुटीस्यालूडारीकोर ॥ प्रेमरसमैदीराचणी॥  
 मैदीसूकेसूकेआगणिकारेवीच ॥ प्रेमरसमैदीराचणी॥  
 मैदीपीसीपीसीचाकूलीरपाट ॥ प्रेमरसमैदीराचणी ॥  
 मैदीभीजैभीजैरतनकटोरेवीच ॥ प्रेमरसमैदीराचणी॥  
 मैदीमांडीमांडीम्हासछोटीभैण ॥ प्रेमरसमैदीराचणी॥  
 मैदीमांडीमांडीजीटाजीबैठ ॥ प्रेमरसमैदीराचणी ॥  
 मैदीनिरपैह्यारीनणदलवाईकोवीर ॥ प्रेमरसमैदीरा०॥  
 कुणमांड्यायेसुहागणतेराहाथ ॥ प्रेमरसमैदीराचणी॥  
 तेरोहाथह्याराहीबडऊपरराष ॥ प्रेमरसमैदीराचणी ॥  
 थारीमैदीऊपरवारूंवारूंपंनाझवार ॥ प्रेमरसमैदीराच०॥  
 मैदीनिरखिनिरखिवाईजीरेवीर ॥ प्रेमरसमैदीराचणी॥

## कलियुगका कवित ॥

फलयोहैकलियुगजदबुद्धिविगड़गईराजनकीविप्र  
नकोतेजहव्योलक्ष्मीकैसरापसै ॥ रांडकुलविष्टगई  
ऊंचनीचदेपैनासुदरनकीसेजचढैलालचकैप्रतापसै ॥  
असलबीजपलटगयो मनमैविचारदेषोबिरलीसंतान  
होसागीमाबापसै ॥ कहतविप्रज्ञालइनहरफूकाभेद  
लपोकैसैइवधरमवधैपूछूमैआपसै ॥ १ ॥ ऐसानरपै  
दाहोणलग्याकलियुगमे लूचवेबदमासना धरमकूपि  
छाणै ॥ सासभऊझगड़ैदोऊमारैपीटैसासुनैसुसरकै  
साथभऊसेजारंगमाणै ॥ विगड़गयेदोनूदीनजात  
कोनडंडरह्योमुषपरनाबोलैअपणेमनमैसबेजाणै ॥  
ज्ञालकहैकुछआंष्यादेषीकानासुणीइसमैनहींझूठकीर  
तजगतकीबषाणै ॥ २ ॥

## चत्रमासोवर्णनका कवित ॥

आईआसाडरुतकोकलाकिलोलकरतचातक  
चकोरमोरबोलरहेवनमै ॥ कंथबिनकामनीरैनदिन

उदासरहै आवनको कोलकियो थोसावनके दिनमें ॥  
 सावनको बडोतिव्हार मैरही आयरह्यो किनतो निरा  
 सिबिलमायरष्योउनै ॥ पियदामनको लोभीपरदे  
 सजायछायरह्यो धर आवरहै तियारायहां चोरनको डर  
 है ॥ १ ॥ सासभईन्यारी नणदसासरसिधारी प्रीतमअं  
 धियारी अवसूझतनाकरहै ॥ जादिनसैं कियोगवनता  
 दिनसैंसूनो भवनचलतपवन असराललग्यो मेघझरहै ।  
 सेजतोनवेली कोईसंगनासहेली मैडरतहूं अकेलीपर  
 समेरोवरहै ॥ इततो इतरातयहां रातबीती जातघरआ  
 वरेहतियारायहा चोरनको डरहै ॥ २ ॥ सांझकीवेरसुन्यो  
 पीया आवनसुंदरनारसिंगारवनायो ॥ पीरिहिबेसर  
 पीरिहिबेसर पीरोहिहारहियेलटकायो ॥ पीरिहिबेसा  
 रीसोहै कमलापति पीरिहिकंगननेहलगायो ॥ पीरिहि  
 पीवपुकाररहीवह पीरीभईपणपीवनआयो ॥ ३ ॥

**बारामासियालावणीसंग्रह भाग १ २ ॥**





## अनुक्रमणिका.

लावणी.	पृ.	लावणी.	पृ.
सकुनको वारामासियो.	१	द्रापदीकी वारामासियो.	६५
वा. मा. ( नितमदन सतावे )	१	छोटा केशकी लावणी.	६८
वा. मा. ( जीवनमें 'वारा.' )	८	पणिहारीकी लावणी.	७२
द. मा. ( जिवडो घवगवे. )	१३	तुकनगीरकी लावणी.	७४
चात्रक चष्कालि हो व. म.	१६	लावणी सेठ णोकी.	७६
विदवाको वाराप्रमियो.	२१	नपगीकी लावणी.	७७
वा. मा. ( बालम घर आवो. )	२४	द्रापदीकी लावणी.	७९
वा. मा. ( घर आमदछाक्या. )	२७	ला. बसंतकी रंगत लगदी.	८०
अ. मा. ( थाने माच मुणावा. )	३०	ला. गजानंदकी रंगत लगदी.	८३
वा. मा. ( कृण अंग लिपटावे. )	३७	ला. पानांमें पुतली लडनेकी	८५
वा. मा. ( थारी जेवै छे वाट )	४०	बालम नाह आयोकी वा. मा.	८६
वा. मा. ( जाशीजा मुगन वि. )	४५	नारिके गोदेका कविन.	९०
वा. मा. ( सोये मदन झुलावे. )	५०	ममाईका कविन.	९२
वा. मा. ( साजन विन रजनी. )	५३	मैदी. ... ..	९४
मूरज महिमाको वा. मा.	५७	कालियुगका कविन	९५
वा. मा. ( जमुमतको जायतं )	६१	चत्रम.सो. वणनका क.	९६

श्रीः ।

# राजा हरिश्चंद्र तारा- मतीको ख्याल ।

ताको  
हरिप्रसाद भगीरथजीने

सुम्बईमें  
छपवायके  
प्रसिद्ध किया.

संवत् १९६३, सन १९०६.



॥ श्रीः ॥

## अथ राजा हरिचंदका ख्याल.



अथ ख्याल राजा हरिचंदको लिख्यते ॥ ढेर ॥  
हलकाराकी ॥ रागजंगलभैरवी ॥ आया अब  
सुरग्यानी मैं हलकारा हरीचंदरावका ॥ अलफ  
नांव करतार पारकर बंदा रटता तोय ॥ गौरी  
पुत्र गणेश मनायां बुद्ध चोगणीहोय ॥ सारद  
माता सुभकी दाता विद्या बरघो मोय ॥ मैंह ॥  
॥ १ ॥ किरपा करो करतार आपने बालकसीस  
नमावै ॥ गुरु किरपास्थुं सुगरा तिरज्या भूल्या-  
ग्यान बतावै ॥ गोमदरामकी किरपासैं कथ-  
ख्याल उजीरो गावै ॥ मैंह ॥ २ ॥ आदु धाम  
अजोध्याजी हरिचंदको देसां गायो ॥ येक समै

करतार आप विश्वामीतर चुण ध्यायो ॥ सत  
 सावत हरिचंदको लख फेर कासीपुर दिलवायो  
 ॥ मैंह ० ॥ ३ ॥ सतकी इयाज राव हरिचंद है  
 देसांपति अनूप ॥ तारादेसी नार जिनुं घर  
 सीताजीको रूप ॥ रवीदाससे पुत्र रावका नाम  
 हरिचंद भूप ॥ मैंह ॥ ४ ॥ मैं हलकारा हुं सुर-  
 ग्यानी खासा हुकम उठाता ॥ पकी तनखा दर  
 हैनामें पांच असरफी पाता ॥ पलक पलककी  
 हाल हकीगत अपसर पास पुगाता ॥ मैंह ॥ ५ ॥  
 सतकी बात साथमें करता वै राजा सतधारी ॥  
 पिरजाको पालन करेस वैकुंठ धाम ओतारी ॥  
 छत्रपती आगयो करो दरसन सवही नरनारी ॥  
 मैंह ० ॥ ६ ॥

॥ जवाब राजाको कवित्त ॥

संकर मन मानी रानी तोय मैं मनाउं मैया हिर  
 दे द्यो ज्ञान नग्नकोटहुकी रानी तू ॥ करता पर

हरिचंदको खयाल.

३

गान गाकु बालक सिस जान जुवाला कीजे  
प्रतपाला येरी वेदकी बखानी तू ॥ असुरन कुं



मार अरी दाना सींधार ओर भगतकुं उवा-  
र तिहूं लोक मैं न छानी तूं ॥ जानत है अपा-  
र जहांन सारा संसार तोय तेली कहै उजीरमा  
इ दीजे बुदबानी तू ॥ १ ॥ टेर हंरीचंदकी ॥  
राग जंगला पहाड ॥ आया मैं कासीपुरका-  
स्यामजी हरीचंद हमारो नाम ॥ गौरी पुत्र सकलके

दाता तुमकुं आद मनाउं ॥ मात जुवाला कर  
 प्रतपाला तेरो नित जस गाउं ॥ गोविंद  
 रामकी किरपासे हरीचंदको ख्याल बुणाउं ॥  
 मैं नई रंगत ओर नइ चालसै गाउं ॥ मुरसद  
 अपनेके चरनु सीस निवाउं ॥ गुरुकी अग्या  
 पावै उजीरो नइ मइरंगत गावै ॥ आया ॥ १ ॥  
 कासी पुरी नगर है वहां येक विश्वनाथका  
 धाम ॥ सतसे इयाज तिरहै वाहां नहिं पाप  
 झूठको काम ॥ तरण त्यारणी गंग वहै वहां  
 आठुं याम तमाम ॥ गंगाके घाटसे सहर बसत  
 है नेडा ॥ है निरमल उनका नीर तीर ज-  
 हाँ वेडा ॥ वहाँ है मेरी राहसत नग्र वो वै  
 कुंठाँको वास ॥ आया ॥ २ ॥ गुरुजनकी सेवा  
 कराँस ह्ये नेमधरमसेचालां ॥ जैसे पिता पुत्रने  
 पाले ह्ये ज्युंरइयेतने पालां ॥ आसा मुखी कोई  
 आवे उसी कूं निरमुखनाई टालां ॥ होखूरज

## हरिचंदको ख्याल

वंसी भूप बड़ा सतधारी ॥ कोडान कोडकी  
बड़ी रिहासत ह्यारी ॥ ह्येछां दानीराव घणो ह्यारे  
पुन करणको चाव ॥ आया ॥ ३ ॥ सवापहर  
सूरजकी पूजा करां सुणो परणाम ॥ काछ  
बाछका साचा ह्ये जीतेंद्रीभूपति स्यांम ॥ जसरथ  
पुत्रको नांवरटां सेवामें सीताराम ॥ छैपति  
भरता तारादे नार हमारी ॥ जिन रवीदाससे  
पुत्र जनमिया प्यारी ॥ संपतको मेवास हमारे  
लिछमीजीको वास ॥ आया ॥ ४ ॥ जुबाब  
विश्वामित्रको येकलो कह छै ॥ छपै ॥ मैंहुं वि-  
सवामित्र भेस दुरबलका लीना ॥ छलनराव  
हरीचंद यहां मैं आवन कीना ॥ हरीचंद राजा  
भोत दान दे दे गरबायो ॥ मैं भगवत कर रूप  
आज बीछुकको आयो ॥ दान इसो मैं मांगस्युंदि  
योन जासी रावस्युं ॥ सतडिगा छलस्युं राजाने  
कर कंगाल कढावस्युं ॥ १ ॥ जुबाब विसवा



हरिचंदको ख्याल.

६

मित्रको राजासैं ॥ सैर ॥ मैं नाम महीपत सुन  
तुमारो आज आयो चालजी ॥ कासीपुरीमें  
सुन्यो दानी हरिचंदभोपालजी ॥ मांगनकुं आ-  
गयो विप्रमें येक करमको कंगालजी ॥ आसीस  
छुं द्वारे खड्यो मेरी करो प्रतिपालजी ॥ २ ॥  
राजाको सैर ॥ देवजी प्रतिपाल तुमरी वै करै  
करतारजी ॥ चाये सो लेवो दान थे क्युं होर  
ह्या लाचारजी ॥ मेरे षजाना मालका भरिया है  
भोत अपारजी ॥ चाये सो कह्यो बोलकै मत  
ना लगावो वारजी ॥ टेर ॥ ॥ विश्वामित्रकी ॥ ॥  
राग पीलू बरवा ॥ दानी सुन द्वारे बिलुक आ-  
गयो ॥ नृप हरिचंदधारे ॥ चाय लगी सोय दानकी  
स मैं जद तैरै द्वारे आयो ॥ सागर तकै दूरसै  
जद यो पंछी होय तिसायो ॥ तेरो नाम दुनीमें  
दानी देसां देसां छायो ॥ देसां देसां छारह्योजी  
धारो नाम नरेस ॥ निरमल द्विज सोय जानके

समेरी अरजी करल्यो पेस ॥ दरीदर मोयकुं  
ख्यारे ॥ दानी ॥ १ ॥ ॥

॥ ढेर राजाकी ॥



द्यावां थाने दान देवजी चाव सै, नहिं  
देर लगावां ॥ द्यावां दान चाव सै थे क्युं  
होय रह्या लाचार ॥ कमी नहीं किण वातरीस  
द्वारे भरियालख भंडार ॥ जो फरमावो जोहीद्य

हानै देत न लागे वार ॥ जो सुपसेती थे कही  
 हो जोही करौ कबूल ॥ विप्र गऊनें ऐसा समजां  
 मात पिता समतूल ॥ चक्रवर्ति कहलावां ॥  
 द्यावां ॥ २ ॥ करकर कान सुणोथे हारी वांतां  
 मेंचित लावो ॥ जे थारी मनस्या होवेतो थे  
 वचन हाथसै द्यावो ॥ झूठी बात वणाकर हानै  
 क्यूं नाहक बहकावो ॥ हो सुषस्युं जद मांगस्यांथे  
 पका करल्यो कोल ॥ फेर आपके आगे राजा  
 सब कहदेस्यां खोल ॥ मनां होसी जो म्हारे ॥  
 दानी० ॥ ३ ॥ थारे मनकी कहो आपथे येल्यो  
 वचन हमारा ॥ बाप वचन तो ऐकही हो छै नहीं  
 करां नाकारा ॥ जो थे मांगो जान मानतो रखान  
 तुमसै न्यारा ॥ मिलखादे बरबर नहीं बरबर नहीं  
 जन्म माय ॥ करकर वचन पलट ज्यादातो हारो  
 सत छीण हो ज्याय ॥ कहांसो पार लंघावां ॥ द्यावां ॥  
 ॥ ४ ॥ पारलंघावो वचन दियोडा थे हरिचंद हारा-

ज ॥ भार अठारा सुवरणकी मेरे चाहलगी  
 सिरताज ॥ कन्या घरां कँवारी मेरी घणीला-  
 जकी झ्याज ॥ चीरंजीव जोडी रहोजी थारी  
 पिरथीनाथ ॥ भार अठारा सुवरणको मेरे सँकल  
 प देघोहाथ ॥ द्वार थारे विप्र पुकारे ॥ दानी  
 ॥ ५ ॥ बैठो विप्र द्वार पर थे हो रानीस्युं बत-  
 लावां ॥ तोसाखाना खोल खोल सुवरणको  
 मेल मिलावां ॥ सुवरण भार अठाराथाने  
 दे अनपाणी खावां ॥ सतवादी हरीचं-  
 दका तू बचन विप्रजी देष ॥ गीदड बचन अनेक  
 हैसजी सिंध बचन है एक ॥ आप बैठो हो  
 जावां ॥ द्यावां ॥ ६ ॥ जुबाब राणीको राजासैं ॥  
 सैर ॥ पीवजी क्या आज दिल तुमरेपै ल-  
 गिया खारजी ॥ चेहरेपैं जरदी छारही कैसे  
 मेरा भरतारजी ॥ देसांपति हो आप लटता  
 मुलक अपरंपारजी ॥ कर जोड तुमकुं पृछती

तारा दे चंचल नारजी ॥ १ ॥ सैर ॥ येक विप्र  
 नार कंगाल अपने आज आगयो द्वारजी ॥  
 मांग्या मेरेपा राणी सुवरणका अठारा भारजी ॥  
 मैं वचन उस विपरके आगे आज आगयो द्वारजी ॥  
 सुवरन कहां इतनु कहो जिसको कहा विचारजी  
 टेर ॥ २ ॥ राणीकी ॥ राजासैं ॥ राग सोहनी  
 मालकोस ॥ क्या फिकर संताया पीवजी थारे  
 कांड़ दुख छाया जीवमें ॥ कांड़ दुप छाया जीवमें  
 सकयुं होय रह्यालाचार ॥ देसांपति कुहावांथा रे लापु  
 लसकर लार ॥ बड़ा घरांका बड़ा खरच थे करो न  
 वात विचार ॥ ओजी थारे कांड़ दुख छायेजी ॥  
 दिलक्युं भीतरस्युं कुमलायो ॥ क्यु पिसतावो  
 आज मेरा थे ॥ छत्रपती सिरताज ॥ वचन कहो  
 कैसाइ छाया ॥ पीव ॥ १ ॥ टेर ॥ राजाकी  
 राणीसैं ॥ मत बूजो राणी ह्वारी बुद आज  
 अयानी होरही ॥ मतना बूजो वात मनेथे सुणता

रादेनार ॥ येक गरीब अनाथ विप्र आगयो  
 आपणे द्वार ॥ करकर वचन मांगलिया उन सुव-  
 रणका ठारा भार ॥ मैं तो वचन विप्रसे हारा ॥  
 सुवरण मांग्यो भार अठारा ॥ हार गयो मैं कोल ॥  
 काहांसे देस्युं सुवरण तोल ॥ हो गई जगत कहानी ॥  
 हारी ॥ २ ॥ जगत कहाणीपर होइ जो हुई मती  
 पीसतावो ॥ दासी दास राज सब बेचो जो सत  
 राख्यो चावो ॥ कर कर कोड उपाव आज विपरको  
 दान पुगावो ॥ नहीं सतहीन होजावां ॥ के दुन-  
 यामें मुष दिषलावां ॥ जो सतराख्यो चावो ॥  
 आज वीछक वुण कर उठध्यावो ॥ पाप परग-  
 टहो आया ॥ पीव ॥ ३ ॥ प्रगट्या पाप आपणे  
 पर राणी कफा हुयो करतार ॥ दासी दास राज  
 सब बेच्या मैं पंधरा किया तेयार ॥ तीन भार  
 कमती रहासरानी जिनरो कहा विचार ॥  
 सतकी अदविच अटकी झाज ॥ आज हारी किस

विदरहसी लाज ॥ बली न लागे आज ॥ नार  
 में झोंक दियो सबराज ॥ उतर रह्यो मुप्रको-  
 पानी ॥ ह्यारी ॥ ४ ॥ पानी उतर गयो कोई  
 अब तो अकल उपावो ॥ हाथ जोड उस विपरके  
 थे चरनां सीसनिवावो ॥ पंदरा भार कनकका  
 है सोये तो उसकुं छावो ॥ भार फिरतीनरह्या  
 सोदेस्यां ॥ किसके नोकर वण करलेस्यां ॥ दरब  
 बानकोइ जोवो ॥ ऐंविपरका दान पुगावो ॥  
 मेलद्योगिरवीकाया ॥ पीव ॥ ५ ॥ करी भोत  
 तावेदारी में उस विपरकी नैवै ॥ भार अठा-  
 रास्युं कमतीवो येकरती नहीं लेवै ॥ डर लागे  
 उस विप्रकोस वो श्राप पलकमें देवै ॥ आज  
 सत पीवको रैण न पावै ॥ विपर निरनुप घरसैं  
 जावै ॥ सवी अकल गयो हार भलोजीपेसै मर  
 बोनार ॥ आवे तो नहीं मोत निमाणी ॥ ह्यारी  
 ॥ ६ ॥ होय निमाणी गई वातने सत नाहक

\* पिसतावो ॥ कासीमें येक दरबवान है पंडित  
 द्विज अति ठावो ॥ मुजकुं ओर कंवरकुं गैणे  
 उसके थे रष आवो ॥ फेरथे दान चुका द्यो-  
 थारो ॥ रह जा पत भरतापण ह्यारो ॥ सबी  
 वात बण जावे ॥ कोइ विद सत साबत रह जावे  
 आप कहो हाजर आया ॥ पीव० ॥ ७ ॥ हाज-  
 र होगया आप चलो कोई दरबवान हेरावां ॥  
 तीन भार सुवरनकी खातर नोकर बुणबाजावां ॥  
 राणी ओर कंवरनै गिरवै मेलर दान चुकावां ॥  
 है कासीमें पंडित भारी ॥ उसकी करस्यां तावे-  
 दारी ॥ सागर देत सुकाय ॥ नाथकी लीला  
 कहीय न जाय ॥ बडोवो आप विनाणी ॥  
 ह्यारी ॥ ८ ॥ जबाब राजा हरीचंदको पंडितसैं ॥  
 छपै ॥ पंडितजी ह्याराज द्वार थारे हरीचंद  
 ठाडो ॥ कनक भार देबो तीन मेरे माथे पर  
 मांडो ॥ तारादे मेरी नार कंवर रविदास



पियारा ॥ तीन भार सुवरन हित नोकर रैसी  
 थारा ॥ राणी पुतर आपकी निसदिन करसी  
 सेवजी ॥ धरम हमारो विगडतोस थे रापलैवो  
 गुरुदेवजी ॥ १ ॥ छपै ॥ राजनपति ह्याराज हरी-  
 चंद सिरकासांइ ॥ तीन भार तो कनक भवन  
 मेरेमें नाई ॥ तुम हो पिरथीनाथ आज ह्यारे  
 आवनकीनो ॥ थो येक भार मेरे त्यारसोही हा  
 जर कर दीनो ॥ तारादे रविदासकी में टहल  
 करुं कर जोड़कै ॥ ये दोनु सुत धरमकास थेवेशक  
 जावो छोड़कै ॥ २ ॥ जवाव राजाको विश्वामि-  
 त्रसै छपै ॥ विश्वामित्र दयाल मेरोमें भरम ग-  
 मायो ॥ इस पंडितके द्वार भारमोये येकही  
 पायो ॥ वैपंदरा यो येक हुवा सोला पुगवावो ॥  
 बाकी थारा दोय रह्यासो फिर लेजावो ॥ पुत्र  
 नार गिरवै धर्या विन हुयो कठैसै ल्यायद्युं ॥  
 कोई धनवान दीषै नहींस ॥ चल उसके पास

दिवायद्युं ॥ ३ ॥ छपै ॥ ओ हरीचंद हाराज दान  
 तोसे दियो न जावै ॥ झूठी कर कर बात मनेतुक्युं  
 वहकावै ॥ के तो सत जा हार नहींके दान चुका  
 दे ॥ नोकर वुण कर डूमढेढको मुजकुंल्यादे ॥  
 कासीमें भंगी बसै येक दोलतबंद अपारजी ॥  
 कनकठावो सुपच पास धर गिरवै सब परवारजी  
 ॥ ४ ॥ जुबाब हरीचंदको कालूकीरसैं ॥ सैर ॥  
 मोयराव हरीचंदकुं दइ विपत्ता किसी करता-  
 रजी ॥ येक भार सुवरन में धर्या गिरवै पुतर  
 ओरनारजी ॥ सत जाणलाग्यो जद तुमारे  
 चाल आयो द्वारजी ॥ दोय भारद्यो मोय क-  
 नकका नाव हो ज्या पारजी ॥ ५ ॥ सैर ॥ धन  
 भाग स्वामी आज तुम आया हमारे द्वारजी ॥  
 कर जोड मैं हाजर पज्यो चरनुंको ताबेदारजी ॥  
 येकदम तुम रण्या म्हारे सीसपर सिरकारजी ॥  
 क्या काम मुज लायक है सो कहद्यो करो मत

बारजी ॥ २ ॥ टेरे ॥ ॥ राजाकी नीचसैं ॥ ॥  
 रागकालंगडो माड ॥ नाथ थारे हरिचंद उवो-  
 द्वार दिवावो दोय सुवरनका भार ॥ दोय भार  
 सुवरनके हितथारे हरीचंद आयो द्वार ॥ करी  
 जाचना विप्र आनके वचन गयो मैं हार ॥  
 रानी कँवर मेल दिया गिरवैतोवी पडी न पार ॥  
 तोवी पडीन पार भयो लाचारजी ॥ उन सांग्यो  
 पुरो हेम अठारा भारजी ॥ नाथ ॥ १ ॥ टेरे ॥  
 राव थे क्युं होरह्या लाचार हेमका भार लेवो  
 दोचार ॥ धन घडी धन भाग आज मेरे द्वारे  
 आया चाल ॥ घर वैट्यां क्युं नहीं मंगालिया  
 म्होर असरफी लाल ॥ मैं हूं तावेदार आपको  
 महीपत निरप दयाल ॥ महीपत निरप दयाल  
 भोत किरपाकरी ॥ मेरे द्वारे आया चाल आज  
 सुभकी घरी ॥ रावथे ॥ २ ॥ सुभकी घरी सेस सब  
 होगई युं हरिचंद पिसतावै ॥ सांगण गयासो

मरगयास भाइ मरैसो मांगण जावै ॥ सबके  
 पहली वो मरे सभाइ होताहीं नटजावै ॥ होतां-  
 हीं नटजावे देणियां थे दिखो ॥ ह्यारे दोय सुव-  
 रनका भार सीसकरजालिषो ॥ नाथ ॥ ३ ॥  
 सीस करज किन बिदलिखुंस ह्यारा आखर  
 थेछो स्याम ॥ कोइसमें पाकर पड्योस थारो  
 म्हारे सागै काम ॥ न्यारो नहीं आपस्युं म्हारे  
 घरको माल तमाम ॥ घरको माल तमाम परै  
 नहीं नाथसै ॥ थे दोय भारका चार लेवो मेरे  
 पाससे रावथे ॥ ४ ॥ ये हेम अष्टदश भारकी  
 समोय चाह नहीं छैप्यारा ॥ सोला दिया चुकाय  
 विप्रका दोय रह्या छै सारा दोय भार सुवरणके-  
 ताईं म्हे नोकर रहस्यां थारा ॥ नोकर रहस्यां  
 थारा सतके काजजी ॥ थारी ऊंची नीची टहल  
 करां सिरताजजी ॥ नाथ ॥ ५ ॥ सुण सिरताज  
 हमारे घरकी टहल करन छै भारी ॥ झाडु दे

कर बरहापिलाणा मरघट चौकी न्यारी ॥ थेछो  
 सिंगमहीपत थांसैं सघनई लाचारी ॥ सधैन  
 हींलाचारी कष्टमें क्युं परो ॥ दोय भार कनकका  
 देकर विप्रविदा करो ॥ रावथे ॥ ६ ॥ करो बात  
 सब झूठी थे ह्वारे येक दाय नहीं आवै ॥ नोकर  
 बिना रहे लेउंतो सत ह्वारो घट ज्यावै ॥ सेनर  
 बासी नरककास भाइ धरम हार धनपावै ॥ धरम  
 हार धन पावै सब येलेपहै ॥ बिन नोकर रहेन  
 लेउं लाषकी येक है ॥ नाथ ॥ ७ ॥ हैथारोमत  
 साचोथे ह्वारे नोकर रहगया आय ॥ विश्वासिन्न  
 गुरुने हरीचंद लीन्यो पास चुलाय ॥ पूराकर  
 दिया भार अठारा यो विप्र पुसी होजाय ॥ विप्र  
 पुसी होगयो आपके सामने ॥ होनीर खरणने  
 भेज्यो हरीचंदरावने ॥ राव० ॥ जुवावकासीके  
 पंडितको तारादेस्युं और रवीदासस्युं ॥ टेर ॥  
 बाइ थे मतनावार लगावो जलदी गंगा जल

भरल्यावो ॥ सुनतारादे सुता बेग जल भर  
 बाजावो ॥ ठाकुर पूजा करां सोदको नीर लि-  
 यावो ॥ मत्तना करो अँबार बखत पुजाको  
 आयो ॥ रबीदास तेरो पुत्रल्यानने पुष्प खिनायो ॥  
 लडकांसागे बागमें कँवर पुसप लेबागयो ॥ थे  
 भरल्यावो कलस नीर गंगाको निरमल बैरह्यो ॥  
 बाइ ॥ १ ॥ टेर ॥ गुरु थारो हुकम सीसपर  
 ठाउँ कलसो गंगा जलको ल्याउं ॥ मैं जल भर  
 वा चली गरुकी अग्या पाई ॥ ले सुवरनको कलस  
 तीर गंगाके आइ ॥ ओर उसी घाटपर पड्यो-  
 हरीचंद पिसतावै ॥ नीर नीचको भरत नही  
 कोइ घडो उठावै ॥ मुजकूं भरती देषकै उन हुं  
 सियारी मनमें करी ॥ रानी रानी बोलकेस मोये  
 हेलो मारयो उस घरी ॥ गरुथा ॥ २ ॥ जुबाव  
 राजा हरीचंदको रानीसैं ॥ सैर ॥ ॥ तारादे  
 हमारी नार सुन येक बात कर कर कानजी ॥

घडलो न ऊँटै नीरको टुकथे लगावो हाथजी ॥



अंजल करचां मेरेकुं दिन होया भोत अव  
 विख्यातजी ॥ ढिग ढिग पड़ै काया मैरी कुमला  
 रह्यो है गातजी ॥ १ ॥ सैर ॥ पीवजी घडलो  
 तुमारे सीसपर कैसे धरुं ॥ ठाकुरकी पूजा कारणे  
 जल सोधहुको मैं भरुं ॥ उजल धरम है विप्रका

अबमैं टहल ठाकुरकी करूं ॥ यो ही बड़ो अप  
 सोच थारे छुवणसे मैं डरूं ॥ टेर ॥ ह्याने घड़ो उठादे  
 रानी टुक हाथ लगा दे आन कर ॥ आवो पास  
 उठावो घडलो सुनतारादे रानी ॥ सतके काज  
 आज मैं रानी भरूं नीच घरपानी ॥ घणा दिनसै  
 मेल मिलायो भगवत आप विनानी ॥ मैं राजा  
 हरीचंद हूं जी थे तारादे नार ॥ घड़ो उठावो  
 आनकेस मोंसै उठै न बोज अपार ॥ पीवन्योहो  
 राकरैजी ॥ हांये प्यारी नीच घरां हरीचंद नीर  
 सतस्थुं भरैजी ॥ दुख पावै भरतार आज थाने  
 दयान आवै नार ॥ सम्है नहीं बोज सम्हादे ॥  
 रानी ॥ १ ॥ टेर ॥ पिवजी छूज्यावां घडले नहीं  
 हाथ लगावा जानके ॥ घडे हाथ नहा लावा  
 थेक्युं निकमी रोल भचावो ॥ होतो रहां विप्रके  
 घर थे निमक नीचरो पावो ॥ कर कर पेव  
 उठाल्यो घडलोक्थुं ह्यारो धरम घटावो ॥ धरम



घटे संसारमें जी निसट करेसे काम ॥ थारो  
 हारो आंतरोस कोई पग पाणीकोस्यांम ॥  
 अकल व्योपायल्योजी ॥ हांजी थे तो गहरेसे  
 जलमें जाय घडो उठायल्योजी ॥ जिस कारण  
 भरतार ॥ सहां आपों कठन विपतकी धार ॥  
 रण्योसत सावत चावां ॥ घडले ॥ २ ॥ सत सावत  
 रह्यो आपणोस प्यारी थे मतना पिलतायो ॥  
 करो टहल वीपरके घरकी वैठी विपो बुलायो ॥  
 राजी रण्यो कँवरनेस थे गुण गोविंदका गावो ॥  
 मेरे विपत कलासमें जी लिप दई मिरजनहार ॥  
 घरां लडेगी सुपचनीस हाने घडो उठादे नार ॥  
 वार मतना करेजी ॥ हांये हारे सुपचस्यामकी  
 नारसैं जिवडो डरेजी ॥ कठन नोकरी हारी ॥  
 पारवो करसी गिरवर धारी ॥ घडोठा म्हैर करा  
 दे ॥ रानी ॥ ३ ॥ म्हैर करेगा रासचंद्रजी में  
 तुमकुं समझाउं ॥ ओर काम थे सो कहो तो

थारा साराई कर आजुं ॥ लाख बातकी एक सुणो  
 घड़लाके हाथ न लाउं ॥ औप्रीतम हरीचंद तूं जी  
 निमक नीचरोषाय ॥ मैठाकुरकी करूं टहल मेरा  
 सबी धरम घट ज्याय ॥ छूयां आपसैजी ॥ हांजी  
 म्हासे धरम भ्रष्ट होज्याया ॥ डरूं इस पापसैजी ॥ गहरे  
 सैजलमें जाय पीवथे घड़लो लेवो उठाय ॥  
 अकल थाने बतलावां ॥ घड ॥ ४ ॥ अकल  
 वंतकी अकल न चालै बल निन बुद विचारी ॥  
 भोत दिवस अंजल कर्यां होगया सुन तारा  
 देनारी ॥ डिग डिग पडै सरीर हमारो कछुये  
 नरही करारी ॥ मै महतरको अब तलक कछु  
 अंजलकीनो नाँय ॥ तूं घड़लो ठावै नहीस राणीके  
 समजी मन माँय ॥ सावत उठा लियोजी ॥ थे  
 पतीभरता नार पीवकी मनमें समजो सार ॥  
 पतीको कसट मिटादे ॥ रानी ॥ ५ ॥ कसट मिटासी  
 श्रीठाकुरजी थेक्युं रहा पिसताय ॥ सतके कनै

आन सीतापति पलमें करै सहाय ॥ थेगम  
 खावो कलसो घरपर म्हे मेल्यावां जाय ॥ हां-  
 स्युं ओर बुणे नहीं जी ॥ इसको येही उपाय ॥  
 घरचां मेल्यावां फिर ह्वे घडल्यो देस्यां ठाय ॥  
 आपने आयकैजी ॥ हांजी ठाकुरकी सेवा  
 करस्यां अब ह्वे जायकैजी ॥ केतो ठा लेज्यावो ॥  
 नहीं तो घडी दोय गमपावो ॥ आप बैठो म्हे  
 जावां ॥ घड ॥ ६ ॥ आवां आवां कहकर थेक्युं  
 म्हाने रह्या बहकाय ॥ राणी नटकर गई बल्यो  
 में गहरे जलमें जाय ॥ करकर रोस घडो में  
 म्हारे सिरपै लियो उठाय ॥ सिरपर धरकर वेहडो  
 चलबाको कियो विचार ॥ खुधावंत सरीर होरह्यो  
 चल्यो कदम दोचार ॥ घडो फिर जापड्योजी  
 हांजी में हरीचंदनाथ अनाथको पिस्ताउं पड्यो-  
 जी ॥ घरांलडेगी स्यांस आज परतंग्या राखो  
 राम ॥ नाव म्हारी पार लंधादे राणी ॥ ७ ॥

जुवान हरीचंदसै सुपचनीको ॥ छपै ॥



रे हरिया निमकहराम जुलम तुं कैसा कीना ॥  
जाय घड़ीके काम बिता दिन सारा दीना ॥  
भोर भयेसै गयो स्याम हुई जबधर आयो ॥  
ये वरहाप्यासा मरै घड़ौ तुं कित छोड्यायो ॥  
पानी इनकुं प्याय दे मतना करै अँवारै ॥  
बीतीसो सारी कहोस नही पडै बदन बिच

मारै ॥ १ ॥ छपै ॥ हरीचंदको ॥ माता बैरा  
 हाल कहूं तुमकुं समझाके ॥ ओर गंगाजीके  
 घाट धड़ो मैं भर लियो जाके ॥ सोत दुपंके  
 साथ नीर भर सिरपर ठायो ॥ मूर्ख मरतां  
 मात तिंवालो जब मोय आयो ॥ कदम पांच  
 दसमें चल्यो कर मनमें अंकुरजी ॥ चाये छोड़  
 चाये मार मातजी होगयो मेरो कलुरजी ॥ २ ॥  
 टेर ॥ मोडोक्युं आयोरे हरीचंद नीरले, तने  
 किन बैकायो ॥ निमकहरामी हरीचंदक्युं ऐसो  
 मनमें गरबायो ॥ वरहा मरे तिसाया तें कित  
 सारो दिवस बितायो ॥ ओर अयेसै गयो हु  
 यो तुं स्याम पडे घर आयो ॥ हारे तेरेहीयें  
 हमे डरना रह्योरे ॥ चावक मार उडावुं चापतु-  
 केयो काम कियोरे ॥ तुं करमांको हीन हत्यारा  
 मनको बडोमलीन ॥ मालफोकटको खायो ॥  
 मोडो ॥ १ ॥ टेर ॥ मैं चाकर तेरो माता कर

मेरो माफ कसूरये ॥ करदे माफ कसूर हाल चाक-  
 रको जोय कर सारो ॥ मैं गंगाजल छानकै तो  
 जी भर लियो घडो हमारो ॥ कोइ नजर नही  
 आयो उठे मोय गागर ठावण वारो ॥ हाये मेरीका  
 यामें कगारी कुछ ना रहीये ॥ चाकर भरियो चूक  
 भुकसैं सुस्ती सुसत भहीये ॥ चाये मार चाये  
 तयार हुयो गागरको मात उजार ॥ तेरोमें चाकर  
 चेरो ॥ माता ॥ २ ॥ चाकर हो सो चित्या रखै  
 मालककी भोतेरी ॥ तूं मनमस्त होरह्यो मूनी गा-  
 गर फोरी मेरी ॥ नोकर राव्यो तुमकुं होगयो पीव  
 हमारो वैरी ॥ हारे तोसे नोकरी करी नहीं जाय ॥  
 पानी भरचोयेन आटोपीस्यो ॥ नहीं बरहा ल्यायो  
 पिलाय ॥ विना काम तू डोलै हमारी नाहक  
 छाती छोलै ॥ पोलको घरतोय पायो ॥ मोडो  
 ॥ ३ ॥ पायो नहीं पोलको घर मोयतानासै  
 मत मारो ॥ करुं नोकरी सतसै मैंनो

करको नोकर थारो ॥ तुमरो नहीं कसूर  
 मातजी दिन खोटो छो म्हारो ॥ हांये मेरा  
 कश्मलिपी करतार ॥ क्युं विपर आवेदान  
 नेये वचन जाउं मैं हार ॥ मोय अजानने पालो ॥  
 मारग दास जाणकर घालो ॥ आपके लियोमें  
 बसेरो ॥ साता ॥ ४ ॥ इसो वसेरो द्वाख्युं मैंतो  
 यधका देर कढाउं ॥ आवादे मालकने तुज  
 कुं डंडासै मरवाउं ॥ मैं हुं असल महतराणी  
 तोतेही हाथांखाल उडाउं ॥ हारे तूतो मारपडे  
 बिन नाडेरें ॥ कण्डा कण्डा जावे ॥ हमारी  
 सुंइ आजकरेरे महतनै समझाय ॥ तनै मैं देख्युं  
 बार कढाय ॥ कहुंगी मनको चायो ॥ मोडो ॥  
 ॥ ५ ॥ मन चाया वेसक कोस माइमैं निजनो  
 कथारो ॥ चरो दास सयजकर करघो साफ क  
 सूर हमारो ॥ मोय अजाण महा मूढकोस थे म-  
 नमैं रोस विसारो ॥ आज प्रभु अटकरही वेरी

त्रेभुवनपती नाथ बिन अवकुन पार करे मेरी ॥  
 आरकरो प्रभुनाव ॥ आज हरीचंदको चलेन  
 दाव आप मल्लावुण गेरो ॥ ६ ॥ जुबाव महत  
 राणीको महतरस्युं ॥ टेरे ॥ आपणे ऐसो नोकर  
 पीवजी कामको नांइजी ॥ पीवजी असो नीच  
 आपणुनोकर हरियो ॥ धडे तणुं उजाड आज  
 इण पाजी करियो ॥ जल भरणेकुं जाय सेवरी  
 संज्या आवे ॥ भांवेँ कहो कोइ लाष नही कुछ  
 दैसत पावेँ ॥ ऐसो नोकर पीवजी अपणे नांइ  
 कामको ॥ टहल तवज्या हो नहीं स इनपायो  
 माल हरामको ॥ आपणे ॥ १ ॥ टेरे महतरकी  
 नार तेरी अकल गइ क्युं मारीयो छै हरीचंद छतर  
 धारी ॥ योराजा हरीचंद इसै तुं समझी कांई ॥  
 तू मुरष मतिहार सार कुछ जानी नांई ॥ सत-  
 वादी हरीचंद देस देसनमें गायो ॥ सत दषन  
 द्वारे आप ऐंके भगवत आयो ॥ आपणा जन्म



सुधारवा ये राव पधारचा पावणा ॥ कागा तणे  
 द्वार हंसका कदकद होता आवणा ॥ नार ॥ २॥  
 प्रीतिम पारा वचन कह्या में इसके ताई ॥ भोले भूली  
 रही खबरवथी मुजकुं नाई ॥ ऐसा ओला काम  
 इनुंपा मत करवावो ॥ येहै अपना स्याम कायदा खूब  
 रखावो ॥ अपने दोलत द्रव्यका सब इनकुं आमेज-  
 द्यो ॥ मरघटचोकीडाण पैस ऐनै अपसरकर कर भेज  
 द्यो ॥ आपणे ॥ ३ ॥ जुवाव हरीचंदसे काल्की  
 रको ॥ टेर ॥ जावो मरघटकी चोकी राजा डाण  
 चुकावोजी ॥ मरघटकी चोकीपर अव थे हरीचं-  
 दगाव पधारो ॥ नीचा काम करणको राजा  
 नहीं कायदो थारो ॥ तुमकुं कष्ट दियेसे राजा  
 विगडे धरम हमारो ॥ दुखमत पावोजी ॥ जावो  
 ॥ १ ॥ हुकमथारो पावां जलदी जावां देरन-  
 लावांजी ॥ जो फरमावो सोही मेरे सिरपर  
 हुकम उठाउं ॥ तावेदार आपको मैं अव नट-

ग किसीबिद पावुं ॥ रमघटको रुजगार होय  
 सो सब थाने भुगतावुं ॥ ओले नहीं पावांजी ॥  
 हुकम ॥ २ ॥ ओले खाणको हे थानै नहीं कहा  
 सिरकार ॥ या दोलत म्हारी सारी राजा छैं थारे  
 अकत्यार ॥ बरतो परचो पुसीसैस म्हारे भरिया  
 अलष भंडार ॥ चाये सो पावोजी ॥ जावो ॥ ३ ॥  
 पावां नहीं आपको अन थारे बिना कहे सिर-  
 ताज ॥ अडतालीस दिवस हुया मुजकुं कर्या  
 रसोइ आज ॥ बिना हुकम अनपायां म्हारे  
 सतको होय अकाज ॥ साच बतलावांजी ॥  
 हुकम ॥ ४ ॥ बतलावां मोदीके ल्या थे जीमर  
 सोई जावो ॥ नगमुरदेकी लाहास टको येक सुव-  
 रण तणो चुकावो ॥ देर मतलावोजी ॥ जावो  
 ॥ ५ ॥ देर कही नहीं मैं हरीचंद जदल्यायर  
 सोइकीनी ॥ विश्वामित्र परैस्युं बीपर त्यार हु  
 इ तकलीनी ॥ आकर कह्यो सवाल रसोइ मैं सब

उसकुं दीनी ॥ भुखोइ मैं ध्याउंजी ॥ हुकम  
 ॥ ६ ॥ जवाव पंडित छोकगंको ॥ छपै ॥ पंडित  
 जरिवीदास कँवर जो तुसा खिनायो ॥ ठाकुर  
 पूजा लिये पुष्प बो लेवाध्यायो ॥ कँवल तो  
 डवा कँवर विरछमें हाथ लगायो ॥ कालो विसहर  
 आय पुत्र थारै नै पायो ॥ बतलायो बोलै नहीं ॥  
 म्हे आया बतलायके ॥ कँवर तडफकै मर गयो  
 सथाने पवरदइ म्हे आयके ॥ १ ॥ छपै ॥ पंडितका  
 छोकससै ॥ त्रिलोकीपतीकी गतकुं कोइ लखन न  
 पावै बोधरैसीस पर भार मजल पैदल चलवावै ॥  
 बोरी तारीता भरे भरयोडा नै ढलकावै ॥ पलमें  
 कर दे भूप पलकमें भीष संगवावै ॥ साया अप-  
 रमपार है उस करण हार करतार की ॥  
 आज झ्याज सागर गील्योस भाइ हरीचंद  
 की नारकी ॥ २ ॥ जुवाव पंडितको राणीसैं ॥  
 देर ॥ कँवर रविदासन आयो वाइ, कहाँ उन

बालक वार लगाई ॥ हेतारादे सुता कँवर  
 रविदासन आयो ॥ नाजानु कोइ बहां काहुने  
 विलम लगायो ॥ पुत्र तेरेकुं ल्याव जायकै जल  
 दीबाइ ॥ वो बालक नादान कहां उन वार  
 लगाइ ॥ तिरलोकीपति लिषदई चित्या तुमरे  
 भागमें ॥ लेकर आवो कंवरकुंसथे जलदी जावो  
 बागमें ॥ कंवर ॥ १ ॥ टेर ॥ गुरुजी मेरा टपट-  
 पटपकैनैन कंवरनै विन देषे नहिं चैन ॥ मैं पुतर  
 कुंचलील्याणकुं बागुंताणी ॥ माथो ठिण ठिण  
 करै आंख मेरी फरकी दाणी ॥ दिलमें सुसती भइ  
 अंदेसो चितपर छायो ॥ जादेखंतो कंवर बागमें  
 सूत्यो पायो ॥ वतलायो बोले नहीं बाकी खोड  
 जीवसै छुटगइ ॥ विषो पड्यो पुतर मर्योस में  
 आज रामजी छुटगइ ॥ गरु ॥ २ ॥ जुबाब  
 तारादेको येकली कहती है ॥ लावणी ॥ रंग-  
 तलंगडी ॥ येरे लाल रविदास चांदणु कुलमें

चंदातेरो छो ॥ छिपज्यायगोचंद्रमा मेरेकुं पैली



इसने वेरो छो ॥ येक दिन ऐसा किया राम  
 म्हारे सिरपर छत्र फिरायाछा ॥ नोलप नेजा ह  
 जारहस्ती द्वारे आन घुमायाछा ॥ जिस दिन  
 पैदाहुयो लाल तुंलाखुं ही लाल लुटायाछा ॥  
 तेरी यात निमाणीकेमनमें हरष नहीं कछु  
 मायाछा ॥ राज पाट छुट गया मेरे कछु हरष

शोक नहिं आयाछा ॥ रविदास लाल देख तेरा  
 मुषमें बेठी बिषा बोलायाछा ॥ सैर ॥ पीर जैसी  
 भ्रात बिन भैनाके लगती आनकै ॥ पीर जैसी  
 पीव बिन नारीके लगती आनकै ॥ पीर जैसी  
 पिताके पुतरकी लगती तानकै ॥ हैपीर मेरे  
 आज वैसी भाँवेना भगवानकै ॥ हे भगवान  
 बिलम मेरे इस पुतरको ही स्याम सवेरो छो ॥  
 छि० ॥ १ ॥ पुत्र विहूणी नारसुं कोई नहीं  
 करके चाव बतलावैरै ॥ सब घोर जिठाणी  
 मोड़के मुखडा बोल सुणावैरै ॥ सास  
 नणद परतीत करत नहीं कुटम कबीलो  
 चावैरै ॥ प्रीतम सेजांमांहि हरषकर कदेनहं  
 स बतलावैरै ॥ सबकासब है बोल जाहै नहीं  
 किसकुँवा देण न पावैरै ॥ उस बांझनारकी  
 नावनै भगवत पार लंघावैरै ॥ सैर ॥ करतार  
 ऐसी भूल भारी आपकै है द्वारजी ॥ कंटक

कोपेड़ गुलाब जाके पुष्प खुसबोदारजी ॥ तैं  
 चात्रग परवीन ओर तैं कर रपीलाचारजी ॥  
 पुतर खिलावे द्वारपै ये संपणीसी नारजी ॥ मेरे  
 कैवर रविदास हुये पैली कुलमांय अधेरोछो ॥  
 छीप ॥ २ ॥ आज हमारी नाव समद विच  
 अटकी कुन बलीलावे ॥ हरीचंदराजाकी आप  
 तारादे रानी पिसतावै ॥ कून सुनै किसकूं कहूं  
 मेरो अंदरस्थुं जिगर जल्यो जावै ॥ रविदास  
 लाल तेरी देख लहास हिवडो मेरो उजल्यो  
 आवै ॥ माताकुं पडी देख सैरोड लाल तुयेंक  
 बरभी नहीं मुसकावै ॥ तेरी जननी पापण  
 धुसुका छातीपर बैठी पावै ॥ सैर ॥ मालक  
 नहीं मेरे पास कुणयोयकुं बंधावै धीरजी ॥ मेरे  
 आर्ज ऐरवीदासको उठगो जमीसै सीरजी ॥  
 सब छुट्या राजरपाटमैं कछुना होइ दलगीरजी ॥  
 मेरे आज बिधना ताक करलायो कलेजेतीरजी ॥

उदै हुयो कोइ पाप करचोडो पूरबजनमको  
 मेरोछो ॥ छीपजा ॥ ३ ॥ मैं करतार करुंके  
 करुणा मेरी बेर कठे तू हारचोजी ॥ गज राज  
 डूबतो आन तैं जलकै मांह उवारचोजी ॥ टीं  
 टोडीका अंडापर तैं तोड घंटकुं डारचोजी ॥  
 वाके हवा न आइ पुष्पके माफक हो गयो  
 भारोजी ॥ मंजारी सुत आवेमें रपकर असुर  
 बिडारोजी ॥ प्रह्लाद भगतको कांम तैं बार  
 बारमें सारोजी ॥ सैर ॥ सीतापति मेरी बेर थे  
 कित हुया अंतर ध्यानजी ॥ करुणा करीमें  
 भोत नाकछुरण्यो आदर मानजी ॥ स्योवकसजी  
 गुरुदेव मेरेकुं बतायो ग्यानजी ॥ गुरु मिल्यो  
 गोविंदराम उगियो उजीराके भांनजी ॥ यहासै  
 लेआइ मरघट पर मैं इयां हरीचंदको डेरोछो ॥  
 छीपजा ॥ ४ ॥



हरिचंदको ख्याल.

॥ जवाब राजाको राणीमें ॥



सैर ॥ कुलको हमारो चांदणोलो कंवर यो  
रवीदासजी ॥ मरघटमें चिणकर चितामें हातुंसे  
मेली लहासजी ॥ उस चितामें अगनीको जब  
में करन लागी वासजी ॥ सुन ज्यास हरीचंद  
पास हमरे आपडो हुवो पासजी ॥ १ ॥ सैर ॥  
येरी तुं कुनहै लहासवाली आयके यह क्या  
किया ॥ मनके मते सब काम करती हुकम

किन तुमकु दिया ॥ सुवरण टका यहाँ डाणका  
 लागे है से मैं नालिया ॥ पहली चुकाकर डाण  
 फिरथे करो जो चाहे जिया ॥ टेर ॥ फिरल्हास  
 जलैली लाग लगेली कालू कीरकी ॥ कालू  
 कीरस्यामहै म्हारो उसको लागे डाण ॥ चिण-  
 कर चिता लहासने क्युं कुलवैसी मेली आण ॥  
 योके कीनु माजनुसके काडी जाण पिछाण ॥  
 मैं पिछाण जाणु नहीं ल्युं पहली लाग चुकाय ॥  
 टको येक सुवरनको देकर फिरद्यो लहास  
 जलाय ॥ हुकम योही स्यामकोजी ॥ हांजी थे  
 समजो चात्रग नार बिलम के कायकोजी ॥  
 करल्यो मन मैं खास फेर मैं जलवा चुंगोला-  
 हास ॥ डाण लेल्युंगो पहली ॥ लाग ॥ १ ॥  
 टेर ॥ यो कँवर तिहारो पिवजी टुक दयातो  
 विचारो जीवमैं ॥ दया तो विचारो जीवमैंस टुक  
 चितपर राषो व्यास ॥ सरप डस्यो रविदासनेस

मैं लेकर आई लाहास ॥ ज्यूं ससिने सारंग गित  
 पीव निसको मिट्यो उजास ॥ सबही कुलको चा  
 ह्यारो मिटगयो आज सुजाण ॥ थे पुतरकी ल  
 कोस पीव लेवालाग्याडाण ॥ विपामैं आयकैज  
 हांजी पिव पेट भर कछु नाये अनजल र  
 केजी ॥ थेछा सतका रूप आजक्यूं मत  
 भया भूप ॥ पुत्रसै डाण पियारो ॥ पीव ॥ रा  
 लग्यो भोत थाने राणी उस दिन  
 तुमारो ॥ जल भरवा सागरपर आई बोथे वि  
 चितारो ॥ मन्नैं घडलो ठाताँ उसदिन  
 घटेछो थारो ॥ मुजकुं मध्यम समजकै थे  
 गया इनकार ॥ आप आपको धरम पि  
 सबने लागै नार ॥ वात पैछाणल्योजी ॥ पि  
 बोर बुणाज्यो काम पहली हाने डाणद्योज  
 करल्यो कोद उपाव ॥ आपको देख नल्लै

गैला होगया आप कुटुम्बके गलमें फांसी लावै ॥  
 पुतरका लेवै डाण पिता या भगवतकुं नहीं  
 भावै ॥ कोडी ना मेरे पास टको सुवरनको  
 कितसै आवै ॥ जलीबलीने पीवजीक्युं लाग्या  
 आप जलाण ॥ भला न कैसी जगतमेंस पुतरको  
 लेताडान ॥ प्राण यो आपकोजी ॥ हांजी इन  
 मेरे पुत्र आलियो आसरो बापकोजी ॥ किण  
 विदरहसी टेक ॥ मेरे पलै नहीं कोडी येक ॥  
 कहीं नहीं मिलै उधारो ॥ पी० ॥ ४ ॥ ल्यावो  
 उधारो भावै किसीपा देवो लाग चुकाय ॥ मैंहुं  
 पराधीन पैलैको डाण न छोडयो जाय ॥ जन  
 मान जनमनरकमेंभोगै धरम छोड धन खाय ॥  
 निमक उजालुंस्यामको मैं सतके कारण आय ॥  
 झुठी बात बुणायकेस प्यारी कुण नरकांमैं  
 जाय ॥ धरमनै खायकैजी ॥ हांजी फिर भगवत  
 आगे जाव भरुंके जायकैजी ॥ केतो डाण

चुकावो, नहीं थे लहास उठा लेज्यावो ॥ जिकर  
 मत करो नहेली ॥ लाग ॥ ५ ॥ नार नहेली  
 फिरुं भटकती कितसै ल्याउं लाग ॥ योछै  
 कँवर आपणो पीवजी समज पेटकी आग ॥  
 इसकुं पागयो काल जीवती में रहगई निरभाग ॥  
 पुतरको लेवे डाण मरघटमें लगरही आंग ॥  
 नाथ अव क्याकरुंजी ॥ हांजी मेरे एसी चज  
 रही मनकेभांयक विषखाकैमरुंजी ॥ कोडीना  
 मेरेपास लिये किन नहीं जलणदे लहास ॥ राव  
 भयो दुससन थारो ॥ पीव ॥ ६ ॥ थारो  
 कारज वणै धतवै थानै अकल हरीचंद भूप ॥  
 शिरको चीर फाड्यो आदो तारादे नार अनूप ॥  
 चूकैडाण उतारदेवो प्यारी दांताहूंदी चूप ॥  
 चीर देवो डाणसे फेर वेसक जालो लहास  
 चूकै लाग स्यांमकी फेर थारे कोइयेन आवै-  
 पास ॥ दाग फिर नारद्योजी ॥ हांजी थारो चूप

चीर सुवरणकै टकेमें तारद्योजी ॥ योहारो रुज-  
गार न छोड़ां लाषवात सुणनार ॥ गरजतेरी  
आप भरेली ॥ लाग ॥ ७ ॥ ह्वानेगरज पडीजद  
थारे चलकर आइपास ॥ येकतो छूट्यो राज  
दुसरां कँवर मरयो रविदास ॥ ह्वारो दिन  
थामें बज्योस थे नहीं जलणद्यो ल्हास ॥ डाण  
मांगतो पुत्रको यो बाबल ना सरमाय ॥ उलटी  
बैरही गंग देखल्यो बाड पेतने पाय ॥ नाथया  
य्युं अडीजी ॥ हांजी या ह्वारेमें करतारक के  
विपता पडीजी ॥ मैं होकर लाचार ल्हास पर  
मुंड रही छुं मार ॥ नाथ ह्वारो कष्ट निवारो ॥  
पीव ॥ ८ ॥

॥ देर राणीकी ॥ रागनी भैरवी ॥

कँवर अपनेको लेवै डाणंजी योतो हरीचंद  
राव सुजाणजी ॥ डाण मांगतो पुत्रकोजी राज ॥  
योतो महीपत भयोछै अजानजी ॥ कँवर ॥ ९ ॥

पुत्र लियोमैं गौदमैंजी राज ॥ येजी मैं विलक



रही छुं भगवानजी ॥ कँव ॥ २ ॥ बावलके  
कुल चांदणुजीराज ॥ योतो साता तणुछै पिरा-  
नजी ॥ कँवर ॥ ३ ॥ लाष कही मँरावनेजीराज ॥  
ह्वारी राषी नहींतो पिछाणजी ॥ कँव ॥ ४ ॥  
कहै उजीरो ना टरैजी राज ॥ योतो विधना

अंक परवानजी ॥ कँव० ॥ ५ ॥ जुबाब वि-  
 श्वामित्रको कासीका राजासै ॥ छपै ॥ कासी  
 पती नरेस अरज येक सुणो हमारी ॥ देषी  
 मरघट मांय आजमैं येक सियारी ॥ रूप बेडा  
 विक्राल हाल कछु कह्योन जावे ॥ डरपै सारोनग्र  
 पास कोई नहिं आवै ॥ पान करे वा रुधिरको  
 मैंहाल आप आगे किया ॥ टावर सारे नग्रका  
 स उन सरब सहरका खालिया ॥ १ ॥ छपै ॥  
 गुरु देवमैं बंदोबस्त उसका करवाउं ॥ कालुकीर  
 खिनाय सीस उसका कटवाउं ॥ मेरे ग्राममें  
 विश्वनाथकी चोकी लागै ॥ डाकण स्यारी भूत  
 दैत्य सब डरडर भागै ॥ हुकम चढाके कीरनै  
 मरघट मांय खिनायद्युं ॥ ऐसी डाकण कृण है  
 बीनै बिना मोत मरबायद्युं ॥ २ ॥ जुबाब कालु-  
 कीरसै कासीके राजाको ॥ सैर ॥ येरे ओ कालु-  
 कीर मरघटमें सितावी जाइये ॥ डाकण वहां



आई यक उसका सीस जलदी ल्याइये ॥ हुकम ।  
 हे तामील मेरा देर मती लगाइये ॥ सीस धड़  
 सेती जुदा जलदीसै करकर ल्याइये ॥ १ ॥ मेरा ॥  
 मैंनाथ नोकर आपका कलु देरनाहिं लगावता ॥  
 जैसा हुकम हो आपका बैसाइ करकर आवता ॥  
 नोकरहै मेरे येक वो उस घाटपै नित जावता ॥  
 उसकूं कहंवो सीस उस डाकनका लेकर आवता  
 ॥ २ ॥ टेरे ॥ कालुकीरकी हरीचंदस्युं ॥ टेरे ॥  
 राव मरघटपै वेग पधारोजी थे डाकनको सीस  
 उतारो ॥ मरघट ऊपर चोकी थारी थे हरिचंद  
 राजा जावो ॥ वहां आई येक स्यारी उसका वंदो-  
 वस्त करवावो ॥ होगयो हुकम रावको धड़सै  
 जुदा सीस करल्यावो ॥ जुदा सीसकरल्यावो  
 राजमन भागइ ॥ वा सारे सहरका टावर स्यारी  
 खागइ ॥ मरघट ॥ १ ॥ टेरे ॥ सिरताज हुकम  
 थारो पाउँ ॥ काटुं सीस देरनही ल्याउं ॥ करो

म थे आप देरमें जातो नहीं लगाउं ॥ थेछो  
 लक में छुं चाकर निमक आपको पाउं ॥ कहो  
 काटुं सीस नारको कहोतो साबत ल्याउं ॥  
 होतो साबत ल्याउं कहोतो बालद्युं ॥ थेकहोतो  
 रकर दूक जमीमै गाड्युं ॥ सीरता ॥ २ ॥  
 मीदोज करदेयो दया कछू मनमें करणी नाइ ॥  
 मसीपती नरेस हुकम दैचुक्यो आपणे तांड ॥  
 मेहूं उसकी रीत हमारो बोछे सिरको सांई ॥  
 स्यामतणामैं हुकुम सीस पर ठाबता ॥ कोई  
 बैकुंठांका वास सेइ नर पावता ॥ मरघ ॥ ३ ॥  
 पाया हुकुम आपका ह्ये नहीं देर करां सिरताज ॥  
 जाताजाता करां आज ह्ये स्याहरी तणो इलाज ॥  
 ऐसै पकड़ूं जाके झटपट ज्यू तीतरने बाज ॥  
 ज्यूतीतरने बाज चालज्युं जायस्युं ॥ सिर ॥ ४ ॥  
 जबाब राजा हरीचंदको मरघटमें ॥ सैर ॥  
 रानी तूं बैठी नचीती चेत कर सह्यालजी ॥

कासीमें सब नर नार तोय डाकण ठराइ वा-  
लजी ॥ तेरी कजा मेरे हाथसै लिपदी करो  
दुखखालजी ॥ तेरो मंगायो सीस उन कासी  
पती भोपालजी ॥ १ ॥ सैर ॥ पीवजी कर  
जोरमें हाजर षडी थारे पासजी ॥ छाती फटे  
मेरी पड्यो दीखै कवर रविदासजी ॥ तुम  
सीस मेरो काटल्यो मतना करो वरदासजी ॥  
मरस्युं तुमारे हाथस्युं वैकुण्ठ पास्युं वासजी ॥ २ ॥  
देह ॥ मेरो स्याम रिसायो, रानी तेरो सीस  
मंगायो काटकै ॥ हेतारादे नार आपपर खिज्यो  
हमारो स्यांस ॥ कासी पुरी सहरमें सारै तूहोगइ  
बदनाम ॥ स्याहारी तोय ठैरा लइस तेरो महा-  
निष्ठ कलास ॥ चुगल कोई चुगली करी  
महिपतपै थारी जाय ॥ खिजकर राजा कहीं  
नारकी द्यो गरदन मरवाय ॥ रजा हंमनै दइजी  
हांजीमें उसको ताबैदार नट नाहिं सक्योजी ॥

मैं काटुं तेरो सीस मानल्यो रानी विश्वावीस ॥  
 काल तेरे सिरपरछायो ॥ रानी ॥ १ ॥ ढेर ॥  
 बेसक दिलतारो न्यारो नइ सीस पियाजी  
 आपस्युं ॥ न्यारो नहीं सीस थारेसै थेछो  
 सिरका स्याम ॥ मस्तक ऊपर रखुं हुकममैं  
 थारो आठूंयाम ॥ मैं निज दासी आपकीस  
 पिवजनमा जनम तमाम ॥ नारी भांवे पती होछै  
 आनंदकी रहास ॥ मरुं हाथ थारेस्यु मिलवा  
 वैकुंठाको बास ॥ हतो थारे हाथसैजी ॥ हांजी  
 निज दासी तणां सरीर न्यारा नहिं नाथसैजी ॥  
 मैं दुखियारी नार तारल्यो सीस करो मत  
 बार ॥ सखत बिपतास्युंटारो ॥ न्यारो ॥ २ ॥  
 तारुं सीस करुं थारो न्यारो धडसेती  
 सुणनार ॥ बावुं हाथ बैण नइ पावै मनमें  
 करुं विचार ॥ तिरिया हत्या हाथस्युं  
 होज्या नरकनको आधार ॥ येक समै चक

चूंदरी राणी वासग पकड़ी आय ॥ खाया होज्या  
 कोड़ी वो तणीछोडेसै मरजाय ॥ वैसैमैं पिसता-  
 वतोजी ॥ हाजी म्हारे हुकम स्यामको छोड्यो  
 नांइ जावतोजी ॥ कहा रची करतार ॥ हाथ मेरेसै  
 मरसी नार ॥ पातगी यैं लपपायो ॥ राणी ॥ ३ ॥  
 पावो अकल अरज येक ह्यारी सुणल्यो आप  
 रहीस ॥ अंजल करचां दिवस थारेकुं हुया आठ-  
 चालीस ॥ काया सम्है न आपकींस क्युं झुठी  
 कररहा रीस ॥ डिग डिग काया पडै थांसै मि-  
 सरी बहै न कोय ॥ करचां धरे रो स्याम हमारी  
 दुष कायामें होय ॥ अकल व्योपायल्योजी ॥  
 हांजी थारो डुपटेसेती पेट खूबकस चांदल्योजी ॥  
 फिरकरकरथे पार आप मेरे मारो तलवार ॥  
 सधै ज्युं मतलब थारो ॥ न्यारो ॥ ४ ॥ ह्यारो  
 रूस्यो सीसकोसजी राणी सिरजनहार ॥ मरसी  
 प्रतिभरता सतवंती मेरे ह्यारुं नार ॥ रविदा-

सकी लहास देषकर मैं हो रह्यो लाचार ॥ मैंहरी  
 चंद पिसतारह्यो राणीका गमकुं देष ॥ अरे विधाता  
 निठुर हमारे के लिषदीन्यां लेष ॥ देष जीवयुं  
 डरै जी ॥ हांजी है भावी बलवान आज राणी  
 मरैजी ॥ आजतेरो सीसउडाऊं हुकम मेरे स्याम-  
 तणो भुगतावूं ॥ निमक मैं उसको खायो ॥ राणी०  
 ॥ ५ ॥ खायो निमक स्यामको सो थे प्रीतम  
 आज उजारो ॥ आज मरूं प्रीतमके हाथस्यूं  
 पुन्य उदै हुयो म्हारो ॥ ऐसी द्यो तरवार सीस  
 मेरो धडसैं होज्या न्यारो ॥ लहास कँवरकी  
 गोदमें मैं लेकर बैठी नाथ ॥ तेरी जोत अपार  
 कर दियो मातपुत्रको साथ ॥ नाथन्यारी गती  
 जी ॥ होतुं देवतो भगतने त्रासक सांताका  
 पतीजी ॥ कहांगयो मेरी बेर ॥ नाव थारो मैं  
 बैठी रहीदेर ॥ आपको बडोछो उजारो ॥  
 न्यारो० ॥ ६ ॥ बडो उजारो नाथकोस है घटघट

मैं परगास ॥ सत्त धरमसैं चालै उसकी भगवत  
 पुरै आस ॥ क्यूँ बैठी है दूर हाथके आव हमारे  
 पास ॥ राणी झोंक्यो सीसने मैं ऊंचो उठायो हाथ ॥  
 तज खगराज पियादोइ ध्यायो तिरलोकीको  
 नाथ ॥ विपतम्हारी हरीजी ॥ हांजी ह्वाने चतुर-  
 भुज कर रूप दिखायो बाघरीजी ॥ तेली कहे  
 जुजीर नारको बकस्यौ नाथ सरीर ॥ सुरगस्यूं  
 लेवा ध्यायो ॥ राणी ० ॥ ७ ॥ जुवाव विष्णुभग-  
 वानको ॥ विश्वामित्र बुणकर आयो ॥ कँवर  
 रवीदासने सरजीवन कर्यो, राजा राणी कँवरने  
 सुरग लोकमें लेजाताहै ॥ छुपै ॥ मांगमांग हरी-  
 चंद तेरो जस चोउंदिस छायो ॥ मैं भगवत कर  
 रूप तेरी रक्षापर आयो ॥ धनधनतो कूं राव  
 दीनपति दरसन दीन्यो ॥ पकड हाथ रविदास  
 कँवरने बैठोकीन्यो ॥ सरजीवण पुतर हुयो ॥  
 अवक्यूँ खड्यो उदासहै ॥ चलो राव हरीचंद

तुमारो बैकुंठांमें बास है ॥ १ ॥ छप्यै ॥ किरपा-  
 करी करतार भगत हित चलकर आया ॥ करचो  
 चक्रभुज रूप मोय प्रभु दरस दिखाया ॥ मैंहूँ  
 निपट अनाथ आपहो पती हमारे ॥ भक्त आपनौ  
 जान कष्ट सबही हरडारे ॥ जस जीवन अपजस  
 मरण नाथ बात सुनलीजिये ॥ मेरे जितनु विषो  
 कोई मत जीवाजूणने दीजिये ॥ २ ॥ टेर ॥ चलो  
 तुम हरीचंदराव सुजाण आया बैकुंठांतणा बि-  
 वाण ॥ येबिवाण बैकुंठकास आया हरीचंद तेरे  
 ताई ॥ कष्ट सह्यो तुम भोतराव थे सतने छोड्यो  
 नाई ॥ राणी कँवर संग लेचालो बैकुंठांके माई ॥  
 चलो० ॥ १ ॥ मुजपर किरपाकरी करतार सतसे  
 होगयो बेडोपार ॥ सतवादीको सतरख्योसथे  
 करुणानिध करतार ॥ येक समै द्रोपदीको थे  
 करदीन्यो चीर अपार ॥ खँचतखँचत दुष्ट हारकर  
 होयगयो लाचार ॥ मुजप० ॥ २ ॥ होगया बेडा-



पार आपका ओ हरीचंद सतधारी ॥ मैं तोय  
 विखो भोत भुगतायो वणकर विप्र भिखारी ॥  
 सगलो सत सावत लखथारो जद प्रसन्नभया  
 अवतारी ॥ चलो० ॥ ३ ॥ थारी जोत अपार  
 आपहो ऊँकार निजनाथ ॥ कालूकीर स्याम मेरो  
 चालै सब कुणवेस्यूं साथ ॥ जद चालूं वैकुण्ठमेंस  
 मेरो धरम बण्यो रहजात ॥ मुज० ॥ ४ ॥ जात  
 न्यात दुनियांमें दोय मालक घर सब इकलासी ॥  
 करणहार करतार हुकुम दियो वैकुण्ठाके वासी ॥  
 तिरण त्यारणी पुरी गई सब वैकुण्ठमें कासी ॥  
 चलो० ॥ ५ ॥ कासीपुरी वैकुण्ठ गई यो वेदां मुस  
 जस गायो ॥ गोविंदराम गुरु कृपाकरी सिसुजा-  
 नके गुन सिखलायो ॥ तेली चतुर उजीर ख्या  
 हरीचंदको नयो वणायो ॥ मुज० ॥ ६ ॥  
 इति हरीचंदको ख्याल संपूर्ण.

॥ श्रीः ॥

# हरीचंद्राजाको वारामा- सियो लिख्यते ।



चैतमास हरीचंद्रकी सोभा सुणज्योरै भाई ॥  
सतको सील धरमको दाता परजाको सहाई ॥  
धरम कन्याको व्याहकरै ॥ ऐसो राजा हुयो न  
होसी जिसमें विपत पडै ॥ विधाता हरकी गत  
न्यारी ॥ सुरज वंसमें हुयो हरीचंद्र राजा ओतारी  
॥ १ लगत मास वैसाख मुनी विश्वामितर आये ॥  
मनमें कपट विचार रूप बरहाको घर आये ॥  
बागमें धूमस मचवाई ॥ माली जाय द्वार राजाके  
ऐसी दरसाई ॥ बराह येक सुवरणको भारी ॥  
सुरज० ॥ २ ॥ जेठ मास असवारीकर चढ़ राजा

आपगयो ॥ जद सुरखो लियोछोड ग्रीव ब्राह्म-  
 णको भेस भयो ॥ रावने आशीरवाद दियो ॥  
 कन्या येक कँवारी मेरे ऐसो वचन कह्यो ॥  
 मुनी येक हरकी गतन्यारी ॥ सुरज० ॥ ३ ॥  
 साठ मास राजा कहै मुखसैं मांग विपरलीजे ॥  
 ज्यो मांगै इणस्यात दिराजं ढील मती कीजै ॥  
 विप्र कहै वचन देवो मोकूं ॥ येही बचन मांगे  
 सोइ देखं नहं नहीं तोकूं ॥ भार सुवरणका साठ  
 धारी ॥ सुरज० ॥ ४ ॥ सावण मास राव कहै  
 मुखस्युं अरजी गुदराजं ॥ तिरिया जात बुधकी  
 ओछी मेरी राणीपा जाजं ॥ इती कहै महलामैं  
 आयो ॥ हाथजोड अरदास करूं प्रीतमनै बत-  
 लायो ॥ वचन सुन तारादे नारी ॥ सुरज० ॥ ५ ॥  
 भादूं भाव विचार भक्त येक ऊवो दरवाजे ॥  
 साठभार सुवरनका मांगे राणी नट्यां धरमलाजे ॥  
 पती येक सुणो वचन मेरो ॥ विप्र दिवावो दान

राज धन पुत्र बेच तेरो ॥ राव मन ल्यायो हुंसि-  
 यारी ॥ सुरज० ॥ ६ ॥ लग्यो मास आस्योज  
 बेच सब सुवरण कियाभेला ॥ दोय भारमैं राणी  
 पुत्रकूं विप्र घरां मेल्या ॥ आपघर नीचके जाय  
 रह्यो ॥ साठभार सुवरणकर भेलो विपरने बिदा-  
 कियो ॥ राव रहै मरघट रखवारी ॥ सुरज०॥७॥  
 कार्तिक मास राव हरीचंद सुरांनै नीर प्यावै ॥  
 उंही घाट तारादे रानी क्यूं जलभरनै आवै ॥  
 राव राणीनै बतलाई ॥ उठैन हेमसै भार नार  
 येक गागर उचवाई ॥ पती मोमैं छायां पडै थारी  
 ॥ सुरज० ॥ ८ ॥ मंगसिरमैं महाकाल रूपधर  
 विश्वामित्र लब्धो ॥ पुत्रकै विश्वामित्र लब्धो ॥  
 हे परमेश्वर गती तिहारी कैसो विखो पब्धो ॥  
 पुत्रकी लेकर लहासगई ॥ पहली डाण चुकाय  
 अस्तरी हरीचंद बात कही ॥ नहीं या पाछी  
 लैज्या री ॥ सुरज ॥ ९ ॥ लग्या महीना पोसक

मोयपा कछु नहीं राजा ॥ चूँप तोड दांतनकी  
 देई इब सारो सबकाजा ॥ मुनी राजानै जाय  
 कहीं ॥ डाकण येक नथ तेरेमें राजा जवरी  
 भोत आई ॥ हरीचंद मारो तुम स्याहारी ॥  
 सुरज० ॥ १० ॥ माघ मास ले खडग हरीचंद  
 मारणकूं ध्याये ॥ काड खडग राणीपर ओज्यो  
 जब परमेश्वर आये ॥ आयकर पकडे दोऊं  
 हाथा ॥ मांगमांग हरीचंद तुमे वर दूटेरघुनाथा ॥  
 वैँ समै भुजाच्यार धारी ॥ सुरज० ॥ ११ ॥  
 फागणमें हरीचंद भक्तकूं म्याना चलआये ॥  
 सुरगसै म्याना चलआये ॥ मेरोशास चले तो मैं  
 चालूं नहीं मुजकूं के चाये ॥ नीच कहै मैंतो  
 नहिं जाऊं ॥ सब कासी चाले घिन आगे वैठ्यो  
 क खाऊं ॥ भगत येक सब नगरीका त्यारी ॥  
 सुरज० ॥ १२ ॥ गुल्ला ब्राह्मण कहै भक्तकूं जो  
 कोइ नर गावे ॥ सुनहो चूना वैन भोरचौरासीं

हरिचंदको ख्याल.

नहिं पावे ॥ भगतकी या वारामासी ॥ सोनूं लाल  
यूं कहै भगतकूं जे कोइ नरगासी ॥ रखो भग-  
वंतकी इकतारी ॥ सुरज० ॥ १३ ॥

॥ इति वारामासी संपूर्ण ॥



## बेचनेको तैयार.

नाम.	की डा. म.
रिसालूनोपदेको ख्याल ....	०-३ ०-१
गोपीचंदको ख्याल ( मोतीलालकृत )	०-३ ०-१
अमरसिंहको ख्याल ( मोतीलालकृत )	०-४ ०-१
दयाराम धाडवीको ख्याल ( प्रल्हादी- रामका बनाया हुआ ) ...	०-२ ०-१
अमरसिंह हाडी राणीको ख्याल ....	०-३ ०-१
गोपीचंदको ख्याल ( प्रल्हादीरामकृत )	०-३ ०-१
हीरराज्ञाको ख्याल ....	०-३ ०-१
सुलोचनाको ख्याल ....	०-२ ०-॥
भरथरीको ख्याल ....	०-३ ०-१
नलराजाको ख्याल ....	०-३ ०-१
नयाधारामासिया ३२ लवनीसंग्रह	०-४ ०-१

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-  
हरिप्रसाद भगीरथजी,  
कालकादेवीरोड, रामवाडी-मुंबई.

# विक्रयार्थ तैयार.

की० डा०म०

नलराजाको ख्याल ....	....	....	०-३	०-१
हरिश्चंद्र तारामतीको ख्याल ....	....	....	०-३	०-॥
पाकमहोबत ( लेलामजनूको ) ख्याल			०-३	०-॥
मोरध्वजको ख्याल ....	....	....	०-३	०-॥
पृथ्वीराजको ख्याल ....	....	....	०-४	०-१
पूरणभगतको ख्याल ....	....	....	०-४	०-१
ढोलसुलतान न्याहालदेको ख्याल ....			०-३	०-॥
मालदेहाडीरानीको ख्याल ....	....	....	०-३	०-॥
बेणवादस्याजादीको ख्याल ....	....	....	०-४	०-१
छोटाकंथको ख्याल ....	....	....	०-२	०-॥
फूलकँवरफूलवतीको ख्याल ....	....	....	०-४	०-१
ढोलामरवणको ख्याल ....	....	....	०-४	०-१
जुहरीको ख्याल ....	....	....	०-२	०-॥
बिणजाराको ख्याल ....	....	....	०-२	०-॥
झंगजीजवारजीको ख्याल ....	....	....	०-२	०-॥
खिवांआभलदेको ख्याल ....	....	....	०-३	०-॥
पन्नावीरमदेको ख्याल ....	....	....	०-३	०-१
फुलाँदैकेशरसिंहको ख्याल ....	....	....	०-३	०-१



## विक्रयार्थ तैयार.

— ० —

क्रा. डा. म.

रिसालूनोपदेको ख्याल ....	०-३	०-१
गोपीचंदको ख्याल ( मोतीलालकृत )	०-३	०-१
अरमसिंहको ख्याल ( मोतीलालकृत )	०-१	०-१
दयाराम धाड़वीको ख्याल ( प्रल्हादी- रामका बनाया हुआ ) ....	०-२	०-१
अरमसिंह हाड़ी राणीको ख्याल ....	०-३	०-१
गोपीचंद (प्रल्हादीरामकृत)....	०-३	०-१
हीरारांझाको ख्याल ....	०-३	०-१
मुलोचनाको ख्याल ....	०-२	०-॥
भरथरीको ख्याल ....	०-३	०-१

हरिप्रसाद भगीरथजी,  
कालकादेवी-रोड, रामवाड़ी, मुंबई.

श्रीः ।

अथ

महादेवजीरो व्यावलो ।

जोसीसिंधूजीकृत ।

ताकौ

हरिप्रसादभगीरथजीने

मुम्बईमें

“ गणपतरुष्णाजी ” छापखानेमें

छापकर प्रकाशित किया.

शके १८२५ संवत् १९६०.



श्री  
अथश्रीमहादेवजीरो व्यावलो ।

जोसीसिंभूजीकृत प्रारंभ ।

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगनपतिनामउचारविघनव  
नपावकहै ॥ मन० ॥ १ ॥ सृष्टिकरंताब्रह्माउचा  
रयो ॥ सिंभुत्रिपुरजयकाज ॥ बलबधंतांविष्णुउचा  
रयो ॥ जगजीतनरतिराज ॥ २ ॥ धराधरंतांसेसउ  
चारयो ॥ महिषविजयकूअंब ॥ मनबसकारणरिपिन  
उचारयो ॥ मंगलविपिनकलंब ॥ विघ० ॥ ३ ॥  
जोईउचारेजिनकेसबही ॥ काजसुधारेंभारें ॥ सदन  
मतीकोहेमवतीकौं ॥ नंदनआपदटारें ॥ बिघन० ॥  
॥ ४ ॥ सिवकौव्यावभयौगिरिजासैं ॥ जानतत्रिभु  
वनसारै ॥ करप्रनामगनपतिकौंवरणूं ॥ गजमुखवि  
घनविडारै ॥ विघ० ॥ ५ ॥ दोहा ॥ लताआपनी  
सेविये ॥ जिनकीसंगतपाय ॥ थानपुरानौफलतहै  
॥ जोमांगैमनचाय ॥ १ ॥ मायाब्रह्मविन् समें ॥ ब-

न्यौसकलसंसार ॥ मायाहिमगिरकन्यका ॥ ब्रह्म  
 हेशनिहार ॥ २ ॥ हेअसारसंसारमें ॥ एदोयसारअ  
 सार ॥ अशुभनिवारनसिवसिवा ॥ भजउतरौभवपार  
 ॥ ३ ॥ दोनूवानिअरथज्यों ॥ मिलेएकअरुदोय ॥  
 अरधअंगनारीपुरुष ॥ रूपअलौकिकहोय ॥ ४ ॥  
 जिनकेगुनअरुबादमै ॥ सफलगिरांकूजान ॥ तजव  
 कवादविवादसब ॥ गावौगुनसप्रमान ॥ ५ ॥ गुनकौं  
 पारनदुहुनकौं ॥ कोवरनेकविकुंठ ॥ थाकेवेदसभे  
 दकी ॥ वेदवेदवैकुंठ ॥ ६ ॥ जगकथावानीमलिनता  
 ॥ दूरकरनकेहेत ॥ उमासिंभुकीरतकथा ॥ गंगापर  
 मसंकेत ॥ ७ ॥ औविसवासविसेसधर ॥ वरन्यौव्या  
 वविधान ॥ वानीकेकटजायगै ॥ औगुनगुनसौनि  
 धान ॥ ८ ॥ राग ॥ सिवकीकथासुनावैरे ॥ ९ ॥  
 नैमिषवनकेऋषिलौगनकूं सतविनोदपढावैरे ॥ १० ॥  
 नैमिषवनमैरिषिजनबैठै ॥ करकरहौमसुभावै ॥ आ  
 येसूततिहांविधिगतसौं ॥ फिरफिरपुन्यवधावैरे ॥  
 ॥ ११ ॥ सिव० ॥ करप्रनामआदरसौंऋषिनै ॥ आ

सनदियौबिछावै ॥ बैठेसूतपूतमुषवानी ॥ सिवसिव  
 कहैकहाँवैरे ॥ सिव० ॥ ३ ॥ सुचितजानशौनकरि  
 पिपूछै ॥ जबवयवृद्धकहाँवै ॥ हैकुलीनऋग्वेदविच  
 क्षण ॥ यातेंप्रश्नरचावैरे ॥ सिव० ॥ ४ ॥ कहौसूत  
 सिवतत्वमहातम ॥ सुनकैसबसुखपावै ॥ व्यासकृपातेंतु  
 मसबजानों ॥ तोमुखसिवगनछावैरे ॥ सिव० ॥ ५ ॥  
 तीरथपुंकरआदिसकलजे ॥ थावररूपधरावै ॥ तुम  
 सेजंगमतीरथफिरफिर ॥ परमानंदरचावैरे ॥ सिव०  
 ॥ ६ ॥ बोलेसूतसुनोसबऋषिजन ॥ कौसिकतत्वसु  
 नावै ॥ कोटिरूपधरकहैसरस्वती ॥ यद्यपिपारनपावैरे  
 ॥ सिव० ॥ ७ ॥ जाकूंसोधतहरीविधाता ॥ सनका  
 दिकमुनिचावै ॥ माहावाक्यकीविरतिविचारे ॥  
 यद्यपिपारनआवैरे ॥ सिव० ॥ ८ ॥ देखतभावतुम्हा  
 रोकहियै ॥ जैसोहमकूंआवै ॥ हेअपारआकासतिहां  
 खग ॥ गतप्रमानउडजावैरे ॥ सिव० ॥ ९ ॥ सिव  
 कोतत्वअपारअपारै ॥ कथाभागसुकहाँवै ॥ नाना  
 कथाजथारथजिनकूं ॥ सुचितभयेमुनिगावैरे ॥ सिव

॥ १० ॥ होअनेककहियैहितपूरव ॥ प्रथमसुनोंकर  
 चावै ॥ भयौव्यावगिरिजाशंकरकौं ॥ लौकिकरी  
 तचलावैरे ॥ सि० ॥ ११ ॥ सतीगईवरजतसंकरकै  
 ॥ पितुकेघरकरचावै ॥ पायअमानमाननिजतनतज  
 ॥ जन्मद्वितीयधरावैरे ॥ सिव० ॥ १२ ॥ सोकहियै  
 गिरिराजनंदनी ॥ दिनदिनहरषवधावै ॥ मूरतधार  
 मनौधरआई ॥ कीरतध्वजाफहरावैरे ॥ सिव० ॥ १३ ॥  
 रूपरासिगुनरासिगवरजा ॥ रिक्तवनरतनकहावै ॥  
 रिषिरिषिकौंपूछैगिरिनायक ॥ याकौविंदवतावैरे ॥  
 सिव० १४ ॥ देखरूपगुनपरममहातम ॥ नारदध्या  
 नलगावै ॥ सुनौहिमाचलपतइनकैतो ॥ सिवविन  
 औरनआवैरे ॥ सिव० ॥ १६ ॥ इचरजसौंबोलेगि  
 रिनायक ॥ नारदहासरचावै ॥ रंकनकेघरसंकरस्वामी  
 ॥ गरजकहाधरआवै ॥ सिव० ॥ १७ ॥ कहूंसत्यगि  
 रिराजपरमगुरु ॥ संकरक्यौंइतआवै ॥ अरधअंगकौं  
 रूपगवरजा ॥ हठसौंकौंनबुलीवैरे ॥ सिव० ॥ १८ ॥  
 बचनतुम्हारोसोमुनिनारद ॥ विधनाजोगबनावै ॥

संकरसौगौरीदेहमसे ॥ जगमेधन्यकहाँवैरे ॥ सिव० ॥  
 ॥ १९ ॥ सुननारदकेबचनगवरजा ॥ माततातमन  
 चावै ॥ विजयाजयासखिनसौमिलकै ॥ नारदसुंबत  
 लावैरे ॥ सिव० ॥ २० ॥ नारदपरमदयालवखानो  
 ॥ तुममुखसिवगुनछावै ॥ विनदेखेविनसुनेसदासिव  
 ॥ हमकुंबहोतसुहावैरे ॥ सिव० ॥ २१ ॥ हेकोईउद्य  
 मकहोमुनीश्वर ॥ जिनसंहमसुखपावै ॥ करविवाहले  
 चलैमहेश्वर ॥ हमसिवनारकहाँवैरे ॥ सिव० ॥ २२ ॥  
 नारदकहेबातएलायक ॥ उद्यमकौनबतावै ॥ विना  
 तपस्यासिवकेमनकौं ॥ वसीकरननहिंपावैरे ॥ सिव०  
 ॥ २३ ॥ तातेकरौतपस्यागवरी ॥ जासौंसिवपति  
 पावै ॥ जनकजगतकौंसंकरकहियै ॥ तूंजगमातक  
 हाँवैरे ॥ सिव० ॥ २४ ॥ सतीविजोगपायसिवसंकर  
 ॥ वासइकंतरचावै ॥ जबेतंजन्मभयौतेरोआली ॥  
 तबतेकलुसुचपावैरे ॥ सिव० ॥ २५ ॥ अवसकाज  
 तेरोअबवैहै ॥ तपकरौसुदृढचितचावै ॥ येगुनरूप  
 संपदातेरी ॥ सिवसंगशोभापावैरे ॥ सिव० ॥ २६ ॥



नारदगयेगवरजाविजिया ॥ जयासखीमुखचावै ॥  
 माततातकौ वचन पायकै ॥ तपवनवासवसावैरे ॥  
 सिव० ॥ २७ ॥ घोररच्यौतपविमल भावसाँ ॥ शिव  
 शिवध्यानलगावै ॥ ऐसोकरयोनकरहैकोऊ ॥ सब  
 जगकूँविसमावैरे ॥ सिव० ॥ २८ ॥ देवमुनीश्वरमि  
 लकै सिवये ॥ गयेगवरजाभावै ॥ विरदावरोदेन  
 मनोरथ ॥ गिरजाक्यांकिहुंनहिंपावैरे ॥ सिव० ॥  
 ॥ २९ ॥ आयेतहांमहेश्वरदेवी ॥ गौरीपरमसुहावै ॥  
 सतीविजोगआगमेठणकुं ॥ रूपघटावरसावैरे ॥ सिव०  
 ॥ ३० ॥ दृढविश्वासपरमतपकीगत ॥ वांछतदे  
 मनचावै ॥ कासीपुरीपधारेसंकर ॥ गौरीनिजघरआ  
 वैरे ॥ सिव० ॥ ३० ॥ तपकीबातमेहसमिलनकी ॥  
 बिजयाजयासुनावै ॥ नीचैनैनलजावैगौरी ॥ मात  
 तातसुखपावैरे ॥ सिव० ॥ ३१ ॥ संकरजायऋषिज  
 नकौंमेलै ॥ त्यांहिमगिरिघरजावै ॥ करीसंबंधसगाई  
 विधिसौं ॥ आयेअतिसुखपावै ॥ सिव० ॥ ३२ ॥ नारदके  
 मुखतेंसबसुरकूँ ॥ जानिसंभुबुलावै ॥ सुरनरअसुरन

कौइतआवै ॥ जिनकैहमनकहावैरे ॥ सिव० ॥ ३३ ॥  
 नारदऋषिसौंपायसंदेसौ ॥ सबजगसुखनसमावै ॥  
 हुवोव्यावमहेश्वरकौयौ ॥ करकरबहुतउमावैरे ॥ सिव०  
 ॥ ३४ ॥ आयेवनजानिसबसुरनर ॥ नागअसुरकर  
 चावै ॥ अपनोअपनोपरकरसाकै ॥ आडंबरभूदिखा  
 वैरे ॥ सिव० ॥ ३६ ॥ सुरगनिकागंध्रवमातरका ॥  
 किन्नरभीरमचावै ॥ भूतपिशाचप्रेतगनसिवको ॥  
 जिनकोपारनपावैरे ॥ सिव० ॥ ३७ ॥ करकैभंग  
 लरीतमहोछव ॥ बींदबनेशिवजावै ॥ चलीजानकै  
 लासनगरसूं ॥ हिमगिरिकेघरआवैरे ॥ ३८ ॥ हंस  
 चढेब्रह्माजीजानी ॥ बडजानीजुकहावै ॥ मूरतधार  
 बेदजिनआगै ॥ स्मृतिपुरानसरसावैरे ॥ सिव० ॥ ३९ ॥  
 गरुडचढेनारायनजानी ॥ वानीशिवशिवभावै ॥  
 च्यारच्यारभुजांकेजिनके ॥ पारषदनांवधरावैरे ॥  
 सिव० ॥ ४० ॥ इंद्रचढे ऐरावतजिनके ॥ संगमरु  
 तगनआवै ॥ वसुआदिततक्षकभास्वरगन ॥ चहुंघा  
 भीरमचावैरे ॥ सिव० ॥ ४१ ॥ औरहुभांतअनेक

सुरासुर ॥ जानिकौनगिनावै ॥ चढयोशलभदलम  
 नौगगनते ॥ गिनतीपारनआवैरे ॥ सिव० ॥ ४२ ॥  
 चढीजानबाजनबाजनगति ॥ छोलनचढीसुहावै ॥  
 सिंधुजटातेचलीगंगमनु ॥ संगमसिंधुकरावैरे ॥ सिव०  
 ॥ ४३ ॥ चावचढयोगिरिजाकैअतही ॥ बैलचढै  
 मनभावै ॥ जांजाबाजाबैजवराती ॥ त्यांत्यांसिवसुख  
 पावैरे ॥ सिव० ॥ ४४ ॥ मनचालेगुनवकैवरावर ॥  
 मनचायोलुटजावै ॥ हाहाकारहुहुगंधर्वकौं ॥ विच  
 विचआनचिगावैरे ॥ सिव० ॥ ४५ ॥ धुंधुकरकेवा  
 कवजावै ॥ हुंहुंकौनपिलावै ॥ मानपायवाजनकौंस-  
 बगन ॥ उछलउछलउहजावैरे ॥ सिव० ॥ ४६ ॥  
 कौईयकपगऊंचाकरसिरसौं ॥ चलेजानमैआवै ॥  
 चलेहाथसुंकेईयकगनजन ॥ लुटजावैअरुगावैरे ॥  
 सिव० ॥ ४६ ॥ कौईयेकमुखतेंझालचलावै ॥ केई  
 येकजलसुंबुझावै ॥ गनकौंख्यालजानशिवकीमै ॥  
 वरननकरतनआवैरे ॥ सिव० ॥ ४८ ॥ आईजान  
 हिमाचलकेघर ॥ पोलनधीरमचावै ॥ संकररूपधु-

रथौअतिजीरन ॥ जीरनबैलहिगावैरे ॥सिव०॥४९॥  
 देखनलगीजानकीसोभा ॥ पुरजनकरकरचावै ॥ पूछ  
 तनांववरातिनकौं ॥ विचविंदेपिसतवैरे ॥ सिव०  
 ॥ ५० ॥ रागफिरी ॥ देशौविंदउमाकोरे ॥ ओदेशो  
 विंदउमाकौ ॥ बूढबैलचढ्यौअतिबूढोबन्योविमा  
 कोरे ॥ औ० ॥ टेर ॥ भांगभसुकधतूराबूकै ॥ तो  
 हिनतिलभरछाकौ ॥ नाकोईभाईबंधठिकाणौं ॥ ना  
 कोईमातपिताकोरे ॥ देशो० ॥ १ ॥ बाबोकहेकहे  
 बकेबराती ॥ कोईकोईबोलतकाको ॥ नहीठिकाणौ  
 जनमदिवसकौ ॥ नाकोईसंबतसाकोरे ॥देशो०॥२॥  
 घरघरसुनीकसीनरतारी ॥ कहेलपेतनप्याकौ । धूबै  
 नैनविकंपैदेही ॥ आयौजरठकठाकौ ॥ देशो० ॥३॥  
 वरकौरूपएकनहिंदीषे ॥ दीसैरूपविषाकौ ॥ अरेउ  
 मावरऔकिणकीनौ ॥ रूपअदागदगाकौ ॥देशो० ॥  
 ॥ ४ ॥ चषलिलाटभृगुटीपरअहिगन ॥ फूंकतपवन  
 फटाको ॥ लागतआंचधुवांविचवरसत ॥ सचिकण  
 विंदुसुधाकोरे ॥ देशो० ॥ ५ ॥ गाजतगंगजटाअरु

विचही ॥ कौवरनेगुनजाकौ ॥ वहेवरातीजानकदा  
 चित ॥ छूटतबंधलटाकौरे ॥ देषो० ॥ ६ ॥ गुनकौं  
 लवइनमैनहिंदीषै ॥ नाकोइधनकौटांकौ ॥ कपडा  
 हुवैतोखालनपैरै ॥ नांवनसुन्यौउमाकोरोदिषो० ॥ ७ ॥  
 सुलभराषलेअंगलगावै ॥ केगलविपकौफांकौ ॥  
 हाथकरौटीमुषसिंगीरव ॥ ऐसीविधपरपाकोरे ॥  
 देषो० ॥ ८ ॥ गावतगनकरतालवजावत ॥ कोई  
 कोईमारतहाको ॥ कोसअफीमधतूराबूकै ॥ करैभां  
 गकोफाकोरोदिषो० ॥ ९ ॥ विधिहरिइंद्रसुरासुरसवही ॥  
 सुन्यौव्यावकरताको ॥ कहाजानजानीबनिआयै ॥  
 औतौविंदटकाकोरे ॥ देषो० ॥ १० ॥ इनकौमा  
 नगवरजाकीनो ॥ अपनौरूपवराकौ ॥ पौलहेमाच  
 लचढ्योविंदफल ॥ कियौअंवतपजाकौ ॥ देखो ॥  
 ॥ ११ ॥ सुनबकवादमेंनकाआई ॥ देण्यौविंदसुता  
 कौ ॥ लौढनकलरवपरीपरीभू ॥ देखरूपकौताकोरे  
 ॥ देषो० ॥ १२ ॥ रागसोरठ ॥ भूमपरीहिमगिरि  
 कीपटरानी ॥ टेर ॥ देखविंदगवरीकौबूढो ॥ हियमें

अतिहहरानी ॥ भूलीसुधवसतरअंगनकी ॥ कहनस  
 कीकछुवानी ॥ भूम० ॥ १ ॥ नैनझरैजलधारझर  
 नज्यूं ॥ कंपतिअंगअसानी ॥ सूखतहोटपोटसबदुषकी  
 ॥ आनपरीजुअजानी ॥ भूमप० ॥ २ ॥ धडकैहि  
 यौअतितापचढ्यौतन ॥ झांषतनाकोऊकानी ॥ हा  
 हाकारमच्यौहिमगिरिकै ॥ बैकउठीरजधानी ॥ भू  
 मप० ॥ ३ ॥ करउपचारअनेकजतनसौं ॥ हटसौंदे  
 मुखपानी ॥ लावतचेतअचेतगईजब ॥ फाटतहियवि  
 ललानी ॥ भूमप० ॥ ४ ॥ रागमारू ॥ मैनावाक्यं ॥ ज  
 वाईदायनआवैरे ॥ शिवकीसासूमैनका ॥ नारदसम  
 झावैरे ॥ टेर ॥ १ ॥ औकुणलायौघेरके ॥ सिरधू  
 मधुसावैरे ॥ बनजोजूटजटानषां ॥ विचनीरचलावैरे  
 ॥ जंवाई० ॥ २ ॥ जाकेअंगवितंगहै ॥ कोउकोऊ  
 जगगावैरे ॥ जगमगतगमगऔरही ॥ मगचापचला  
 वैरे ॥ जवा० ॥ ३ ॥ देषोअंगविरंगहै ॥ गजसाल  
 टकावैरे ॥ आंषषोलैरंचही ॥ देषेनदिषावैरे ॥ जवा  
 ई० ॥ ४ ॥ निरधननिरगुनअंगमै ॥ बहुराषलगा-

वैरे ॥ प्रेतपिसाचभूतांलियौ ॥ समसानजगवैरे ॥  
 जवाई० ॥ ५ ॥ जातपन्योवृषवृद्धसो ॥ गननीठउ-  
 ढावैरे ॥ सीसधुनायजटानसौं ॥ भूतोउलटावैरे ॥  
 जवाई० ॥ ६ ॥ मंगलकीविधिनांनलधूं ॥ जंगल  
 मनभावैरे ॥ देखउदंगलधुंधसो ॥ मेरोमनधवरावैरे  
 जवाई० ॥ ७ ॥ आपतैहैकैव्यावहै ॥ उतपातदिसा  
 वैरे ॥ व्यावांमीठाजीमणां ॥ ओतौझैरहीपावैरे ॥  
 जवाई० ॥ ८ ॥ हलकीलागीवंसकीकोऊबोलनपा  
 वैरे ॥ तोलनआवैतारही ॥ मेरीपोरलजावैरे ॥ ज-  
 वाई ॥ ९ ॥ तूरजमंगलदूरहै ॥ गनधूसवजावैरे ॥  
 गोमुषढंढीढंढाकदे ॥ डंमरूढहकावैरे ॥ जवाई० ॥  
 ॥ १० ॥ गुनगरभीलीगौरजा ॥ छिन्नकहतनआवैरे  
 ॥ मोंजीवतइनविंदकुं ॥ गिरेदेवनपावैरे ॥ जवाई० ॥  
 ॥ ११ ॥ हिमाचलवाक्य ॥ गिरानीलोकहसवैहे ॥  
 तीनलोककौलाडलौ ॥ संकरधरआवैहे ॥ गिरानी०  
 ॥ हिमाचलवाक्य ॥ सकलनिगमकौसारहै ॥ जि-  
 नकूंकृषिध्यावैहै ॥ पूरबपुन्यप्रभावतै ॥ वरहुयधरआ

वैहे ॥ गिरानी० ॥ १ ॥ मेनावाक्य ॥ निगमन-  
 कौकहांकामहै ॥ धनरूपसुहावैरे ॥ कूपपरेकरदीपले  
 ॥ ऋषिबोलचित्तवैरे ॥ जवाई० ॥ २ ॥ हिमाच-  
 लवाक्य ॥ जिनकेअनुचरदेखतूं ॥ कौकौघरआवैरे  
 ॥ संकरचरनपषालके ॥ क्यूनीधन्यकहावैहें ॥ गि-  
 रानी० ॥ ३ ॥ मेनावाक्य ॥ तेघरआयेतगुनी ॥  
 मणीहीरसुहावैरे ॥ इनकेशिरपरदेखलै ॥ गनराषजमा-  
 वैरे ॥ जवाई ॥ ४ ॥ हिमाचलवाक्य ॥ आपनिरंज-  
 ननागिनै ॥ जगरीतसुभावैहे ॥ इनकौपारनपावही  
 ॥ कोऊकोऊबतावैहे ॥ गिरानी० ॥ ५ ॥ मेना-  
 वाक्य ॥ जडताछाईअंगमें ॥ जेसोबतलावैरे ॥ इहां  
 निरंजनक्याकरै ॥ जिहांव्यावरचावैरे ॥ जवाई० ॥ ६ ॥  
 हिमाचलवाक्य ॥ भौरीगौरीकोपती ॥ ओहीमनभा-  
 वैहे ॥ ऊठसयानीआरतिकर ॥ पौषचढावैहै ॥ गि-  
 रानी० ॥ ७ ॥ मेनावाक्य ॥ अकलछोडबातांकरै ॥  
 मोयजलतजलावैरे ॥ मुषनदिषावौदूरजा ॥ कुलक-  
 लंकलगावैरे ॥ जवाई० ॥ ८ ॥ इंद्रमेनासंवाद ॥



माताउमाकीहैसयानी ॥ विनतीसुरपतकयांकैरे ॥  
 तरैवातउदाकीहे ॥ ठेर ॥ त्रिपुरविदारसुपीकियै ॥  
 हमसैबहुनाकीहै ॥ जाकीमहिमांकोकहै ॥ सबकीमत  
 थाकीहे ॥ सयानी० ॥ १ ॥ मेनावाक्य ॥ अपनौ  
 अपनौसबचहै ॥ सुखबातबनौवैरे ॥ गवरीकैसुखकी  
 कथा ॥ कोउकहनबतौवैरे ॥ जवाई० ॥ २ ॥ इंद्र  
 वाक्य ॥ गवरीकौसुषकौकहै ॥ यातोसबसुपछाकीहे ॥  
 लोकप्रतिवरछोडकै ॥ वरपायोहैपापीहे ॥ सयानी० ॥  
 ॥ ३ ॥ मेनावाक्य ॥ छाकीजैसीछाकमै ॥ वोपार  
 मचावैरे ॥ हीरासौतपखोयकै ॥ वरकाचमुलावैरे ॥  
 जवाई० ॥ ४ ॥ इंद्रवाक्य ॥ काचहीहैप्रतीविंवकौं ॥  
 जगपूरतजाकीहे ॥ जैसोपनतेंसौलपौ ॥ परिव्रह्मकी  
 झांषीहैसयानी० ॥ ५ ॥ मेनावक्य ॥ ब्रह्मज्ञानकेपारसूं ॥  
 तुमसौकौऊपावैरे ॥ राषलगायपुलोमजा ॥ घरवैठन  
 जावैरे ॥ जवाई० ॥ ६ ॥ इंद्रवाक्य ॥ राषलगायन  
 पावही ॥ समताकौऊजाकीहै ॥ सापभरेस्मृतिसिं  
 भुकी ॥ ताकीमतथाकीहे ॥ सयानी० ॥ ७ ॥ मेना

वाक्य ॥ याकीसुरतीमेनाथाकी ॥ तूतोदंभदिषावैरे ॥  
 जारअहल्याकीहमै ॥ परेचावनआवैरे ॥ जवाई० ॥ ८ ॥  
 ब्रह्मामेनासंवाद ॥ पीतरामनजाईहे ॥ सुनौपीतराम  
 नजाईहे ॥ विधसौविधसमझावही ॥ हिमगिरघरआ  
 ईहे ॥ टेर ॥ गवरीकेतपकारणै ॥ इनेदेहरचाईहे ॥  
 निगमसारतवद्वारपें ॥ आयोहोतजवाईहे ॥ सुनो०  
 ॥ १ ॥ मेनावक्य ॥ होयजवाईआयकै ॥ कैसोसां  
 गदिखावैरे ॥ देखदिगंबररूपयौ ॥ कालानागखिला  
 वैरे ॥ जवाई० ॥ २ ॥ ब्रह्मावाक्य ॥ सामवेदइन  
 कैविना ॥ कोऊजाननपाईहे ॥ आपदिगंबरभेषहै ॥  
 सबदेतबड़ाईहे ॥ सुनो० ॥ ३ ॥ मेनावक्य ॥ देत  
 बड़ाईऔरकाँ ॥ निजकिहुनदिखावैरे ॥ आपबडाई  
 जौधरे ॥ याकौकयाघटजावैरे ॥ जवाई० ॥ ४ ॥  
 ब्रह्मावाक्य ॥ घटनवधनयाकेनहीं ॥ न्हीनेकनिका  
 ईहै ॥ दोयनएकअनेकहै ॥ औतोनेतेनताईहै ॥  
 सुनो० ॥ ५ ॥ सबहीसबगुनरूपमै ॥ परवीनकहा  
 वैरे ॥ देखपरायोगेलणो ॥ मिलहासरचावैरे ॥ जवा०

॥ ६ ॥ ब्रह्मावाक्य ॥ हैनपरायौपशुपती ॥ सबकौ  
सुखदाईहे ॥ शंकरतवअवध्यानकी ॥ परतीतसवाई  
हे ॥ सुनो० ॥ ७ ॥ मेनावाक्य ॥ तमकूंयेपरतीत  
है ॥ हमकूंनहिंआवैरे ॥ उग्रभीवरुद्रनामकौ ॥ केसो  
अरथबतावैरे ॥ जवाई० ॥ ८ ॥ गौरीमेनासंवाद ॥  
गयोकि तमानसतैरोहो ॥ कहतगवरज्यामायसे ॥  
करचावधनेरोहै ॥ टेर ॥ पलपलआपवपानती ॥  
करभागबड़ेरोहै ॥ सोशंकरतेरेद्वारपैं ॥ वनठाढोहै  
चेरोहै ॥ गयोकि० ॥ ९ ॥ मेनावाक्य ॥ अरेकहौ  
केसीकरूं ॥ याकूंलाजनआवैरे ॥ नारदठगकीबात  
सं ॥ बहुभावमंधावैरे ॥ जवाई० ॥ १० ॥ गवरीवा  
क्य ॥ याकोतत्वनजानही ॥ नारदभवभेरोहै ॥ सं-  
करजौतविनासबै ॥ जगमांझअंधेरोहै ॥ गयोकि०  
॥ ११ ॥ मेनावाक्य ॥ करकरतपखोटीकरी ॥ सब  
बातसुभावैरे ॥ ल्याईलायलगायकै ॥ मेरोमनघब  
रावैरे ॥ जवाई० ॥ १२ ॥ गवरीवाक्य ॥ तपहूंतै  
यौनामिलै ॥ मुनिजननेहेरोहै ॥ सिंधुदयाकरकैकरे ॥

सांनिध्यबसेरोहे ॥ गयौकि० ॥ देखोउलटेभागकी॥  
 सुलटीनसुहावैरे ॥ सुखकोमारगछोड़के ॥ दुखसेरब  
 सावैरे ॥ जवाई० ॥ ६ ॥ इन्द्रहीकेआधीनहे ॥ सु  
 खतेरोरुमेरोहे ॥ नांवलियांदुखजातहै ॥ गर्भवासवसे  
 रोहै ॥ गयो० ॥ ७ ॥ मेनावाक्य ॥ मनतेरेकीना  
 मिटै ॥ कोऊक्यासमझावैरे ॥ देषतमाषीषावणी ॥  
 मननापिसतावैरे ॥ जवाई० ॥ ८ ॥ गवरीवाक्य ॥  
 जैसैमोसौहेतहै ॥ तैसोमनतेरोहे ॥ संकरतत्वपिछान  
 हिं ॥ कौऊचितचितेरोहे ॥ गया० ॥ ९ ॥ मेनाबा  
 क्य ॥ आदरतजसबदेवकौ ॥ ऐसोविंदसुहावैरे ॥  
 छाँडअरगजाआगमैं ॥ तनपंकलगावैरे ॥ जवाई०  
 ॥ १० ॥ गवरीबाक्य ॥ यापंकजहीमेंउपजे ॥ सु  
 खपंकजमेरोहै ॥ संकनराषेरंचतू ॥ मनरंकनहेरोहै ॥  
 गयो० ॥ ११ ॥ मेनाबाक्यबातबनावैवृद्धसी ॥ मन  
 तूछरचावैरे ॥ आकांअमृतसिंचणां ॥ फलअंबलगा  
 वैरे ॥ जवाई० ॥ १२ ॥ गवरीवाक्य ॥ अमृतकी  
 क्याबातहै ॥ सबपीवतभावैहै ॥ जहरहलाहलपी

वणौ ॥ मौयविंदसुहावैहे ॥ गयो० ॥ १३ ॥ मेना  
 वाक्य ॥ विषपीवणोवरमागणी ॥ किहंतूंमरजावैरे  
 ॥ बूढोविषभषवींदले ॥ क्यासुहागधरौवैरे ॥ जवां  
 ई० ॥ १४ ॥ गवरीवाक्य ॥ मारगजगकौविषपियौ  
 ॥ कियोअमृतकेरोहे ॥ विषधरवरमेरौकैहै ॥ बकवा  
 दधनेरोहै ॥ गयो० ॥ १५ ॥ मेनावाक्य ॥ अरेहटी  
 लीहारसुत ॥ जोहेतउमावैरे ॥ कंठभुजंगमपेरणो ॥  
 पशुपतिहिसुहावैरे ॥ जवाई० ॥ १६ ॥ गवरीवाक्य  
 ॥ हटनतजूंगीनातजूं ॥ संकरवरमेरोहै ॥ दक्षलयौत  
 नआपनौ ॥ तूईलेगीतरौहै ॥ गयो० ॥ १७ ॥ मे  
 नावाक्य ॥ अरेअभागीनामनै ॥ कडुबोलसुनावैरे ॥  
 वनमैभुरकीनाषकै ॥ भषडोबेहकावैरे ॥ जवाई० ॥  
 ॥ १८ ॥ गवरीवाक्य ॥ हौनअभागीधन्यमें ॥  
 जाकौसिवगनतेरोहै ॥ अधिकभागजबहोयगो ॥ ले  
 हुंशिवसंगफेरोहै ॥ गयो० ॥ १९ ॥ मेनावाक्य ॥  
 कैसोजगमैरूपगुन ॥ कैसनहिंभावैरे ॥ तेसगरेवरछां  
 डिके ॥ अवधूतसुहावैरे ॥ जवाई० ॥ २० ॥ गवरी

बाक्य ॥ रंचकभागनपावही ॥ पंचाननकेरोहे ॥ संक  
 रवरमेरोसही ॥ संकरवरमेरोहे ॥ जवाई० ॥ २१ ॥  
 मेनाबाक्य ॥ केतोयडारूंकूपमें ॥ नातोसिंधुडुबोवैरे  
 ॥ केतोयछुरियेछेदहू ॥ सिवपरणानेपावैरे ॥ जवाई०  
 ॥ २३ ॥ विष्णुमेनासंवाद ॥ सुनौगिरिराजपि  
 यारीहे ॥ तुमसीयासंसारमेंबड़भागनभारीहे ॥ टेर ॥  
 जेसगेरभूलोकमें ॥ मरजादाधारीहैं ॥ तेगिरिदेवर  
 जेठहै ॥ केउत्पातप्रजारीहे ॥ सुनौगि० ॥ १ ॥ मे  
 नाबाक्य ॥ बडभागनमोसौंकेहे ॥ सुखकूंखनपावैरे ॥  
 जलडूबोमेनाकहै ॥ आबूपाडबुरावैरे ॥ जवाई० ॥  
 ॥ २ ॥ विष्णुबाक्य ॥ पांखधुनावैसिंधुमै ॥ सुतइंद्र  
 लजारीहे ॥ आबूधरअचलेसको ॥ जगमेंजसधारीहे ॥  
 सुनौगि० ॥ ३ ॥ मेनाबाक्य ॥ पंषधारतजसधारता  
 ॥ सुतदुषविसरावैरे ॥ दाधाउपलूणाऔ ॥ भुरकाव  
 णाआवैरे ॥ जवाई० ॥ ४ ॥ विष्णुबाक्य ॥ पुण्य  
 सुतातेरेगरभमें ॥ उपजीअभनारीहे ॥ जाकेतपवां  
 ध्योअली ॥ शंकरव्रतधारीहे ॥ सुनौगि० ॥ ५ ॥

मेनावाक्य ॥ सबहिबपानैभावसं ॥ मोयथानंदवा  
 वेरे ॥ यागतसूकोहोभलो ॥ भुंढौकौनकहावेरे ॥ ज  
 वाई० ॥ ६ ॥ विष्णुवाक्य ॥ यौनकहीजेमेनका ॥  
 तूतौपुन्यअपारीहै ॥ हमसबतेसंकरबडौ ॥ सबकोसु  
 खकारीहै ॥ सुनोगिरी० ॥ ७ ॥ मेनावाक्य ॥ तु-  
 मसेंहोयबढौसही ॥ हमरेदायनआवेरे ॥ तुमइनसे  
 होयजायकिहं ॥ औतुमसोहुयजावेरे ॥ जंवाई० ॥  
 ॥ ८ ॥ विष्णुवाक्य ॥ हमसिवसैहेनाजुदा ॥ कहैवेद  
 पुकारीहै ॥ नानारूपमहेसहे ॥ जानेकोउविचारीहै  
 ॥ सुनोगिर० ॥ ९ ॥ मेनावाक्य ॥ नानारूप  
 महेसकौ ॥ जाकूंबोहुगिनौवेरे ॥ मोयदिखावैरूप ॥  
 औजिसोमोयसुहावेरे ॥ जंवाई० ॥ १० ॥ विष्णुवा  
 क्य ॥ तौयसुहावैसोकैरे ॥ इधकीक्याकहाईहै ॥ दी  
 नहुचावेभावसं ॥ औतोकरतसदाईहै ॥ सुनोगिर०  
 ॥ ११ ॥ मेनावाक्य ॥ भायधरयोसनैमैमहां ॥ महा  
 देवसुहावेरे ॥ अपनोविरदविचारकै ॥ आछोरूपदि  
 खावेरे ॥ जंवाई० ॥ १२ ॥ विष्णुवाक्य ॥ नारद

तूमेरोनामसुं ॥ विनतीकरसारीहै ॥ रूपअनूपमभा  
 वसुं ॥ देखेसासूतिहारीहे ॥ सुनोगिर० ॥ १३ ॥ मे  
 नावाक्य ॥ होहरिऐसीहोयगी ॥ जामँसबसुषपावैरे  
 ॥ विरस्योव्यावसुधारैकै ॥ हमधन्यकहावैरे ॥ ज  
 वाई० ॥ १४ ॥ विष्णुवाक्य ॥ हरिछिविसौंछिन  
 मेभयै ॥ जगइचरजकारीहे ॥ देखजवाईमेनका ॥  
 गुनरूपअपारीहे ॥ सुनोगिर० ॥ १५ ॥ मेनावाक्य  
 ॥ देखतलाजीमेनका ॥ सुखसिंधुसमावैरे ॥ हूयरही  
 छिनमैचित्रसी ॥ ठगनाहिलगावैरे ॥ जवाईबहोत  
 सुहावैरे ॥ १६ ॥ रागमारू ॥ शिवकौरूपनिहारैरे  
 ॥ शिवकौरूपनिहारे ॥ देखतभईचित्रसीमेना ॥ नै  
 नामेषनधारैरे ॥ टेर ॥ कोटिसूर्यकोतेजविराजै ॥  
 कोटिचंद्रछिवधारै ॥ कोटिअनंगअंगलपलाजै ॥ रा  
 जैराजदुवारैरे ॥ शिवकौ० ॥ १ ॥ हुईगजखालवसू  
 केसरिया ॥ केसरीचमरसुठारै ॥ मणिमयनागगलै  
 बिचवासुकी ॥ सुषमातरलअपौरैरे ॥ शिव० ॥  
 ॥ २ ॥ चंदनलेपविभूतिलसैतन ॥ गलविचचोवा



धारै ॥ नेत्रतृतीयतिलककुंकमकौ ॥ केतकिछवि  
 उरधारैरे ॥ शिव० ॥ ३ ॥ रंगरंगकेभुजंगवढेलघु  
 ॥ अंगअंगअलकारै ॥ होयगयौमणिधरअंगदकटु ॥  
 कुंडलआदिसुधारैरे ॥ शिव० ॥ ४ ॥ भालचंद्रहो  
 यगयौमौरसिर ॥ भौकपिइंद्रसतारे ॥ गंगाजलसि  
 रहवोसेवरो ॥ शोभाकरतअपारैरे ॥ शिव० ॥ ५ ॥  
 मृदुमुसकानविलोकनतिरछी ॥ भौहकुटिलसुनिहारै  
 ॥ गौरीतपसुरब्रच्छफलमान्यौ ॥ देसिजगतसुखसारैरे ॥  
 ॥ शिव० ॥ ६ ॥ सीसछत्ररविलियेजलजकर ॥  
 चामरजुगससिधारे ॥ कनकदंडकरलियेगननविच  
 ॥ नंदीभीरनिवारैरे ॥ शिव० ॥ ७ ॥ आपसरस  
 तीवेदतनूंधर ॥ सतनपुरानअंगैरे ॥ गावतमंगलनाच  
 तविचविच ॥ तंत्रमंत्रविसतारैरे ॥ शिव० ॥ ८ ॥  
 दक्षभागविधिजगतपितामह ॥ वामपीतपट्टारै ॥ वि  
 चसोहतगिरिजाकोनायक ॥ उपमाकविलिसहारैरे  
 ॥ शिव० ॥ ९ ॥ सुचितभयेजानिइंद्रादिक ॥ सुर  
 गननरजनसारै ॥ अहिगनकिन्नरसर्पभूतगन ॥ शिव

सिवनामउचारैरे ॥ शिव० ॥ १० ॥ घरघरसेनिक  
 सीनारीनिज ॥ तजतजकाजअपारै ॥ उलटविभूष  
 नधारअंगनमैं ॥ पटकीसुद्धिविसारैरे ॥ शिव० ॥  
 ॥ ११ ॥ कोईकअंजनदेतचलीत्रिय॥लियेशिलाका  
 लारै ॥ अंजनसारनैनएकनमैं ॥ दूजनैनअसारैरे ॥  
 कोईकजावकेदेतपगनविच ॥ धाईत्रियउठवारै ॥ क  
 रलाप्यारसचुयोजातमनु ॥ द्वारसोवणमणिहारै ॥  
 शिव० ॥ १२ ॥ कोईकभोजनपुरसतपियकों ॥ च  
 लीमहेशनिहारै ॥ लियौहाथकडछुलमानूत्रिय ॥ शि  
 वकेफणीसुधारैरे ॥ सिव० ॥ १३ ॥ कोउएकचली  
 गायदुहंती ॥ ठोरैमगहीधारै ॥ मनोहिमाचलनगर  
 कुतूहल ॥ हँसतविनोदअपारैरे ॥ शिव० ॥ १४ ॥  
 कोइयकसेवतचलीछोडपति ॥ करिजुगव्यंजनसुधारै  
 ॥ पांषपसारमनौसुरधरतै ॥ उतरतपरीहजारैरे ॥ शि  
 व० ॥ १५ ॥ कैइयककेशसुधारतकरविच ॥ लिये  
 कंकतीकनारै ॥ रससिंगारउरझतसुरझावन ॥ तापबु  
 झावनभारैरे ॥ शिवको० ॥ १६ ॥ चउधांभीरमची

नारनकी ॥ नगरपंथमैंसरै ॥ द्वारद्वारबनायउरधके  
 ॥ चंदसालसिणगरैरे ॥ शिव० ॥ १७ ॥ देखरूप  
 शिवकोरसंछाकी ॥ बकेनारपरसरै ॥ अरेअलौकि  
 करूपसंपदा ॥ आईनृपतिदुवारैरे ॥ शिव० ॥ १८ ॥  
 इनकौरूपकनकगौरीकौ ॥ रतनरच्यौविधिनिहारै ॥  
 गौरीरूपमानसरकीयौ ॥ हंसलण्यौव्हावारैरे ॥ शि  
 वको० ॥ १९ ॥ जुगलजोडीएकरीविधाता ॥ भये  
 धन्यजगसरै ॥ नौतौसुघरपनेकीकीरत ॥ जनजन  
 मुखसौउचारैरे ॥ शिवको० ॥ २० ॥ गौरीकोतपसु  
 रतरुकीयौ ॥ देखौफलनिरधारैरे ॥ इनकौध्यानजौग  
 केफलसी ॥ गौरीकौननिहारैरे ॥ २१ ॥ हौनभईग  
 वरीनहमारी ॥ सिवपतिभईनजरै ॥ जैरआजअप  
 सोचमारसैं ॥ मारकरतबहुमारैरे ॥ शिव० ॥ २२ ॥  
 भवधवलायकहोयभवानी ॥ गुनगतरूपअपारै ॥ औ  
 रनकौपरभागणैहिहैं ॥ नैनमेहसैनिहारैरे ॥ शिव० ॥  
 ॥ २२ ॥ यौबोलततीयांकेतन ॥ मेरौमहरसबौहरसरै  
 ॥ पायप्रसादउमापदकौ ॥ मानूभवरिपुअंकुधारैरे

शिव० ॥ २४ ॥ धन्यगिरपतिधन्यगिरानी ॥ धन  
 धनगवरीवारेजिनकेतपबलभयेधन्यहम ॥ नैनमेहस  
 निहारैरे ॥ शिव० ॥ २५ ॥ सुनवानीहरषीगिररा  
 नी ॥ कोमलबचनउचारे ॥ मनौमंजुरीतुलसरसाल  
 तरु ॥ कोकिलधुनिविसतारैरे ॥ शिव० ॥ २६ ॥  
 रागलुहार ॥ पारबतीहेपायोशिवभरतार ॥ जाकूं  
 हूँढतहेऋषिमुनिजन ॥ पावतनार्हीपार ॥ ढेर ॥ है  
 अवधूतनभूतवसीकलु ॥ धारतनाआकार ॥ हुयसा  
 कारचढ्यौयाचवरी ॥ गवरीकौंतपसार ॥ पारबती०  
 ॥ १ ॥ भागकथागवरीकौंवरनै ॥ कविहिमगिरप्रा  
 नआधार ॥ पायोगरभजनममेंमोकै ॥ तारेवंशहजार  
 ॥ पारब० २ ॥ घरआचारविचारजतनसौं ॥ दधिसौंजन  
 मसुधार ॥ घोरतपोबलमथनकरनसौं ॥ पायोती  
 नलोककौसार ॥ पारब० ॥ ३ ॥ रागप्रभाती ॥  
 धनधनअमानोंगेहरे ॥ आयापूरनब्रह्मसनेहरे ॥ आप  
 बड़ाबडभागअमानौ ॥ लीनौतुच्छजननकौछेहरे ॥  
 आया० ॥ १ ॥ आगवरीकूंगरभधारैमै ॥ पायोहैसु

खअछेहेरे ॥ धनइनगवरीकेशंकरसुनित ॥ वधजौअ  
 धिकसनेहेरे ॥ धनध० ॥ ३ ॥ रागखंभायत ॥ सो  
 हेहिमगिरद्वारमहेश्वरवींदवने ॥ टेरे ॥ भीरमचीनृप  
 तिद्वारपें ॥ देवअदेवअपार ॥ विचठाढौशिवलाडले  
 देखछेकेनरनार ॥ महेश्वर० ॥ १ ॥ सुखछाकीलपविं  
 दकुं ॥ आईमिलनेबहुनार ॥ कलसवंदायोवेदधुनि  
 ॥ मंगलगानअपार ॥ महेश्वर० ॥ २ ॥ गिरनारिन  
 केबीचमै ॥ सौहैहिमगिरनार ॥ मंदचलतलपविंदकुं  
 ॥ सुखकेभारअपार ॥ महेश्वर० ॥ ३ ॥ पौषधावेप्री  
 तसुं ॥ जगपौषगकूआप ॥ ऐसोआनंदनामिलै ॥ वि  
 नशिवकृपाप्रताप ॥ महे० ॥ ४ ॥ देहहीभालगले  
 धरौ ॥ अंचलपासअनूप ॥ नाकपकडलेपौरमै ॥  
 चलीसुतातपरूप ॥ महे० ॥ ५ ॥ विंदविवाहकि  
 यौवरही ॥ हिमगिरअंतरगेह ॥ गावतगनगंधर्वगुनहि  
 ॥ छायाहरषअछेह ॥ महेश्व० ॥ ६ ॥ रागकाफी ॥  
 आजबनौवनआयोहेशिवसंकरभोरा ॥ टेरे ॥ जोगि  
 समाधनमेनबधेफिर ॥ थाकगयेवरजोरा ॥ रूपउ

दारगुननेकेजालसौं ॥ बांधलियौयाकूंगोरारे ॥ शि  
 व० ॥ १ ॥ आपकेखेलमैआपरमें ॥ हृदबोलअफीम  
 झकोरा ॥ देखतथाकगईगिरानी ॥ केसोमचायोहेसो  
 रारे ॥ शिव० ॥ २ ॥ छटकेचवदेलोकमहातम ॥  
 पासविभूषनतोरा ॥ कारेभुजंगमकंठरमै ॥ संगभूतन  
 केझषझोरारे ॥ शिव० ॥ ३ ॥ ध्यावतजेनरपावतहै  
 ॥ अणिमादिकसिद्धिनहोरा ॥ भागबढोगिरिनंदिनि  
 कौ ॥ वरपायौहैसिंभुसजोरारे ॥ शिव० ॥ ४ ॥ रा  
 गकालिंगडो ॥ तपकरणनवीनोहे ॥ गवरीवसकीनौ  
 ॥ टेर ॥ हैअवधूतनभूतवसीकछु ॥ नाकोईजूननवी  
 नो ॥ तेरेकाजचढ्यौयाचवरी ॥ होयगयोरंगभीनोहे  
 ॥ गवरी० ॥ १ ॥ भागकथोतेरीकोकविवरनै ॥ छा  
 यरीजगतीनौं ॥ पायौजनमगरभमेनाके ॥ जान्यौत  
 पमेंकीनोहे ॥ गवरी० ॥ २ ॥ तूकोईतंत्रमैहैशुतिसा  
 रै ॥ ब्रह्मविद्याजनुलीनौ ॥ तारेवंशहजारजनमके ॥  
 हरषअलौकिकदीनोहे ॥ गवरी० ॥ ३ ॥ रागसंभा  
 यत ॥ परनैपतिकैलासहिमाचलकेघरमै ॥ टेर ॥ बै

ठेचवरीचौकमैं॥ ब्रह्माकृपिजनऔर ॥ जहांविराजत  
 ईश्वरी ॥ सिंधूपटगडजोर ॥ परनै० ॥ १ ॥ हिमगि  
 रिमेनाहाथलै ॥ कंचनथालनिहार ॥ वस्त्रदानविधा  
 नसुं ॥ दीनैसुताधार ॥ पर० ॥ २ ॥ गवरीकौकरहा  
 थलै ॥ हुयगयौसिंधुसुधाय ॥ स्वातछियौरसकेलगौ  
 ॥ रससिंगारकौचाय ॥ परनै० ॥ ३ ॥ परसतकर  
 सहेसकै ॥ गवरीमोदअपार ॥ स्वातीकसाजशरीरमें  
 ॥ तंत्रिकभेदनतार ॥ परनै० ॥ ४ ॥ फिरजग  
 निपरदिछना ॥ दंपतिविधिगिरपाव ॥ वरसे  
 पुष्पअकासतें ॥ त्रिभुवनसुखनसमाय ॥ परनै० ॥ ५ ॥  
 छुटेहाथकरजोरके ॥ त्रिभुवनमोदसुपाट ॥ सप्तपदीवि-  
 धिसोधके ॥ विधिवेठाणेपाठ ॥ परनै० ॥ ६ ॥ वरसे  
 पुष्पअकासतें ॥ चढ़विधानसुरसात ॥ बाजैएकहिसा  
 तसुर ॥ बाजैएकहिसात ॥ परनै० ॥ ७ ॥ जोतएक  
 तनदोयहै ॥ दंपतिदीपकदेख ॥ छायासुखमायैनजग ॥  
 सुखमैंजोगअनेक ॥ परनै० ॥ ८ ॥ लागेलुललुलपां  
 वसब ॥ देवअदेवजतीस ॥ नरकिनरगंधर्वगण ॥ ज

क्षपिशाचतेंतीस ॥ परणै० ॥ ९ ॥ देतउपायनपांव  
पर ॥ अपनेअपनेलोक ॥ लोकपालनिजसंपदा ॥  
दुवारेहिमगिरओक ॥ परणै० ॥ १० ॥ देखसुताकी  
सायबी ॥ देखसुताकौरूप ॥ देखसुताकोसाहिबो ॥ च  
कितभयौगिरभूप ॥ परणै० ॥ ११ ॥ ज्युंहिचकित  
हैमेनका ॥ कहनसकैकछुवैन ॥ मनहरक्यौहरगौरमैं  
निमिषलगेनहिनेन ॥ परणै० ॥ १२ ॥ हिमगिरकुल  
गिरकामके ॥ मैनाबैनसचैन ॥ हरगुनजानैगौरजा ॥  
तनःमयैलघुनैन ॥ परणै० ॥ १३ ॥ अपनीसंपतनैं  
कछु ॥ गवरीजाकौकाज ॥ प्रीतमपायौप्रीतसुं ॥ तप  
बलपुन्यप्रवाज ॥ परणै० ॥ १४ ॥ गिरनारिनकी  
भीरमैं ॥ गिरनारीधरमोद ॥ देखजवाईरूपमिल ॥  
गावतहासविनोद ॥ परणै० ॥ १५ ॥ रागधनासरी ॥  
वरपायौहैकैलासनिवासीप्रीतसुं ॥ धनियाणीहेगवर  
लचवदैलोकरी ॥ टेर ॥ तैंकरीतपस्यासरसीहे ॥ ऐसी  
करीनफेरकोईकरसीहे ॥ थारोनांवलियांदुखटरसोहे ॥  
थारादरसणसंजगठरसीहे ॥ वर० ॥ १ ॥ थारोरूपव



षाणूंजोईहै ॥ थारोभागवपाणूंसोईहै ॥ थारागुणहीव-  
 षाणुजोईहै ॥ जगमैकविऐसोकोईहै ॥ वरपा० ॥ जा  
 कौवेदभयेसबबंदीहै ॥ जाकैअनुचरहैगणनंदीहै ॥ जि  
 णिकियाअसुरगणमंदीहै ॥ थारौपावंदपरमानंदीहै ॥  
 वर० ॥ ४ ॥ थारेरूपगुणनकांगरजीहै ॥ परब्रह्मना-  
 मकौहरजीहै ॥ औतौमायापटगुणदरजीहै ॥ थैजीत  
 कियौवरमरजीहै ॥ वर० ॥ ५ ॥ थारौवचनस्वरूपउ  
 दारोहै ॥ इनसतकुलअपनौत्यारोहै ॥ ममदोनंलोक  
 सुधारोहै ॥ त्रयलोकसुजसविस्तारयोहै ॥ वर० ॥ ६ ॥  
 याकीमेहमाकहतनआवैहै ॥ निगमागमपारनपावैहै ॥  
 विनकहैवेननहिंआवैहै ॥ कहतांपुनिलाजदमावैहै ॥ वर०  
 ॥ ७ ॥ याकैगलेभुजंगमभारीहै ॥ जिणधरासीसपर  
 धारीहै ॥ औतौअगमनिगमव्यौहारीहै ॥ सोईजोवत  
 औरतिहारीहै ॥ वर० ॥ ८ ॥ याकेरंजकभृफुरकारीहै ॥  
 त्रियालोकधरकदैकारीहै ॥ याहूंध्यावतब्रह्मभुरारीहै ॥  
 करचावपधारयाथारीहै ॥ वर० ॥ ९ ॥ याकैजटाजू  
 टसिरभारीहै ॥ विचगरतगंगअपारीहै ॥ विचचंद्रक

लाहितकारीहे ॥ गलविषकीतापनिवारीहे ॥ वरण०  
 ॥ १० ॥ सबहीकौसंकरनायकहे ॥ निगमागमबोल  
 तबायकहे ॥ भईमीरागुननकीगाहिकहे ॥ हरआपभयै  
 करसाहिकहे ॥ वर० ॥ ११ ॥ सबहीकाशंकरस्वामी  
 हे ॥ जगजानतअंतरजामीहे ॥ मेरीसुताभलौवरपा  
 मीहे ॥ हूंभईजगतजसनामीहे ॥ वर० ॥ १२ ॥ सुर  
 असुरनागकीरानीहे ॥ थारीसेवाकरतसयानीहे ॥ वं  
 दतसुनसबकीबानीहे ॥ कछुरहीनरंचकछानीहे ॥ वर०  
 ॥ १३ ॥ ब्रह्माणीबैठैथारैऔटैहे ॥ इंद्राणीपांवपलैटै  
 है ॥ वसुराणीपांवपलैहै ॥ हरिराणीअंबरझालैहै ॥  
 वर० ॥ १४ ॥ थारैरोहणीकेशसंवारैहै ॥ रविराणीद  
 रपणधारैहै ॥ यमराणीकाजलसारैहै ॥ मनमेंधरमोद  
 अपारैहै ॥ वर० ॥ १५ ॥ मंडनबनलेपधरावैहै ॥ था  
 रैधनदत्रियासुखपावैहै ॥ कुसुमावलीगंधसचावैहै ॥ प  
 वमानप्रियालेआवैहै ॥ थारैअदितिपंखाढेरैहै ॥ अ  
 रुंधतीलूणउतारैहै ॥ थारैरंभासेजसँवारैहै ॥ उरवसी

दीपकलावैहै ॥ वर० ॥ १६ ॥ सिरमांगधरैसिंदूरैहै ॥  
 थारैअंगनत्रीयाहितपूरैहै ॥ करवीरालातहजूरैहै ॥ नी  
 रतीयपरतअदूरैहै ॥ वर० ॥ १७ ॥ थारैगंगाचँवर  
 डुलावैहै ॥ सरस्वतीसगुणजसगावैहै ॥ गायत्रीदेत  
 दिठानाहे ॥ सावित्रीदारतद्वनाहे ॥ वर० ॥ १८ ॥  
 सतरूपारूपलुभानीहे ॥ थारैपूरवजनमरीनानीहे ॥  
 अनसूयादेतआसीसाहे ॥ थारैरीझीलपणवतीसाहे ॥  
 वरण० ॥ १९ ॥ सुरराणीमंगलगौवैहै ॥ थारैमनउ  
 छाहनहींमावैहै ॥ असुराणीसीसनिवावैहै ॥ पदरजलै  
 हियसुखपावैहै ॥ वरण० ॥ २० ॥ गनरानीवैठतपौ  
 रैहै ॥ गुनरूपगरबकेतोरेहै ॥ सबदेवत्रियनकीरासी  
 हे ॥ सबगिनेआपकीदासीहे ॥ वरण० ॥ २१ ॥  
 धरध्वंवरदेतभुजंगीहे ॥ थारैसदाप्रेमरससंगीहे ॥ ग्रह  
 झारतद्वारपिशाचीहे ॥ हियप्रीतरतीतअतसाचीहे ॥  
 वरण० ॥ २२ ॥ थारैपगपगविरदसमालैहै ॥ सुरअ  
 सुरत्रियागनलारैहै ॥ पिनपिनसमाउचारैहै ॥ मिल

लोचनमोदअपारैहे ॥ वरण० ॥ २४ ॥ थारौरूपसिं  
 गारअनौखौहे ॥ जिनजगपोषणकूपोष्यौहे ॥ हिये  
 ध्यानहीठारतदोषौहे ॥ शिवत्रियावियोगदुषसोष्यौ  
 हे ॥ वरण० ॥ २५ ॥ थारोचंद्रवदनअतिसरसैहे ॥  
 थारैहियससीमणसरसैहे ॥ थारेरविकुंडलकरसाथीहे ॥  
 हरचषकलपसमाथीहे ॥ वर० ॥ २६ ॥ थारीबानी  
 मधुरुसराचीहे ॥ कियगिराविनभईकाचीहे ॥ सुनभ  
 येश्यामरसलालैहे ॥ कियबकैकहंकहुकालैहे ॥ वर०  
 ॥ २७ ॥ लोचनकीतिरछीलहरैहे ॥ लषसंकरहिये  
 नठहरैहे ॥ वसकियौहठीलौस्वामीहे ॥ परपंचहठीली  
 भामीहे ॥ वरण० ॥ २८ ॥ औतौकदेणकिणसुरि  
 झौहे ॥ औतौकदेणकिणसुषीज्यौहे ॥ थारेतपबलगां  
 ठणधीज्यौहे ॥ थारोरूपअलौकिकरीइयौहे ॥ वरण०  
 ॥ २९ ॥ औतौकिसीकजननीजायौहे ॥ करहेतरात  
 हुलरायौहे ॥ याकोपितानकोईपायौहे ॥ थारोभाग  
 कठासंलायौहे ॥ वरण० ॥ ३० ॥ थानैकाईकाई

कहवतलाऊंहे ॥ थाराकिसाकिसागुणगाऊंहे ॥ मा  
 रैभईउदरैसाताहे ॥ तनैसुणीजगतकीमाताहे ॥ वरण०  
 ॥ ३१ ॥ अबसुतानजननीनातोहे ॥ कहाकहूंअलो  
 किकवातोहे ॥ अबदयाअमापरकीजैहे ॥ शिवशिवा  
 चरनरजदीजैहे ॥ वरण० ॥ ३२ ॥ ॥ इति ॥  
 ॥ रागकाफीमैहोरी ॥ हेरीमेरीगोरीहैभोरीसिवकेसंग  
 रंगरहोरी ॥ टेर ॥ वचनउथापगईधरतातके ॥ तब  
 नविचारकरचौरी ॥ नारीनकौहटकहतनआवै ॥ अ  
 बअभिमानगरचौरी ॥ नयौयाशरीरधरचौरी ॥ शिव  
 केसंगरम० ॥ १ ॥ यादिनतैतजसंगमेरोमन ॥ दछके  
 गेहधरचौरी ॥ तादिनतैसबदुखसहौं ॥ तेरेभागतैना  
 हिमरचौरी ॥ किताहटजोगधरचौरी ॥ शिव० ॥ २ ॥  
 तातरुमातकियौसनमानन ॥ नाकोऊभेटमिल्यौरी ॥  
 अगनिकुंडयैहोमशरीर ॥ शरीरदुतीयधरचौरी ॥ मि  
 ल्यौपतिवहभसौरी ॥ शिवके० ॥ ३ ॥ कासीकोवा  
 सकबूनकियौमै ॥ नाकैलासवस्यौरी ॥ नगरउजीन  
 उजारसीलेषीमै ॥ मायामैनाहिंवस्यौरी ॥ गिरांबि

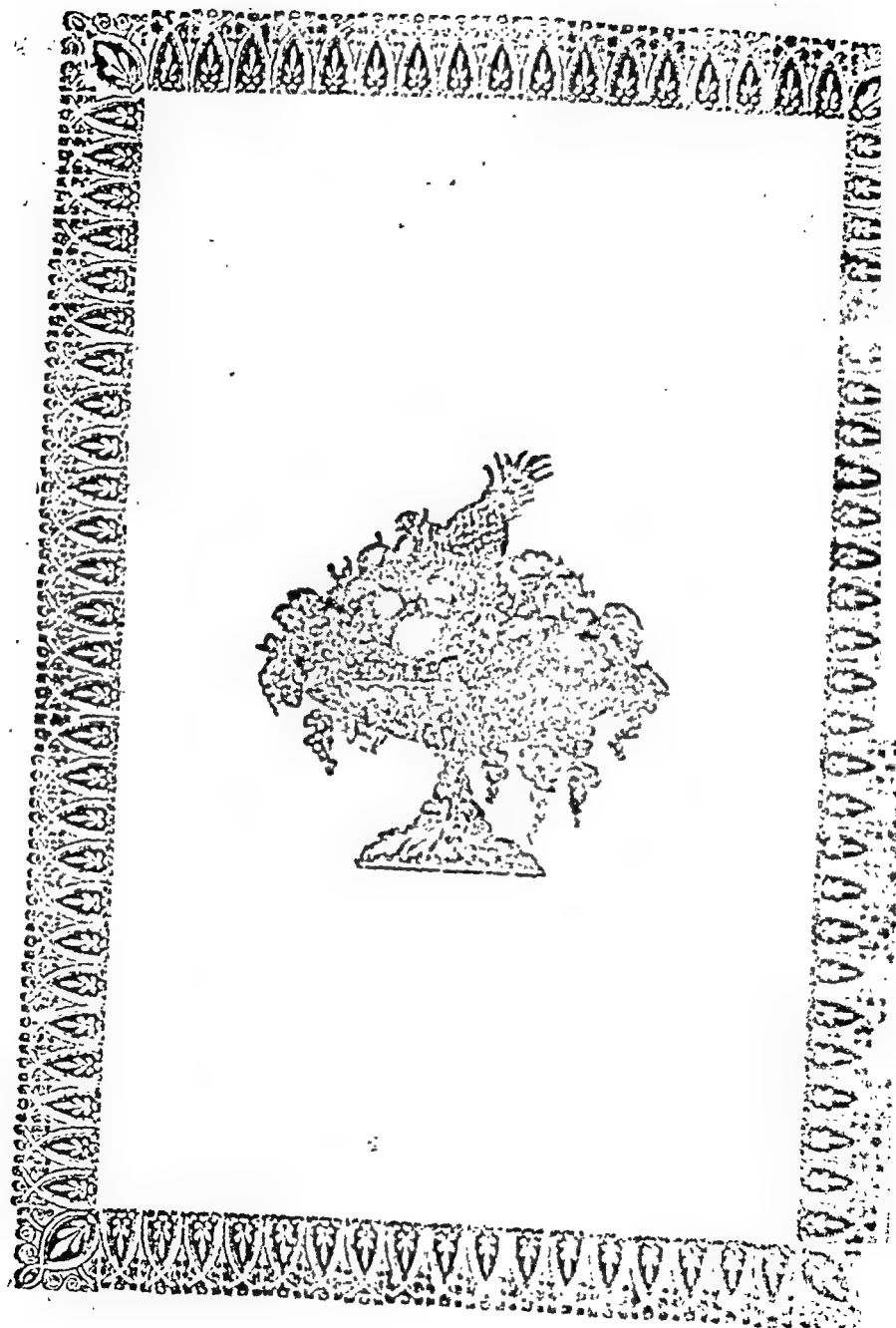
चजायधरयौरी ॥ शिवकेसंगरंगरहोरी ॥ ४ ॥ नाम  
 तिहारौकौलैरसना ॥ ध्यानमैचित्तगढ्यौरी ॥ जार  
 तदेहनदुःखलप्यौकछु ॥ सुखकेचावचढ्यौरी ॥ सबैअ  
 पराधकढ्यौरी ॥ शिवकेसंगरंगरहोरी ॥ ५ ॥ छां  
 इकैसंगत्रियसंगिनकौ ॥ होयअसंगरहोरी ॥ कैसन  
 हादिककेमुनिनारद ॥ कैनवनाथरहोरी ॥ जिहांब्रह्म  
 ज्ञानकहोरी ॥ शिवकेसंगरंगरहोरी ॥ ६ ॥ अबसैच  
 रनकमलनहिंछांइ ॥ मातपितानगिनौरी ॥ नाथद  
 याकरयातनछोडे ॥ यौवरदानगिन्यौरी ॥ शिवकेसं  
 गरंगरहोरी ॥ ७ ॥ हमहैंतोसुनाईदुतिय ॥ कहैनिग  
 मागमसौरी ॥ फेरतपोबलतेंगिरनंदनी ॥ मोलखरी  
 दलह्यौरी ॥ तेरेगुनपासपरयौरी ॥ शिवकेसंगरंगरहो  
 री ॥ ८ ॥ दीनदयालदयाकरकै ॥ सुनियैविनतीइ  
 कमोरी ॥ दछकेपछकीवातमहेश्वर ॥ यादकेदेनकरौ  
 री ॥ पैररसमैविषघोरी ॥ शिवकेसंगरंगरहोरी ॥ ९ ॥  
 दक्षसेंतुच्छप्रत्यक्षबकैकहुं ॥ निंदपरौसकरयौरी ॥  
 आपकैपापजलैजनमूरष ॥ मेंनहिगौसधरयौरी ॥

सदारसपूररहौरी ॥ शिवकेसंगरंगरहौरी ॥ १० ॥ इति  
 यद ॥ रागमेरू ॥ चायभयेजानिशिवनामकूंउचौरै ॥  
 गवरोकेचरननपर ॥ तनमनधनवारे ॥ टेक ॥ गावे  
 गुनगंधर्वहै ॥ अपछराहजारै ॥ नाचैविचरंभारिपुजं  
 भासुरलारै ॥ चायभयेजानिशिवनाम ॥ १ ॥ नंदी  
 आदिगणसमाझ ॥ विराजतचहुंधारै ॥ कनकदंडचा  
 मरजुगछत्रजौउचौरै ॥ चायभयेजानि० ॥ २ ॥ मूरत  
 धरतातरऔरमृतिपुरानसारै ॥ साकृतिशिववह्मदेष  
 नाचतसुखदारै ॥ चाय० ॥ ३ ॥ ढोलकमृदंगढोल॥  
 दुंधवीनगारै ॥ बाजतजहांडमरूमृदुद्विमद्विमदेहकारै॥  
 चाय० ॥ ४ ॥ विनाश्रुतिविनाअतिझिनासुरधारै ॥  
 सारंगीपहसंडलशिववाजतेसतारै ॥ चाय० ॥ ५ ॥  
 बंसीयैसुनायै ॥ अतिगैरकैभपारे ॥ गौंमुखमुरचंगतूर  
 बाजतकरनालै ॥ चाय० ॥ ६ ॥ तालनमंजीरन  
 बिच ॥ झालरझनकारै ॥ जांजनविचधंटासुरभैरववि  
 सतारै ॥ चाय० ॥ ७ ॥ आतसीअनेकरूपाळ ॥ कर  
 तचलैलारै ॥ भूतऔपिशाचमाच ॥ खरेहोतन्यारै ॥

चाय० ॥ ८ ॥ कौनकहैशोभा ॥ औरजानहैअपारै ॥  
 हिमगिरकैलासबीचत्रियजगपगधारे ॥ चायभ० ॥ ९ ॥  
 आठसिद्धिनऊनिधिधनदजेउचारै ॥ जौऊकौऊमन  
 बंछतलौ ॥ शंकनचितधारै ॥ चायभ० ॥ १० ॥  
 ॥ इतिपदम् ॥ ॥ इतिमहादेवजीरोव्यावलोजोसी  
 जीश्रीसिंभूजीकृतसंपूर्ण ॥ ॥ श्रीसांबसदाशिवा-  
 णमस्तु ॥ ॥ श्रीरस्तु ॥

समाप्त.





॥ श्रीः ॥

# झोपड़ीकी बारामासी ।

यह पुस्तक

हरिप्रसाद भगीरथजी

इन्होंने

सुम्बर्लि

छपवायके प्रसिद्ध किया.

शके १८२८, संवत् १९६३.



श्रीः ।

अथ

## झौपड़ीकी बारामासी.

---

प्रारंभः ।

परतिज्ञाराखो यादवपतिगरुडासनच  
दृध्याइयो ॥ ॥ टेर ॥ ॥ शारदमातचैत  
चितध्याऊं, पूरणब्रह्मसुरारी ॥ अजामील  
गजगणिकातारी, गौतमऋषिकीनारी ॥  
हाथजोड़के करूं जो विनती, राखो लाज  
हमारी ॥ दोउकरजोड़ेबीनऊं, जटुकुल  
बीचदिनेश ॥ सनकादिकनारदभजैंतोथा  
नेरटैरातदिनशेषभीलनी अधम उधारी

॥ जदुपति० ॥ १ ॥ लग्नयोमासवैसाख वे  
 दकहै तुमहोपतित उधारण ॥ जलद्वत  
 गजराज उवाच्योविरद आपने कारण ॥ अ  
 बकै द्रुपदसुताकीविरियां आवोजी गिरि  
 वरधारण ॥ कौरवसुतकीनीसभाकुमतिहि  
 दैधरिलीन । धूतकरमकरहच्यो राजमे  
 रोपांचुपतीवशकीन । पांचियोभगतांकार  
 ण ॥ जदुपति० ॥ २ ॥ जेठहाथकरजोड़  
 कहूं मैंमहामुनियनकीदासी ॥ भीषमपि  
 तामहब्रह्मज्ञानी दुष्टसभापतिनासी ॥ लो  
 चनहीनसुणै चुपमारयांज्युंवक नदीनिवा  
 सी ॥ द्रोणाचारजमतिघटी विदुरसुणै धर  
 ध्यान ॥ किरपाचारजकुलगुरुतोजाकी

खड़गहोयगईम्यान ॥ अरजसुणीयोंअवि  
नासी ॥ जटुपति० ॥ ३ ॥ आषाढ़घटाहु  
ष्टनकीआईनांवकहूं सबहीका, चिंङाल  
चोकड़ीदुरयोधनकीमंत्रीकरणसरीखा,  
खोटाकामरचाइनसकुनीकरदिया पांडव  
फीका ॥ हेकरुणानिधि विणतीसुणियो  
चित्तलगायदुष्टदुःशासनचरित्तारैकरि  
यो ॥ वेगसहाय रूपधरआवोहरीका ॥ जटु  
पति० ॥ ४ ॥ श्रावणनाथहाथकरटेरूं सुणि  
यो जटुकुलनायक ॥ घनज्युंगरजतदुष्टदु  
शासन लगतवचनजनुसायक ॥ राखोला  
ज आजअबलाकी तुमसमर्थसबलायक  
श्रवणपुरपुरतासुतातासुपतीजगदीशवेग

पधारोसाँवरातोह्लानैनिश्चोविसवावीस  
 आपभगतांवरदायक ॥ जडुपाति० ॥ ५ ॥  
 भादवनदी उमगैहि वडोघननैनोनैरझर  
 लाई॥हेगोविंदसरनमैतैरीमुखनिराधाराछि  
 टकाई ॥ सकलसभामुखनीचोकरलियो  
 भूमीसुरतलगाई सकलसभा चित्रामेकी  
 ज्यूलिखदीतसवीर, कृणसुणौकिणसैंकहुं  
 तोयोदुष्ट उतारत चीरइयामतोयनिद्रा  
 अई ॥ जडुपाति० ॥ ६ ॥ कुँवार कठिण  
 दिलकियोसाँवरे किसविध संकटजासी  
 विरदविचार अरजसुनीयुं सैंजडुपातिकी  
 दासी, कुबज्याकुटिलकंसकीचेरीकीनी  
 भगतजरासीसीधीकरदीकूवरी ॥ नैकल

गायोहाथतनकप्रीतकेकारणैतोवाके घराँ  
 पधारेनाथजलदी आवोब्रजवासी ॥ ज  
 दुपति० ॥७॥ कार्तिककृपाकरोगिरिधारी  
 मेराकारजसारो॥ कपटसभाविचकोइनहिं  
 बोलैमनकैमायविचारो ध्रुवप्रहलादविभी  
 षणत्यान्यौइबजीत्यो जसमतहारोदोउअ  
 क्षरचढतीनपैतीन सुणैजदचारदोउचढबै  
 ठेचारपैतोइबतीनपांचपैत्यार अरजइतनी  
 उरधारो ॥ ज० ॥ ८ ॥ अगहन आशल  
 गीदिलभीतर अबतोगिरिधर आवो ॥ आ  
 शासुखीआशकरध्यावैमतनाजीललचा  
 वो॥विड़दविचारभगतपतराखो नाहकलो  
 गहँसावो करदमसुतनाती वधूत्यारीचरन



छुवाय आवो॥द्रौपदसुताकेकारणकहां छि  
 पवैठे जायदृष्णमोय सुरत दीखावो  
 ॥ ज० ॥ ९ ॥ पौसरोसदिलमांयविसारुं ॥  
 पूरवपापकुसाया ॥ चौदाभुवनयेकपतिस  
 बकावेदपुराणनगाया॥पंचानंदओतार पां  
 चपतिमोयसुगणीनैपाया ॥ नारीधरमकै  
 कारणयेकवसनहाराज राखोलाज आज  
 वनवारी आपसकल सिरताजअहो गज  
 काजसिधाया ॥ जदु० ॥ १० ॥ माघमगन  
 मन गदगदवानी सुगनहोतमोयनीका ॥  
 मायाजालफँस्यो जगसारो कोईनायकि  
 सीका॥नेतिनेतिनिगमागसगावैसांचाना  
 महरीका॥दुनियां मतलबस्वारथीप्रीतिन

जाणैकोय, साँचेदिलसाहबभजै तोवाकेदु  
खकायेकूँहोय मिटावोसंकटजकि॥ ज०

॥११॥ फागणमासआसगिरिधरकीआं  
खफरूकैबाँई ॥ टेर गईजबहुपदसुताकी  
ठेठद्वारकाताँई ॥ रुकमणकैसंगचोपड़खेलै  
कृष्णमहलकेमाँई, करस्यूपासाढालतांमु  
खसैं कह्योअनंत, भीमसुताअरजीकरै  
तोह्यानेभेदबतावोकन्थपासमैअनन्तना  
ई॥ज०॥१२॥ मासतेरवैकालीमाता मोय  
भरोसोथारो ॥ कुंजलालब्रजलाललड़ावो  
सीखो सुणोजिविचारो॥ऊधोजोसी प्रेमम  
गनकहैसुणियोवचनहमारो कलकत्तेकैबी  
चमैं तेरामास्योवुणाय जूथो जोसीप्रेमम

गनसैंगाताभाववतायस्याम मेराकारज  
 सारो ॥ जटुपति गुरु० ॥ ॥ ॥

इति द्रौपदीकी वारामासी समाप्त ॥

---

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—  
 हरिप्रसाद अगीरथजी,  
 कालकादेवीरोड, रामवाडी,  
 मुम्बई.

“ पार्वतीवरदा ” छा० छा०



## विक्रयार्थ तैयार

की० डा०म०

मोरध्वजकी लावनी....	....	....	०-१	०-॥
पृथ्वीराजको ख्याल	....	....	०-४	०-१
भूरणभगतको ख्याल	....	....	०-४	०-१
चूरणका लटका	....	....	०-१	०-१
मालदेहाड़ीरानीको ख्याल	....	....	०-४	०-॥
वेणवादेस्याजादीको ख्याल	....	....	०-४	०-१
छोटाकंथको ख्याल....	....	....	०-२	०-॥
फूलकंदरफूलवतीको ख्याल	....	....	०-४	०-१
दोलामरवणको ख्याल	....	....	०-४	०-१
जुहरीको ख्याल	....	....	०-२	०-॥
विणजाराको ख्याल....	....	....	०-२	०-॥
नसेवाजकी लावनी	....	....	०-॥	०-॥
सोनेलेहेका अगड़ा....	....	....	०-॥	०-॥

हरिप्रसाद असीरयजी.

कालकादेवीरोड, रायवाड़ी-मुंबई.

श्रीः ।

# श्रीगोस्वामी तुलसीदासजीकृत हनुमान-साठिका.

जिसको

श्रीयुत सूवेदार लक्ष्मणप्रसादात्मज श्री पं० सूर्य-  
प्रसाद अवस्थी ग्राम कठगर जिला  
रायबरेली निवासीने संग्रह किया.

वही

हरिप्रसाद भगीरथजीने

मुम्बई

“पा० व०” छापखानेमें

छपवायके प्रसिद्ध किया.

संवत् १९६४, सन १९०७.



श्रीगणेशाय नमः ।

अथ

हनुमानसाठिका.

श्रीगोस्वामि तुलसीदासजीकृत.

सोरठा.

जेहि सुमिरत सिधि होय, गणनायक करिवरद्वन ।  
करौ अनुग्रह सोय, बुद्धिराशि शुभगुणसदन ॥ १ ॥  
मूक होय वाचाल, पंगु चढ़ै गिरिवर गहन ।  
जासु कृपा सु दयाल, द्रवौ सकल कलिमलदहन ॥ २ ॥  
नील सरोरुह श्याम, तरुण अरुण वारिजनयन ।  
करौ सो मम उर धाम, सदा क्षीरसागरशयन ॥ ३ ॥  
कुन्द इन्दुसम देह, उमारमण करुणाअयन ।



जाहि दीनपर नेह, करहु कृपा मर्दन मयन ॥ ४ ॥  
 बन्दौं गुरुपदकंज, कृपासिन्धु नररूप हरि ।  
 सहा मोह तमपुंज, जासु वचन रविकरनिकर ॥ ५ ॥  
 बन्दौं विधिपद रेनु, भवसागर जिन कीन यह ।  
 सन्त सुधा शशि धेनु, प्रगटे खल विष वारुणी ॥ ६ ॥  
 बन्दौं चारहु वेद, भववारिधि वोहित सरिस ।  
 जिन्हें न सपनेहु खेद, वर्णत रघुपति विशद यश ॥ ७ ॥  
 बन्दौं अवध भुआल, सत्य प्रेम जेहि रामपद ।  
 बिलुरत दीनदयाल, प्रिय तनु तृण इव परिहरेउ ॥ ८ ॥  
 बन्दौं पवनकुमार, खलवनपावक ज्ञानघन ।  
 जासु हृदय आगार, बसहिं राम शरचापधर ॥ ९ ॥  
 केवल आश तुम्हार, मैं मतिमन्द व सूरख हौं ।  
 हरहु कलेश विकार, बलबुधि विद्या देहु मोहिं ॥ १० ॥  
 दोहा.

श्रीहनुमानसाठिका, संग्रह “सूर्यप्रसाद” ।

करत सुमिरि हनुमानपद, परिहरि वादविवाद ॥ ११ ॥

# तुलसीदासजीकृत ।

घनाक्षरी.

जय हनुमान ज्ञान ध्यान गुणके निधान,  
इष्ट राखै दास जो ता ऊपर सो दर्शिये ।  
हनुमानपद शीश नाय जोरि पाणि पद्म,  
कीशराय दीन जानि शीश पाणि पसिये ।  
ज्ञान बुद्धिको प्रकाश रामभक्तिवर वास,  
केसरीकिशोर रोग दोष पाप नाशिये ।  
कहै दास तुलसी संकट दुःख त्रास हरो,  
अंजनीके लाल आय मेरे उर बासिये ॥ १ ॥  
हनुमत नाम लेत भागि जात भूत प्रेत,  
डक्किनी शक्किनी घोष दोष दुःख भागहीं ।  
भैरव बैताल बीर नारसिंह बीबी पीर,  
यंत्र मंत्र तंत्र नेक निकट न लागहीं ।  
संकटादि कूटि काटि कर्म भर्म दूर डाटि,  
ब्रह्मदोष टोना टाम अग्नि दहि खाखहीं ।  
कहै दास तुलसी संकट दुःख त्रास हरो,  
काटे भ्रमजाल नेक हनुमत हांकही ॥ २ ॥

हनुमत उर सर भक्ति मौक्तिका रसाल,  
 रामहू मराल माल सर्वदा निवासहीं ।  
 हर मोह भर्म वीर महायती महावीर,  
 महासाधु महाधीर भनै वेद श्वासहीं ।  
 हनुमत ध्यान जाप छूटि जात त्रयी ताप,  
 नासै बहु जन्म पाप हरि उर वासहीं ।  
 कहैं दास तुलसी संकट दुःख त्रास हरो,  
 भागें भ्रम भूत वीर हनुमत हांकहीं ॥ ३ ॥  
 जन्म्यो हनुमान फांदि लील्यो रथभानु,  
 पन्थो जगमें मशान अंधकार घोर छायऊ ।  
 सुर सुनि अकुलान शम्भु ब्रह्मा भगवान्,  
 जहां हनुमान कोटि तेंतीसहु आयऊ ।  
 देखत डरायँ नाना विनय सुनाय रहे,  
 सूरज उगिलि दियो दया उर लायऊ ।  
 कहै दास तुलसी संकट दुःख त्रास हरो,  
 आपको प्रताप महा, वेदनमें गायऊ ॥ ४ ॥

राम औ सुग्रीव प्रीति हनुमत दृढ़ जोरि,  
 वालि मारि राजनीति सिया खोज जायऊ ।  
 अंगद मयन्द नील नल जामवंत बीर,  
 बांके हनुमंत सबै बिबर दिखायऊ ।  
 मंजन कराय कपि मधुर खवाय फल,  
 गिद्धराज पर लाय सिया भेद पायऊ ।  
 कहै दास तुलसी संकट दुःख त्रास हरौ,  
 मोहिं दासदास जानि नाथ अपनायऊ ॥ ५ ॥  
 सिन्धुके किनारे प्रभु बिकट स्वरूप धारे,  
 सुरसै निहारे सुख पैठ कढ़ि कान हौ ।  
 अम्बुनिधिबीच मारि दनुज योजन शत,  
 नांघि पार लंकिनी पछारि बलवान हौ ।  
 भक्त सुबिभीषणाय प्रीति रीति भेद पाय,  
 सीता पद शीश नाय मारुति सुजान हौ ।  
 कहै दास तुलसी संकट दुःख त्रास हरौ,  
 मेरे रक्ष पाल सदा साँचे हनुमान हौ ॥ ६ ॥  
 अंजनीकुमार सदा संतरखवार करो,

सांकरे उबार महावीर पौनपूत हौ ।  
 बाटिका उजारि मारि अक्ष रक्ष लंक जारि,  
 पैठि मथ्यौ सिन्धुवारि रघुपतिदूत हौ ।  
 सीताशोकहरन मंगलमय मोद घन,  
 ज्ञान ध्यान सिद्धिके सदन अवधूत हौ ।  
 कहै दास तुलसी संकट दुःख त्रास हरो,  
 मेरे बैरीको दहन पावक आहूत हौ ॥ ७ ॥  
 सीताकी खबर आनि राम औ लपण जानि,  
 कपिपतिहू बखानि लंका चढ़ि जायऊ ।  
 मरकट भालु गर्जि सावधान राम बर्जि,  
 हनुमान तर्जि तर्जि सेतु बँधवायऊ ।  
 उतरि कटक लंक घेरि कपि भालु टेरि,  
 मरदि दनुज हेरि धूरिमें मिलायऊ ।  
 कहै दास तुलसी संकट दुःख त्रास हरो,  
 भाग्य लंकभूत हनुमत चढ़ि आयऊ ॥ ८ ॥  
 हनुमत पांव धरे पर्वत पाताल धरें,  
 शेषहू उसास कर धरा हहलात है ।

## तुलसीदासजीकृत ।

बांके हनुमंत वीर नेकहू जो क्रोध करें,  
वारिनिधि वारि घटै रवि ठहरात है ।  
रावण उर हलत घने निशिचर महि,  
विकल परत कपिदल हरषात है ।  
कहै दास तुलसी संकट दुःख त्रास हरो,  
हने हनुमतके घायल कहरात हैं ॥ ९ ॥  
लक्ष्मणके शक्ति साल कटक विकल बाल,  
रघुपति भै बिहाल नैन जल छायाऊ ।  
कटक विकल जानि रामजीकी लखि ग्लानि,  
ससदन वैद्य आनि मूरि लेन धायऊ ।  
मकरीको तारि पंथ कपटदनुज मारि,  
द्रोणागिरिको उखारि रामकाज लायऊ ।  
कहै दास तुलसी संकट दुःख त्रास हरो,  
हनुमतयश महा लोकनमें छायाऊ ॥ १० ॥  
मूरि प्रभु लायो तुम लषण जियायो,  
रघुपति उर लायो हनुमान प्राण मूरि हौ ।  
बोल घन घोर होत त्रै लोक शोर रण,

## हनुमानसाठिका ।

धीर महाजोर वीर केशरीकिशोर हौ ।  
कटक कटकटात गर्जत कपि कराल,  
खल उर सूल सालि बांके वरजोर हौ ।  
कहै दास तुलसी संकट दुःख त्रास हरो,  
अंजनीके लाल सदा संतनकी ओर हौ ॥११॥  
हांकहूते दनुज मरत खलवल दल,  
देखिकै कराल रूप अरि भय खात हैं ।  
मार भट वीर साधि निश्चर लंगूर बांधि,  
पटकत सहि चिघरत मरि जात हैं ।  
निश्चर कांखि लाय जात नभमें उड़ाय,  
व्योमते बहाय देत भूपै भहरात हैं ।  
कहै दासतुलसी संकट दुःख त्रास हरो,  
हनुमत लूम हेम डंडा फहरात हैं ॥१२॥  
पैठिकै पताल तोरि डान्यो यम जाल,  
हन्यो दुष्ट ततकाल स्वामी शक्ति होय जायऊ ।  
मंडफी बिडारि अहिरावणभुजा उखारि,  
दनुज संहारि राम लछिमन लायऊ ।

लखनके प्यारे सियारामके दुलारे,  
 कपिदल रखवारे गढ़ दुंदुभी बजायऊ ।  
 कहै दास तुलसी संकट दुःख त्रास हरो,  
 भाग्य रे मसान हनुमत चढ़ि आयऊ ॥ १३ ॥  
 महावीर रण धीर युगल कटक बीर,  
 गरजत हनुमान मेघ घहरात हैं ।  
 रावन बिकल कर कपिदल शोकहर,  
 मान्यो भट कुंभकर्ण घंटा घहरात हैं ।  
 रावनके दशो माथ खंडि हन्यो मेघनाद,  
 सुर मुनि है सनाथ दुंदुभी बजात हैं ।  
 कहै दासतुलसी संकट दुःख त्रास हरो,  
 भयो जै जै त्रयलोक पुष्प बरपात हैं ॥ १४ ॥  
 बांके बलवान रणधीर हनुमान वीर,  
 दनुजदलन लोक बेदहू प्रधान हौ ।  
 अंजनीके लाल सदा संतनके रक्षपाल,  
 कालहुके काल कोटि भानुके समान हौ ।  
 अंजनीके लाल सुमिरे छूटत भ्रमजाल,



दनुज कुल गहन दहन कृशानु हौ ।  
 कहै दास तुलसी संकट दुःख त्रास हरो,  
 वैरी कंज वन हनुमत वरफान हौ ॥ १५ ॥  
 लंका जितवाय सिया रामको मिलाय सुर,  
 बंदिका छुड़ाय छवि चारु गुणग्रामकी ।  
 भरतको रामहिं दिखाय सुख उपजाय,  
 हर्षि सब पेखि वेष शोभा सुखधामकी ।  
 रामको निहारि पुरनरनारि मात मन,  
 मुदित विचारि नृप अभिषेक रामकी ।  
 कहै दास तुलसी संकट दुःख त्रास हरो,  
 मोहिं हनुमत टेक एक राम नामकी ॥ १६ ॥  
 साध्य सिद्ध हनुमान जोगेश्वर जोग ध्यान,  
 अनुभव निरवान अलख अपार हौ ।  
 पवनकुमार सूधम कतारि झीन सुख,  
 मन झनकार प्रभु ध्याये निराकार हौ ।  
 अनहद धुनि त्रिकुटीमें ध्यान अमीयान,  
 शून्यमें समान अनुभव उजियार हौ ।

कहै दास तुलसी संकट दुःख त्रास हरो,  
 जाप अजपा जु रामनामके अधार हौ ॥१७॥  
 अनुभौ अखंड परम शिव सनकादि धर्म,  
 ध्यावत हैं अति बर्म वेदन प्रमाण हौ ।  
 ईश अविनाशी जीव चराचरमें निवासी,  
 संत सुखराशी अज निर्गुण निर्वान हौ ।  
 अनंत अनादि रूप बरनत जो अनूप,  
 दशरथसुत सोई भूप मन ध्यान हौ ।  
 कहै दास तुलसी संकट दुःख त्रास हरो,  
 मोहिं आर्त जानि दर्श दीजै हनुमान हौ ॥१८॥  
 सुर मुनि ऊंच नीच योगी सिद्ध जगबीच,  
 राखैं इष्ट भक्ति जे साहेब हनुमानकी ।  
 हनुमत परछै सुगम अरिकै दलन,  
 हिम दुख दैत कंज वन यातुधानकी ।  
 गावत गुण निगम ध्यावत सुख सुगम,  
 सुमिरत दैत वर सन्त मन कामकी ।  
 कहै दास तुलसी संकट दुःख त्रास हरो,

आवो हनुमान तुम्हैं आन राजारामकी ॥१९॥

आयो हनुमान भागु भूत प्रेत वान,

भाग भाग रे मसान हांक सुन हनोमानकी ।

ब्रह्म दोष टोना टाम तंत्र मंत्र डाक शाक,

भस्म होत आंचलो सुभट कपि नामकी ।

बंचकअरि चपल चोर सबही विकल,

सुमिरत पीर भाग तन मन ग्रामकी ।

कहै दास तुलसी संकट दुःख त्रास हरो,

बेगि दीजे दर्श तुम्हैं आन राजारामकी ॥२०॥

भानुसौ पढ़न हनुमान गये भानु मन,

अनुमानि शिशुकेलि कियो फेर फारसो ।

पाछिले पगनिगम गगन मगन मन,

क्रम कौन भूम कपि बालक विहारसो ।

कौतुक बिलोक सुरपाल हरि हर विधि,

लोचननि चकाचौंधी चित्तनि खँभार सो ।

बल कैधों वीररस धीरज कै साहस कै,

तुलसी शरीर धरे सबनिको सार सो ॥ २१ ॥

गोपद पयोधि करि होलिका ज्यों लाय लंक,  
 निपट निशंक परपुर गलबल भो ।  
 द्रोणसो पहार लियो ख्यालही उखारि करि,  
 कंदुक ज्यों कपि खेल बेलकैसो फल भो ।  
 संकट समाज असमंजससे रामराज,  
 काज युग पुंगनिको करतल पल भो ।  
 साहसी समर्थ तुलसीको नाह जाकी बांह,  
 लोकपालनीको फिर फिर थिर थल भो ॥ २२ ॥  
 रुद्र अवतारी तनुधारी अंजनीके उद्र,  
 बाल डर हारी बाल रविको अहारी है ।  
 बालब्रह्मचारी बालि बन्धु उपकारी,  
 दीनबन्धु सुखकारी सत्यसंध व्रतधारी है ।  
 सिन्धु मदहारी सुरसाको गर्व टारी वीर,  
 सिंहिका विदारी लंकिनीको मारि तारी है ।  
 भक्तभयहारी बेगि लागिगये गोहारी,  
 सुध लीजिये तुलसीदास शरण तिहारी है ॥ २३ ॥  
 कानन उजारी पुनि लंकाकहाँ जारी अरु,

सीतादुःख टारी कालनेमिको पछारी है ।  
 धौलागिरि धारी बीर लपण उवारी,  
 रघुपति हितकारी अहिरावनै संहारी है ।  
 अवधविहारी काज सकल सँभारी,  
 तुलसी है बलिहारी कदलीवनविहारी है ।  
 भक्त भयहारी बेगि लागिये गोहारी,  
 सुध लीजिये हमारी जन शरण तिहारी है २४  
 तेरो ग्राज भारी सुनि भाजै महामारी,  
 नीच कांपति विचारी अल्प मीच ज्यों अपंग है ।  
 देवी देव दानौ दैत्य राक्षस गन्धर्व गृथः  
 रूपमांड किन्नरको बांधि करै तंग है ।  
 भूत प्रेत पितर वैताल क्षेत्रपाल घाल,  
 काल व्याल व्याघ्र तेज सबहीका भंग है ।  
 योजनपर्यंत आवे तुलसी पै नहीं त्रास,  
 सर्वकाल सर्वठौर रखै बजरंग है ॥ २५ ॥  
 कमठकी पीठि जाके गोड़निकी गाड़े मानो,  
 नापके भाजन भरि जलनिधि जल भो ।

यातुधान दावन परावनको दुर्ग भयो,  
 महामीनवास तिमितोमनिको थल भो ।  
 कुम्भकर्ण रावण पयोदनाद ईधनको,  
 तुलसी प्रताप जाको प्रबल अनल भो ।  
 भीषम कहत मेरे अनुमान हनुमान,  
 सारिखो त्रिकाल न त्रिलोक महाबल भो ॥ २६ ॥  
 दूत रामरायको सपूत पूत पौनको तू,  
 अंजनीको नन्दन प्रताप भूरि भानु सो ।  
 सीय शोच शमन दुरित दोष दमन,  
 शरन आये अवन लखन प्रिय प्रान सो ।  
 दशमुख दुसह दरिद्र दरिबेको भयो,  
 प्रकट त्रिलोक ओक तुलसी निधान सो ।  
 ज्ञान गुणवान बलवान सेवा सावधान,  
 साहेब सुजान उर आनु हनुमान सो ॥ २७ ॥  
 दवन दुवन दलभुवन विदित बल,  
 वेद यश गावत विबुध बंदी छोर को ।  
 पाप ताप तिमिर लुहिन विघटन पदु,

सेवक सरोरुह सुखद भानु भोरको ।  
 लोक परलोकते विशोक सपने न शोक,  
 तुलसीके हिये है भरोसो एक ओरको ।  
 रामको दुलारो दास वामदेवको निवास,  
 नाम कलि कामतरु केसरीकिशोरको ॥ २८ ॥  
 महाबल सींव महाभीम महा वान यती,  
 महावीर विदित वरायो रघुवीरको ।  
 कुलिश कठोर तनु जोर परै रोर रन,  
 करुणा कलित मन धारमिक धीरको ।  
 दुर्जनको काल सो करत पाल सजनको,  
 सुमिरे हरन हार तुलसीकी पीरको ।  
 सीय सुखदायक दुलारो रघुनायकको,  
 सेवकसहायक है साहसी समीरको ॥ २९ ॥  
 रचिवेको विधि जैसे पालिवेको हरिहर,  
 मीच मारिवेको ज्यायवेको सुधापान भो ।  
 धरिवेको धरणि तरणि तम दलिवेको,  
 सोखिवे कृशानु पोषिवेको हिमभानु भो ।

खल दुःख दोषिवेको जन परितोषवेको,  
 मांगिवो मलीनताको मोदक सुदान भो ।  
 आरतकी आरति निवारिवेको तिहुँपुर,  
 तुलसीको साहेब हठीलो हनुमान भो ॥ ३० ॥  
 भारतमें पारथके रथकेतु बैठिवेको,  
 बीर कदलीवनसे आतुर उड़ानो है ।  
 कांप्यौ मारतंड ब्रह्मंड न सहत तेज,  
 जबै नभमंडलमें चंड मँडरानो है ।  
 बाल रवि कोटिन्हसी लाल छबिछाजै अंग,  
 कोटि मृगराजसो घटासो घहरानो है ।  
 चौंकि उठे योधा सर्व छूटि परे अस्र शस्त्र,  
 धीर तुलसी सो ध्वजा पै जो ठहरानो है ॥ ३१ ॥  
 करुणानिधान बल बुद्धिके निधान मोद,  
 महिमा निधान गुण ज्ञानके निधान हौ ।  
 बामदेव रूप भूप रामके सनेही नाम,  
 लेत देत अर्थ धर्म काम निरवान हौ ।  
 आपनो प्रभाव सीतानाथको स्वभाव शील,



लोकवेद विधिहु विदुष हनुमान हौ ।  
 मनकी बचनकी करमकी तिहूं प्रकार,  
 तुलसी तिहारो तुम साहब सुजान हौ ॥ ३२ ॥  
 मनको अगम तन सुगम किये कपीश,  
 काज महाराजके समाज साज साजे हैं ।  
 देव बंदी छोर रण रोर केशरीकिशोर,  
 युग युग जग तेरे विरद विराजे हैं ।  
 बीरवर जोर घटि जोर तुलसीकी ओर,  
 सुनि सकुचाने साधु खलगण गाजे हैं ।  
 बिगरी सँवार अंजनीकुमार कीजे मोहिं,  
 जैसे होत आये हनुमानके निवाजे हैं ॥ ३३ ॥  
 उथपे थपन थिर थपेउ थपनहार,  
 केसरीकुमार बल आपनो सँभारिये ।  
 रामके गुलामनिको कामतरु राम दूत,  
 मोसे दीन दूबरको तकिया तिहारिये ।  
 साहब समर्थ तोसों तुलसीके माथे पर,  
 सोउ अपराध विनु बीर बांधि मारिये ।

पोषरी विशाल बाहु बली वारिचर पीर,  
 मकरी ज्यों पकरिकै वदन विदारिये ॥ ३४ ॥  
 लोक परलोकहू तिलोक न विलोकियत,  
 तोसो समरथ चष चारिहूं ही नारिये ।  
 कर्म काल लोक पाल अग जग जीव जाल,  
 नाथ हाथ बस निजमहिमा विचारिये ।  
 खास दास रावरो निवास तेरो तासु उर,  
 तुलसीसो देव दुखी देखियत भारिये ।  
 चात तरु मूल बाहु शूल कपिकच्छु बेलि,  
 उपजी सकेलि कपि खेलही उखारिये ॥ ३५ ॥  
 करम कराल कंस भूमिपालके भरोसे,  
 बकी बक भगिनी काहूते कहा डरैगी ।  
 बड़ी बिकराल बालघातिनी न जात कहि,  
 बाहुबल बलका छबीले छोटे छरैगी ।  
 आई है बनाय बेष आप तू विचार देख,  
 पाप जाय सबको गुणीके पाले परैगी ।  
 घूतना पिशाचिनी ज्यों कपि कान्ह तुलसीकी,

बाहुपीर महावीर तेरे मारे मरैगी ॥ ३६ ॥  
 जय हनुमान तू अडंगी वीर वजरंगी,  
 लैके शमशेर शिर शत्रुनको झारिये ।  
 पावक लगाय लंका बाटिका उजारि डान्यो,  
 फारि डान्यो रावण तो असुर संहारिये ।  
 बंचकन मान्यो मेघनादहू पछारि डान्यो,  
 वारि टारि डान्यो वीर विग्रह हुँकारिये ।  
 तुलसी कहत मोपै कृपा करौ वायुपूत,  
 शत्रुनको मारि मारि लातन पछारिये ॥ ३७ ॥  
 सिंहिका संहारि बलि सुरसाधुधारि छलि,  
 लंकिनी पछारि मारि बाटिका उजारी है ।  
 लंकाको प्रजारि अरु मकरी विदारि करि,  
 यातुधानधारि धूरिधानी कर डारी है ।  
 तोरि यमकातरि मंदोदरि कटोर आनि,  
 रावणकी रानी मेघनादमहतारी है ।  
 भीर बाहु पीरकी निपट राखी महावीर,  
 कौनके सकोचे तुलसीके सोच भारी है ॥ ३८ ॥

तेरी बालकेलि वीर सुनि सहमत धीर,  
 तूलत शरीर सुधि शक्ररविराहुकी ।  
 तेरी बांह बसत विशोक लोकपाल सब,  
 तेरो नाम लिये रहै आरति न काहुकी ।  
 साम दाम भेद विधि वेदहू लबेद सिद्धि,  
 हाथ कपिनाथहीके चोटी चोर शाहुकी ।  
 आलस अनख परिहास की सिखावन है,  
 एते दिन रही पीर तुलसीके बाहुकी ॥ ३९ ॥  
 दूकनिको घर घर डोलत कंगाल बोलि,  
 बाल ज्यों कृपाल तन पालि पालि पोसो है ।  
 कीन्ही है संभार सार अंजनीकुमार वीर,  
 अपनो बिसारि है न मेरो ये भरोसो है ।  
 इतनो परेखो सब भांति समस्तथ आज,  
 कपिनाथ सांचो कहो को त्रिलोक तोसो है ।  
 तुलसी कहत कीजै पेषि परिहास नाहिं,  
 पक्षीको मरन खेल बालकनको सो है ॥ ४० ॥  
 जय जय रामदूत वीर महावीर देव,

होय तू दयालु मोपै कृपा तुम कीजिये ।  
 हों तो तेरो दास मैं तो तेरेही भरोसे रहों;  
 तुलसी कहत अर्ज मेरी सुन लीजिये ।  
 शत्रु अरु बैरी दुष्ट जेते जग मेरे होयँ,  
 तिनको मिटाय डारौ यहै वर दीजिये ।  
 वीरनमें वीर महावीर बड़ो वीर तू है,  
 लेके गदा हथ जुत्थ शत्रुनको छीजिये ॥ ४१ ॥  
 आपनेही पापते त्रितापते कि शापते;  
 बड़ी है बांह बेदन कही न सहि जात है ।  
 औषध अनेक यंत्र मंत्र टोटकादि किये;  
 बादि भये देवता मनाये अधिकाति है ।  
 करतार भरतार हरतार कर्म काल,  
 को है जग जाल जो न मानतहिं तोहि है ।  
 चेरो तेरो तुलसी तू मान कह्यौ रामदूत;  
 ठील तेरी वीर मोहिं पीरसी पिराति है ॥ ४२ ॥  
 दूत राजा रामको सुपूत पूत वायुको,  
 समर्थ हाथ पायको सहाय असहायको ।

बाकी विरुदावलि विदित वेद गाइयत,  
 रावण सो भट भयो मुष्टिकाके घायको।  
 एते बड़े साहेब समर्थको निवाजों आजु,  
 सीदत सुसेवक बचन मन काय को ।  
 थोरी बाहु पीरकी बड़ी गलानि तुलसीको,  
 कौन पाप कोप लोप प्रकट प्रभाय को ॥ ४३ ॥  
 देवी देव दनुज मनुज मुनि सिद्ध नाग,  
 छोटे बड़े जीव जेते चेतन अचेत हैं ।  
 पूतना पिशाची यातुधानी यातुधान वाम,  
 रामदूतकी रजाइ माथे मानि लेत हैं ।  
 घोर यंत्र मंत्र कूट कपट कुयोग रोग,  
 हनुमान आन सुनि छाड़त निकेत हैं ।  
 क्रोध कीजै कर्म कोप बोध कीजै तुलसीको,  
 शोध कीजै तिनको जो दोष दुःख देत हैं ॥ ४४ ॥  
 तेरे बल वानर जिताये रण रावणसे,  
 तेरे घाले यातुधान भये घर घरके ।  
 तेरे बल रामराज किये सब सुरकाज,

सकल समाज साज साजे रघुवरके ।  
 तेरे गुणगान सुनि गीरवान पुलकित,  
 सजल बिलोचन विरंचि हरि हरके ।  
 तुलसीके माथेपर हाथ फेरो कीशनाथ,  
 बूझिये न दास दुखी तोसेकी नगरके ॥ ४५ ॥  
 पाले तेरे दूकको पराहं चूक मूकि ऐन,  
 कूर कौड़ी दूकको हौं आपनि ओर हेरिये ।  
 भोरानाथ भारे हौ सरोष होत थोरे दोष,  
 पोषि तोषि थापि आपनो न अवडेरिये ।  
 अंबु तुहौं अंबुचर अंबु तू तो डिंभसो न,  
 बूझिये बिलंब अवलंब मेरे तेरिये ।  
 बालक विकल जानि पाहि प्रेम पहिचानि,  
 तुलसीकी बांहपर लांवी लूम फेरिये ॥ ४६ ॥  
 घेरि लियो रोगनि कुलोगनि कुयोगनि ज्यों,  
 वासर जलद घन घटा धकिनाई है ।  
 बरसत वारि पार जरिये जवासे जसः  
 शेष विनु दोष धूम मूल मलिनाई है ।

करुणानिधान हनुमान महाबलवान्,  
 हेरि हँसि हांक फूँकि फौजते उड़ाई है ।  
 खायहू ते तुलसी कुरोग राड़ राकसनि,  
 केसरी किशोर राखै बीर बरियाई है ॥ ४७ ॥  
 कालकी करालता करम कठिनाई कीधों,  
 पापके प्रभावकी सुभाय बाय बावरे ।  
 वेदन कुभांति सो सही न जाति रातदिन,  
 सोई बांह गही जो गही समीर डावरे ।  
 लायो तरु तुलसी तिहारो सो निहारि वारि,  
 सींचिए मलीन भो कुपरिताप तावरे ।  
 भूतनिकी आपनी पराई है कृपानिधान,  
 जानियत सबहीकी रीति राम रावरे ॥ ४८ ॥  
 रामबरदूत वायुपूत सो सपूत प्रभु,  
 बल अनुकूत तिहुँपुर सरनाम है ।  
 कनकाचल शरीर रणधीर महावीर,  
 स्वामी हरो भवपीर बिकल गुलाम है ।  
 गयो बाटिका अशोक तात हस्यो सियशोक,



यश छायो तिहुँलोक नेकी सब ठाम है ।  
 तुलसीकी लाज अहै नाथ अब तेरे हाथ,  
 रहत भरोसेपै तिहारे आठौ याम है ॥ ४२ ॥  
 मारयो जम्बुमालि आदि किंकर दयंतनको,  
 मंत्रिनके पुत्र एक पलमें सँहारो है ।  
 पुनि दशकंधर बुलायो अक्षको समक्ष,  
 पठयो दै संग वीर सुषट अपारो है ।  
 ताहि देखि गाज्यो कपि प्रलयपयोधि मानो,  
 बिटप उपारि एक ताके उर मारो है ।  
 तुलसी पकरि भूमिमें पछारि भट्टनको,  
 गाज्यो हनुमान सिया रामको डुलारो है ॥ ४३ ॥  
 मेघनादको बुलाय शपथ दिवाय खल,  
 पठयो तुरंत जहां पवनकुमारो है ।  
 लरत प्रताप वीर रामके डरत नाहिं,  
 बिटप प्रहारि एक ताके उर मारो है ।  
 लंकको कुमार अरु वंक बलवान वीर,  
 ब्रह्म अस्त्र साध जब कपिपर डारो है ।

तुलसी मूर्छित जान दुष्टको पियारो पूत,  
 बांधि नागपाश गढ़ लंकको सिधारो है ॥ ५१ ॥  
 आयो हनुमान भयो कोलाहल गढ़ लंक,  
 पावक लगाइबेको पूंछको बनाई है ।  
 लपटि झपटि बहु निश्चरन रौंदि खौंदि,  
 अगिन प्रचंड लूम सभामें घुमाई है ।  
 तुलसी चिल्लाने बीर सुभट किनारे भये,  
 गाज्यौ महावीर कहि जय रघुराई है ।  
 झपटके गढ़ चब्यौ हांक दै दशाननको,  
 बिकट कराल वेष कीश जो बनाई है ॥ ५२ ॥  
 पाँय पीर पेट पीर बाहु पीर मुख पीर,  
 जरजर सकल शरीर पीर भई है ।  
 देव भूत पितर करम खल काल ग्रह,  
 मोहिं पर दवारि कमान कस दई है ।  
 बिना मोल तुलसी बिकानो बलि बारेहीते,  
 ओर राम नामकी ललाट लिख लई है ।  
 कुंभजके किंकर बिकल बूढ़े गोखुरनि,

हाय रामराय ऐसी हाल कहूं भई है ॥ ५३ ॥  
 बाहुक सुबाहु नीच लीचर मलीच मिलि,  
 मुंह पीडकेतु जाकुरोग यातुधान है ।  
 राम नाम जप याग कियौ चाहौ सानुराग,  
 काल कैसे दूत मृत कहां मेरो भान है ।  
 सुमिरेसे हाय रामलखन आखर दोय;  
 जिन्हके साके समूह जागत जहान है ।  
 तुलसी संभारि ताड़का संहारि भारि भट;  
 बेधे वरगदसे बनाय वान वान है ॥ ५४ ॥  
 बालपने सूधे मन रामसनमुख भयो,  
 राम नाम लेत मांगि खात ठकठाक हों ।  
 पण्यो लोकरीतिमें पुनीत प्रीति रामराय;  
 मोहबश बैठो तोरि तरकि तराक हों ।  
 खोटे खोटे आचरन आचरत अपनायो;  
 अंजनीकुमार सोध्यो राम पानिपाक हों ।  
 तुलसी गुसाईं भयो थोड़े दिन भूल गयो,  
 ताके फल पावत निदान परिपाक हों ॥ ५५ ॥

अशन बसनहीन विषम विषादलीन,  
 देखि दीन दूबरो करै न हाय हाय को ।  
 तुलसी अनाथ सो सनाथ रघुनाथ कियो,  
 दियो फल शीलसिन्धु आपने सुभायको ।  
 नीच यहि बीच पति पाय भरुआय गो,  
 विहाय प्रभुभजन वचन मन कायको ।  
 ताते तनु पेषियत घोरवर तोरमिसि,  
 फूटि फूटि निकसत लोन रामरायको ॥ ५६ ॥  
 सीतापति साहब सहाय हनुमान नित,  
 हित उपदेशको महेश मानो गुरुके ।  
 मानस बचन काय शरन तिहारे पाय,  
 तुम्हरे भरोसे सुर मै न जाने सुरके ।  
 व्याधि भूत जनित उपाधि काहू खलकी,  
 समाधि कीजै तुलसीको जानि जन फुरके ।  
 कपिनाथ रघुनाथ भोरानाथ भूतनाथ,  
 रोगसिन्धु क्यों न डारियत गाय खुरके ॥ ५७ ॥  
 कहौं हनुमानसों सुजान रामराय सों,

कृपानिधान शंकरसों सावधान गुनिये ।  
 हरष विषाद राग रोष गुणदोष मई,  
 विरची विरंचि सब देखियत दुनिये ।  
 माया जीव कालके करमके सुभायके,  
 करैया तुलसीके कहैं सांचे मन गुनिये ।  
 तुमसे कहा न होय यह तो बुझावा मोहिं,  
 हौं हूँ रहौं मौनहीं बयोसो जान लुनिये ॥ ५८ ॥  
 मारुतदुलारो प्यारो अंजनीको पूत जो है,  
 रन मजबूत जग ऐसो बलवान को ।  
 सिया शोक हारी दियो मुद्रिका चिन्हारी,  
 भयो आनंद महा री गायो प्रभु गुणगानको ।  
 रामहितकारी प्राण लपण उवारी,  
 टारी दुःख तुलसी सकल देवतानको ।  
 विपति विदारी सदा संकट निवारी भारी,  
 आठौ याम ध्यानधारी जौन हनुमानको ॥ ५९ ॥  
 त्रास उर भारी जु सुग्रीवको दुखारी देख,  
 अवधविहारीसों मिलाय मोद पारी है ।

सिय सोधकारी लंकिनीको मान हारी अरु,  
 सिंहिका संहारी मद सुरसाको टारी है ।  
 दनुज पछारी बहु बाटिका उजारी भारी,  
 तुलसी जराय लंक गढ़ कीन छारी है ।  
 शरण तिहारी जन संकट निवारी सदा,  
 केशरीकिशोर हरो बिपति हमारी है ॥ ६० ॥  
 हनूमान साठिकाको पाठ करै जे सुजान,  
 अन्त चढ़िकै विमान रामधाम पावहीं ।  
 दास उक्ति द्रव्य वृद्धि प्राप्ति विश्व रिद्धि सिद्धि,  
 बांछित सकल नव निद्धि घर आवहीं ।  
 पुत्र पौत्र आदि सुखी स्वपन्यो न होहिं दुखी,  
 रक्षा परिवार भवन हनुमत दरशावहीं ।  
 कहै दास तुलसी संकट दुःख त्रास हरै,  
 देवकी प्रसत्ति भक्ति बेद यश गावहीं ॥ ६१ ॥

दोहा ।

जै कपीश सुग्रीवकी, जै अंगद हनुमान ।  
 रामलषण जै जानकी, सदा करहु कल्याण ॥ १ ॥

श्रीहनुमान गुणावली, यह कुंजदिन सविधान ।  
 जो गावे सो पावही, निश्चय पद निर्वान ॥२॥  
 जो यह साठक पढ़ै नित, तुलसी कहै विचारि ।  
 परै न संकट ताहि तन, साखी हैं त्रिपुरारि ॥३॥

प्रार्थना-श्लोक ।

ॐ उल्लङ्घ्य सिंधोः सलिलं सलीलं  
 यः शोकबहिं जनकात्मजायाः ।  
 आदाय तेनैव ददाह लङ्कां  
 नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम् ॥ १ ॥  
 ॐ अतुलितवलधाम स्वर्णशैलाभदेहं  
 दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।  
 सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं  
 रघुपतिवरदूतं वातजातं नमामि ॥ २ ॥  
 ॐ मनोजवं मारुततुल्यवेगं  
 जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।  
 वातात्मजं वानरयूथमुख्यं  
 श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥ ३ ॥

॥ इति श्रीहनुमानसाठिका सम्पूर्ण ॥ शुभम् ॥





## विक्रयार्थ तैयार.

नाम.

की० डा० म०

शक्तिकथा कायस्थकी .... ०-१ ०-॥

पाण्डवयशेन्दुचन्द्रिका स्वरूपदासकृत

रसालंकारबोधिनी, इसमें संपूर्ण महाभा-

रतके १८ पर्वोंका संक्षिप्त सार भलीभांति

दर्शाया है .... १-० ०-२

दुर्गाचालीसी .... ०-१ ०-॥

हनुमद्वाहुक .... ०-१ ०-॥

सुदामाकी वाराणसी .... ०-१ ०-॥

छप्पैरामायण .... ०-१॥ ०-॥

संकटमोचन हनुमानाष्टक .... ०-॥ ०-॥

शंभुपचीसी ( महादेवजीके २५ कवित्त ) ०-१ ०-॥

रामजन्म ( रामानुरागियोंके पढ़नेयोग्य. ) ०-१॥ ०-॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

हरिप्रसाद भगीरथजी,

कालकादेवीरोड, रामवाड़ी, मुम्बई.

॥ श्री ॥

अथ नीराजनकलाप.

अथवा

आरतीसंग्रह.

यह पुस्तक

श्रीयुत नंदलालपंडित गुर्जर ब्राह्मण

दीडवाणेके रहिवासी इन्होंने

संग्रह कीया

सो

मुंबईमें

हरिप्रसाद भगीरथजीनें.

‘गुजराती’ छापखानेमें छापवाया.

संवत् १९६४

सन १९०७.

इस पुस्तकके सब हक रजिस्टर कराके

छपानेवालेनें स्वाधीन रखे हैं.

## अथ नीराजनकलापानुक्रमणिका.

विषय.	पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ.
श्रीनवग्रहनीराजनस्तोत्र ....	३	दुर्गानीराजनम् ....	२६
पंचदेवनीराजनस्तोत्रम् ....	७	गणपतिकीआरती ....	२८
अन्यत्पंचदेवनीराजनम् ....	८	आरती लक्ष्मणवालाजीकी	२२
पंचदेवानांपृथक् नीराजनस्तो- त्राणि ॥ तत्रादौश्रीविष्णोः	९	सत्यनारायणकी आरती ....	३०
श्रीविठ्ठलेशनीराजनम् ....	११	जयलक्ष्मीरमणकी आरती ....	३१
श्रीशंकरनीराजनम् ....	१२	आरती श्रीकृष्णजीकी ....	३२
श्रीसूर्यनारायणनीराजनं ....	१३	आरती जानकीनाथकी ....	३३
श्रीगणपतिनीराजनम् ....	१४	आरती रामचंद्रजीकी ....	३४
श्रीभगवतीनीराजनम् ....	१६	शिवजीकी आरती ....	३४
श्रीसत्यदेवनीराजनम् ....	१७	आरती शिवजीकी ....	३६
प्रातःस्मरणीयं श्रीशिवनीरा- जनम् ....	१९	आरती शिवजीकी ....	३७
प्रातःस्मरणीयं श्रीहरिस्तोत्रम्	२१	आरती जिवजीकी ....	३८
श्रीसत्यनारायणस्य ....	२२	आरती श्रीदुर्गाकी ....	३९
पुनर्विष्णोर्नीराजनम् ....	२३	आरती दुर्गाजीकी ....	४०
पुनर्विष्णोरेवनीराजनम् ....	२४	आरती दुर्गाकी ....	४१
ब्रह्मादीनां त्रिगुणात्मकं नीरा- जनम् ....	२५	लक्ष्मीजीकी आरती ....	४४
		पार्वतीदेवीकी आरती ....	४५
		वजरंगवालाकी आरती ....	४६

श्रीः ।

॥ अथनीराजनस्तोत्रसप्तदशीप्रारंभः ॥

तत्रादौ

॥ श्रीनवग्रहनीराजनस्तोत्रप्रारंभः ॥

जयजयदशशतकिरणोलसदतुहिनभानो २ त्रिभुव  
नतिमिरापहतिश्रितसुरगिरिसानो ॥ यस्तनुतेखिल  
जगतामुदयस्थितिविलयं २ तंदिनकरमखिलेशंसंप्र  
णताःस्मवयं ॥ जयदेवजयदेव ॥ १ ॥ जयजयरज  
नीजानेसकलकलाकलित २ स्त्रिनयनशेखरगोप्यत्रि  
नयनसंभूतः ॥ अमृतमयैर्निजकिरणैर्जगदुपतापहरै  
२ रधिपत्वेनाधिकृतोभौषध्यवनिसुरैः ॥ जयदेवजय  
देव ॥ २ ॥ सामश्रुतिगणनेतर्जयमंगलमूर्ते २ भक्तज  
नाशुभनाशनहृदयेप्सितपूते ॥ भारद्वाजकुलाम्बुधि  
जनितोजनिकाला २ दमरकुलस्योद्धर्ताबहुविपदां  
जालात् ॥ जय ॥ ३ ॥ सौम्यः शुभतररूपान्वितजयबुध

देव २ प्रचुरानंदंकुरुमेत्रिदशैःकृतसेवः ॥ अमृतकिरण  
 तनयस्त्वंसुविमलमतिसिन्धो २ शमयममामितमेनः  
 शरणागतबन्धो ॥ जय० ॥ ४ ॥ जयपुरुहूतपुरोहि  
 तहितकृद्रिपुशमनो २ जगतामीज्यचतुर्दशविद्यामय  
 सुतनो ॥ चित्रशिखण्डितनूजोजितविबुधारिवलः २  
 सुरपतिमुकुटमरीचिभिरुज्ज्वलितांग्रितलः ॥ जय०  
 ॥ ५ ॥ जयजयभृगुकुलभूषणजितदूषणदेव २ रक्षण  
 दीक्षागुरुरसिदितिजानामेव ॥ अधिगतमृतसंजीव  
 नमंत्रस्त्रिपुरारे २ स्फुरदमलांशुरहन्यपिविदितःसंसा  
 रे ॥ जय० ॥ ६ ॥ जयशनिदेवस्वामिन्सकलग्रहमु  
 ख्य २ स्तववंदेचरणांबुजमत्यादृतसख्यः ॥ छाया  
 गर्भजगर्वापहदुरितैकजुषां २ स्तवपूजादिभिरिष्टस्त्वं  
 वरदोविदुषाम् ॥ जय० ॥ ७ ॥ दनुजान्वयजनितो  
 पितृममरकुलमानो २ बर्बरदेशसमुद्भवजयजयस्वर्भा  
 नो ॥ भास्करहिमकरकरमपितिमिरात्मकमूर्त्या २ यो  
 ग्रसतेपुरुपुण्येपर्वणिनिजशक्त्या ॥ जय० ॥ ८ ॥  
 समुदयतोपिभयंकरजयभगवन्केतो २ शुभंमशुभंवा

फलमिहयच्छसिजनहेतोः ॥ मलयोद्धूतशरीरोविवि  
 धाकृतिधारी २ विकलांगोपिजनानांबहुमंगलकारी ॥  
 जय० ॥ ९ ॥ भास्करचंद्रांगारकबुधसुरगुरुशुक्राः २  
 उष्णगुमून्वगुशिखिनःश्रितलसदुडुचक्राः ॥ शांतिं  
 विदधतउर्व्याजयतग्रहदेवा २ इंद्रादिकसुरसन्ततिसं  
 पादितसेवाः ॥ जय० ॥ १० ॥ मांगल्याभ्युदयादि  
 शुनिगमागमरीत्या २ पूज्यंतेयेमनुजैरादावतिप्री  
 त्या ॥ ध्यानाहानाजपतोहोमादिभिरिष्टा २ रिष्टंवि  
 निहत्यैतेशंददतेतुष्टाः ॥ जय० ॥ ११ ॥ जयजयश  
 ब्दपुरस्सरमपचितिसुपयुक्ता २ येनिशमेषांविदधति  
 चरणांबुजभक्ताः ॥ तापत्रयमपहायप्रज्ञामतिविक  
 लां २ सुतधनसंपदमनघास्त्रेप्राप्नुयुरचलाम् ॥ जय०  
 ॥ १२ ॥ त्रिभुवनदेहिसमूहःस्वनियतिनिष्ठाकं २  
 यद्वशतःसुखमसुखंविदतिपरिपाकम् ॥ सुरनरमुनि  
 वरवंद्योगणेष्वसुसदाम् २ रुजमरिगणमपनीयेष्टंतनु  
 तेसुहृदाम् ॥ जय० ॥ १३ ॥ द्विजनिसहस्रोदीच्या  
 वयजनितःसुधृती २ रामचंद्रइत्यभिधामादधदमल

मतिः ॥ श्रीमन्निजगुरुपदयोर्धृतहृदयस्मरणे २ रुचि  
 स्वचनकुसुमावलिमाधाद्रहचरणे ॥ जय० ॥ १४ ॥  
 ग्रहदेवानाधिदेवान्विविधैरुपचारैः २ रभ्यर्च्यादौमंत्रैः प  
 ऋत्यनुसारैः ॥ सूर्यादेर्नीराजनमथभक्त्यापठते २ सर्वे  
 श्वर्ग्यसमेतोवाञ्छितमिहलभते ॥ जयदेवजयदेव  
 ॥ १५ ॥ इति श्रीमद्रविडसहस्रोदीच्याचार्येत्युपनाम  
 कगुर्जरदेशीयबृहत्सभास्थद्विजश्रीरामनारायणतदनु  
 जश्रीरामचंद्रविरचितं नवग्रहनीराजनस्तोत्रं समाप्तम् ॥  
 श्रीनवग्रहार्पणमस्तु ॥ अथ श्रीगुरुरामचंद्रदत्तं  
 दलालंप्रत्याशीः पद्यमिदम् ॥ शास्त्रीशास्त्रीयवाग्भि  
 र्मदमनवगतित्याजयंतीजयंतीसद्योऽसद्योगभिद्राक्  
 सकलदिविषदांभीतिहृद्यातिहृद्या ॥ सात्रासात्राय  
 तान्त्वांहिमगिरितनयाभासमानाऽसमानाऽपारिंपारीं  
 द्राजोपरिधृतचरणानन्दलालंदलालम् ॥ १ ॥ धरा  
 धरेंद्रजेशपत्पयोजयोजितांतरोवितंद्ररामचंद्रवित्प्रमोद  
 मानमानसः ॥ लिपिलिपिंकरोकरोत्सुवर्णवर्णमौक्ति  
 कैरहोरहोनयन्सदासदाशयाशयाग्र्यजैः ॥ २ ॥

॥ अथपंचदेवनीराजनस्तोत्रम् ॥

जयपंचप्रणवेश्रीपंचप्रणवे ब्रह्महरेशिवभास्करगणप  
तिजगदंबे ॥ जयदेवजयदेव ॥ ध्रु० ॥ विश्वोत्पा  
दनकारणमिन्दीवरभासम् २ पुस्तकमालामभयंवरदं  
करपद्मम् ॥ शोभितमद्भुतरूपंसावित्र्यासहितम् २  
हिरण्यगर्भवंदेराजसमखिलेशम् ॥ जय० ॥ १ ॥ लक्ष्म्या  
सहितंविष्णुंनारायणमाद्यम् २ भगवंतंजगदीशंविश्व  
स्थितिहेतुम् । शंखरथांगगदाब्जैर्भूषितकरपद्मम् २ श्या  
मं वन्देसात्विकमुद्यद्रविभासम् ॥ जय० ॥ २ ॥ त्रि  
नयनमिंदुकिरीटंभालेशिवमीशम् २ पंचाननममरेशंरु  
द्रस्फटिकाभम् ॥ खड्गत्रिशूलवराभयकरमद्भुतरूपम्  
२ सृष्टिस्थितिलयकारं वंदेभुवनेशम् ॥ जय० ॥ ३ ॥  
तपनंतिमिरविनाशं त्रिगुणात्मकरूपम् २ सूर्यविश्व  
प्रकाशंतेजोमयमूर्तिम् । पद्मद्वयवरमभयांविभूतिकर  
पद्मम् २ वंदे रत्नकिरीटंभास्करमाखिलेशम् ॥ जय० ॥  
४ ॥ लंबोदरमरुणाभंविघ्नेश्वरमाद्यम् २ सिंदूरार्चित  
गात्रंसुरपूजितचरणम् ॥ परशुवराभयमोदकहस्ते



स्मितवक्त्रम् २ शक्त्यासहितंवंदेगणपतिमखिलेशम्  
 ॥ जय० ॥ ५ ॥ अनादिमायामरुणामुद्यद्गविभास  
 म् २ सर्वसुरासुरपूजितपादांबुजयुग्मम् ॥ पाशांकुश  
 शरचापंकरपद्मेविभूतम् २ मनसातामपिवंदेवरदांभुव  
 नेशीम् ॥ जय० ॥ ६ ॥ भक्तेनार्तिकसमयेभक्त्या  
 यत्पाठितम् २ ध्यानंषट्पद्मेतत्पंचायतनाख्यम् ॥ सल  
 भेच्चितितकामान्सकलानपिलोके २ पश्चाद्धामंगच्छ  
 तिपरमंसुरपूज्यम् ॥ जयदेवजयदेव ॥ ७ ॥

इतिपंचदेवनीराजनस्तोत्रंसमाप्तम् ॥ २ ॥

॥ अथान्यत्पंचदेवनीराजनम् ॥

जयपंचायतना श्रीपंचायतना गणेशअंवारविशिव  
 जगपालन कृष्णा ॥ जयदेवजयदेव ॥ ध्रु० ॥ एक  
 रदनागजवदनालंबोदरशकुना २ मूषकवाहनवरदा  
 विद्यानिधिगहना ॥ गंडस्थलमधुसवितामधुकरकर  
 भ्रमना २ शृंगडासिंदुरमंडितशशिभूषणवदना ॥ जय० ॥  
 १ ॥ सगुणानिर्गुणवालाअगणितगुणनामा २ व्य  
 क्ताव्यक्तातीतापार्वतीवामा ॥ सत्यमूर्तिस्फूर्तिजगप्र

गटेसीमा २ ब्रह्मानंदेवरदापार्वतीधामा ॥ जय० ॥ २ ॥ भा  
 स्करप्राचीधीशारवितममखनाशा २ विश्वचक्षुश्रीदि  
 नकरमित्रागुणधीशा ॥ अर्काभानुमहेशजयसूर्यापू  
 षा २ हिरण्यगर्भानमितोतोडींभवपाशा ॥ जय० ॥  
 ३ ॥ शांभवश्रीधरशंकरशशिधरशशिमौले २ व्या  
 घ्रांबरस्कंदांबरअगणितगणमौले ॥ त्रिशूलनिर्भेहस्ते  
 डमरुध्वनिजाली २ कर्पूरगोराजाताट्टमासनकाली ॥  
 ॥ जय० ॥ ४ ॥ अच्युतकेशवदामोदरश्रीधरहरि  
 रामा २ मुरलीधरसंकर्षणनारायणश्यामा ॥ मुरारीक  
 जगपालकअगणितगुणनामा २ गंगाधरलघुकिंकर  
 सवितातवनामा ॥ जय० ॥ ५ ॥ इतिश्रीपंचदेव  
 नीराजनस्तोत्रम् ॥

अथपंचदेवानांपृथक् नीराजनस्तो

त्राणि ॥ तत्रादौश्रीविष्णोः ॥

वंदेगोपालं २ मृगमदशोभितभालंकरुणाकल्लोलम् ॥  
 जयदेवजयदेव ॥ ध्रु० ॥ निर्गुणसगुणाकारंसंहतभू  
 भारम् २ करुणापारावारंगोवर्द्धनधारम् ॥ कुंचितकुं

तलनीलंशरदेंदुवदनं २ मणिगणमंडितकुंडलराजश्च  
 त्रियुगलम् ॥ जय० ॥ १ ॥ फुल्लेंदीवरनयनं विलसित  
 भ्रूयुगलम् २ बिंबाधरमतिसुंदरनासामणिलोलम् ॥  
 कंबुग्रीवंकौस्तुभमणिकंठाभरणम् २ श्रीवत्सांकितव  
 क्षोलंबितवनमालं ॥ जय० ॥ २ ॥ भूपितवाहूयुग  
 लंकरतलधृतवेणुं २ त्रिवलीशोभितउदरेनवजलधर  
 नीलं ॥ जय० ॥ ३ ॥ मुरलीवादनलीलासप्तस्वर  
 गीतं २ जलचरस्थलचरवनचररंजितसमगीतं ॥ नि  
 र्मलयमुनातीरेअगणिततवचरितं २ गोपीजनमन  
 मोहनदधतं श्रीकांतं ॥ जय० ॥ ४ ॥ रासक्रीडामं  
 डितवेष्टितव्रजललनम् २ मध्येतांडवमंडितकुवलय  
 दलनयनं ॥ कुसुमाकाररंजितमंदस्मितवदनं २ का  
 लियफणिवरदमनंपक्षीश्वरगमनं ॥ जय० ॥ ५ ॥ किं  
 किणिमेखलमध्येपीतांबरवसनं २ तोडानूपुरगर्जित  
 विलसितभ्रूयुगलम् ॥ गोपीजनपरिवेष्टितयमुनातटसं  
 स्थम् २ व्यासाऽभयदंसुखदंभुवनत्रयपालम् ॥ जय०

॥ ६ ॥ इति श्रीव्यासोक्तंगोपालनीराजनस्तोत्रं संपूर्णम् ॥ ४ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ ॥ ॥

॥ अथ श्रीविठ्ठलेशनीराजनम् ॥

जयकरुणासिन्धो २ लक्ष्मीनाथानाथवामनबलबंधो ॥

जयदेवजयदेव ॥ १ ॥ व्यापकवाहनविठ्ठलविश्वेश्वर

रविष्णो २ जगदाधारजनार्दनयदुभूषणजिष्णो ॥

जय० २ ॥ मधुसूदनमुखमर्दनमेघश्यामतनो २ मा

याभयहरमाधवमंगलमोक्षतनो ॥ जय० ॥ ॥ ३ ॥

मणिमुकुटोज्ज्वलकुंडलमन्मथमदमूर्ते २ पीतांबरवन

मालाभव्यवपुस्फूर्ते ॥ जय० ॥ ४ ॥ कंबुश्चक्रगदाब्जै

र्भुजमंडितशौरे २ भजतांतवपदपद्मंकुरुविघ्नदूरे ॥ जय०

॥ ५ ॥ कालिंदीतटनिकटे गोपीरासरते २ अद्भुत

लीलादर्शनस्तंभितचंद्रगते ॥ जय० ॥ ६ ॥ कृतस

नकादिकसेवासेवकशुभकारी २ जगदुद्धरजगदी

श्वरकटितंभवपाशी ॥ जय० ॥ ७ ॥ ममचित्तंतवरूपे भ

जतां निष्कामम् ॥ त्वन्नामस्मृतिमात्राजीवं कुरु रामम् ॥

जयदेवजयदेव ॥ ८ ॥ ॥ इति श्रीविठ्ठलेशनिराजनं

संपूर्णम् ॥ ५ ॥ श्रीशार्पणमस्तु ॥

## ॥ अथश्रीशंकरनीराजनम् ॥

जयगंगाधरहरहरगिरिजाधीश २ त्वंमांपालयनि  
 त्यंकृपयाजगदीश ॥ हरहरहरमहादेव ॥ ध्रु० ॥  
 कैलासेगिरिशिखरेकल्पद्रुमविपिने २ गुंजतिमधुकरपुं  
 जेकुंजवनेगहने ॥ कोकिलकूजितखेलितहंसावनली  
 ला २ रचयतिकलाः कलापीनृत्यतिमुदसहितः ॥  
 हरहरहरमहादेव ॥ १ ॥ तस्मिन्मुललितदेशेशालामणि  
 रचिता २ तन्मध्येहरनिकटेगौरीमुदसहिता ॥ क्री  
 डारचयतिभूसंरंजितमतिमीशम् २ इंद्रादिकसुरसेवि  
 तप्रणमततेशीसम् ॥ हरहर० २ ॥ विबुधवध्वर्वहुनृ  
 त्यतिहृदयेमुदसहिता २ किन्नरगानंकुरुतेसप्तस्वरस  
 सहिता ॥ धिननंधिननंकथयतिमृदंगवाद्यरते २  
 कुनुकुनुललितंवेणुमधुरंनादयते ॥ हरहर० ॥ ३ ॥  
 रुणुरुणुचरणेवादतित्रिपुरेमूज्ज्वलिता २ चक्रावर्तेभ्रम  
 यतिकुंतेनीतांता ॥ तांतांलुपलुपतालंवादतिशिवता  
 लम् २ अंगुष्ठांगुलिनादंलास्यगतंकुरुते ॥ हरहर० ॥  
 ॥ ४ ॥ कर्पूरद्युतिगौरपंचाननसहितम् २ त्रिनयनश

शशिधरमौलेविषधरकंठयुतम् ॥ सुंदरजटाकलापंपा  
 वकभरभालम् २ डमरुत्रिशूलकपालंस्वर्परधृतसालम्  
 हरहर० ॥ ५ ॥ शखंनिनदंकृत्वाझलरिनादयते २  
 नितरांजयतेब्रह्मावेदचतुष्टयगः ॥ अमृतंचरणसरोजं  
 हृदिकमलेधृत्वा २ अवलोकयतिमहेशंशंभुंबहुनत्वा  
 ॥ हरहर० ॥ ६ ॥ मुंडैरचयतिमालापन्नगमुपवीत  
 म् २ वामविभागैगिरिजारूपंस्वतिललितम् ॥ सक  
 लशरीरेविलसत्कृतभस्माभरणम् २ इतिब्रह्मध्वजरू  
 पंतापत्रयहरणम् ॥ हरहर० ॥ ७ ॥ ध्यानंचारतिस  
 मयेहृदयेयदिकृत्वा २ शिरसात्रिजटानाथंईशंबहुन  
 त्वा ॥ शंबरनाशंप्रतिदिनपठनंयःकुरुते ॥ शिवसा  
 युज्यंगच्छतिभक्त्यायःशृणुते ॥ हरहर० ॥ ८ ॥  
 इतिश्रीशंकरनीराजनंसमाप्तम् ॥ ६ ॥

॥ अथश्रीसूर्यनारायणनीराजनं ॥

दिनकरमहमीडे २ तिष्ठसिभावनिबद्धोनिजजनहन्त्री  
 डे ॥ जयदेव ॥ १ ॥ यस्मिन्नुद्यतिलोकेधावतितत्ति  
 मिरं २ सिंहादिवगजसंघस्तंवंदोमिहिरं ॥ जय० ॥

॥२॥ अंगुष्ठाग्रशरीरावालखिल्यमाला २ अनुवाकै  
 र्यस्तुवतेज्ञानोत्कचनाला ॥ जयदे० ॥ ३ ॥ भर्जि  
 तकर्मयोगीज्ञानेयततियथा २ सत्यं ब्रह्माद्वैतंगच्छ  
 तियस्यपथा ॥ जयदे० ॥ जयजयकरुणासिंधोनलि  
 नीनाथहरे २ अनुदिनमहमेतावच्चरणौतेनुचरे ॥ जय  
 दे० ॥ ५ ॥ उदयाचलमारूढोमृतकमिवोत्सृष्टम् २  
 लोकंकर्मणियमयन्स्वेभास्यतिहृष्टम् ॥ जयदे० ॥ ६ ॥  
 त्वन्नामश्रुतिनीतंशृणुतेसकृदपियः ॥ संसृतिपतितो  
 नपुनःपिबतिसमातृपयः ॥ जयदे० ॥ ७ ॥ यत्किं  
 चिन्ममजप्तंउतमपियद्वत्तम् ॥ तत्तेर्पणमथभगवन्पा  
 लयमघदत्तम् ॥ जय० ॥ ८ ॥ ॥ इतिगौडकुलोद्भव  
 ज्योतिर्विदीत्युपनामकमघदत्ताख्यद्विजविरचितं  
 श्रीसूर्यनीराजनंसमाप्तम् ॥ ९ ॥

॥ अथश्रीगणपतिनीराजनम् ॥

जयसुंदरवदनंश्रीसुंदरवदनंब्रह्माविष्णुसदाशिवअ  
 चितपदयुगलम् ॥ जयदेवजयदेव ॥ धृ० ॥ मणिमय  
 मुकुटविराजंभालेशशिशकलम् २ कंठेमौक्तिकमालं

ज्वलितारुणनेत्रम् ॥ सिंदूरारुणदेहंकरकंकणयुगलम्  
 २ सपालंकृतकंठमुपवीताभरणम् ॥ जयदेव० ॥ १ ॥  
 रत्नांकितभुजदंडवक्रिततुंडयुतम् २ त्रिगुणातीतदेवं  
 निगमागमविदितम् ॥ गिरिजातनयंशुद्धंशंकरसु-  
 खकरणम् २ विघ्नविनाशनदक्षंसिद्धयष्टकसहितम् ॥  
 जय० ॥ २ ॥ जगतांपालनकरणंत्रिगुणानामधिपम् २  
 सृष्टिस्थितिसंहारणकारणममरेशम् ॥ मायाधीशंशिव-  
 दंसाधकसुखकरणं २ कोटिदिवाकरभासंमूषकपृष्ठग-  
 तम् ॥ जय० ॥ ३ ॥ शूर्पाकारेकर्णेमणिजटिताभर-  
 णम् २ पाशांकुशवरमभयंकरकमलेदधतं ॥ स्वर्णा-  
 लंकृतसूत्रंकटिदेशेविमलम् २ करिगतिन्यासंचरणंता-  
 पत्रयशमनं ॥ जय० ॥ ४ ॥ अरुणकुसुमकृतमा-  
 लावक्षसिसंदधतंरक्तांबरकटिदेशेचित्राभरणयुतं ॥  
 मणिनासहितंचरणंनूपुरशब्दयुतं२घुर्घुरगावंविमलंझं-  
 झणिनासहितं ॥ जय० ॥ ५ ॥ माध्वीघूर्णितनयनं  
 प्रहसितगजवदनं२भक्तेभ्योवरदातुंसततंहर्षयुतं ॥  
 श्रीगणनायकनीराजनमेतत्पठते२सिद्धयतिसर्वाभी



ष्टनिर्विघ्नं लभते ॥ जयदेवज० ॥ ६ ॥ इति श्रीगणप  
तिनीराजनं ॥ ८ ॥

॥ अथ श्रीभगवतीनीराजनम् ॥

हेशंकरललने श्रीशंकरललने कुरुकुरुचेतः सदयं मयि मा  
तर्मिलिने ॥ जयदेवि जयदेवि ॥ ध्रुव० ॥ मध्येस्था  
पितदीपैरालीशतयूथैः ॥ निजकरतालध्वनिभिर्नादि  
तदिक्पटलैः ॥ क्रीडनगायनहासैर्नदितमृदुहृदया  
म् ॥ भावयचेतः सततं भुवनेशीं सदयाम् ॥ जयदेवि  
जयदेवि० ॥ १ ॥ भवभयसागरपारं कर्तुं हृदयदिता  
विदिता २ दन्यत्प्रापयितुं मुदिता ॥ सर्वाप्येवं लीला  
जनता जनतायै २ लकथं द्रवसे हृदये जगतो ममतायै ॥  
जयदेवि० २ नानामणिमयभूषामण्डितदोर्युगले २  
नूपुरमधुरध्वनिभिर्नादितदिक्पटले ॥ उद्यद्दिनक  
रभानुप्रतिभटरुचिरास्ये २ ध्यातुः किं किंदुर्लभमहमि  
हनहिजाने ॥ जयदे० ॥ ३ ॥ जगतः सृष्टिस्थितयो  
हतयः प्रतिकल्प्य २ लोचनमीलनलीलोन्मेषणतः कुरु  
षे ॥ कोवाप्रभवतितस्याः स्मृतये मनसाये २ महिता

वेदायत्रस्मृतिभिः सहचकिता ॥ जयदे० ॥ ४ ॥  
 पाशाभयवरहस्तारजनीपतिभाला ॥ रक्ताम्बरपरि  
 धानासृणिभूषितहस्ता ॥ रविशशिलोचनयुग्माहुत  
 वहनयनैनां २ मानसभावयजननींसततंभुवनैनां ॥  
 जयदेवि० ॥ ५ ॥ सर्वस्वत्विदमखिलंतदहंभुवना  
 धी २ शानीनान्यत्किंचिन्मधुमूदनसततं ॥ इतिया  
 सम्यक्शिशवेहरयेवटपत्रे २ प्रवदतिभुवनातस्यैनम  
 एतत्कुर्मः ॥ जयदेवि० ॥ ६ ॥ पद्मेरैतैर्मलैर्मनु  
 जोभुवनैशाः २ कर्पूरात्ययजतेपरयाकिलभक्त्या ॥  
 तस्यक्षोणीपतयोवशगाधनधान्यं २ पुत्राःपौत्रागेहे  
 विमलंपदमन्ते ॥ जयदेवि० ॥ ७ ॥ इतिश्रीमच्छं  
 कराचार्यविरचितंदेव्यानीराजनस्तोत्रंसमाप्तम् ॥

॥ अथ श्रीसत्यदेवनीराजनम् ॥

जयभगवन्विष्णो २ देवसत्यनारायणनस्कासुरजि  
 ष्णो ॥ महिमाब्रह्मादिभिरपिनालंवर्षशतै २ वक्तुंत  
 वकिमुजीवैरधुनाकालहतैः ॥ जयदेवजयदेव ॥ १ ॥  
 तदपिकुतूहलशक्तोनिजवाणीपापं २ हर्तुंस्तोष्येस

त्यंनिजनाशितशापं ॥ त्रिष्वपिकालगुणादिषुशक्ति  
 तयासत्यं २ सत्यंज्ञानमनंतंतंवंदेसत्यं ॥ जयदे० ॥  
 ॥२॥ काशीपत्तनवासिब्राह्मणकृतभक्षं२प्रणमेसत्यंदेवं  
 पापव्रजभक्षं ॥ विप्रमुखाच्छ्रुतमस्यव्रतमयगतशोकं॥  
 कृत्वाकाष्ठक्रेतालेभेहरिलोकम् ॥ जयदे० ॥३॥ उल्का  
 मुखनृपवरदंधनसुतदातारं २ कर्तारंजनतायानिजज  
 नपातारम् ॥ नौकास्थितवसुपुंजेमज्जतिसिंधुजले २  
 साधोवणिजोरक्षत्कृपयादभ्रचले ॥ जय० ॥ ४ ॥  
 भूयोभूयोप्यखिलंतत्कृतमपराधं २ सहमानंवंदेहंनि  
 जनष्टव्याधम् ॥ सुकृतिभिरधुनार्जीवैस्तवकमलाजा  
 नै २ विहितेव्रतअघपुंजोयातिकनजाने ॥ जय०  
 ॥ ५ ॥ सज्जनसंगमलब्धज्ञानोमयदीपः २ गच्छ  
 तिसत्यस्थानंयोगीश्रितनीपः ॥ यदिमांदीनदयालो  
 भवसागरमग्नं २ त्यक्ष्यतिकोप्यवितानोत्वदृतेकलिभ  
 ग्नं ॥ जय० ॥ ६ ॥ स्वर्णपिशंगामलनववासःपरिवी  
 तम् २ नीलांभोदशरीरंसर्वश्रुतिगीतम् ॥ निजमनु  
 जाशयनंदनमंदस्मितहासं २ लोचनसुंदरदर्शनकृत

विपदां नाशं ॥ जय० ॥ ७ ॥ स्मरतिजनोहोरात्रं  
 नसाभावयुजा २ यस्त्वांस्वप्नेदृष्टः कालो भोगभुजा ॥  
 जयकंसासुरभंजनलक्ष्मीप्राणपते २ यत्किञ्चिन्मम सु  
 कृतं तत्ते चास्तु कृते ॥ जय० ८ ॥ रामनारायणशिष्ये  
 मघदत्ते प्रीतः २ सत्यो देवस्त्वनयानिजभक्तक्रीतः ॥  
 हरिनीराजनमेतद्गृणते यो नूनम् २ भक्त्या यत्कृतम्  
 त्रनभवति तन्न्यूनाम् ॥ जय० ॥ ९ ॥ इति गौडकुलो  
 द्भवजो सीत्युपनामकमघदत्ताख्यद्विजविरचितं श्रीस  
 त्यदेवनीराजनं समाप्तम् ॥ १० ॥

॥ अथ प्राप्तः स्मरणीयं श्रीशिवनीराजनम् ॥  
 शिवहरशंकरसांबसदाशिवपाहिसदानिजमीशजन  
 म् ॥ त्रिभुवनतारकजनहितकारकदुरितनिवारककुर्व  
 वनम् ॥ १ ॥ श्रुतिजनरंजनभवभयभंजनदितिसुत  
 गंजनकीर्तिपते ॥ भूतिविभूषणपशुजनदूषणधर्मधु  
 रंधररागस्ते ॥ २ ॥ दुर्बलबंधोकरुणासिंधोनिर्मल  
 निश्चलभावपते ॥ श्रीगिरिराजसुतामुखमंडनखंडन  
 दुस्तरकालगते ॥ ३ ॥ हृदयकमलमलपटलविदारण

तारणसंसृतिवारिनिधे ॥ ज्ञानकलापरिपूर्णविलोचन  
 भवभयमोचनबोधनिधे ॥ ४ ॥ द्विजजनसेवितपाद  
 सरोरुहकलिमलमर्दनविश्वपते ॥ क्षितिजलपावक  
 वायुगगनतलरविशशिदेहिसुमूर्तियुते ॥ ५ ॥ कैला  
 सेललितैकविलासेकमलविकाशमुक्तशुचे ॥ भैरवरु  
 द्रगणैरनुरक्षितइंदुकलार्धविचित्ररुचे ॥ ६ ॥ कल्पद्रुम  
 लतिकाकुसुमांकितदिव्यस्त्रीजनयूथवृते ॥ द्विपदच  
 तुष्पदखगमृगराजितविजयोत्थासितवनललिते ॥ ७ ॥  
 विद्याधरगणकेलिकुतूहलमुनिजनमोहकरावसथे ॥  
 मधुकरकोकिलशुकमधुरध्वनिनादसुगंधिसरोजपथे  
 ॥ ८ ॥ आनंदामृतपूर्णविलोचनगौरीशार्द्धमखंडप  
 दम् ॥ कनकरचितमणिखचितमलौकिकसिंहासन  
 माश्रयसुखदम् ॥ ९ ॥ जातिलवंगमरीचिसितान्वित  
 विजयापानंकुरुसुहितम् ॥ षड्रसयुक्तचतुर्विधभोज  
 नमीश्वरभुंक्ष्वसुभावधृतम् ॥ १० ॥ तांबूलैलापूगी  
 फलसहितंमुखवासंकुरुचितम् ॥ मृगमदचंदनकुंकु  
 मकेसरकर्पूरागरुगंधयुतम् ॥ ११ ॥ आरार्तिकमति

ललितज्योतिर्वरदांगीकुरुसमदृष्ट्या ॥ देहिदयाकर  
चाञ्छितफलमिदमेवमपाकुरुतवसृष्ट्या ॥ १२ ॥ इति  
श्रीशंकरानन्दस्वामिविरचितं श्रीसांबशिवनीराजनं स  
माप्तम् ॥ ११ ॥ श्रीरस्तु ॥

॥ अथ प्रातःस्मरणीयं श्रीहरिस्तोत्रम् ॥

जयनारायणजयपुरुषोत्तमजयवामनकंसारे ॥ उद्ध  
रमामसुरेशविनाशनपतितोहंसंसारे ॥ घोरंहरममनर  
करिपोकेशवकल्मषभारम् ॥ मामनुकंपय दीनमनाथं  
कुरुभवसागरपारम् ॥ १ ॥ जयजयदेवदयासुरसूद  
नजयकेशवजयविष्णो ॥ जयलक्ष्मीमुखकमलमधु  
व्रतजयदशकंधरजिष्णो ॥ घोरं ० ॥ २ ॥ यद्यप्यहं  
सकलकलयामिहरेकिमपि न हि सत्यम् ॥ तदपि न मुं  
चति मामनुमाधवपुत्रकलत्रममत्वम् ॥ घोरं ० ॥ ३ ॥  
त्वं जननीजनकप्रभुरच्युतत्वमसिसुहृत्कुलमित्रम् त्वं  
शरणं शरणागतवत्सलत्वं भवजलाधिवहित्रम् ॥ घोरं ०  
॥ ४ ॥ पुनरपि जननं पुनरपि मरणं पुनरपि गर्भनिवा  
सम् ॥ सोढुमलं पुनरस्मिन्माधवमामुद्धर निजदास

म् ॥ घोरं० ॥ ५ ॥ जनकसुतापतिचरणपरायण  
 यतिशंकरइतिगीतम् ॥ तारयनाथपरमपुरुषोत्तमवार  
 यसंसृतिभीतिम् ॥ ॥ घोरं० ॥ ६ ॥ इतिश्रीमच्छंकर  
 राचार्यविरचितंप्रातःस्मरणीयंश्रीहरिस्तोत्रंसमाप्तम् ॥  
 ॥ १२ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥

॥ अथ भाषानिबद्धानि नीराजननानि ॥

॥ तत्रादौश्रीसत्यनारायणस्य ॥

जयराधेकृष्णा २ व्रजसुंदरिसुखदायकनिजजनतृदि  
 धिष्णा ॥ जयदेवजयदेव ॥ १ ॥ वृषव्योमासुरघाती  
 केशीहयहंता २ भक्तनकेवरदायकसुखसागरनंता ॥  
 जय० ॥ २ ॥ द्विजगोगिरिवरहेतोयज्ञादिककारी २  
 इंद्रकोमानविखंडनगोवर्द्धनधारी ॥ जय० ॥ ३ ॥ का  
 शीवासिदरिद्रिद्विजवरकुंत्याख्यो २ वृद्धद्विजकरभे  
 सामनवांच्छितसान्यो ॥ जय० ॥ ४ ॥ साधुनाममहा  
 जनपूजाव्रतधान्यो २ दंडीरूपधारप्रभुविनकोकुल  
 तान्यो ॥ जय० ॥ ५ ॥ काष्ठक्रेताहरिजनउल्कामुखभू

पा २ गोपसहितपूजाकरहोगयेसमरूपा ॥ जय० ॥

॥ ६ ॥ अद्भुतनटवरभेसावंशीकरसोव २ शृंगनाद

ब्रजवनमगोपीजनमोव ॥ जय० ॥ ७ ॥ शेषसुरेशनरे

शासनकादिकध्यावै २ महेशनारदब्रह्मापारनहीपावै

जय० ॥ ८ ॥ सत्यदेवनीराजनप्रेमसहितगासी २

त्रिविधंपापंत्यक्त्वामनवांछितपासी ॥ जय० ॥ ९ ॥

रामनारायणगुर्जरहरिकोनीराजन डीडवाणमैकीन्हो

श्रीपतिकेअर्पन् ॥ जय० ॥ १० ॥ इतिश्रीसत्यदेवनी

राजनंरामनारायणगुरुविरचितंसमाप्तम् ॥ १३ ॥

॥ अथपुनर्विष्णोर्नाराजनम् ॥

जयकेशवकर्त्ताश्रीकेशवकर्त्ता केशीकंसपछाडनसंत

नसुखकर्त्ता ॥ जयदेवजयदेव ॥ १ ॥ मस्तकमुकुटवि

राजेशोभाअतिभारी २ केशरषोलकुलीहप्रभुकुंअति

प्यारी ॥ जय० ॥ २ ॥ कानामकुंडलझिलकवंशीकर

धारी २ चोसरकंकणपहन्याईश्वरगिरिधारी ॥ जय०

॥ ३ ॥ दिव्यजडावजडेहमुक्ताफलमाला २ गोप्रति

पालखडेहैकछनीधरलाला ॥ जय० ॥ ४ ॥ भुजभुजरा



जविराजतहीराजडिया २ दधिकेकार्यखडेहोग्वालन  
 सुंअडिया ॥ जय० ॥ ५ ॥ सुंदरश्याममनोहरवस्ते  
 वैकुंठा २ सिद्धमुनीश्वरध्यावैहितकरउरकंठा ॥ जय०  
 ॥ ६ ॥ सनकादिकशिवशेषाचितचरणाधर्त्ता २ इन्द्रा  
 दिकसुरगावैनृतनारदकर्त्ता ॥ जय० ॥ ७ ॥ अजामे  
 लउधान्योगजगनिकात्यारी २ दीनानाथदयानिधि  
 तुमकीगतिन्यारी ॥ जय० ॥ ८ ॥ श्रीकेशवनीराजन  
 प्रेमसहितगावैरमधुरकंठसुन्दरपदवांछितफलपावै ॥  
 जयदेवजयदेव ॥ ९ ॥ इतिश्रीविष्णुनीराजनंसमा  
 प्तम् ॥ १४ ॥ ॥

॥ अथपुनर्विष्णोरैवनीराजनम् ॥

जगमैज्योतिअपारधुनवाजैमुरली २ नूपुरराजैअद्भुत  
 पुष्पकमलकरली ॥ जयदेवजयदेव ॥ १ ॥ गौरश्याम  
 अभिरामरंगमहलरसिया २ वंसीवटयमुनातटकुंजकुं  
 जवसिया ॥ जय० ॥ २ ॥ रसानंदरसविलासजुगवर  
 सकंदा २ नीलपीतपटपहरेवृंदावनचंदा ॥ जय० ॥ ३ ॥  
 कर्त्ताकेकर्त्ताभर्त्ताकेभर्त्ता २ शरणागतउद्धर्त्ताहर्त्ताके

हर्ता ॥ जय० ॥ ४ ॥ इच्छाखेलअनूपव्रजजनहितकारी २  
 वांकेछलविहारीतुमपैबलिहारी ॥ जय० ॥ ५ ॥ त्रिगु  
 णेशालोकेशावागीशागावै २ सबदेवनकेदेवासनका  
 दिकध्यावै ॥ जय० ॥ ६ ॥ राधावल्लभलालगिरिधरगो  
 विंदा २ सबऋषिजनवरदायकअनुचरआनंदा ॥ ज  
 य० ॥ ७ ॥ जयजयविजयगोपालराधेरूपरसाल २  
 आरतिवारणसखियाखडीनाचदेताल ॥ जय० ॥ ८ ॥  
 इनकेशवकीआरतिप्रेमसहितगावै २ मधुरकंठसुंदर  
 पदवांच्छितफलपावै ॥ जय० ॥ ९ ॥ इतिश्रीकृष्णनी  
 राजनंसमाप्तम् ॥ १५ ॥

॥ ब्रह्मादीनां त्रिगुणात्मकं नीराजनम् ॥  
 जयशिवउंकाराभजपार्वतिपारा २ ब्रह्माविष्णुमहादे  
 वअर्धांगीदारा ॥ हरहरहरमहादेव ॥ १ ॥ एकाननच  
 तुराननपंचाननराजै २ हंसासनगरुडासनवृषभास  
 नछाजै ॥ हरहरहरमहादेव ॥ २ ॥ दोयभुजच्यारचत्रभु  
 जदशभुजतेसोहरशिवजीकोरूपनिरखतां त्रिभुवनम  
 नमोह ॥ हरहर० ॥ ३ ॥ अकमालावनमालारुंडमाला

धारी २ त्रिपुरारी २ मुरारी २ करकमलाधारी ॥ हरहर० ॥ ४ ॥  
 श्वेतांबरपीतांबरवाघांबरअंगे २ सनकादिकभूतादिक  
 देवादिकसंगे ॥ हरहर० ॥ ५ ॥ लक्ष्मीवरगायत्रीपा  
 र्वतीसंगा २ अर्द्धगाशिवउमयाशिवगवरीगंगा ॥ हर  
 हर० ॥ ६ ॥ कर्मध्यैकमंडलचक्रात्रिशूलधर्ता २  
 सुखकर्त्ता दुखहर्त्ता सुखमैछायहरता ॥ हरहर० ॥ ७ ॥  
 काशीमएकनंदोब्रह्मचारीशिवनंदोब्रह्मचारी २ नित  
 उठभोगलगावनितउठदरसनपावदिनदिनइदकारी ॥  
 हरहर० ॥ ८ ॥ त्रिगुणास्वामिकिआरतिजोकोइगावै  
 २ भणतसिवानंदकाशीवांछितफलपावै ॥ हरहर०  
 ॥ ९ ॥ इतित्रिगुणात्मकं नीराजनं समाप्तम् ॥ १६ ॥

## ॥ अथदुर्गानीराजनम् ॥

त्रिगुणेशालोकेशावागीशागावै २ सबदेवनकेदेवाइंद्रा  
 दिकध्यावै ॥ हरहर० ॥ ध्रु० ॥ जैअंबेगवरी २ अंबा  
 जीकूनिसादिनध्यावतहरब्रह्माशिमरी ॥ जैअंबेगवरी ॥  
 ॥ १ ॥ भांगसिंदूरविराजेटीकोमृगमदको २ उज्जल  
 सेदोबुनैनाचंद्रवदननीको ॥ जैअंबेगवरी ॥ २ ॥ का

नामकुंडलशोभितनासागजमोती २ कोटिकचंद्रदि  
 वाकरतिनकेसमजोती ॥ जैअंबेगवरी ॥ ३ ॥  
 कनकसमानकलेवररक्तांबरराजै २ रक्तपुष्पनीमाला  
 कंठनविचछाजै ॥ जैअंबेगवरी ॥ ४ ॥ चारभुजाअति  
 शोभितखड्गवरप्रधारी २ मनवांछितफलपावसेवतन  
 रनारी ॥ जैअंबेगवरी ॥ ५ ॥ केसरीवाहनराजैझांकी  
 हृदसोती २ मालकेतमैराजैकोटिस्तनजोती ॥ जैअंबेग  
 वरी ॥ ६ ॥ शुंभनिशुंभविडारेमहिषासुरघाती २ धू  
 म्रविलोचननाशिनिनिसादिनमदमाती ॥ जैअंबेगवरी  
 ॥ ७ ॥ बाजुबंधमणियनकोकरकंकणराजै २ मोती  
 यनमालकंठविचसोभाअतिराजै ॥ जैअंबेगवरी ॥ ८ ॥  
 चोसटयोगनिगावत निरतकरतभैरू २ वाजतभेरि  
 मृदंगाओरवाजैडमरू ॥ जैअंबेगवरी ॥ ९ ॥ ब्रह्मादि  
 कसनकादिक इंद्रादिकध्यावै २ सुरनरमुनिजनध्या  
 वतअमरपदविपावै ॥ जैअंबेगवरी ॥ १० ॥ अंबाजि  
 किआरतिजोकोइगावै २ भणतशिवानंदकाशीसुख  
 संपतपावै ॥ जैअंबेगवरी ॥ ११ ॥ इतिदुर्गानीराजनं  
 समाप्तम् ॥ १७ ॥ श्रीदुर्गार्पणमस्तु ॥

लिपिसादकरोदिदं द्विजो निजवामेतरपाणिजाक्षरैः ॥  
अधिडीडपुरंवसन्सतांस्पृहणीयः किलनंदलालकः ॥

॥ अथ गणपतिकी आरती प्रारंभः ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ गणपतिकी सेवामंगलमेवासेयां  
साविकविघ्नहर २ तीनलोकतेतीसदेवताद्वारे उवाच  
रजकरः ॥ टेरे ॥ ऋद्धसिद्धदक्षिणवामै उवीउरआनं  
दसैचवरकर ॥ धूपदीपऔरलीये आरती भक्तपड्या  
जयकारकर ॥ १ ॥ ग० ॥ गुडकेमोदकभोगलगतहै  
मूखकवाहनचढ्यासर सौम्यरूपसेयागनपतकोविघ्न  
भाजज्यापरपर ॥ ग० ॥ २ ॥ भादुमासओरशुक्लच  
तुर्थीदिनदोपारा पूरपर ॥ लियेजन्मगणपतीप्रभुजी  
दुर्गामनआनंदभर ॥ ग० ॥ ३ ॥ अद्भुतवाजाव  
ज्याइंद्रकादेवबधूजहांगानकर ॥ श्रीशंकरकेआनंद  
उपज्योनामसुन्यासबविघ्नहर ॥ ग० ॥ ४ ॥ आन  
विधाताबैठीआसनइंद्रअप्सरानीरतकर ॥ देखवेदब्र  
ह्माजीजाकोविघ्नविनाशकनामधर ॥ ग० ॥ ५ ॥  
येकदंतगजवदनविनायकत्रिनयनरूपअनुपधर ॥ ५

गथंभासाउदरपुष्टहृदेषचंद्रमाहास्यकर॥ ग० ॥ ६ ॥  
 देसरापश्रीचंद्रदेवकुंकलाहीनतत्कालकर ॥ चौदा  
 लोकमफीरगनपतिरणतभवरमराजकर ॥ ग० ॥ ७ ॥  
 उठप्रभातजबकरध्यानकोईजाकेकारजसरबसर ॥ पू  
 जाकालेगावआरतीजाकेशिरयशछत्रफिर ॥ ग० ॥ ८ ॥  
 गणपतिकीपूजापैलाकरणीकामसवीनिर्विघ्नसर ॥  
 श्रीपरतापगन्नपतिजीकीहातजोडकरस्तुतिकर॥ ग०  
 ॥ ९ ॥ इतिश्रीगणपतिकीआरतीसं० ॥

## ॥ आरती लक्ष्मणबालाजीकी ॥

जयबोलोसाधोलिछमणबालाकी ॥ बालाकीवोनंद  
 लालाकी ॥ टेरे ॥ दक्षणेदेससवालखपर्वत ॥ जगम  
 गजोतदीवालाकी ॥ ज० ॥ १ ॥ त्रपतीमसीतारा  
 मजीवीराज ॥ चोकीवोहणुमतवालाकी ॥ २ ॥  
 शेषाचलपरआपविराजो ॥ चोकीवोहणुमतवालाकी  
 ॥ ३ ॥ इजवीजदोयपोलीयाविराज ॥ गरीधुसन  
 गाराकी ॥ ४ ॥ बालाजीकरथपरकनकसींघासण ॥  
 कीलंगीवणीवोहिरालालाकी ॥ ५ ॥ बृहस्पतवारज

रीकोजामु ॥ उपवरमोजदुसालाकी ॥ ६ ॥ शुकर  
 वारदुधनकोन्हावण ॥ मोजवनीवोमोहनमालाकी  
 ॥ ७ ॥ देसदेसकाजातरीआव ॥ मारपडवोमृगछा  
 लाकी ॥ ८ ॥ आसानंदगरीवतुमारोपतराषोवो ॥  
 कंठीमालाकी ॥ ९ ॥ जयबोलोसाधोली छमणवाला  
 की बालाकीवोनंदलालाकी हरहरदसरथसुतनंदला  
 लाकी हरहरपरदेसारपवालाकीहरहरघाटवाटरपवाला  
 की ॥ ज० ॥ श्रीलक्ष्मणवालाकी आरतीसमाप्त ॥  
 ॥ अथ सत्यनारायणकी आरतीप्रारंभ ॥  
 जयलक्ष्मीरमणा २ सतनारायणस्वामी जयपातकह  
 रणा ॥ जय० ॥ १ ॥ स्तनजडितसिंहासनअद्भुत  
 छबिराजै ॥ नारदकरतनिराजनघंटाध्वनिवाजै ॥  
 ॥ जय० ॥ २ ॥ प्रगटभयेकलिकारणद्विजकूंदरसदि  
 या ॥ बूढोब्राह्मणत्रणिकैकंचनमहलकिया ॥ ज०  
 ॥ ३ ॥ दुर्बलभीलकठारोजिनपरक्रपाकरी ॥ चंद्रचू  
 डयेकराजाजिनकीविपतिहरी ॥ ज० ॥ ४ ॥  
 वैश्यमनोरथपायोश्रद्धातजदीनी ॥ सोफलभोग्योप्र

भुजीफेरस्तुतिकीनी ॥ ज० ॥ ५ ॥ भावभक्तिके  
 कारणछिनछिनरूपधन्या ॥ श्रद्धाधारणकीनीजिन  
 काकाजसन्या ॥ ज० ॥ ६ ॥ ग्वालबालसेगराजा  
 बनमैभक्तिकरी ॥ मनवांछितफलदीनुंदीनदयालह  
 री ॥ जय० ॥ ७ ॥ चढतप्रसादसवायोकदलीफल  
 मेवा ॥ धूपदीपतुलसीसैराजीसतदेवा ॥ ज० ॥ ८ ॥  
 श्रीसतनारायणकीजोआरतिगावै ॥ भणतमनुसुष  
 संपदमनवांछितपावै ॥ ज० ॥ ९ ॥ इतिश्रीसत्य  
 नारायणकी आरतीसमाप्त ॥

॥ अथ जयलक्ष्मीरमणकी आरतीप्रारंभः ॥  
 जयलक्ष्मीरमणाश्रीलक्ष्मीरमणासरणागतजनसरणा  
 गोवर्धनधरणा ॥ टेर ॥ जयजयजमुनातटनीकटीत  
 प्रगटितपटुबेसा ॥ अटपटगोपीकुचतटपटहरनटभेसा  
 ॥ ज० ॥ १ ॥ जयमुरलीखतरलीकृतगोपीलीले ॥  
 तवभक्तिमेंभवतुव्रजललनाइसे ॥ जय० ॥ २ ॥  
 जयजयभगवन्मधवन्कंसारे ॥ पतितं पतितंकृपया  
 तारेसंसारे ॥ जय० ॥ ३ ॥ जयजयगोगोपीप्रतिपा



लकबंधो ॥ कीमात्रातुमसक्तकृष्णकृपासिंधो ॥ ज०  
 ॥ ४ ॥ जयजयभक्तजनप्रतिपालकचिरंजीवोजिष्णो  
 ॥ मामुद्धरदीनोद्धरधरणीधरविष्णो ॥ ज० ॥ ५ ॥ जय  
 जयकृष्णस्वामीनिजपदरसगामे ॥ कुरुकरुणांकुरु  
 करुणांदाससखारामे ॥ जय० ॥ ६ ॥ जयलक्ष्मीर  
 मणाकीआरतीसंपूर्ण ॥

## ॥ आरतीश्रीकृष्णजीकी ॥

आरतीजुगलकिसोरहरकिकीजेराधेतनमनधननव  
 छावरकीजे ॥ टेर ॥ रविशशिकोटवदनकीशोभा ॥  
 ताहीनीरखमेरोमनभयोलोभा ॥ आ० ॥ १ ॥ गौर  
 स्याममुखनीरखतरीजे ॥ प्रभुकोसरुपननभरलीजे ॥  
 आरति० ॥ २ ॥ कंचनथालकपुरकीवाती ॥ हरआ  
 येनिर्मलभयीछाती ॥ आ० ॥ ३ ॥ फूलनकीसेज  
 फूलनगलमाला ॥ रतनसिंघासणवैठेनंदलाला ॥  
 आ० ॥ ४ ॥ मोरमुकटकरमुरलीसोहै ॥ नटवरभे  
 सदेष्टमनमोहै ॥ आ० ॥ ५ ॥ ओब्बानीलपीतपट  
 साडी ॥ कुंजविहारीनगिरवरधारी ॥ आ० ॥ ६ ॥

श्रीपुरुषोत्तमगिरिवरधारी ॥ आरतिकरतसकलव्रज  
नारी ॥ आ० ॥ ७ ॥ नंदवदनवृषभानकीसोरी ॥  
परमानंदस्वामीअवचलजोरी ॥ आरतीजुगलकी  
सोर० ॥ ८ ॥ आरतीश्रीकृष्णजीकीसं० ॥

## ॥ आरती जानकीनाथकी ॥

जयजानकीनाथाजयश्रीरघुनाथा ॥ दोउकरजोड्या  
विनवुप्रभुमेरीसुणादाता ॥ टेर ॥ तुमरघुनाथहमारे  
प्राणपितामाता ॥ तुमहोसजनसंगातिभक्तिमुक्ति  
दाता ॥ जयदे० ॥ १ ॥ चोरासीप्रभुफंदछुटा  
वोमेदोयमत्रासा ॥ निसदिनप्रभुमोयराषोअपणसं  
गसाथा ॥ जय० ॥ २ ॥ सीतारामलक्ष्मणभ  
रतशत्रुघनसंगच्यारुभया ॥ जगमगज्योतिविराज  
तसोभाअतिलहिया ॥ जय० ॥ ३ ॥ हनुम  
तनादबजावतनेवरठीमकया ॥ सुव्रणथालआरती  
करतकौशल्यामया ॥ ज० ॥ ४ ॥ क्किटमुकटकर  
धनुषबिराजतसोभ्याअतिभारी ॥ मनीरामदरसन  
कीपलपलबलिहारी ॥ जय० ॥ ५ ॥ जानकीना  
था० ॥ इतिजानकीनाथकीआरतीसंपूर्ण ॥ ॥

## ॥ आरती रामचंद्रजीकी ॥

आरतीकरतजनककरजोड्यावडेभागरामजी आये  
घरमेरे ॥ टेरे ॥ सीतस्वयंवरधनुपचढायो ॥ सब  
भूपनकोगरबनिवायो ॥ आ० ॥ १ ॥ तोडेधनुप  
कीयेदोयकुटका ॥ राघोकुलहरप रावणहोइसंका  
॥ आ० ॥ २ ॥ आइवोसीतासंगसहेली ॥ हरप  
नीरषबरमालामेली ॥ आ० ॥ ३ ॥ गजमोतियन  
कोचोकपुरायो ॥ राजाजनकधरमंगलगायो ॥  
आ० ॥ ४ ॥ कंचनथालकपुरकीवाती ॥ सुरनर  
मुनिहरकआयेवोवराती ॥ आ० ॥ ५ ॥ राजाद  
शरथऊरेजनकवैदेही ॥ भरतशत्रुघनपरमसनेही ॥  
आ० ॥ ६ ॥ धनधनरामलक्ष्मणदोउभाई ॥ धनदश  
रथकौसल्यामाई ॥ आ० ॥ ७ ॥ मिथलापुरमवंटतव  
धाइ ॥ दासमुरारहरकी आरतीगाइ ॥ आ० ॥ ८ ॥  
॥ आरतीकरत० ॥ इतिरामचंद्रकीआरतीसंपूर्ण ॥

॥ अथ शिवजीकी आरती प्रारंभ ॥

शीशगंगअर्धगपार्वतीसदाविराजतकैलासी ॥ नंदी

भृंगीनीरितकरतहैयुनभक्तनशिवकीदासी ॥ १ ॥

सीतलमंदसुगंधपवनहझाबटेहअभनासी ॥ करत

गानगंधर्वसप्तसुररागरागनीअतिगासी ॥ २ ॥

यक्षराक्षसभैरवझाडोलतबोलतहबनकेवासी ॥ कोयल

सदसुनावतसुंदरभवरकरतहैगुंजासी ॥ ३ ॥ कल्प

द्रुमअरुपारिजाततरुलागरहैहैलक्षासी ॥ कामधेनुको

टिकझाडोलतकरतफीरतहैभिक्षासी ॥ ४ ॥ सूर्य

कांतसमपार्वतिसोभितचंद्रकांतभवमीबासी ॥ छउतो

रुतनीतफलतरहतहैपुष्पपडतहैवर्षासी ॥ ५ ॥ दे

वमुनीयनकीभीडपडतहैनीगमरहतजोनीत्यगासी

॥ ब्रह्माविष्णुज्याकोध्यानधरतहैकल्लुशिवहमकुफर

मासी ॥ ६ ॥ रिद्धसिद्धकेदाताशंकरसदाआनंदनि

तसुखरासी ॥ जिनकोसुमरनसेवाकरताकुटजायजम

कीफासी ॥ ७ ॥ त्रिशूलधरजीकोध्याननिरंतरमन

लगायकरजोगासी ॥ दूरकरोविपताशिवतनकीज

न्मजन्मशिवपदपासी ॥ ८ ॥ कैलासीकासीकेवासीअ

भनासीमोरीसुधलीज्यो ॥ सेवगजाननसदाचरननको

अपनोजानदरसदीज्यो ॥ ९ ॥ तुमतोप्रभुजीसदा  
 सयानेओगुनमेरासभदकियो ॥ सबअपराधक्षमाक  
 रक्षांकरकिंकरकीविनतीसुणियो ॥ १० ॥

इतिशिवआरतीसंपूर्ण ॥

॥ आरतीशिवजीकीप्रारंभ ॥

जैशिवओंकाराहरशिवओंकारा ॥ ब्रह्माविष्णुसदा  
 शिवअरधंगिधारा ॥ टेरा ॥ एकाननचतुराननपंचानन  
 राजै ॥ हंसासनगरुडासनवृषवाहनसाजै ॥ १ ॥  
 दोयभुजच्यारचतुरभुजदसभुजतेसोहै ॥ तीनुरूप  
 निरषतात्रिभुवनजनमोहै ॥ २ ॥ अक्षमालावनमा  
 लारुंडमालाधारी ॥ चंदनमृगमदचंदाभालेशुभका  
 री ॥ ३ ॥ स्वेतांबरपीतांबरवागंबरअंगे ॥ सनका  
 दिकप्रभुतादिकभूतादिकसंगे ॥ ४ ॥ करमध्येकमंडलु  
 चक्रत्रिशूलधरता ॥ जुगकरताजुगभर्ताजुगसंहारक  
 र्ता ॥ ५ ॥ ब्रह्माविष्णुसदाशिवजाणतअविवेका ॥ प्रणअ  
 क्षरनुमध्येएतीनुएका ॥ ६ ॥ त्रिगुणस्वामीकीआर

तीजोकोईगावै ॥ भणतशिवानंदस्वामीमनवांछित  
पावै ॥ ७ ॥ इतित्रिगुणाआरती संपूर्ण

## ॥ आरती शिवजीकी प्रारंभ ॥

जैजैहेशिवपरंपराक्रमओंकारेस्वरतुमशरणं ॥ नमा  
मिशंकरभवानिशंकरहरिहरशंकरतुमशरणं ॥ ढेर ॥  
दशभुजमंडनपंचवदनशिवत्रिनयनशोभितशिवसु  
खदा ॥ जटाजूटशिरमुकुटबिराजश्रवणेकुंडलअतिरम  
णा ॥ जै० ॥ १ ॥ ललाटचिमकतरजनीनायक  
पंनगभूषणगौरीसा ॥ त्रिसूलअंकुसगणपतसोभा  
डीमडीमबाजतधुनिमधुरा ॥ २ ॥ भसमीलेपनस  
र्वांगेशिवनंदीवाहनअतिरमणा ॥ वामांगेगिरिजा  
हविराजघंटानादिकधुनिमधुरा ॥ ३ ॥ गजचर्मा  
बरवाघंबरहरकपालमालागंगेसा ॥ पंचवदनपरगण  
पतिसोभापृष्ठेगिरिपतिज्वालेसा ॥ ४ ॥ सिद्धेश्वर  
ममलेश्वरशंकरकपिलेश्वरश्रीकोटेसा ॥ कपिलासंग  
मनिर्मलजलहकोटिरिथभयहरणा ॥ ५ ॥ नरमदा  
कावेरीजलसंगममध्येसोभितगिरिसिखरा ॥ इंद्रादिक

पतिसुरपतिसेवितरंभानादिकधुनीमधुरा ॥ ६ ॥  
 मंगलमूर्तिप्रणवाष्टकशिवअद्भुतसोभामृडभवनं ॥ स  
 नकादिकमुनिकरतेस्तोत्रंमनवांछितशिवभयहरणं ॥  
 ॥ ७ ॥ प्रणवाष्टकपदध्यायजनेस्वररचयतिविमलं  
 पदवाष्टं ॥ तुमरीकृपात्रिगुणात्माशिवजीपतितपा  
 वनभयहरणं ॥ ८ ॥ इतिशिवआरती संपूर्ण ॥

## ॥ आरती शिवजीकी ॥

दर्शनदेवोसदाशिवशंभुभक्तवतसलतैडानावहवे ॥  
 मस्तकतैडचंदविराजशीसजटामध्येगंगाहवे ॥ टेर ॥  
 नाथहाथलीयेडमरुंजजावभुजगहृदपरसाजहवे ॥  
 तीनकोटिसवालक्षहजारेगणतैडेसनमुखनाचहवे ॥  
 ॥ १ ॥ हाथत्रिशूललीयांभोलेसंभूवामांगगवरी  
 साजहवे ॥ भस्मरमावअंगतूसादेगलरुंडमालाराज  
 हवे ॥ २ ॥ कोउत्रिवंकेकोऊअंगलंवैकाहुकेवसनउघा  
 रेहवे ॥ ३ ॥ काहुकेकेसवनेअतिपीरेरक्तरंगकोउ  
 कालेहवे ॥ ३ ॥ आसनतैडेकैलासविराजतलगह  
 रीगंगागाजहवे ॥ भांगधतुरोससदारहरक्तातलवाधं

बरसाजहवे ॥ ४ ॥ नारदइंद्रदेवसबदानाआरतीतै  
 डीगावहवे ॥ असीहिमानुषगावसुनजेमनवांछितफ  
 लपावहवे ॥ ५ ॥ रूपकहकरजोरसदाशिवमेरेमनो  
 रथकीजेहवे ॥ गुरुचरणामप्रीतरहोनितबचनसफल  
 मोयदीजेहवे ॥ ६ ॥ दर्शनदेवोस०॥ शिवार्तिसं०॥

## ॥ आरतीश्रीदुर्गाकी ॥

जैअंबेगौरीमयाजैमंगलमूर्तिमयाजैआनंदकरणी ॥  
 तुमकुनिसदिनव्यावतहरब्रह्माशिवरी ॥ टेरे ॥ भाग  
 सिंदूरविराजतटीकोमृगमदको० ॥ उज्जलसेदोउनैना  
 चंदवदननीको ॥ १ ॥ कनकसमानकलेवररक्तांबररा  
 ज॥ रक्तपुष्पगलमालाकंठनपरसाज॥ २ ॥ केहरीबाहन  
 राजतषडगषप्रधारी ॥ सुरनरमुनिजनसेवततिनकेदु  
 षहारी ॥ ३ ॥ काननकुंडलसोभितनासाग्रेमोती ॥  
 कोटिकचंद्रदिवाकरराजतसमजोती ॥ ४ ॥ शुंभनि  
 शुंभबिडारेमाहिषासुरघाती ॥ धूम्रबिलोचननैनानिस  
 दिनमदमाती ॥ ५ ॥ चोसटजोगनीगावतनृत्यकरैतभै  
 रु ॥ वाजत तालमृदंगाडेरवाजतडैरु॥ ६ ॥ भुजाच्यार



अतिसोभितषडगषप्रधारी ॥ मनवांछितफलपावत  
 सेवतनरनारी ॥ ७ ॥ कंचनथालविराजतअग्रकपू  
 स्वाती ॥ श्रीमालकेतमराजतकोटरतनजोती ॥ ८ ॥  
 याअंबेकीआरतीजोकोइनरगाव ॥ भणतसेवानंद  
 स्वामीसुखसंपतपाव ॥ जय० ॥ ९ ॥

## ॥ आरतीदुर्गाजीकी ॥

मंगलकीसेवासुणमेरीदेवाहाथजोडतेरद्वारखडे ॥  
 पानसुपारीधजापोपरालेज्वालातेरीभेटधर ॥ सुणज  
 गदंबेनीगरवीलंबेसंतनकाभंडारभर ॥ संतनप्रतपा  
 लीसदाकुस्यालीजैकालीकल्याणकर ॥ टेरे ॥ बुद्ध  
 विधातातुजगमातामेराकारजसिद्धकरो ॥ चरणकमल  
 कालीयाआसरासरणतुमारीआनपडे ॥ जदजद  
 भीडपडभगतनमतदतदआनसहायकर ॥ १ ॥  
 बीरवारतैसबजुगमोयोतरणीरूपअनूपधर ॥ माताहो  
 करपुत्रखिलावकहांभारज्याभोगकर ॥ तेरीमहमाक  
 बलगवरणुबठीकोटसहायकर ॥ २ ॥ शुकरसुखदाइ  
 सदासहाइसंतखडेजैजैकारकर ॥ ब्रह्माविष्णुमहेशस

हस्रफणलीयाभेटतेरद्वारखडे ॥ अटलसिंघासनबैठीमा  
 तासीरसोनकाछत्रफिर ॥ ३ ॥ वारशानिसरकुंकुमवर  
 णोजवलंकडपरहुकमकर ॥ षडगषप्रतीरशूलहाथ  
 लियांरक्तबीजकुभस्मकर ॥ शुंभनिशुंभपछाडेमाता  
 महिषासुरकुपकडदल ॥ ४ ॥ आदितवारआदको  
 बारजनअपनकोकष्टहर ॥ कोपहोयकरदानामारेचंड  
 मुंडसबचुरकर ॥ जतुमदेषोदयारुपहोयपलमेंसंकटदू  
 रकर ॥ ५ ॥ सोमशुभावधन्यो मेरीमाताजनकी  
 अरजकबूलकर ॥ सींघपीठपरचडीभवानीअटलभव  
 नमराजकर ॥ दर्शनपावमंगलगावसिद्धसाधतेरभेट  
 धरसंत ॥ ६ ॥ ब्रह्माबेदपढतेरद्वारसिवसंकरजीध्यान  
 धर ॥ इंद्रकृष्णतेरीकरआरतीचवरकुबेरडुलायरहे ॥ जय  
 जननीजयमातभवानीअटलभवनमराजकर ॥ ७ ॥  
 संतनप्रतपाली ॥ आरतीदुर्गाकीसंपूर्ण ॥

॥ आरतीदुर्गाकीप्रारंभ ॥

देवापरबतमवसनितेरापारनपाया ॥ टेरे ॥ पानसुपा  
 पारीधजानरेल ॥ लेतेरीभेटचढाया ॥ १ ॥ सुवसुवा

चोलातेर ॥ अंगविराजकेसरतिलकलगाया ॥ २ ॥  
 ब्रह्माब्रह्मावेदपढतेरद्वारदेवा ॥ शंकरध्यानलगाया ॥  
 ॥ ३ ॥ नंगनंगपरातेरअकवरआया ॥ सोनदाछत्र  
 चढाया ॥ ४ ॥ उचउचपरवतवण्योदिवालो ॥ नी  
 चसहस्रसाया ॥ ५ ॥ सतजुगद्रापुरत्रेतामध्ये ॥  
 कलियुगराजसवाया ॥ ६ ॥ धूपदीपनैवेद्यआरती ॥  
 मोहनभोगलगाया ॥ ७ ॥ धानुभगतमयातेरागुण  
 गाव ॥ मनबांछितफलपाया ॥ ८ ॥ आरतीसं० ॥

## ॥ आरतीदुर्गाकीप्रारंभ ॥

दुर्गाहिसरणथारीलाजतुमरापोगेह्वारी ॥ ढेर ॥ केशवसे  
 ससयनसुत्यादैत्यदोउमधुकैटभभूता ॥ ब्रह्माभयमा  
 न्योतातै ॥ निद्रासुमरीजवमातै ॥ निद्रातजकेसवउठेदे  
 खेदैत्यकुलीन ॥ मधुकैटभकुंमान्योजवहीकन्योदैत्यकु  
 लहीन ॥ शक्तीअसीजनहितकारी ॥ १ ॥ दैत्यजव  
 महिषासुरजाया ॥ देवताहारमानआया ॥ भाजकर  
 धातालेसाग ॥ गयाजहांविष्णुईशआग ॥ कोपभये  
 हरिब्रह्मशिव ॥ सबदेवनकोसाथ ॥ देवीअंगभयोज

वमुषत ॥ सीरपदधडमुषहाथ ॥ मिल्योजबतेजपुंज  
 भारी ॥ २ ॥ चलीजवमहिषासुरसेना ॥ कहांहदेवी  
 कहदेना ॥ देवीदेषदैत्यसारा ॥ चलेज्युंढट्टट्टतारा ॥  
 भयोजुधतारामयीजगदंबाकपास ॥ सेनासाबीकपो  
 डगइजव ॥ तजीमहिषासुरआस ॥ जुद्धमप्राणतजे  
 लारी ॥ ३ ॥ जुद्धमधुम्रनयनमान्यो कदेवीजब  
 हुंउच्यान्यो ॥ चलेजबचंडमुंडसाग ॥ षडिथीदेवी  
 जहांआग ॥ केसपकडकरचंडकोसीरछेद्योततका  
 ल ॥ मुंडदैत्यकुंमान्योजबही ॥ लयीहाथनभाल ॥  
 कालकाक्रोधकियोभारी ॥ ४ ॥ सेनापेतपडीदेषी ॥  
 उठ्योजबरक्तबीजसेषी ॥ मातृकासप्तरूपकीन्यो ॥  
 दैत्यकुंघायलकरदीन्यो ॥ रुधिरपड्योजबभूमिपर ॥  
 उपजेदैत्यअनेक ॥ च्यामुंडाजबमुषविस्तान्यो ॥ रा  
 षलइहटेक ॥ रक्तकोपानकीयोभारी ॥ ५ ॥ लोक  
 मभनिशुंभभये ॥ सखदोउहाथामायलीये ॥ प्रजा  
 कूंपीडादेणलगे ॥ लोकसबआगहोयभगे ॥  
 करजगतप्रतपालना ॥ नंदघराओताराविंध्याचलम

वासकीयोह ॥ शुंभनिशुंभविडार ॥ कथाहोसुणीअ  
 जवथारी ॥ ६ ॥ जुद्धमसेसरहीकाया ॥ क्रोधकरदे  
 वीकआया ॥ भयेसवैदैत्यदग्धतसै ॥ पतंगाअग्नि  
 मायजसै ॥ दैत्यभयंकरमारमर ॥ कियोलोकमचैन ॥  
 सौम्यरूपकरलीन्योदेवी ॥ देण्यासुपजननैन ॥ आ  
 पदादुरभईसारी ॥ ७ ॥ भलाजवदैत्यहतेसारे ॥ लो  
 कममंगलविस्तारे ॥ हरपेदेवपुरुषनारी ॥ वाजाभो  
 तबजभारी ॥ नृत्यकरसवअपसरा ॥ गानकरगंधर्व ॥  
 दुष्टदलीनीसुषकरणीमाता ॥ ऋषिकहतहैसर्व ॥  
 तुहीमानवसुषहितकारी ॥ ८ ॥ देवीचरित्रसुणगाव ॥  
 लोकमसुषसंपतपावे ॥ दूरहोदुखदालद्रभारा ॥ प्रजा  
 मेसुखपावेसारा ॥ अष्टपदीदेवीतणी ॥ सुनकरहोआ  
 नंद ॥ मनवांच्छितफलनरपाव ॥ कहताजगोविंद ॥  
 कामनासिद्धहोयसारी ॥ ९ ॥ दुर्गाहोसरणथा ॥  
 दुर्गार्तिक्यंसंपूर्ण ॥

॥ अथलक्ष्मीजीकीआरतीप्रारंभ ॥  
 जयलक्ष्मीमाता २ तुमकूनिशदिनसेवतहरविष्णुधा

ता ॥ टेरे ॥ ब्रह्माणीरुद्राणीकमलातूहीजगमाता ॥  
 सूर्यचंद्रमाध्यावतनारदऋषिगाता ॥ १ ॥ दुर्गारूप  
 निरंजनीसुखसंपतदाता ॥ जोकोइतुमकूंध्यावतरि  
 धसिधधनपाता ॥ २ ॥ तूहिपातालबसंतितूहिहैसु  
 भदाता ॥ कर्मप्रभावप्रकासकजगनिधिसैत्राता ॥  
 ३ ॥ जीसघरथारोवासोजाहिमगुणआता ॥ करण  
 सकसोइकरलेमननहिंधडकाता ॥ ४ ॥ तुजविन  
 यज्ञनहोववस्त्रनहोयराता ॥ खानपानकीबिभवतु  
 मविनकुणदाता ॥ ५ ॥ शुभगुणसुंदरयुक्ताक्षीरनिधि  
 जाता ॥ रतनचतुर्दशतोकुकोइबीनहिपाता ॥ ६ ॥  
 याआरतीलक्ष्मीकीजकोइनरगाता ॥ उरपंकजअति  
 उमगपापउत्तरजाता ॥ ७ ॥ स्थिरचरजगतबतावक  
 रमप्रेरल्याता ॥ रामप्रतापमयाकीशुभदृष्टिचाता ॥ ८ ॥  
 इतिलक्ष्मीकीआरतीसंपूर्ण ॥

॥ पार्वतीदेवीकीआरतीप्रारंभ ॥

जयपार्वतीमाता ॥ २ ॥ ब्रह्मसनातनपदवीशुभकलकी  
 दाता ॥ टेरे ॥ अलिकुलपद्मनिवासिनीनिजसेवक  
 त्राता ॥ जगजीवनजगदंबाहरिहरगुणगाता ॥ १ ॥

सिंहजवाहनसाजैलुंकडरहसाथा ॥ देववधूजाहा  
 गावतनिरतकरतताथा ॥ २ ॥ सतयुगरूपशीलअति  
 सुंदरनामसतीकहाता ॥ हेमाचलघरजनमीसखीवन  
 संगराता ॥ ३ ॥ शुंभनिशुंभविडारेतुहिनाचल  
 स्थाता ॥ सहस्रभुजातनुधरकेचक्रलियाहाथा ॥ ४ ॥  
 सृष्टिरूपतूहिजननीशिवसंगरंगराता ॥ नंदीभृंगीवी  
 नवहीपरयामदमाता ॥ ५ ॥ देवतअरजकरतहमनची  
 तकुंलाता ॥ गावतदेदेतालिमनमरंगछाता ॥ ६ ॥  
 श्रीपरतापआरतीमयाकीजोकोईनरगाता ॥ स्वर्गसु  
 खीनितरहतासुखसंपतपाता ॥ जय० ॥ ७ ॥ इतिपा  
 र्वतीकीआरतीसंपूर्ण ॥

॥ बजरंगबालाकीआरतीप्रारंभ ॥

जाकेबलसैंगिरवरकंप ॥ देवपिसाचनिकटनहिंअंप ॥  
 आरतिकीजेहनुमानलालाकी ॥ दुष्टदलनरघुनाथक  
 लाकी ॥ ढेर ॥ लंकाशेकोटसमुद्रऐशीखाई ॥ जातप  
 चनसुतबारनलाइ ॥ १ ॥ आर० ॥ देवीडारघुनाथ

अये ॥ लंकप्रजालशियासुदल्याये ॥ २ ॥ आर० ॥  
 गमगजोतअवधपुरराज ॥ घंटातालपखावजबाज  
 ३ ॥ आर० ॥ शक्तिबाणलगेलक्ष्मणकुं ॥ आनस  
 नीवलषणजीवाये ॥ ४ ॥ आर० ॥ बैठपतालतोड  
 तमकातर ॥ महिरावणकीभुजाउषाडे ॥ ५ ॥ आर० ॥  
 आरतीकीजेजशीतशी ॥ ध्रुप्रह्लादबिभीषणजसी ६ ॥  
 आर० ॥ सुरनरमुनिजनआरतीउतार ॥ जजजकपि  
 राजउचार ॥ ७ ॥ आर० ॥ कंचनथालकपूरसुहाइ ॥  
 आरतिकरतअंजनीमाई ॥ ८ ॥ आर० ॥ बांइभुजासैंअ  
 सुरसंधारे ॥ दहणीभुज्यासुरसंतउधारे ॥ ९ ॥ आर० ॥  
 लंकप्रजालअसुरसबमारे ॥ राजारामजीकेकारजसारे  
 ॥ १० ॥ आर० ॥ अंजनीपुत्रमहाबलदायक ॥ देव  
 संतकेसदासहायक ॥ ११ ॥ आर० ॥ लंकबिध्वंसन  
 सीयारघुराइ ॥ तुलसिदासकपिआरतिगाइ ॥ १२ ॥  
 आर० ॥ जोहनुमानजीकीआरतिगाव ॥ बसवैकुंठ  
 बहोरनहिंआव ॥ १३ ॥ आर० ॥

॥ इतिआरतीसंग्रहःसमाप्तः ॥



## प्रसिद्धिपत्रिका ।

देखो ! देखो !! अवश्य देखो !!!

हमारे पुस्तकालयमें वेद, पुराण, इतिहास, धर्मशास्त्र, वेदान्त, व्याकरण, न्याय, मीमांसा, वैशेषिक, सांख्य, योग, काव्य, कोश, अलंकार, नाटक, चंपू, भाण, प्रहसन, ज्योतिष, वैद्यक तथा प्रकीर्ण सांप्रदायिक विषयोंके संस्कृत ग्रंथ और हिंदी भाषाके पूर्वोक्त विषयोंके ग्रंथ तथा शालोप-योगी हिन्दी व अंग्रेजीकी बहुतसी पुस्तकें अत्यन्त शुद्धताके साथ सुपुष्ट सचिक्रण कागजपर सुवाच्य अक्षरोंमें छपकर विक्रयार्थ प्रस्तुत हैं; विशेष प्रशंसा करनेसे क्या है ? देखनेसे स्वयं प्रतीति हो जायगी. यदि पुस्तकोंके नाम व मूल्य आदि विशेष विषय जाननेकी इच्छा हो तो आध आनेका टिकट भेजकर हमारे पुस्तकालयका बड़ा सूचीपत्र भेगाइये और जिन महाशयोंको किसी पुस्तककी आवश्यकता हो वे निम्नलिखित पतेपर पत्र भेजकर भेगाइयें.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

**हरिप्रसाद भगीरथजी.**

**कालकादेवीरोड—रामवाड़ी मुंबई.**

श्रीः ।  
बृहद् रामगारी  
तथा  
गोपालगारी ।

---

उसको  
पं०-हरिप्रसाद भगीरथजीने  
मुम्बईमें  
छपवायके प्रसिद्ध किया.

---

संवत् १९६२, सन १९०६.

---

“ पार्वतीवरदा ” छा० छपवाके प्रसिद्ध किया.  
इस पुस्तकका हक प्रकाशकने स्वाधीन रखता है.

---



श्रीः।

## बृहद् रामगारी ।

प्रथम वन्दना और विनय ।

दोहा ।

प्रथम गौरि गणपति सुमिरि, वन्दौं वारंवार ।  
 नारायण हितसों लिखत, रामभक्ति सुखसार ॥१॥  
 निराकार निर्लिप्त प्रभु, सुरसन्तनके हेत ।  
 राम कृष्ण अवतार धरि, भक्तजनन सुख देत ॥२॥

कुण्डलिया ।

रामकृष्णलीला ललित, प्रेममोददातार ।

सगुणब्रह्म परमात्मा, सन्तसुरनसुखकार ॥

सन्तसुरन सुखकार, धेनुभूसुररिपुघालक ।

सुमिरत सिद्ध गणेश, ईश धाता वरनायक ॥

नारायणप्रभु धरत ध्यान, पद जासु ललामा ।

जयति जयति हरि कहत होत, पूरण सब कामा ३

भजन ।

दयानिधि काहे विलम्ब करी । नाथ मैं शरण लई  
तुम्हरी ॥ टेक ॥

जब गजराज ग्राहने घेरो, हरालियो दुःख हरी ।

भारतमें भरुहीके अंडा, घंटा टूट परी ॥ १ ॥

ढेर दर्ई जब दुपदसुताने, तनक नाहिं उघरी ।

तुम प्रह्लाद अग्निसे राख्यो, तनिक न देह जरी २

गयो सुदामा शरण तुम्हारी, विपति ठरी सगरी ।

प्रभु तुम भक्ति दर्ई गणिकाको, वेश्या जाति तरी ३

जब विष घोर दियो मीराको, बाकी मृत्यु ठरी ।  
तुमहौ विपति-हरैया स्वामी, मोपर विपति खरी  
कीन्हो पाप पार जाको नाहिं, तबियत देख डरी ।  
नारायणप्रभुकी शरणागत, विपति हरौ हमरी॥५॥

कवित्त-घनाक्षरी ।

दशरथनन्द जगज्यावन जगत वन्दआनँदके  
कंदके निबाहे ते निबहिये । सब दुख द्वन्द्व हिय  
तापके विनाशहित सुरउरचन्दके चरित्रनको  
चहिये । अवधविहारीके विनोदनमें बीधिबीधि  
गीधगुहतारन गुणानुवाद गहिये । रैन दिन  
आठौ याम राम राम राम राम सीताराम सीता-  
राम सीताराम कहिये ॥ ५ ॥

तथा ।

काहेको बघम्बरको ओढ़ि करो आडम्बर काहेको  
दिगम्बर है दूवखाय रहिये । काहे निजकायाको

नितप्रति कलेश देय सीकर समीत शीत वात ताप  
 सहिये । काहेको तू जपै जप काहेको तू तपै तप  
 काहेको प्रपंच पंच पावकमें दहिये । रैनि दिन आठौ  
 याम राम राम राम राम सीताराम सीताराम सी-  
 ताराम कहिये ॥ ६ ॥

रेखता ।

भाती है सुझे माधुरी मूरति मुरारकी ।  
 कोशलकिशोर दिलवर दशरथ कुमारकी ॥  
 राजीवनैन नेह भरे रैनके जगे । झुकझुकके प-  
 लक गिरतीं हैं आलस खुमारकी । मुसक्यान  
 मन्द माधुरीपर वारूँ लाखजी । किससे नजीर दे  
 कोई उस गुल उजारकी । रघुवरकिशोर दीनपै  
 टुक कीजिये नजर । दानी शिरोमणि जानके  
 तेरी पुकार की ॥ ७ ॥

रामगारी ।

## रामनहछ ।



दोहा ।

प्रेमपदारथ जानिकै, रहै अमृतफल स्वाय ।

रामनाम तुलसी भजै, तासु मुक्ति है जाय ॥८॥

रामराम रघुनन्दन भरत भुवाल हे । दशरथके

कुलनन्दन शरण तुम्हार हे ॥ धनुहा परा जनकपुर

कोइ न तूरनहार हे । देश देशके भूप ठाढ़ मुख

जोहि रहे ॥ दुखित भये नृप जनक प्राण नहिं छू-

टहि हे । वसुधा वीरविहीन धनुहा नहिं दूटहि

हे ॥ राजा भवन न भावै रानी सब रोवहि हे । अब

सिया भई है कुँवारि जानबिच खोवहि हे ॥ इतना

सुनत भये लछमन सुनो भाई राम हे । मरजी

होय श्रीराम धनुष हम तोरब हे ॥ रामचन्द्र उठि

बोले सुनो भाई लछमन हे । गुरुआज्ञा जब होय



धनुष हम तोख हे ॥ सुमिरि उठे गुरुज्ञान सुनो  
 श्रीरामजु हे । बात कहत बड़ि बेर धनुष नखंड हे ॥  
 धनुहा तुरि हैं भगवान तौ दुन्दुभी बजाय हे ।  
 होय व्याहकी चार तो मंगलचारि हे ॥ घर घर  
 फिरै नउनियां गोतनि बोलाइये । तिरवेनिके नीर  
 भैं तांवे कलशा धखाइ हे ॥ आज जनकपुर व्याह  
 सो नहछू श्रीरामको । चलिये नैनभरि देखन शोभा  
 श्यामको ॥ कंचनकलश गंगाजल सो भरलाइ  
 हे । चंदनचौक विठाय सो प्रभु नहवाइ हे ॥  
 नाउनि अतिगुणखानि सो बेगि बुलाइ हे ।  
 करि शृंगार अतिलोनिसों विहँसति आइ हे ॥  
 जगमग ज्योति अवधपुर अति छवि छाजइ हे ।  
 वरनि दिहल तरिखना सो अधिक विराजइ हे ॥  
 कानन पहिरि तरौना बेसरि अति शोभइ हे ।  
 गल मोतियनको माल कंठ मन मोहइ हे ॥

धन्य रे नउनियाँ भाग चरण धोये हाथसों ।  
 मुखभरि करत गुमान तौ श्रीरघुनाथसों ॥  
 पाँच सखी मिलि बैठि सोहर दिल गावँ है ।  
 कौशिला जनक लगाय तौ गारी गावँ है ॥  
 काहे रामजी साँवर लछमन गोर है । कारण कवन  
 कौशल्या मनहिं सो परिगइले भोर है ॥ राम भये  
 दशरथके लछमन आनके । भरत शत्रुहन भये  
 सो चतुर सुजानके ॥ राम उठे रिसिआय लछ-  
 मन रोससों । दे बहु गारि नउनियां बोलै कस  
 बोलसों । मैं त्वहिं पूँछहुँ नउनियां हुवौ कर जो-  
 रि है । तुम्हरो नउआ काहे साँवर तू काहे गोरि  
 है ॥ पाँचसखी मिलि बैठि सिंगार बनाइके । बैठी  
 हैं आसन मारि सो पान चबाइके ॥ काचे बाँ-  
 सको माड़ो हरिहरि दूब है । पानन माँड़ो छवाइ  
 सुवारिके पत्र है ॥ लालहि पाटके जाजिम झारि

बिछावइ हे। वैठु कुँवर सो चार तौ विप्र बुलावइ हे।  
 नाउनि अति सुकुमारि तौ हाथहि कंकन हे।  
 नीचे देवी बनाइ सुवासित चन्दन हे ॥ सोनेंकेर  
 जो कलशा ऊपर वरै दीप हे। मचिया वैठु कौ-  
 शल्या उठन लागे गीत हे ॥ को यह पोखरा  
 खनावल घाट बँधावल हे। क्यहिकर भरहि कहार  
 तौ क्यहि नहवाइ हे ॥ राजा दशरथ पोखरा  
 खनावल घाट बँधावल हे। कौशल्याजीके भरहि  
 कहार तौ प्रभु नहवाइ हे ॥ हाथहि कनकन-  
 हरनी नउनिया अति गोरि हे। प्रभुजीके वदन  
 निहारि हँसै मुख मोरि हे ॥ पातारि अँगुरिया  
 महाउर अति छविछाइ हे। कनकपत्रपर वानं  
 तौ वीर बहुटिया हे ॥ होने लागु निछावरि गो-  
 तनि हर्षहि हे। जस सावनके बुन्द श्यामघन  
 बरखहि हे ॥ केऊ देला चुटकि मुंदरिया केऊ

देला रूप हे । केऊ देला रतन पदारथ भरि भरि  
सूप हे ॥ कैकेयि देली चुटकि मुंदरिया सुमित्रा  
देली रूप हे । कौशल्या देली रतन पदारथ  
भरि २ सूप हे । मण्डप झगरे नउनियाँ निछावर  
थोर हे ॥ रघुवरकेर निछावर लेव मैं घोर हे ।  
काहे झगरु नउनियां यह सब लेहु हे । राम व्याहि  
घर आइ हैं तौ देव मैं घोर हे । जो यह नहछू  
गावहिं गाइ सुनावहिं हे । तुलसिदास बलिजाय  
परमपद पावहिं हे ॥

रामावतार ॥ राग-श्यामकल्याण ॥

गर्भमें परब्रह्म अवतारी । टेक ।

कौशल्या अति आनंद पावै दर्शन तेज अपारी ।  
पुर नर नारि अधिक सुख पाये लाभ हुआ अति  
भारी ॥ १ ॥ उपमा बहुत भाँति कह वरणों सुख  
पावै महतारी । गर्भबीच जगपाल विराजे नारा-  
यण बलिहारी ॥ २ ॥

## राग-मालकौंस ।

मिलि सब देव पुष्प वरसाये । टेक ।

चैत मास नवमी तिथि शुक्ला अर्द्ध दिवस जग  
 आये । चढ़े विमान देवताको दल अवध आज  
 गणराये । मिलि० ॥ १ ॥ अवधपुरीपर वृष्टि सुम-  
 न्की सुरदेवन वरसाये । सुर नर यक्ष अप्सरा  
 नाचैं बाजा अधिक बजाये । मिलि० ॥ २ ॥  
 धन्य धन्य नृप दशरथके घर राम जन्मधर आये ।  
 अति आनन्द मच्यो पुर सगरे हरष हरष यश  
 गाये । मिलि० ॥ ३ ॥ घर घर बन्दनवार पताका  
 कदली खंभ गड़ाये । घर घर चित्र विचित्र मणिन-  
 का दमकै तेज सिवाये । मिलि० ॥ ४ ॥ घर  
 घर नारी मंगल गावैं मंगल गीत सुनाये । घर  
 घर वजत बधाई रामकी गुणिजन गीत बनाये ॥  
 मिलि० ॥ ५ ॥ राजा दशरथजी खोल खजानो

धन दौलत बरसाये । दिया दान गज हेम धेनु  
हय भूमि दान दराये । मिलि० ॥ ६ ॥ रामचन्द्र-  
ने जनम लिये पुनि भरत जन्म ले आये । लक्ष्मण  
औ शत्रुहन भैया अपना रूप दिखाये । मिलि०॥७॥  
चारौ प्रगट भये अवतारी देव दरशको आये ।  
नारायण रघुनाथ चरणपर वार वार शिरनाये ॥  
मिलि० ॥ ८ ॥

गारी । राग जैजैवन्ती ॥

गारी गावैं जनकजीकी नारी ॥ टेक ॥

दशरथजी तो वृद्ध भये हैं करत नारि को प्यारी ।  
कोउ नारी नृपशीश विराजै कोउ देती ये गारी ॥१॥  
कैकयिने तो वश कर लीन्हें ऐसी नारि धुतारी ।  
कौशल्याघर पानी भरते और सुमित्रा दारी ॥२॥  
तुम्हरे घरकी यही रीति है नाच नचावत भारी ।  
तुमतो दशरथ भये डोकरा तुमरी नारि कुंवारी ॥३॥

नारायण समधिन समुझावै मानौ वात हमारी ।  
तुमतो नाचो प्यारिन आगे दै देकरसे तारी ॥४॥

गारी गावैं अवधपुरवाली ॥ टेक ॥

सुनो हो नारि जनकपुर हंडी तुम हो सबल खरा-  
ली । राय जनक तो भयो है जोगडो तुम यौवन  
मतवाली ॥ १ ॥ चलो हो री समधिन अवध-  
पुरीको रस लूटो सब आली । अवधपुरीके रसि-  
या ठाकुर तुमको करैं निहाली ॥ २ ॥ राजा दश-  
रथघर तुमसी दासी राय जनक जैसे हाली ।  
तुम्हरा मालिक हमरा चाकर नारायण सुन  
ख्याली ॥ ३ ॥

तथा च ।

जय जय जय प्रभु अलख निरंजन गावों मंगल  
गारी जी । माँग मध्य नग सेंदूर सोहै जो शशिर-  
विकी उजियारी जी ॥ मोती हीरा लालों शिर गूँघे

तारन शोभा भारी जी । कानन कुण्डल अति दो  
 सोहैं मणि मुक्तन तेज पसारीजी ॥ हीरा लालों  
 सों गहि तिरवल्ली चोटी सो छविके अस गाई जी ।  
 गर सोहैं वैजंती माला फूलि रही फुलवाई जी ।  
 नाक नथुनियां अति सोहैं सो भँवर करत गुंजारी  
 जी । दांतन मीसी और बतीसी सुवरन अभरन  
 ढारी जी ॥ यह गारी जे मंगल गावैं पद सुख शोभा  
 भारी जी । नारायण पदप्रीति न छूटै चरणकमल  
 बलिहारी जी ॥ १ ॥ जय जय जय तिहूंलोकके  
 ठाकुर जिनकी गावों गारी जी । रामजी बंधुसहि-  
 त अवतार धारि प्रभु कीन्ही लीला भारी जी ॥  
 राजा जनकजी रच्यो स्वयंवर बड़बड़ भूप हँकारी  
 जी । जुरी सभा भीरभई भारी व्याहन जनक-  
 दुलारी जी ॥ कठिन धनुष शिवशंकरजीको कोइ न  
 सकै यह तोरी जी । परन विदेह कठिन यह ठानो



कोमल गात किशोरी जी ॥ मृदुल मनोहर उमिरि  
 है थोरी चितमें वसी यह जोरी जी । ना दूँट तो रहों  
 कुवाँरी सीता कहै निहोरी जी ॥ कितो वरोंगी  
 सांवली मूरति कीतोरहुँ कुमारी जी । प्रीति  
 कि रीत वृद्धि करुणामें भक्तवत्सल खुरा-  
 ई जी ॥ सिया वर राम रचौ यह लीला देवन हित  
 प्रगटाईजी ॥ युगयुग अचल रहै यह जोरी ज्यहि वेद-  
 न गाई जी ॥ गुरु पर ताप सन्तकी सेवा नारायण  
 वर पाई जी ॥ २ ॥ जय जय जगदीश्वर जगदम्ब  
 जय जय सृष्टि पसारी जी । जय जय सकल चरा-  
 चरकी जय जिन्ह मम ओर निहारी जी ॥ कलु  
 नहिं लाये ना लै जैवे नाहक टेक हमारी जी । मोर  
 तोर जगमें झूँट पसरावा लखु छाया जाकी सारी  
 जी ॥ ज्ञान विचार ध्यान सत सुभिरन दरपन नैन  
 उधारी जी । और भरम सब झूँठी जक्तके भ्रात

तात महतारीजी । योग और युक्तिसाँचु विन झूठी  
 करनीविन कथनी सारी जी ॥ कर्म और धर्म सत्य  
 विन झूठो झूठी खाक जो धारी जी । तीरथ व्रत भयो  
 जग भंजन ज्यों अरथी स्वांग विचारी जी । नारायण  
 सतगुरूको मेढों चारों पद चेर तुम्हारी जी । जय  
 जय जय सत वादिन कीरति रोमरोम आत्मा छाई  
 जी । उनकी महिमा कहँलग वरणों दर्शन से तर जाई  
 जी । नर औनारि दोऊ गुणसन्तों कीरति एक हम  
 गाई जी । नारि सुहागिल सोई बखानों पीतम हाथ  
 विकारि जी ॥ सती होय सो सतनेह निवाहै का-  
 हेक देह जराई जी । धनि धनि जे निरखैं प्रिय  
 जलथल रोमरोम छवि छाई जी । ताकर भेद  
 देश सुनो संतो गुरू कृपासे गाई जी ॥ सन्त  
 सोई पंडित है सूरों जगमें जे जियतै मरि जाई  
 जी । युग अक्षर दृढ़ करि हिय सुमिरै काहेक

भस्म रमाई जी । अजपा धुनि लागी निशिवासर  
 गगन शब्द गुहराई जी । स्वांग बनाय जे  
 जक्त देखावइ सोई छिनारि कहाई जी ।  
 निन्दा अस्तुति तजि छलबल जे जन्मे ना मरि  
 जाई जी । जहँवा वाजै अनहद वाजा ऋषिमुनि  
 आरति लाई जी । त्यहिके परे अगम एक ज्योती  
 जहँवाँ जा मति ठहराई जी । रूप रेखना उत्पति  
 उनकी लैन पुरुष गनाई जी । सबमें व्यापकसो  
 अलख निरंजन छाया जाकी घट घट छाई जी ।  
 लोकपाल की गमिनहिं जहँवाँ अज शिव योग  
 भुलाई जी । सोवै जागै मिला न न्यारा कर पगु  
 बानी नाई जी । देयलेयना उत्पति कै परलै माया  
 कौन थहाई जी । नारायण प्रभु थाह यही हे शरण  
 शरण गुण गाई जी ॥ ३ ॥ जय जय अवधपुर  
 सुर नगरी जहँ राजत चारौ भाई जी । अव कछु

कहाँ वरातकि बातें ज्यहि विधि व्याहन आई जी॥  
 राजा दशरथ कीन्ह बड़ाई विधिसों वरात बनाई जी ।  
 गज घोड़े सुखपाल पालकी ना पीनस जात ग-  
 नाई जी । पैदल स्वांग की गनती नाही झुंड-  
 झुंड रथ आई जी । साजि नालकी और पालकी  
 सुवर्ण कलश धराई जी । कीमखाब के परे  
 हैं उहरवा मोतियन झालर लाई जी । हीरा  
 माणिक औ गजमुक्ता लालनकी छविछाई  
 जी । सजी वरात अवधपुर नगरी शरद अजोरी  
 आई जी ॥ तारा सोहत रैनि अँधेरी सो शोभा  
 छिपि जाई जी ॥ उड़े विमान चले मिथिलापुर  
 ऋषिसुनि चँवर दुलाई जी ॥ आगे पैदल चले हैं  
 वराती घोड़े गरद उड़ाई जी । बीचमें गज सुखपाल  
 पालकी ता पीछे गतिके गाई जी ॥ अनेक समाज  
 सुर वाजि दुंदुभी वरनत उक्ति न आई जी ॥ चली

है बरात जनक पुर आई अगवानिन आनन आई  
 जी । जबहिं बरात दुवरवै आई सखी अँटा चढ़ि धाई  
 जी ॥ गावत मंगल होत कुलाहल दधि अक्षत वरसाई  
 जी । प्रेम विवश भये सब विह्वल तहँ राम रमा हो जाई  
 जी ॥ कहँ लग वरनों आजुकी शोभा शारद शिव  
 सकुचाई जी । नारायण सियरामके नेगे भक्ति मुक्ति  
 वर पाई जी ॥ जय जय लोक पालों की जिनहित  
 राम सिया तनु धारे जी । सन्तन हित चारों तनु  
 धारे सुर नर मुनि सुख पाई जी ॥ जय जय जनक  
 पुर की नर नारी जहँ राम रमा छवि छाई जी ॥  
 तीनि लोककी सकल सम्पदा जेवन बराती  
 आई जी । सोनेको गडुआ गंगाजल पानी सेवकन  
 पाँव पखारी जी । सकल बरातिन चौकी आई यथा  
 उचित बैठारी जी । कंचन पत्र हीरा नग चौकी  
 रूपेन दोना अधिकारी जी । झुंडझुंड सखी परसन

लागीं बिछुवनकी छन कारी जी ॥ वाँसकिये भात  
मैदाकी रोटी उरदौ शोभा अति भारी जी ।  
मूँग मुँगोरी बरा फुलौरी भटवा रसाजके सारी  
जी ॥ खानि खानिके गने खटाई परवर बहु तर-  
कारी जी । खुरमा खाजा और जलेबी पेड़ा बर-  
फानियारी जी । मेवा मिसिरी औ बहु व्यंजन  
गनने की गति नाहिं हमारी जी । अनंद बराती  
जेंवन जब लागे देय सखी सब गारी जी । यही  
बरातके उत्सवहित चितगावै कैसो भरम भय  
ठारी जी । नारायण सियराम सखा सबके चरण  
कमल उर धारी जी ॥

राम सोहर ।

राम तो सूतई मन्दिर विच रनियों वोसारेउ हो ।  
अब बल कैसे जगावौं मैं रामतो बंद केवारिउ हो ।  
हमधन ठाढ़ी वोसारे कहइ के सँदेसउ हो । जाय

कहो रानी कौशल्याजीसे सिया ठाढ़ी दुअरवा  
 हो ॥ भीतरसे निकसी कौशल्या रानी साथ सुमि-  
 रतउ हो । सखी करलिहे मोती हीरा थार लुटाव-  
 न लागिउ हो ॥ धनि धनि आजकी घरी  
 धनिजे यह गावई हो । नारायण रज पद बन्दो  
 जीवन जनम बनावई हो ॥ १ ॥ आजु सखि  
 धनि मोरि भागि राम मोरे खावइ हो । रनि-  
 या तो ठाढ़ी जगावइ राम तौ मोरे जागइ हो ॥  
 सिया तो ठाढ़ी दुअरवा उनहं को बुलावउ हो ।  
 रानी वचन सुनि जगतपति मुसकानेउ हो ॥  
 जाहु सखी सीता लावहु रामहिं मिलावहु हो ।  
 आई सखी बहु विधिसे विनावई राम बुलावई  
 आवहु हो ॥ चली सीता लरजी खोलि केवारी  
 जियरा जुड़ावइ हो । धनि धनियाँ जाकेरी भागि  
 राम जेहि अपनावई हो ॥ या मंगल गाइ सुनावइ

परम फल पावई हो । त्यहि पर ग्रह अरु लगन  
बहु विधि मंगल करावई हो ॥ सिया रामको मिल-  
न श्रवन सुनि हरषावई हो । अचल रहै यह जोरी  
समुझि सुख पावई हो ॥ यह मंगल जो गावैं गाय  
सुनावैं सोई परमपद पावई हो । नारायण बलि  
बलि जाऊँ राम सिया गुन गावई हो ॥ २ ॥

### राम जन्म मंगल ।

प्रथम सुमिरि गुरुदेव श्रीगणेश मनाइये । शार-  
दको शिरनाय राम गुण गाइये ॥ प्रभु गुण सिन्धु  
समान कौन वर्णन करै । जैसी जाकी बुद्धि तैसी  
हिरदै धरै ॥ १ ॥ त्रिभुवन नाथ जन्म हरि लयोरी ।  
जन हित हेत जनम प्रभु लीन्हो दैत्यनको दुख  
दयोरी ॥ शंख चक्र गदा पट्टम विराजत सुर सुमन  
वृष्टि कियोरी । स्वर्ग विमानन मंडिल छाये वंदी  
वेद वखान्योरी ॥ धनि धनि भागजे यह मंग-



ल गावैं सोपदकै ध्यान धरयोरी । नारायण प्रभु  
दुःख निवारन कीरति युग युग भयोरी ॥ २ ॥

राम वारह मासा ।

लछिमनके जागे प्रान हरप सब देवा ॥ टेक ॥  
वैशाखै वन चले हैं राम । सूनी कइगे अवध अम  
धाम । राजा दशरथ त्यागेउ प्रान । भरत हृदय बहु  
विधि विलखान । शोच केकईको ॥ १ ॥

जेठ मृगशिरा तपै बहु जोर । जल विन कुहकत  
जस वन मोर । तैसेइ विलपत कोशलामाय ।  
रामविना मोहिं कछून सुहाय । काह करों हाय  
विधाता ॥ २ ॥

आषाढ़ मास वर्षा नियराय । मोर वालक  
वनमाँझ सो जाय । तौ रिमझिम मेघवा झरि  
होय । कैसे रहैं वन वनमें सोय ॥ सो सुनोरी  
सखियो ॥ ३ ॥

सावन रहे गिरि गुफा बनाय । रामसिया संग  
लछिमन भाय । नर बन्दर सँग हनुमत वीर ।  
लंका चले हैं सकल रणधीर ॥ तौ वज्रत बधाई ॥ ४ ॥

भादों दधिविच सेतु बँधाय । लंका घेर लियो  
दोउभाय । तौ राक्षस वंश विभीषण आय । ताको  
विधिसों तिलक चढ़ाय । फिरी तहाँ रामदुहाई ॥ ५ ॥

कुँवार कुमति रावणने ठानि । निश्चर वंश  
सब आपु विलानि । कहा नहि मानत जड़ अभि-  
मानि । बहु विधिसे नारि कहत बखानि । के  
मति तोर भुलाई ॥ ६ ॥

कातिक मन्दोदरि रानि । जाकी सीता लुम  
हरि आनि ॥ कंत सुनोरे तुम वचन परमानि ।  
सोदोउ बन्धु आय नियरानि । छोडुरे सर्व  
मूर्खाई ॥ ७ ॥

अगहन अशुभ लंकमें होय । दशमुख वाम अंग

फरकोय । तो सोई सगुन जानकी माय । हनु-  
मत वीर आय शिर नाय । दर्ई सहिजानी  
देखाई ॥ ८ ॥

पूसहिं लंक फूँकि रघुराय । विभीषणको वेगि  
बुलाय । राय लषण अरू कपिन समेत । राक्षस  
मारि देव सुखदेत । चारों युग जस छाई ॥ ९ ॥

माघै मास कीन्ह रघुराय । लछिमन धरनि गिरे  
सुरझाय । जो होत भोर लछिमन तजै प्रान ।  
मोरे जीवनको कौन ठिकाना । अब सुनोरे भाई ॥ १० ॥

फागुन लाय सजीवन वीर । जागे लखन  
खुशी रघुवीर । तो लंका जीति सियालै आय ।  
रावनके घर फागु मचाय । खेलैं सब देवा ॥ ११ ॥

चैतही चले हैं रघुराय । कपि भालूवै निशान  
बजाय । तौ नाथगवन सुनि भारत वीर । सुख  
जननी सरयू निर्मल नीर । शुभ सगुन धराई ॥ १२ ॥

बारह मासा गावै चित लाय । पापदोष दुख  
सकल मिटाय । तौ नारायण कहत कर जोरि ।  
आवागमन त्यहि मिटेउ वहोरि । सो परम पद  
पाई ॥ १३ ॥

भजन-स्वरङ्गझौटी ।

जानकी जीवन है सुखधाम ॥ टेक ॥  
अवधपुरीमें जन्म लियो है । जाको कहत सब  
राम ॥ १ ॥ निर्गुण रूप रहत उर अंतर । सगुण  
होय धनश्याम ॥ २ ॥ भक्त हेत लीला बहु धारैं ।  
सुफल करैं सब काम ॥ ३ ॥ वेद पुराण जासु गुण  
गावत । शेष लये नित नाम ॥ ४ ॥ सोई अनि  
प्रकट भये जगमें । बसत अवधपुर धाम ॥ ५ ॥  
धानि है जन्म अवध वासिनको । भये परिपूरन  
काम ॥ ६ ॥ सीताराम चरित गावतनित । जय  
जय सीताराम ॥ ७ ॥

तथा ।

ऐसी रामकी प्रभुताई ॥ टेक ॥

सब सुख करन हरन दुख जनके सुमिरत पाप  
नशाई ॥ १ ॥ गौतम नारि उपल भई अववश पती  
शाप उरछाई ॥ २ ॥ चरण कमल रज शीश परसि  
प्रभु पतिके लोक पठाई ॥ ३ ॥ कपि सुग्रीव बन्धु  
भय व्याकुल भ्रमित त्रास उर छाई ॥ ४ ॥ गये  
प्रभु शरण मिटा दुख दारुण दीन जानि अप-  
नाई ॥ ५ ॥ अधम जाति शवरी योषित शठ प्रेम  
भक्ति बरपाई ॥ ६ ॥ जूँटे फल प्रभु रुचि रुचि  
खाये धनि जग जनमको पाई ॥ ७ ॥ रावण  
त्रास विभीषण निशिदिन शोक श्रमित दुख  
जाई ॥ ८ ॥ नारायण दुख रहित करौ जन भक्त  
बछल रघुपाई ॥ ९ ॥

रामगारी ।

२९

वधाई ।

माई बजत बधाई आजरी ॥ टेक ॥  
अवधपुरी आनन्दभयो दशरथजीके दरबार  
री०॥ माई०॥ १ ॥ आनँद उमगि चहूँ दिशि छायो  
गावत हरि गुणग्राम दिर दिर दिर दिर ताना तुम-  
दिर ताना नाना नाना नाना गावत गुनी सुधार  
अवध नगर शोभा क्या वरनों जहँ रामचन्द्र अव-  
तार । सात स्वर तीनि ग्राम इकइस मूर्छना हाव  
भाव सतसार नारायण गावत स्वर हर्षत प्रभु  
पारब्रह्म अवतार री॥ माई बजत बधाई आजरी ॥  
नारायण हितसों लिख्यो, राम चरित कछु सार ।  
पाढ़ि हैं सुनिहैं जे सुजन, ते हुइ हैं भवपार ॥ १ ॥  
इति ।

अथ  
बृहद्  
गोपाल-गारी ।

प्रथम वन्दना और विनय ॥

दोहा ।

वन्दौ श्रीगणपति चरण, नितमंगल दातार ।  
नारायण हितसों लिखत, कृष्णचरित्र उदार ॥ १ ॥  
सोरठा ।

कृष्ण चरण उरधार, बार बार विनती करौं ।  
अभिमत फलदातार, देहु बुद्धि बल मोहिं प्रभु ॥ २ ॥  
कवित्त-घनाक्षरी ।

मुकुटके रंगन पै इन्द्रको धनुष वारौं अमल  
कमल वारौं लोचन विशालपर । कुंडल प्रभा

पै कोटि प्रभाकर वारि डारौं कोटिक मदन वारौं  
वदन रसाल पर । तनकी तरुणता पै नीरद सजल  
वारौं चपला चमक उर मोतिनकी मालपर ।  
चाल पै मराल वारौं मनहूँ को वार डारौं और  
कहा वारौं छवि नन्दके कुमारपर ॥ ३ ॥

सुन्दर सुजानपर, मन्द सुसक्यानपर, बाँसुरीकी  
तानपर, ठौरन ठगी रहै । मूरति विशालपर,  
कंचनकी मालपर, केसरीसी चालपर, खौर-  
न खगी रहै । भौहैं मैनधनुपर, लोने युगनैनपर,  
शुद्धरस बैन पर, प्रीतिहू पगी रहै । चंचलसे  
तनपर साँवरे वदनपर मूरति मदनपर, लगन लगी  
रहै ॥ ४ ॥ चीराकी चटक लटक वनकुंडलकी भौहकी  
मटक मोहिँ आँखिन दिखाउ रे । जादिना सुजान  
गुणरूपके निधान कान्ह बाँसुरी बजाय तनु तपन  
सिराउरे । एहो वनवारी बलिहारी जाउँ तेरी आज



मेरी कुंज आय नेक मीठी तान गाउ रे । नन्दके  
किशोर चित्त चोर मोर पंखवारे वंशीवारे साँवरे  
पियारे इत आउरे ॥ ५ ॥

जाके पद परसनको तरसत है विश्व ब्रजगवालन-  
को खेलमाँझ कंधन चढ़ाये हैं । जाकी यह माया  
सुर नर मुनि बांधिराखे सोई आप यशुदापे  
ऊखल बंधाये हैं । जाको देव यज्ञमें बुलावें नाहिं  
आवें सो तो नन्द एक थारमाहिं जीमके मिहाये  
हैं । जाने लै नचाये सब दारुमयी पूतरीज्यों प्रेम-  
वश गोपिनके हीयमें समाये हैं ॥ ६ ॥

मंगल—रागभैरव ।

मंगल माधव नामउचार । मंगल वदन कमल कर  
मंगल मंगल जनहिं सदा संभार । देखत मंगल  
पूजत मंगल गावत मंगल चरित उदार । मंगल भवन  
कथारस मंगल, मंगल रुचि वृन्दावन चन्द्र । मंगल-  
करन गोवर्धनधारी मंगल वेश यशोदा नन्द ॥

मंगल धेनु रेनु भुव मंगल मंगल मधुर बजावत  
वेनु । मंगल गोपवधू परिरंभन मंगल कालिन्दी  
पय फेनु ॥ मंगल चरणकमल मणिमंगल मंगल  
कीरति जगत निवास । अनुदिन मंगल ध्यान  
धरत मुनि मंगल गति परमानंदरास ॥ ७ ॥

छन्द त्रिमंगी ॥

गुनिये निजमनमें आय जगतमें हरि चरन-  
नमें चित धारिये । झगरो दूरि वहाय सबै विधि  
माया माता परि हरिये । मोहन गिरिधारी सुरहि-  
तकारी श्रीबनवारी पगपरिये । सुमिरि सुमिरि  
श्रीकृष्णचन्द्रको या भवसागरको तरिये ॥ ८ ॥

कृष्णजन्ममंगल ॥

जन्मे श्रीकृष्ण मुरार भक्त हितकारने । मथु-  
रा लियो अवतार गोकुल झूलें पालने ॥ १ ॥  
तिथि अष्टमी बुधवार भादों वदीकी करी । रोहि-  
णी नक्षत्र आधीरात जन्मलियो शुभघरी ॥ २ ॥

धनि देवकी वसुदेव जहाँ प्रभु अवतरे । धनि यशु-  
 दा बाबा नंद महरघर पग धरे ॥ ३ ॥ धन्य  
 धन्य सुरनर मुनि सब जय जय करें । दुंदुभी  
 वज्रत अकाश सुमन वर्षा करें ॥ ४ ॥ ब्रजवासी  
 गोरसभर भर कर ल्यावहीं । दधि काँदो बाबा  
 नन्द सु कीच मचावहीं ॥ ५ ॥ वाजत ताल मृ-  
 दंग वीन औ वाँसुरी । निरतत गोपी ग्वाल  
 चरण चित चावरी ॥ ६ ॥ यशुमति चार पहि-  
 राय नौरंगभई ग्वालिनी । सुन्दर वदन निहारि  
 चकित भई भामिनी ॥ ७ ॥ श्रीवलभद्रजीके वीर  
 असुरदल खंडन । भक्तवत्सल भगवान यादव  
 कुल मंडन ॥ ८ ॥ शंकर धरत हैं ध्यान सु गोद  
 खिलावहीं सोमुख चूमत माय सु पलना जुलावहीं ।  
 श्रीनंद यशोदासे नेह चरण चित ल्यावहीं ॥ हरि  
 गुण संगल गाय गोविन्द गुण गावहीं ॥ १० ॥  
 वधाई ॥

कृष्ण जन्म जब भयो वधावा ले चली । गावत

मंगलाचार तहाँ हमहूँ चली ॥ ले चल तेलिनि तेल  
तमोलिनि बीरवा । मालिनि ले चलहार कन्हैया-  
को जन्म भयो ॥ धन्य यशोमति भाग्य धन्य वह  
रोहिणी । धन्यरी भादौंकि राति कृष्णजीको जन्म  
भयो ॥ हैं नन्द द्वारे ठाढ़े लुटावैं सम्पदा । याचक  
भये हैं निहाल अयाचक होय चले । धन्य यशो-  
दाभाग्य जो गोद खेलावहीं । हुलस हुलस जिया  
होय तो क्षीरपियावहीं ॥ जो यह मंगल गावैं औ  
गाय सुनावहीं । सूरदास बलिजाउँ परम फल  
पावहीं ॥ ११ ॥ पद ॥

हौं इक नई बात सुनि आई । महारि यशोदा ढोटा  
जायो घर घर होत वधाई । द्वारे भीर गोप गोपनकी  
महिमा वरणि न जाई । प्रति आनन्द होत गोकुल-  
में रत्नभूमि निधि छाई । नाचत तरुण वृद्ध अरु  
बालक गोरस कीच मचाई । सूरदास स्वामी सुख-  
सागर सुन्दर श्याम कन्हाई ॥ १२ ॥

कवित्त ॥

फूल गये गोप गृह गोपिनको भूलि गये हुलसी  
 मचाई माते प्रेम सरसाईमें । कीच मची दधिकी  
 अधिक गैल गैलनमें रंगरस अंगपणे आनंद वधा-  
 ई में । छोटीसी चोटी कछोटी कटि मोटी भई गोपी  
 सबै चोपी रूपसागर कन्हाईमें । राजी दिल मोदन  
 विनोदन विहँस नन्दन नाचे आज आँगन कन्हा  
 ईकी वधाईमें ॥ १३ ॥

कृष्णगारी ॥

हाँजी ।

जय जय जय मुरलीधर मोहन पुरवहु आश ह-  
 मारीजी । कुंवर सौतिकी तजिदेउ यारी सवविधि  
 चेरि तुम्हारी जी ॥ कौनसी चूकपरीहरि हमसे जे  
 तुम करौ लवारी जी । तुम विन नाथ विकल नि-  
 शि वासर चरण कमल बलिहारीजी ॥ शरण श-  
 रण निज शरणहौं प्यारे चितवहु नेक निहारीजी

इतनी विनती सुनि हरि लीजै परगट होउ मुरारी  
जी ॥ अजब अगोचर खेल तुम्हारे गावैं वृद्धैं चित  
लाई जी । नारायण लखि मूर्ति माधुरी चार पदा-  
रथ पाई जी ॥ १ ॥ हाँजी ।

जय जय राधे कृष्ण किशोरी युगल चरण  
मन वारी जी । साँवर गोर सुभग दोउ सुन्दर लीला  
अधिक पसारी जी ॥ महिमा अगम पार नहिं  
जाको यारी न लखै परारी जी । करत विहार विहारी  
कुंजन सखियन मंगलचारी जी ॥ अब तो नाथ  
साधु बन बैठे सब जानै खेल तुम्हारी जी । मात  
पिताके गुन हम जानी जानी जाति मुरारी जी ॥  
सो बतियाँ जनि मोहिं भखावो करिलो प्रीति  
करारी जी । पर बेटी लावत लाज न लागी बृद्धेउ  
ना कछु गारीजी ॥ तब तो मोहन भयो कुशीला  
भलना पोच विचारी जी । अब तो लाज शरम भइ  
तुम कहँ खेदत मोहिं निकारी जी ॥ कीतौ बांह

गहो मोरि प्यारे जोरो बहु विधि यारी जी ।  
 नाहिं तो हँसी करौंगी तुम्हरी नचिहँ बैगि उधारी  
 जी ॥ दीन दयाल अरज सुनिलीजें माँगत हों  
 करजोरी जी । सब विधि नाथहों चेरि तुम्हारी  
 रखलेउ मान हमारी जी ॥ तुम कहँ नाथ ऐसि  
 ना चाहिये जो चित किहेउ कठोरी जी । तबतो  
 किहेउ प्रानसे प्यारी अब कस खेदु बरोरी जी ॥  
 कबसे हरि तुम भये चिकनियां गोकुल धेनु चराई  
 जी । वृन्दावनकी कुंज गलिनमें गोपियन नाचु  
 नचाई जी ॥ औरहु किहेउ बहुत हरि लीला म-  
 थुरा कंस मिटाई जी । सब देवनकी वन्दि लुड़ायो  
 उग्रसेन पद पाई जी ॥ अपने जनके हित तुम मोहन  
 युग युग कीर्ति बढ़ाई जी । नारायण प्रभु रसवशगारी  
 सुनिमाधौ दरश दिखाई जी ॥ २ ॥ जय मंगल  
 चार विहारके संयम गारी गाय पियारी जी । अप-  
 नो नेग चुकावहु मोहन ससुरारिके देहु करारी जी ॥

अब कछु वरणों छबिकी शोभा जस व्याहेउ पट-  
रानी जी । एक एक गुण कहँ लौं वरणों चौंसठि  
अयुत सयानी जी ॥ रानी तो सत्त्यभामा व्याहन  
चले सो शोभा कृष्ण मुरारी जी । सहित सखा प्रभु-  
सजे बराती घोड़नकी अधिकारी जी ॥ गज  
विमाननके गज पैदल रथ सो नहिं जात सम्हारी  
जी । स्वर्ग विमान न मंडल छाये दुंदुभि सुर झनका-  
री जी ॥ इतनी बरात सजे केरी गावै ते पावै पद-  
भारी जी । सीताराम भक्ति वर माँगै छूटै न तोर  
दुवारी जी ॥ ३ ॥ जय जय जय नटवर हरि  
माधौ राधेवर गिरिधारी जी । कारन कर्ता सब  
घट व्यापक सो ऐसो खेल पसारी जी ॥ अ-  
गम अगोचर अयुगुतिलीला खेल कवन ल-  
खिपाई जी । सब बिचहँ सबसे वै न्यारे ऐसा कुँवर  
कन्हआईजी ॥ सो हरि अब दूलह बनि बैठे चरित  
अनेक देखाईजी । सारी सरहज सखि बनि आई



सो मंगल गारी गाईजी ॥ बैठि बरात परोसन लागे  
 शशि अमृत बरसाई जी । चौकी दोना पानकी  
 पतरी समाचारु सब आईजी ॥ झिनवाँके भात गे-  
 हूँकी शुभरोटी उरदनकी अधिकारीजी । मूँग मुँगो-  
 री बरा फुलौरी परवरकी तरकारीजी ॥ खुरमा  
 खाजा खाँड़ खटाई पेड़नकी परसाईजी । मेवा मि-  
 सिरी अमर जलेबी बरफिन कौन गनाईजी ॥ वि-  
 विध भाँतिके व्यंजन आये औरों फल तरकारीजी ।  
 जेवन बैठे कृष्ण कन्हैया सखी देव सब गारीजी ॥  
 ऐसो अवसर नाफिरि पड़े काहेक ऐहें सुरारीजी ।  
 जीवन सुफल अपन करिलैवै बहुरिन गाइव गारी-  
 जी ॥ दोनों बंधु हरप मन मोदित सुनि गुनि प्रे-  
 मकी बानीजी । कोइ मंगल चार गीत बहु गारी कोइ  
 आँखिसे आँखि मिलाईजी ॥ कोइ कुम्कुम अतर अर-  
 गजा छिरकैं हाथ कपोलन मारीजी । चमर डुलावै  
 रस बस बेनियां चरण कमल बलिहारीजी ॥ जेइ

जूँठि सब खरिका करिके भरि मुख पान कुचाईजी ।  
 यह गारी गावै गाय सुनावै ताहि सुख सुरन पठाई  
 जी॥तन मन प्रेम वढायके लीला देहकी भर्म भुला-  
 ईजी । नारायण प्रभु चरण शरणनित वार वार शि-  
 रनाई जी ॥ ४ ॥      तथा ।

हेरे हेरेजी हेरे हेरे हरिकी कथा कहूँ बिस्तारी॥टेका॥  
 बरसानेकी गोप कुमारी कृष्ण चन्द्रको गावैं गारी ।  
 हेरे हेरेजी० ॥१॥ एक कृष्णकी ऐसी रीती । नैकन  
 करतो डरै अनीती । हेरे हेरे जी० ॥२॥ और सुनो  
 याको व्यवहार । घर घर चोरी करै उतार । हेरे हेरे-  
 जी०॥३॥और सुनौ तुम याकी रीति । बलिराजापै  
 माँगी भीख । हेरे हेरेजी० ॥४॥ मच्छ कच्छ वाराह  
 स्वरूप । बहुतक धरे अनोखे रूप॥हेरे हेरेजी०॥५॥  
 तथा ।

गारी याय मतदीजोरी ये दोय बापनको लाला  
 गारी याय०॥१॥देखी लालकी कुंती बूआ। कौंरीने

जायो लाल । गारी० ॥२॥ देखी लला तेरी बहिन  
 सहोद्रा, अर्जुन संग गई भाग । देखी लालकी भार्भी  
 द्रौपदी पांच किये भर्तार । गारी० ॥३॥ नानी लाल  
 तेरी पवन रेखाने, असुरसे कियो विहारागा० ॥४॥  
 दोय बापयाके दो महतारी गावैं वेद पुकार । गारी  
 याय मत दीजोरी ये दोय बापनको लाल ॥ ५ ॥

रागझँझौटी ॥

श्याम छवि देखन आज चलोरी । काननमें कुंडल  
 आतिसौहैं शिरपै सुकुट भलोरी । ठोड़े कदमतर वंशी  
 बजावैं चन्दन भाल मलोरी । देखत रूप चित्रसी रहि  
 गई वदन न नेक हलोरी । नारायण छवि देखि श्याम-  
 की सबही दुःख टरोरी ॥ ६ ॥

कृष्ण वारहमासा ।

चलौ सखी जगदीश मिलने हिलि मिलि शोच  
 मिटाई । आषाढ़े रथ यात्रा देखौं सजनी सावन  
 चौमास विताई ॥ भादौं लीला जन्म कृष्णके कौर

कंस मर्दि रास बढ़ाई । कातिक देवन घर घर वाजि-  
 दुन्दुभी अगहन छवि कहीन जाई ॥ पूसै सुख  
 सम्पति सब राग वाजसों माघै अमृत वरसाई ।  
 फागुन फूल डोल छवि देखो सजनी चैत चरण रज  
 पाई ॥ वैशाख जोवन सुफल करु सजनी जेठ जेठ  
 अमर पद लाई ॥ बारहू मासकै या चौमासा दैत्य  
 मर्दि देवन सुख दाई ॥ नारायण सबसृष्टि कृपा गुरु  
 त्रैताप मिटाई । चार पदारथ सकल सम्पदा जगदी-  
 श ईश पहुँचाई ॥ ८ ॥ फूल डोलके उत्तसों मंगल  
 रहस रहस गुन गाई । फागुन फूल डोल मोरिसज-  
 नी ऋषिन विहार कराई ॥ आपु तौ नाथ भवन  
 हुइ बैठे हमैं दिहिन विलगाय ॥ चैतै सेजिया बिछावैं  
 सब सजनी पिया आनि बैठाय ॥ मोहिं अबलाका  
 प्रभु न विसारौ प्रेमसों प्रीति लगाय । वैसाखै सिंधु  
 हिलोरै लगा सजनी मेघ घटा घहराय ॥ मन्द मन्द  
 मखी बेनिया हिलावई मनोहर मूरति सुहाय । जेठै

जेहर बाँधिकै बिलुआ बहु विधि निरत कराय॥गाव-  
 त राग मृदंग ध्वनि लागी लावन चीर उढ़ाय । आपा-  
 दै रथयात्रा मोरि सजनी नाथ जनक पुर जाय । संग  
 बलभद्र सुभद्रा जाई शशि लखि दधि हरपाय॥सावन  
 हिंडोल गड़ा मोरि सजनी रेशम डोरी डराय । नाथ  
 झूलै सब सखियाँ झुलावै कुसुमी चीर उढ़ाय ॥  
 भादों भागि जो दर्शन पावै नदियाँ नार बहाय ।  
 रिमझिम रिमझिम मारग मेह वरमै नाथ मिलन  
 को जाय ॥ कौरै कुमति बसी ज्यहि घटमै मो  
 अब कस ललचाय । मोहिं अबलाका बेगि बु-  
 लायो हरषि निरपि उरलायाकातिक नाथ मिले मोर  
 सजनी भानु उदय तस जाय । मिटि गई भरम  
 छूटि सब संशय जरा मृत्त्यु सो भुलाय ॥ अगहन  
 अमृत झरै लगो सजनी चन्द्र चकोर छवि छाये ।  
 बडैसा पुरी आपु विराजै जगन्नाथ बलभाय ॥  
 पूसै पाला परै लगा सजनी नाथ जड़ावर मँगाय ।

पाट पाटम्बर चीर जरकसी हीरा लाल लगाय ॥ माघै  
ऋतु बदली मोरि सजनी समय वसंतकी आय ।  
नारायण प्रभु नाथ भरोसे नाम गुनै गुन गाय ॥७॥  
मगरोंकन लीला ॥ रागिनी देवगिरी ।

वरजो नहिं मानत वार वार । जब मैं जात चली  
दाधि बैचन भाजत कंकर मार मार । लैलकुटी  
मडुकी महि पटकी घूँघट देखत टार टार । हरवा  
तोरत गरवा लगावत करत कंचुकी तार तार । कपटी  
कुटिल कठोर श्यामघन देखत छवि तरु डार डार ।  
हरिबिलास ब्रजराज हठीलो बैठगई मैं हार हार ॥१॥

राग तिताला ॥

जिनमग रोंको नन्दकिशोर । टेक ।

तोहिं उरझनकी बानि परी है साँझ तकत नहिं  
भोर । देर लगत मोहिं सासु रिसावै तुम्है छैल  
नित रारि सुहावै । इन कुचाल कछु हाथ न आवै ।  
गागरिया दइ फोर ॥ तुम अति चंचल ठीठ वि-  
हारी । कैसे कोखि रहे महतारी । इह मोको अच-

रज है भारी घर घर तेरो शोर ॥ नारायण अब  
 क्यों इतरावो । भई सो भई न बात बढ़ावो । ताही-  
 को तुम आँखि दिखावो । जो होय तेरी बंदोर ॥२॥  
 राग दादरा ॥

गैलजनि रोंकौ योवन मदमाते । टेक । इनवातन  
 शोभा नहिं पावो लाजभरी गारी गाते । तुम जा-  
 नत हमते यह डरपत तासों बहुत इतराते । ना-  
 रायण हमयासों न बोलैं मानिके जातिके नाते ॥३॥  
 राग कलिंगड़ा ॥

मारग दीजै मोहन प्यारे । टेक ।  
 इन वातन शोभा नहिं पावो तुमहो राज दुलारे ।  
 बहुत हँसी जनि करौ साँवरे सुनिहैं कन्त हमारे ।  
 तुमरो कोई कछु न करे गो हमें सुँदरे तारे ।  
 देखे सुने नहिं हम कबहुँ तुम सम जगजन हारे ।  
 नारायण क्यों रारि बढ़ावो रे छे वापन वारे ॥४॥  
 राग झंझोटी ॥

श्याम यह कैसी वानि परी । हम निकसत हैं

चिनको तुम रोंकत डगरी । जान न देत  
आगेको हम बहु विनय करी । खाय लेहु दधि  
अब मनमोहन क्यों तकरार करी । नारायण  
मुसक्याय श्यामने बहियाँ तुरत धरी ॥ ५ ॥

राग बिलावल ॥

सखीरी मुझे आज मिलेनँदलाल ॥ मोरमुकुट मकरा-  
कृत कुंडल गल वैजंती माल ॥ पीतवसन घनश्याम  
मनोहर घूंघर वाले बाल । देख देख मोहन  
की छविको तनक न तनकी सँभाल । लक्ष्मी-  
नारायणको जाने आगे कौन हवाल ॥ ६ ॥

राग सोरठा ॥

डगरमें प्यारी आजमिले कहीं श्याम । लटपट  
पागसोहै पचरंगी पीतांबर अभिराम । नखशिख  
अमित आभरण मनोहर वंशीधर गुणधाम । देखी  
जाय पद नखकी शोभा कोटि लजावत काम ।  
नारायण प्रभु हरि दर्शन बिन तलफूँ आठौ याम । ७



## भजन ॥

दयानिधि काहे विलंब करी । नाथ में शरण  
 लई तुम्हरी । टेक । जब गजराज ग्राहने घरो हर-  
 लियो दुःखहरी । भारतमें भरुर्हाके अंडा घंटा  
 टूट परी । टेर दई जब दुपदसुताने तनक नाहिं  
 उधरी । तुम प्रह्लाद अग्निसे राख्यो तनिकन  
 देह जरी, गयो सुदामा शरण तुम्हारी विपत दरी  
 सगरी । प्रभु तुम भक्ति दई गणिकाको वेश्या  
 जाति तरी । जब विष घोर दियो मीराको बाकी  
 सृत्त्यु दरी । तुमहो विपति हरैया स्वामी मोपर  
 विपत खरी । कीन्हो पाप पार नहिं जाको तवि-  
 यत देख डरी । नारायण शरणागत प्रभुकी विपति  
 हरौ हमरी ॥ ८ ॥ इति ॥

## ॥ दोहा ॥

बृहदू राम गोपालकी, गारी कीन्ह वखान ।  
 पढ़िहैं सुनिहैं भक्त जन, लहिहैं जग कल्यान ॥ १ ॥  
 ॥ इति रामगारी—गोपालगारी समाप्त ॥



# नीचे लिखी हुई पुस्तकें नगद दाम भेजनेसे मिलेंगी.

रि. न. आ. ड. न. आ.

तुलसीदासकृत रामायण सटीक भाषाटीका

सहित. .... ८-० २-०

तुलसीकृत रामायण बड़े अक्षर. .... ५-० १-०

भैरवसागर बड़ा. .... १-८ ०-६

सूर्यपुराण. .... ०-८ ०-२

लावण्यवती सुदर्शन नाटक. .... ०-१२ ०-२

राजा दुष्यंतशकुंतलाचरित्र वार्तिक. .... ०-३ ०-४॥

दुर्गासप्तशती भाषाटीका. .... १-४ ०-४

## हरिप्रसाद भण्डीरथ,

ठि०-कालकादेवीरोड, मुंबई.

श्रीगोस्वामी तुलसीदासजीकृत—

# बजरंगबाण और नामरामायण

अर्थात्

श्रीरामचन्द्रजीके श्रेष्ठ दूत हनुमानजीका  
ललित विनय.

यह पुस्तक

हरिप्रसाद भगीरथजीने

कउड़ीआग्रामनिवासी श्रीवैद्यनाथप्रसाद  
जीकेद्वारा प्राप्तकर,

बंबईमें

“नेटिव ओपिनियन” प्रेसमें मुद्रित कराया  
प्रसिद्ध किया।

संवत् १९६५, शके १८३०.



॥ श्रीः ॥

## बजरंगबाण और नामरामायण प्रारंभ ।

दोहा—निश्चय प्रेम प्रतीतिते, विनय करै  
सन्मान ॥ तेहिके कारज सकल द्रुत, सिद्ध करहिं  
हनुमान ॥ १ ॥ चौ०—जय हनुमान संतहित  
कारी ॥ सुन लीजै प्रभु अरज हमारी ॥ १ ॥  
जनके काज विलम्ब न कीजै ॥ आतुर दौर  
महासुख दीजै ॥ २ ॥ जैसे लाँघ सिन्धु भे पारा ॥  
सुरसाके हनि सुष्टिक मारा ॥ ३ ॥ आगे जाय  
लंकिनी रोंका ॥ मारे लात गई सुरलोका ॥ ४ ॥  
जाय विभीषणकहँ सुख दीन्हा ॥ सीता निरखि  
प्रेम पद लीन्हा ॥ ५ ॥ बाग उजारि सिन्धुमहँ  
बोरा ॥ अति कातरि यम कातरि तोरा ॥ ६ ॥  
अक्षयकुमार मारि संहारा ॥ लूम लपेट लंकको  
जारा ॥ ७ ॥ लाहसमान लंक जरि गई ॥ जय

जय ध्वनि सुरपुरमें भई ॥ ८ ॥ अब विलम्ब केहि-  
 कारण स्वामी ॥ कृपा करहु तुम अंतरायामी ॥ ९ ॥  
 जय जय लक्ष्मण प्राणके दाता ॥ आतुर हैं दुख  
 करहु निपाता ॥ १० ॥ जय जय गिरिधर जय  
 सुखसागर ॥ सुमिरत सदा सुभट नर नागर ॥ ११ ॥  
 हनु हनु हनु हनुमान हथीले ॥ यहिके मार वज्रके  
 कीले ॥ १२ ॥ ॐकार हुंकारमें धावहु ॥ वज्र गदा  
 हनु बिलम न लावहु ॥ १३ ॥ ॐ हुं हुं हनुमन्त  
 कपीशा ॥ ॐ हुं हुं हनुमत उरशीशा ॥ १४ ॥ सत्य  
 होहु हरि तपसु पायके ॥ रामदूत धरि मार धायके  
 ॥ १५ ॥ जय जय जय हनुमान अगाधा ॥ दुख  
 पावत जन केहि अपराधा ॥ १६ ॥ पूजा जप तप  
 नियम अचारा ॥ नहिं जानत है दास तुम्हारा  
 ॥ १७ ॥ वन उपवन गृहमाहिं समाहिं ॥ तुम्हरे  
 बल हम डरपत नाहीं ॥ १८ ॥ पाँय परोंकर जोरि  
 मनावों ॥ अपने कारजलगि गुण गावों ॥ १९ ॥

जय अंजनीकुमार अनंता ॥ शंकरसुवन वीर  
 हनुमन्ता ॥ २० ॥ वदन कराल काल कुल घालक ॥  
 राम सहाय दासप्रतिपालक ॥ २१ ॥ भूत प्रेत  
 पैशाच निशाचर ॥ आगे जाय तत्काल मारि  
 मर ॥ २२ ॥ इहै मारि तोहिं शपथ रामकी ॥  
 राख लाज मर्याद नामकी ॥ २३ ॥ जनकसुता  
 हरिदास कहाये ॥ ताकी शपथ विलम्ब न लाये ॥  
 ॥ २४ ॥ जय ३ ध्वनि होत अकाशी ॥ सुमिरत  
 होत दुखीदुखनाशी ॥ २५ ॥ शरण शरण कर  
 जोरि मनावों ॥ यहि अवसर अब केहि गोहरावों ॥  
 ॥ २६ ॥ उठ उठ उठ चल राम दोहाई ॥ पाँय  
 परों कर जोरि मनाई ॥ २७ ॥ चँ चँ चँ चलत  
 चपल चालन्त ॥ हनु हनु हनु हनु हनु हनुमन्त  
 ॥ २८ ॥ हँ हँ हँ हांक देत कपिचरण चलन्त ॥  
 सँ सँ सँ सहमि खल दलन्त ॥ २९ ॥ अपने  
 जनके काह न उबारो ॥ सुमिरित है आनंद



हमारे ॥ ३० ॥ यह वजरंगवाण जो जापे ॥ ता-  
 को भूत प्रेत सब कापे ॥ ३१ ॥ पाठ करे  
 वजरंगवाणकी ॥ हनुमत रक्षा करें प्राणकी ॥ ३२ ॥  
 यह वजरंगवाण जेहि मारे ॥ ताहि कहो फिर  
 कौन उबारे ॥ ३३ ॥ धूप देइ जो जपे हमेशा ॥  
 ताके तन नहिं रहै कलेशा ॥ ३४ ॥

दो-जपे प्रेम परतीति करि, सदा धैर उर ध्यान ॥  
 तेहिके कारज सकल दुत, सिद्ध करहिं हनुमान ॥ ३५ ॥  
 ( मंत्र )-हां ह्रीं हूं हां हां कधार काँ लोहेके  
 सटा वज्रके गदा राम दूत इत चल उत चल  
 बेगि चल तेल सेंदूरकी पूजा हां हां हुंकार किल  
 चनचुर आपु घात करे छाती फाट मरे उलटा  
 उसके शीशपर परे दोहाई अंजनीकुमारकी ॥  
 पवनसुतकी केसरीनन्दनकी स्वाहा ॥

इति श्रीगोस्वामितुलसीदासकृत-वज्रांगवाण  
 ( वजरंगवाण ) समाप्त ।

## ॥ यन्त्र-मारुती ॥

श्रीजानकीनाथाय लक्ष्मणाय

रामदूताय करुणा कुरु ॥

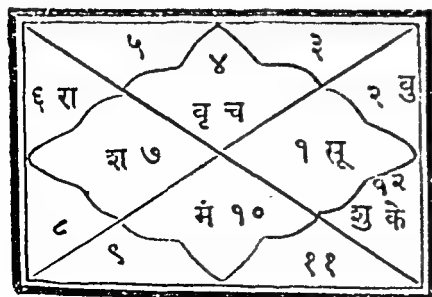
महावीर चक्रवर्ती ।

ह्रीं	५	१	६	ॐ ॥
ह्रीं	३	६	७	ऐं । ०
ह्रीं	४	८	२	ह्रीं । = ।

विधि—इस यंत्रको उत्तरमुख हो पुष्प सेंदूर तेल धूप दीप दे हनुमानजीका ध्यान धर आंबकी कलम बना कुमकुम, जावित्री, केशरका चूर्ण कर देवदारुके तख्तापर भौमवारसे आरंभ कर द्वादश १२-दिवसतक नित्य ३०५ दफे लिखे तो सिद्ध होजाय.

**फल**—इसको सिद्ध कर अष्टगन्धसे भोजपत्रपर अनारकी कलमसे लिख, अष्टधातुके महावीरी यंत्रमें “बजरंगबाण” का मंत्र पढ़कर भरे और हनुमानजीका पूजन सेंदूर तेल दे विधिपूर्वक करके पांच दिवस बजरंगबाणका पाठ सातवेर नित्य करे, धूप देखाय यंत्रको गलेमें बांधे तो भूत प्रेत पिशाचादिक दूर होय, शत्रुका नाश होय, दृष्टि सुष्टि नहीं लगे, ग्रह रोग पीडा दूर होय, अन्न धन प्राप्त होय, राजमान्य होय, सर्व कार्य सिद्ध होय.  
 दो०—यह मारुतिको यंत्र बड़, चौकी श्रीमहवीर ॥  
 रोग दोष खै तासुका, भूत न आवे भीर ॥

॥ इति यंत्रविधिफलवर्णन समाप्त ॥ ३ ॥



शुभ सम्बत् १६३१ चैत्र-  
 शुक्ल नवम्यां भौमवासरे

पुनर्वसुनक्षत्रे चतुर्थचरणे  
 जन्मनाम हिरण्यगर्भशेयम्:

॥ श्रीनामरामायणम् ॥

अथ बालकाण्डम् ।

- शुद्ध ब्रह्म परात्पर राम ॥ १ ॥  
कालात्मक परमेश्वर राम ॥ २ ॥  
शेषतल्पसुखनिद्रित राम ॥ ३ ॥  
ब्रह्माद्यमरप्रार्थित राम ॥ ४ ॥  
चण्डकिरणकुलमण्डन राम ॥ ५ ॥  
श्रीमद्वशरथनन्दन राम ॥ ६ ॥  
कौसल्यासुखवर्द्धन राम ॥ ७ ॥  
विश्वामित्रप्रियधन राम ॥ ८ ॥  
घोरताटकाघातक राम ॥ ९ ॥  
मारीचादिनिपातक राम ॥ १० ॥  
कौशिकमखसंरक्षण राम ॥ ११ ॥  
श्रीमद्वहल्योद्धारक राम ॥ १२ ॥

गौतममुनिसंपूजित राम ॥ १३ ॥  
सुरमुनिवरगणसंस्तुत राम ॥ १४ ॥  
नाविकधावितमृदुपद राम ॥ १५ ॥  
मिथिलापुरजनमोदक राम ॥ १६ ॥  
विदेहमानसरंजक राम ॥ १७ ॥  
त्र्यम्बककार्मुकभञ्जक राम ॥ १८ ॥  
सीतार्पितवरमालिक राम ॥ १९ ॥  
कृतवैवाहिककौतुक राम ॥ २० ॥  
भार्गवदर्पविनाशक राम ॥ २१ ॥  
श्रीमदयोध्यानन्दक राम ॥ २२ ॥

इति बालकाण्डम् ।

अथायोध्याकाण्डम् ।

अगणितगुणगणभूषित राम ॥ २३ ॥  
अवनिकामिनीकामित राम ॥ २४ ॥

राकाचन्द्रसमानन राम ॥ २६ ॥  
 पितृवाक्याश्रितकानन राम ॥ २६ ॥  
 प्रियगुहविनिवेदितपद राम ॥ २७ ॥  
 तत्क्षालितनिजमृदुपद राम ॥ २८ ॥  
 भरद्वाजदृगनन्दन राम ॥ २९ ॥  
 चित्रकूटाद्रिनिकेतन राम ॥ ३० ॥  
 दशरथसन्ततचिन्तित राम ॥ ३१ ॥  
 कैकेयीसुतप्रार्थित राम ॥ ३२ ॥  
 विरचितनिजपितृकर्मक राम ॥ ३३ ॥  
 भरतार्पितनिजपादुक राम ॥ ३४ ॥  
 दण्डकवनजनपावन राम ॥ ३५ ॥

इत्ययोध्याकाण्डम् ।

अथारण्यकाण्डम् ।

दुष्टविराधविनाशन राम ॥ ३६ ॥

शरभंगसुतीक्ष्णार्चित राम ॥ ३७ ॥

अगस्त्यानुग्रहवर्द्धित राम ॥ ३८ ॥

गृध्राधिपसंसेवित राम ॥ ३९ ॥

पंचवटीतटसुस्थित राम ॥ ४० ॥

शूर्पणखार्तिविधायक राम ॥ ४१ ॥

खरदूषणमुखसादक राम ॥ ४२ ॥

सीताप्रियहरिणानुग राम ॥ ४३ ॥

मारीचार्तिकृदाशुग राम ॥ ४४ ॥

विनष्टसीतान्वेषक राम ॥ ४५ ॥

गृध्राधिपगतिदायक राम ॥ ४६ ॥

शबरीदत्तफलाशन राम ॥ ४७ ॥

कबन्धबाहुच्छेदन राम ॥ ४८ ॥

इत्यारण्यकाण्डम् ।

अथ किष्किन्धाकाण्डम् ।

हनुमत्सेवितनिजपद राम ॥ ४९ ॥

नतमुग्रीवाभीष्टद राम ॥ ५० ॥

गर्वितवालिसंहारक राम ॥ ५१ ॥

वानरदूतप्रेषक राम ॥ ५२ ॥

हितकरलक्ष्मणसंयुत राम ॥ ५३ ॥

इति किष्किन्धाकाण्डम् ।

अथ सुन्दरकाण्डम् ।

कपिवरसंततसंस्मृत राम ॥ ५४ ॥

तद्गतिविघ्नध्वंसक राम ॥ ५५ ॥

सीताप्राणाधारक राम ॥ ५६ ॥

दुष्टदशाननदूषित राम ॥ ५७ ॥

शिष्टहनुमद्भूषित राम ॥ ५८ ॥

सीतोदितकाकावन राम ॥ ५९ ॥

कृतचूडामणिदर्शन राम ॥ ६० ॥

कपिवरवचनाश्वासित राम ॥ ६१ ॥

इति सुन्दरकाण्डम् ।



अथ युद्धकाण्डम् ।

रावणनिधनप्रस्थित राम ॥ ६२ ॥

वानरसैन्यसमावृत राम ॥ ६३ ॥

शोषितसरिदीशार्थित राम ॥ ६४ ॥

बिभीषणाभयदायक राम ॥ ६५ ॥

पर्वतसेतुनिबन्धक राम ॥ ६६ ॥

कुम्भकर्णशिरच्छेदक राम ॥ ६७ ॥

राक्षसकोटिविमर्दक राम ॥ ६८ ॥

अहिमहिरावणमारण राम ॥ ६९ ॥

संहतदशमुखरावण राम ॥ ७० ॥

विधिभवमुखसुरसंस्तुत राम ॥ ७१ ॥

स्वस्थितदशरथवीक्षित राम ॥ ७२ ॥

सीतादर्शनमोदित राम ॥ ७३ ॥

अभिषिक्तबिभीषणनुत राम ॥ ७४ ॥

पुष्पकयानारोहक राम ॥ ७५ ॥

भरद्वाजादिनिषेवक राम ॥ ७६ ॥

इति युद्धकाण्डम् ।

अथोत्तरकाण्डम् ।

भरतप्राणनवितरण राम ॥ ७७ ॥

साकेतपुरीभूषण राम ॥ ७८ ॥

सकलस्वीयसमावृत राम ॥ ७९ ॥

रत्नलसत्पीठस्थित राम ॥ ८० ॥

पट्टाभिषेकालंकृत राम ॥ ८१ ॥

पार्थिवकुलसंमानित राम ॥ ८२ ॥

बिभीषणार्पितरंगक राम ॥ ८३ ॥

कीशकुलानुग्राहक राम ॥ ८४ ॥

सकलजीवसंरक्षक राम ॥ ८५ ॥

समस्तलोकाधारक राम ॥ ८६ ॥

राम राम जय राजा राम ॥ ८७ ॥

राम राम जय सीता राम ॥ ८८ ॥

॥ इत्युत्तरकाण्डम् ॥ ॥ श्रीनामरामायणं सम्पूर्णम् ॥

## इस्कूवीली भाग ३-४

अर्थात्

सासरा की सवारी.



साराई सरदाराने मालुम करवामें आवे छै कि, एण पुस्तक मांहे जवाईजीको सासरे पधारणो और साल्या साला हेल्वाजीका गीत गालगावणा तथा रस्ता दोल्या जाजम थाल आदि छुडावणा तथा पखवाडो छुडावणा पाल्या घालणी तथा छुडावणी तथा लुगाई मोझारका आपसमें नावलेणा लिरावणा और छैल छुवीलीको जवाव सवाल तथा छैलको परदेश जातीदफे प्यारीको विलाप और पीछेसे प्रेमपत्र लिखणो तथा दारा-मास्या लावनी कवित्त सारठा-दोहा चात्रकमास मेंदी भात पत्तल वगैरः होवासे पुस्तक बहात आछी बनी ऐ. सो सासरे जावांवाला जवाई भाई ई. पुस्तकन जरूर खरीदकर लाभ उठासी. कीमत २ आना राख्या है.

पत्ता--हरिप्रसाद भगीरथजी,  
कालकादेवी-रोड, रामवाडी,—मुंबई.

श्रीः  
अथ रामकलेवा ।

( रहस्यग्रन्थ )

जिस्में

श्रीरघुराजकुमार आदि चारोंभ्राताओं  
प्रति सिद्धिसरहज आदिकोंका अनेक  
क्रीडाकौशल्य व वाक्यचंचलता  
“दोवै” छंदमें “गारी” की  
रीतिपर वर्णित है ।

वही

हरिप्रसाद भगीरथजी.

इन्होंने

“ जगदीश्वर ” छापखानेमें छ० प्रसिद्ध किया.

मुंबई.

संवत् १९५९-सन १९०२.



श्रीगणेशाय नमः ।  
अथ रामकलेवा ।  
( रहस्यग्रंथ )

छंद दोवै ॥

जयगणपतिगिरिजागिरिजापतिजयतिसरस्वति  
माता ॥ जयगुरुदेवकेशरीनंदन चरणकमलसुख  
दाता ॥ उनइससैदुइकेसंवतमें जेठदशहराकाहीं ॥  
ग्रंथकियो आरंभअनूपम बैठिअयोध्यामाहीं ॥ १ ॥  
अहैप्रीतिकीरीतिअटपटी मैकेहिभाँतिबताऊं ॥ ता  
तेसानुजरामकुँवरकोरहसकलेवागाऊं ॥ जेहिवि  
धिजनकसदनरघुनंदनकीन्हेरुचिरकलेऊ ॥ सुख  
दीन्हैसारिनसरहजकोसोसबकहिहौंभेऊ ॥ २ ॥  
व्याहउछाहसियारघुवरको मैं वरणौंकेहिभाँती ॥  
क्षणमहँबीतिगईसबरजनीरागेरंगबराती ॥ भोरभ  
येअपनेकुमारको जनकवेगिबुलवाये ॥ सुनिकै

पितुसँदेशलक्ष्मीनिधिसखनसहिततहँआये ॥ ३ ॥  
 सादरकिथेप्रणामचरणछुइलखिवोलेमिथिलेशू ॥  
 गमनहुताततुरितजनवासेजहँश्रीअवधनरेशू ॥ वि  
 नयसुनायरायदशरथसोंपायरजायसचेतू ॥ आन  
 हुचारिउराजकुमारनकरनकलेऊहेतू ॥ ४ ॥ यह  
 सुनिशीशनायलक्ष्मीनिधि थरिउरमोदउमंगा ॥  
 सखनसमेतमंदहँसिगमनेचढ़िचढ़िचपलतुरंगा ॥  
 कलनदेखावतहयथिरकावतकरतअनेकतमासे ॥ मृ  
 दुसुसकातवतातपररुपर पहुँचिगयेजनवासे ॥ ५ ॥  
 जहाँभानुकुलभानुअवधपतिदशरथराजविराजे ॥  
 बैठैसभासकलरघुवंशीतेजंशीसुखसाजे ॥ चोपित  
 चोपदारजहँबोलतबंदीविरदुचारै ॥ सुखदायक  
 गायकगुणावतनौवतिवजतिदुवारै ॥ ६ ॥ सख  
 नसहिततहँउतरितुरंगतेमिथिलापतिकेवारे ॥ चा  
 रिहुसुतयुतअवधराजकोसादरजायजुहारे ॥ अति  
 सुखनिधिलक्ष्मीनिधिकोलखिसखनसहितसतका

रे ॥ रघुकुलदीपमहीपहाथगहिनिजसमीपवैठारे  
 ॥ ७ ॥ तेहिछिनसानुजनिरखिरामछबिसखनसहि  
 तसुखसाने ॥ लक्ष्मीनिधिमुखदर्शपायकैरामहुनै  
 नजुड़ाने ॥ तबश्रीनिधिकरजोरिभूपसोंकोमलबै  
 नउचारे ॥ करनकलेऊहेतुपठावोचारिहुराजदुलारे  
 ॥ ८ ॥ सुनिमृदुवचनप्रेमरससानेदशरथमृदुसुसु  
 काने ॥ चारिहुकुँवरबुलायबेगहीबिदाकियेसुखसा  
 ने ॥ जनकनगरकीजानितयारीसेवकसबसुखपा  
 गे ॥ निजनिजप्रभुहिसँवारनलागेलैभूषणबरबागे  
 ॥ ९ ॥ रघुनंदनशिरपागजरकसीलसीत्रिभंगीवां  
 धी ॥ तिमिनौरंगीझुकीकलंगीरुचिरुचिपैंजनिसा  
 धी ॥ कनककलितअतिललितमणिनकी मंजुल  
 मौरविराजी ॥ सिंधुरमणिकेसजेसेहराजोहिहोतम  
 नराजी ॥ १० ॥ ताकेकोरकोरचहुँओरनिलगीरत  
 नकीपांती ॥ जगमगज्योतिहोतिचहुँदिशितेल  
 खिअखियाँनझपाती ॥ कुंडललोलैहलैकपोलैलगे



अमोलैमोती ॥ जेवदारजगमगहिंजराऊयुगलजै  
 जीरनजोती ॥ ११ ॥ जालिमजोरजौहरीजुलफै  
 युवतिनजोवनहारी ॥ छूटीअलकैदुहुँदिशिललकै  
 मनहुँमयनतरवारी ॥ रतनारीकारीकजरारीअति  
 अनियारीआखै ॥ रसवारीवरवशवशकारीप्यारी  
 प्राणनिराखै ॥ १२ ॥ अतिअवरंगीरतिरसरंगीच  
 ढीन्निभंगीभौहै ॥ मनहुँमदनकेयुगधनुसोहैजोइ  
 जोहैसोइमोहै ॥ तिलकरसालविशालभालपर कि  
 मिवरणौछबिताकी ॥ जनुनौघनपररीझिदामिनी  
 नेमलियोथिरताकी ॥ १३ ॥ अरुणअधरविचदा  
 मिनिद्युतिदरदमकैदशननिपांती ॥ सन्मुखसुख  
 करिजेहिदिशिबोलैअजबछटाछहराती ॥ जगम  
 गायअतिश्यामगातपरजरतजरितकोजामा ॥ ता  
 केकोरकोरचहुँओरनिगुँथेरतनमणिग्रामा ॥ १४ ॥  
 पीतसुफेंटासुछबिसमेटाकमरलपेटाराजै ॥ नवलप  
 ह्कोकरनलह्कोकंधपह्कोभ्राजै ॥ छोरनलसेक

शेरनमोतीकोरनलगीकिनारी ॥ अतिशयडलकैल  
 गैनपलकैलखिललकैसुरनारी ॥ १५ ॥ सिंधुरम  
 णिकेपरेचौलड़ेमणिनमालबहुसोहैं ॥ कटुलाकंठवि  
 जायठबाहुनदेखतहीमनमोहैं ॥ बड़ेबड़ेनगजड़ेम  
 ढे अति कनककड़ेकरमाहीं ॥ छविउमड़ेउरअड़े  
 तियनकेगड़ेमदनमनमाहीं ॥ १६ ॥ मणिमयकं  
 कनसुखप्रदरंकनबंकनकरविचबांधे ॥ जनुपुरयुव  
 तिनमनजीतनकोयंत्रवशीकरसाधे ॥ मणिमयढा  
 लैविरचितजालैकसीकमरकरवालै ॥ कंचनसुप्रवा  
 लैबँधीविशालैसजीसबुजउरमालै ॥ १७ ॥ सरही  
 पीतजरकसीपनहींसनहींमनैसुहाती ॥ नूपुरयुतप  
 ददियोमहावरदेखतदेहभुलाती ॥ बदनसकलसु  
 खसदनरामकोकोटिमदनमदमारै ॥ दरसतउरवर  
 सतरससबकेजनुतनुधरेशृंगारै ॥ १८ ॥ बीरनखात  
 बतातसखनसोंजबप्रभुजेहिदिशिबोलै ॥ तनमन  
 भूलिजातसबताकोलेतप्राणमनमोलै ॥ १९ ॥ दो

हा ॥ वरणिसकैकोरामको, अनुपमदूलहवेष ॥ जे  
हिलखिशिवसनकादिको, रहतनतनुहिसरेप ॥ २० ॥

इति श्रीरामनाथप्रधानविरचिते रामकलेवारदस्यग्रंथे

प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

छंद दोवै ॥ इमिसजिअनुजसहितरघुनंदन  
चारौराजदुलारे ॥ बढेउमंगनचढेतुरंगनअंगनवस  
नसम्हारे ॥ जेरघुवंशीकुँवरलाडिलेप्रभुकहँप्राणपि  
यारे ॥ चढेतुरंगसंगतेउगमनेरामरंगमतवारे ॥ १ ॥  
बोलँचोपदारलैनामनिदरजांगरेअलापँ ॥ चंचलच  
सरचलँदुहुँदिशितेछत्रसखाशिरढाँपँ ॥ रामवामदि  
शिश्रीलक्ष्मीनिधिसखनसहिततेउसोहँ ॥ चंचलवा  
गँकियेतुरनकीवातँकरतहँसोहँ ॥ २ ॥ जगवंदन  
जेहिनामजाहिरोरघुनंदनकोवाजी ॥ ताकोगुणछ  
बिकहँलौवरणौजोहिहोतमनराजी ॥ भूपितभूषण  
अंगअदूषणपूषणहयलसिलजँ ॥ चोटिनतनियां  
गुँथीसुमनियांपगुपँजनियाँबाजँ ॥ ३ ॥ जडितज

वाहिरजीनजराकीजरबीलीअतिसोहै ॥ पूजिपटा  
 कीछटाकहैकोकामलटामनमोहै ॥ जेरबंदमनफंद  
 सबनकोतंगसुरंगसुभावै ॥ जरकसिपेटीलसीलपे  
 टीझुकिझालरिछबिछावै ॥ ४ ॥ ललितलगामदा  
 मबहुकेरीअंकितनामविराजै ॥ सुछविउमंगीझुकी  
 त्रिभंगीमणिनकलंगीछाजै ॥ जितरुखपावैतितप  
 हुँचावैछनआवैछनजावै ॥ जमिजमिथमिथमिथि  
 रकिभूमिपरगतिनततिनदरशावै ॥ ५ ॥ चलत  
 चलाकैइतउतताकैविविधकलाकैभावै ॥ जनुनभ  
 नाकैकरतउजाकैरामरजायनपावै ॥ खीनीकटिपी  
 नीखुरथालै बँधीनवीनीनालै ॥ लेतउतालैसिंधुउ  
 छालैकरतसमुदइकफालै ॥ ६ ॥ जबउडिटापैधर  
 तधरापैरबिबाजिनउरकाँपै ॥ जलपैथलपैअनिल  
 अनलपैजातनकबहुँडरापै ॥ धावतपवननपावत  
 पाछुगरुडहुगर्वगमावै ॥ रघुनंदनकोबाजिलाडि  
 लोअनुपमकलादेखावै ॥ ७ ॥ नामससुदसुददेत

जननकोजापरभरतविराजें ॥ श्रीरघुनंदनकेदहि  
 नेदिशिचलतचपलगतिसाजें ॥ शोकतवागैअति  
 रिसरागैकरत्रिकफुरकनलागै ॥ डमकिडमाकीलै  
 गतिबांकीदैडांकीसुखपागै ॥ ८ ॥ कहूँनभजावै  
 सुरनरछकावैकहूँमहिमोदमचावै ॥ अवनीतेअरु  
 आसमानलौंजनुसोपानवनावै ॥ फांदतचंचलचा  
 रुचौकड़ीचपलहुकेचखझाँपै ॥ भरतकुँवरकोतुरंगर  
 गीलोवरणिजायकहुकापै ॥ ९ ॥ चंपानामचाल  
 चटकीलो जेहिपररिपुहनभाये ॥ सबसमाजकेआ  
 गेनिरतैभोरकुरंगलजाये ॥ जोकहूँनेकहुहाथउठाव  
 लकईहाथउड़िजातो ॥ बारवारचुचुकारिदुलारत  
 ताहूपैनजुड़ातो ॥ १० ॥ जबगहिवालैडमकतहा  
 लैगनिगनिधरतसुफालै ॥ तकितेहिचालैसुरमुनि  
 जालैचितवतचकितबिहालै ॥ गजनमध्यघुसिपर  
 तडरतनहिंजरतबरतपगुधारै ॥ रिपुसूदनकोवाजि  
 बाँकुरोकोटिनकलापसारै ॥ ११ ॥ लक्खीघोडाल

षणलालकोबांकोनिपटचलाँको ॥ उड़िउड़िजात  
 वायुमंडलकोपरतनपगमहिताको ॥ छनकछिती  
 छनआसमानपरछनछबिकीछबिछावै ॥ छनमहँछ  
 नछननाचिनईगतिसिगरेजननछकावै ॥ १२ ॥ त  
 रफरायउड़िजायपरतहैलक्ष्मीनिधिहयपार्हीं ॥ उ  
 चितविचारिहँसेरघुवंशीरामहुमृदुमुसकाहीं ॥ मेघ  
 घटापैमारिसुटापैबिचरैबिबुधअटापै ॥ केमजटापै  
 वाजिमढापैजनुरविमंडलनापै ॥ १३ ॥ तोपतुपक  
 जूटैजहँछूटैतहँजायसोदूटै ॥ रणरसघूटैवैरिनकूटैवी  
 रनमेंयशलूटै ॥ हूतकरतपुरहूतडरतहियमहाबूतब  
 लजाके ॥ जकिसेरहेजनकपुरवासीजोहिजोरजव  
 ताके ॥ १४ ॥ चिक्कनचोटीसुभगसकोटीमोटीक  
 टिछविपावै ॥ रेशमतारनजालसँवारनबायूऊपरधा  
 वै ॥ फुलडरियासोंडरतधरतडगकरतअनेकतमा  
 सो ॥ दुरकनिमुरकनिथिरकनितरकनिवरणिजाय  
 कहुकासो ॥ १५ ॥ तकितुरंगकीचंचलताईलषण

किदेखिबढ़ाई ॥ निमिवंशीरघुवंशीसिगरेठगिसेर  
 हैबिकाई ॥ रामआदिजेकुँवरलाडिलेतेउलखिभरेउ  
 लाहैं ॥ रीझिरीझितहँलषणलालकोवारहिवारसरा  
 हैं ॥ १६ ॥ इमिमगहोतविलासविविधविधिविपु  
 लबाजनेबाजैं ॥ सुनतनकीबपुकारनगरतियकहि  
 बैठीदरवाजैं ॥ कोउतियनिरखिवदनकीसुषपाअ  
 तिसुखमहँसोपागी ॥ भरीसनेहदेहसुधिनाहींराम  
 रूपअनुरागी ॥ १७ ॥ कोउतियदेखिअतूलादूला  
 अतिसनेहतनुभूला ॥ फूलानैनमैनमनभूलालाग  
 प्रीतिकोहूला ॥ कोउतियपतिसँगपरीपलंगमेंझाँ  
 किझरोखेलागी ॥ रामरूपरँगिगईलाडिलीउठिमा  
 गीपतित्यागी ॥ १८ ॥ कोउघुंघुटपटखोलिसुंदरी  
 मणिमुंदरीलैपानी ॥ देखनदूलहरूपरामकोआनँ  
 दसिंधुसमानी ॥ १९ ॥ दोहा ॥ कोउसूरतिलखि  
 साँवरी, तोरतितृणसुखपागि ॥ माधुरिमूरतिमेंप  
 गी, निजमूरतिसुखत्यागि ॥ २० ॥ ॥

इति श्रीरामनाथप्रधानविरचिते रामकलेवारहस्यग्रंथे

द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

छंद-दोवै ॥ कोउरघुनंदनछविविलोकिकैबो  
लीसुनसखिबैना ॥ राजकुँवरयेकरनकलेऊजातज  
नककेऐना ॥ इनकोश्रीनिधिगयेलिवावनआयचा  
रिहुबेटा ॥ रँगभीनेरघुवंशीछैलादशरथराजदुल्हेटा  
॥ १ ॥ धनियहभाग्यहमारीप्यारीजिनभरिनैननि  
हारे ॥ नतुदर्शनदुर्लभदूलहकेरविकुलप्राणपियारे ॥  
भागसोहागआजमलपायोश्रीमिथिलेशकिबेटी ॥  
सुंदरश्याममाधुरीमूरतिजिननिजभुजभरिभेटी ॥  
॥ २ ॥ बोलीअपरसखीसुनुसजनीभलीबातबनि  
आई ॥ हमहुँचलँसबजनकमहलक्रोहँसियेइन्हँहँ  
साई ॥ इमिमृदुबातँकरतपरस्पर भईप्रेमबशबामा ॥  
सुनतजातमुसुकातअनुजयुतकृपासिंधुश्रीरामा ॥  
॥ ३ ॥ तुरँगनचावतमगछबिछावतबाजतविपुल  
नगारे ॥ चोपदारजांगरेअलापतजनकनगरपगु  
धारे ॥ द्वारसमीपदेखिअतिसुंदरमणिमयचौकसँ  
वारे ॥ राजकुँवररघुवंशिनकेतहँठाढभयेमतवारे



॥ ४ ॥ उतरजायलहिसियामातुकीनगरसुवासि  
 निनारी ॥ कंचनकलशसजेशिरऊपरपल्लवदीपसँ  
 वारी ॥ गावतमंगलगीतमनोहरकरलैकंचनधारी ॥  
 परछनचलीहेतुरघुवरकोबहुआरतीसँवारी ॥ ५ ॥  
 जायसमीपनिहारिरामछविदृगआनँदजलवादी ॥  
 छकितरहींबरबदनविलोकतचकितरहींतहँटादी ॥  
 शमरूपरंगिगईरंगीलीलखिदूलहसुखसारा ॥ तन  
 मनरह्योसरेखनकाहूकोकरमंगलचारा ॥ ६ ॥ प्रेम  
 पयोधिमगनसबप्यारीपुनिधरिधीरजभारी ॥ परि  
 छनअलीभलीविधिकीन्हो रोंकिविलोचनवारी ॥  
 लक्ष्मीनिधितबउतरितुरंगतेचारिउकुँवरउतारे ॥ पा  
 णिपकरिरघुनंदनजीको भीतरमहलसिधारे ॥ ७ ॥  
 द्वीपद्वीपकेजहँमहीपसबजनकसमीपविराजें ॥ बैठे  
 सभासकलनिमिबंशी सुरअंशीइमिछाजें ॥ चोप  
 दार जांगरेअलापैं बहुविधिनौबतबाजें ॥ फहरैंवि  
 पुलनिशानजरीकेमंदगयंदगराजें ॥ ८ ॥ रघुनं

दनतहँअनुजलषणयुतसादरजायजोहारे ॥ देखत  
 उठेसकलनिमिवंशी जनकनिकटबैठारे ॥ गरगज  
 राकजराटगसेहरायुतशिरमौरविराजी ॥ दूल्हवेषवि  
 लोकिरामकोभईसभासबराजी ॥ ९ ॥ तहँकरिक  
 छुदरवारजनककोदशरथराजदुलारे ॥ लैकैजायर  
 जायनायशिरसासुसमीपसिधारे ॥ जहँपिकबैनी  
 सबसुखऐनीबैसुसुनैनारानी ॥ इंद्रानीकीकौनचला  
 वैलखिरतिरूपलुभानी ॥ १० ॥ चंद्रमुखीचहुँओर  
 विराजै कोउकरचमरचलावै ॥ कोउसखिदेखिराम  
 कीशोभा आरतिमंगलगावै ॥ बिछेगलीचेगद्दीता  
 के ऊपरआसनभ्राजै ॥ जनकराजकीरानिसुनै  
 ना कोटिचंद्रछबिछाजै ॥ ११ ॥ तेहिछिनतहांगथे  
 रघुनंदनमनफंदनबरवेषा ॥ देखतउठीसकलरनि  
 वासैरह्योनतनहिंसरेषा ॥ करिआरतीवारिमणिभू  
 षणसादरपाँयपखारे ॥ चारिरंगकेचारिसिंहासन  
 चारिहुबरबैठारे ॥ १२ ॥ लखिछविऐनासासुसुनै

नाएकहुपलकतजैना ॥ भूलीचैनावोलिसकैनाक  
 हतवनेनबैना ॥ तकिजकिरहीतनकनहिंडोलैम  
 गनमहामुदमाहीं ॥ रामरूपरंगिगईरंगीलीआंशुव  
 हेदृगजाहीं ॥ १३ ॥ इमितहँदशाविलोकिसासु  
 कीरामगुनतमनमाहीं ॥ काहभयोयहआजुरानि  
 कोपूँछतभेसकुचाहीं ॥ चतुरसखीचितचरचिराम  
 साँबोलीमधुरीवानी ॥ यहतुह्यारगुणहैसवलालन  
 औरनकछुउरआनी ॥ १४ ॥ सुनतवचनयहतुरत  
 धीरधरि जगीसुनैनारानी ॥ बारबारबहुलीनबले  
 या चूमिकपोलनपानी ॥ मधुरीमूरतिसाँवलिसूर  
 तिकीवृणतोरतिरानी ॥ रीझिरीझितहँरामरूपपै  
 बिनहींमोलविकानी ॥ १५ ॥ पुनिकरजोरिराम  
 साँरानीबोलीअतिमृदुमोई ॥ उठहुलालअवकरहु  
 कलेऊजोरोरुचिहियहोई ॥ यहसुनिसखनसमेत  
 उठेतहँचारिहुराजदुलारे ॥ भरीभागअनुरागसुनै  
 नानिजकरपायँपखारे ॥ १६ ॥ रचनाअधिकपदि

ककेपीठनबैठोरसबभाई ॥ कंचनथारीमृदुलसोंहारी  
 परसीविविधमिठाई ॥ रुचिअनुरूपभूपसुतजैवत  
 पवनडुलावैसासू ॥ बूझिबूझिरुचिव्यंजनपरसैवर  
 णिनजायहुलासू ॥ १७ ॥ स्वादसराहिपायपुनि  
 अंचयेसखियनपानखवाये ॥ बैठेपहिरिपोशाकस  
 खनयुतविविधसुगंधलगाये ॥ दोहा ॥ राजऐन  
 सबचैनयुत, राजैराजकुमार ॥ जिनकोहासविला  
 सलखि, लाजहिंलाखनमार ॥ १८ ॥ ॥

इति श्रीरामनाथप्रधानविरचिते रामकलेवारहस्यग्रंथे

तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

छंद दोवै ॥ तेहिऔसरसुधिपायसखीमुखल  
 क्ष्मीनिधिकीनारी ॥ नामसिद्धिपरसिद्धिजासुगुण  
 रूपशीलउजियारी ॥ भागसोहागभरीसुठिसुंदरि  
 नवयौवनमतवारी ॥ रसिकनरीतिप्रीतिपरबीनीर  
 तिहिलजावनहारी ॥ १ ॥ अतिगुणवाननिधान  
 रूपकीसबविधिसुभगसयानी ॥ लक्ष्मीनिधिकीप्रा

आपियारीनिमिकुलकीमहरानी ॥ अलबेलीसरहज  
 रघुवरकी बड़ीसनेहशृंगारी ॥ प्रीतमप्रीतिनिवाह  
 बहारी रामरूपरिझवारी ॥ २ ॥ चंचलचखनचहूँ  
 दिशिचितवतिदेखनको अतुराई ॥ भरीउमंगसंग  
 खियनलैतुरतरामढिगआई ॥ वदनचंदअरविंद  
 लियेकरविहंसतमंदिरसोहै ॥ रामकुँवरकरपकरि  
 लाड़िलीबोलीतकितिरछोहैं ॥ ३ ॥ येचितचोर  
 किशोरभूपकेबड़ेचोरतुमप्यारे ॥ सुरतिहमारिभुला  
 यसाँवरेसासुसमीपसिधारे ॥ उलटीबातकहोजनि  
 प्यारीआपनदोषदुराई ॥ तुमहींरहिउछिपायछबी  
 लीसुनतहमारिअवाई ॥ ४ ॥ हमआयेतुवमहल  
 नभीतरतुमहिंनपन्योजनाई ॥ भलोसदनतुम्हरो  
 हैप्यारीजहंसबजाहिसमाई ॥ सुनतरामकेवचन  
 लाड़िलीबोलीमृदुमुसकाई ॥ तुम्हरेवरकीरीतिला  
 लजूइहांनचलीचलाई ॥ ५ ॥ सासुसुनैनाकेसमी  
 प्रमहदेतजवाबबनैना ॥ पाणिपकरिरघुनंदनजी

कोगइलेवायनिजरेना ॥ चारिसिंहासनदैतहँआ  
 सनभरीहुलासनप्यारी ॥ बारहिबारनिहारिबदन  
 छविबहुआरतीउतारी ॥ ६ ॥ मेलिसुकंठमालती  
 मालाबसननिअतरलगायो ॥ अंचलसोंमुखपोंछि  
 रामकोनिजकरपानखवायो ॥ जहँचंद्रिकासमान  
 चांदनी चहुँकितबिछीबिशालैं ॥ चमकैबहुचित्रा  
 मसदनकेदमकैमणिनदेवालैं ॥ ७ ॥ जहँरतिरंभा  
 सरिससुंदरीबैठिकियेशृंगारैं ॥ कोउकुसुमनकोक  
 रणफूलरचिकोउकलंगीकोउहारैं ॥ ललितलवंगक  
 पूरसुगंधनिकोउसखिपानलगावैं ॥ कोउकरपीक  
 दानलियेठाढ़ीकोउसखिचमरदुरावैं ॥ ८ ॥ कोउ  
 जलशीतलभरेसुराहीकोउदर्पणदरशावैं ॥ निजनि  
 जसाजसजेसबप्यारी रघुवरसन्मुखभावैं ॥ कोउ  
 जरतारगितारतमूरा कोउकरतालबजावैं ॥ कोउ  
 सितारलैतारतारप्रति गूढ़गतिनदरशावैं ॥ ९ ॥  
 कोउउषंगमुरचंगमिलावैं दैमृदंगमुखथापैं ॥ को

छलैबीननवीनसुरनते मनहुँवशीकरजापैं ॥ कोउ  
 मृगनैनीकोकिलबैनीपंचमरागअलापैं ॥ परतका  
 नमैंमधुरतानजेहिविरहिनकेजियकाँपैं ॥ १० ॥  
 नयकीतानमानदैकोईतानवितानविछावैं ॥ सुनतै  
 श्रवैद्रवैतरुपाहनसुनिहुँकेमदनजगावैं ॥ इमिअ  
 थिरामधामशोभालखिराजकुँवरअनुरागे ॥ बातेंक  
 रतसिद्धिसरहजसोंपरमप्रेमरसपागे ॥ ११ ॥ जेनि  
 मिराजनेवतसुनिआईकोटिनराजकुमारी ॥ राम  
 मिलनकीबड़ीलालसाकहिनसकैसकुचारी ॥ अ  
 तिनिरदूषणभूषणभूषितकंचनकीसीवेली ॥ रूपशी  
 लगुणधामरंगीलोराजकुँवरिअलवेली ॥ १२ ॥ जा  
 नहिंप्रीतिरीतिकीबातेंकेलीकुशलनवेली ॥ जिन  
 जोहतसुनिजनमनमोहतमनहुँमदनकीवेली ॥ ति  
 नयहसुन्यो किसिद्धिसदनमेंआयेचारिहुभाई ॥ तु  
 रतहिंपहुँचींसबहीप्यारीजानिसखैसुखदाई ॥ १३ ॥  
 देखीराजकुँवरिसवआईरामदरशकीप्यासी ॥ अति

सन्मानकियोसबहीकोसिद्धिसदनसुखरासी ॥ रा  
मसुछबिदेखनतेलागींद्गआनँदजलबाढ़े ॥ चषझ  
षपरेरूपसागरमेंकढ़हिंनहींअबकाढ़े ॥ १४ ॥ मणि  
नमौरपरमोतिनकलंगीअलबेलीअतिसोहै ॥ राज  
तियनकीकौनचलैहैमुनियनकोमनमोहै ॥ पीत  
पोशाककरनकलकंकनबंकनचितवनिजोहै ॥ यो  
गीयतीसतीतपधारीसबहीकोजियमोहै ॥ १५ ॥  
अनियारेकोरेकजरारेबांकेनैनरिझोहैं ॥ रहतनता  
कनिपटकजाकेमारुकरततिरछोहैं ॥ चिक्कनचिलक  
दारचुनिवारी अलकैसुखपरछूटी ॥ जोहतजहरच  
ढ़तयुवतिनकोजड़ीनलागतबूटी ॥ १६ ॥ बीरिन  
कीलालीअधरनपरसूरजप्रभापसारैं ॥ मानहुँनि  
कसिमदनम्याननतेसानधरीतरवारैं ॥ झीनसुजा  
माअतिअभिरामाश्यामगातछबिछाये ॥ रीझिद  
मिनीजनुषनऊपरअपनीछटनिछपाये ॥ १७ ॥  
मंदहँसनिजियफँसनिलालकीभाँहकसनिगरबी



ली ॥ सुधिनरहततनअसनवसनकीसुनतजवानर  
सीली ॥ दूलहसूरतिकाविलसूरतिकहलौं करों वखा  
नी ॥ फिरिनदृगनतरआवतकोईजवतेछविदरशा  
नी ॥ १८ ॥ लखिछविवरकीश्यामसुंदरकीभईमीन  
सुखसरकी ॥ तरकीतनीकंचुकीदरकीकरकीचूरी  
करकी ॥ दोहा ॥ मनलोभाशोभानिरखि, भईवि  
वशसुकुमारि ॥ चकितछकितसवरहिगई, तनम  
नदशाबिसारि ॥ १९ ॥ ॥ ॥

इति श्रीरामनाथप्रधानविरचिते रामकलेवारहस्यग्रंथे

चतुर्थोऽध्यायः ॥ ॥ ४ ॥

छंद दोवै ॥ जोतियमानिअनूपरूपनिजर  
हौंस्वरूपगुमानी ॥ तेइलखिरामवदनकीसुपमा  
बिनहींमोलविकानी ॥ जेनिजदृगमृगतेसुंदरगुणि  
रहीगरबकेभारैं ॥ छेदिगईतेरामकटाक्षैघायलआंशु  
नढारैं ॥ १ ॥ जेअबलाअवलंबवेदलैसदापतिव्रत  
पालैं ॥ तेबेधीमनसिजकेबाणनव्याकुलफिरहिंवि

हालैं ॥ रघुनंदनअलबेलोछैलानैनसैनजेहिमारी ॥  
 तेहिधुधिरहैनकामधामकी फिरहिंमनौमतवारी  
 ॥ २ ॥ अतिसुकुमारीराजकुमारीसिद्धिसहितअ  
 नुरागी ॥ तहँप्यारीगारीरघुबरकोदेनदिवावनला  
 गी ॥ एकसखीकहैसुनहुलालजीयहस्वरूपकहँपा  
 यो ॥ काननसुन्योकामअतिसुंदरकीतुमकोसोइ  
 जायो ॥ ३ ॥ बोलीसिद्धिसुनहुसरघुनंदनतुमहमार  
 ननदोई ॥ एकबाततुमसोंहमपूछैलालनराखहुगो  
 ई ॥ होतव्याहसम्बंधसबनकोअपनीजातिहिमा  
 हीं ॥ निजबहिनीशृंगीऋषिकोतुमकैसेदियोविवा  
 ही ॥ ४ ॥ कीउनकोसुनीशलैभाग्योकीबोईसंग  
 लागी ॥ एतीबातबतावहुलालनतुमरघुवंशअदा  
 गी ॥ लषणकह्योयहसुनहुलाडिलीजेहिविधिजहँ  
 लिखिदीना ॥ तहँसंयोगहोतहैताकोब्याहतोकर्म  
 अधीना ॥ ५ ॥ कहँहमराजकुंवररघुवंशीकहँविदेह  
 बैरागी ॥ मयोहमारब्याहतुह्यरेवरविधिगतिगनै

कोभागी ॥ औरौ एकहासउर आवै अचरज है सब का  
 हू ॥ तुम तौ हो सिधिवै लक्ष्मीनिधिनारिनारि भौ व्या  
 हू ॥ ६ ॥ एक सखी कह सुनिये लालन तुमहिं सकहि  
 को जीती ॥ जाहिर अहै सकल जग माहीं तुल्लरे घर  
 कीरीती ॥ अति उदार करतूतिदार सब अवध पुरी की  
 बामा ॥ खीर खाय पै दासुत करती पति कर कछून का  
 मा ॥ ७ ॥ सखी वचन सुनतै रघुनंदन बोले मृदु मुस  
 कातैं ॥ आपनि चाल छिपावहु प्यारी कहहु आन की  
 बातैं ॥ को उनहिं चन मै मातु पिता विन वंधी वेद की नी  
 ती ॥ तुल्लरे तौ महिते सब उपजैं असह मरे नहिं रीती  
 ॥ ८ ॥ बोली चंद्र कलाते हि औ सर परम चतुर सुकुमा  
 री ॥ सिद्धि कुँवर की लहुरी भगिनी लक्ष्मीनिधि की  
 सारी ॥ लरिका ईते रह्यो लाल जी तुम तपसिन सँग मा  
 हीं ॥ ये छल छंद फंद कह पाये सत्य कहो हम पाहीं ॥ ९ ॥  
 की सुनि नारिन के सँग सीखे की निज भगिनी पासैं ॥  
 मीठे सीठे स्वाद लाल जी बिन चाखे नहिं भासैं ॥ बो

लेभरतभलीकहसजनीतुमहुँतोअबैकुमारी ॥ वर्णहु  
 पुरुषसंगकीबातेंसोकहँसीखेहुप्यारी ॥ १० ॥ रहे  
 मुनिनसँगज्ञानसिखनकोसोसबसुनेसुनाये ॥ का  
 मिनिकामकलाअबसीखनहमतुह्यरेठिगआये ॥ सि  
 द्विकह्योतबसुनहुभरतजीऐसेतुमनबखानौ ॥ तुम्ह  
 रीतोगनतीसाधुनमेंलोकबातकाजानौ ॥ ११ ॥ भ  
 रतकह्योतुमसाँचिकहतहौहमसाधूपरकाजी ॥ ऐसी  
 सेवाकरौकामिनीजामेंहौहमराजी ॥ आयेऐनअ  
 पूरबयोगीअसनिजमनगुणिलीजै ॥ अधरसुधारस  
 कोदैभोजनअतिथैपूजनकीजै ॥ १२ ॥ एकसखी  
 कहसुनहुसबैमिलिइनकीएकबड़ाई ॥ ऋषिमखराख  
 नगयेकुँवरयेतहँहमअससुधिपाई ॥ इनकहँसुंदरदे  
 खिकामवशतियाताडकाआई ॥ सोकरतूतिनभई  
 लालसोंमारेहुतेहिखिसियाई ॥ १३ ॥ बोलेरिपुह  
 नसुनहुभामिनीनाहकदोषनदीजै ॥ जोकरतूतिब  
 नीनहिंउनतेसोहमसेभरिलीजै ॥ बिनजानेकरतू

तिसवनकोतुह्यरेघरभोव्याहू ॥ सोउपछितावरही  
 पियारीअवकरिलेहुसमाहू ॥ १४ ॥ जाकेहिततुम  
 रोषबड़ावहुसोमतिकरहुउपाई ॥ वैसनसेवामेंतुम्ह  
 रीहमहाजिरचारिउभाइ ॥ सुनिवाणीरिपुदवनला  
 लकीबोलीकोउसुकुमारी ॥ कहँपाईएतीचतुराईक  
 हियेलालविचारी ॥ १५ ॥ कीकहुँमिलीनारिगुण  
 आगरकीगणिकनसँगकीनो ॥ तीनोभाइनतेतु  
 ह्यरेमहँलखियतुचिह्ननवीनो ॥ रिपुहनकहभलक  
 ह्योभामिनीभेदियाभेदहिजानै ॥ गणिकानारिन  
 हुँतेसौगुणतुह्यँअधिकहममानै ॥ १६ ॥ हमरोतुम्ह  
 रोचिह्नलाड़िलीएकैभांतिलखाई ॥ तातेसखीहमा  
 रितुह्यारीचाहीअवशिसगाई ॥ सुनिनवयुक्तियुक्ति  
 कीबातैंबोलीसिधिसुकुमारी ॥ सुनियेरसिकरायरघु  
 नंदनआनँदकन्दबिहारी ॥ १७ ॥ अतिअभिरा  
 मकामहूमोहतमूरतिदेखितुह्यारी ॥ कैसेवचीहोयँ  
 गीतुमतेअवधपुरीकीनारी ॥ यौकहिरहीचुपायसुं

दरीसिद्धि कुँवरिसुखऐना ॥ ताकोहाथपकरिघुनं  
दनबोलेअतिमृदुबैना ॥ १८ ॥ दोहा ॥ जसमर्या  
दाजगतकी, बांधिदियोकरतार ॥ राजारंकयती  
सती, करतसोईव्योहार ॥ १९ ॥

इति श्रीरामनाथप्रधानविरचिते रामकलेवारहस्य-  
ग्रंथे पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

छंददोवै ॥ अनुचितउचित विचारिलोगस  
बतहँतसराखतभाव ॥ तुमतोअपनेकसजानतिहौ  
सबहीकेरसचाव ॥ यहसुनिभरतलषणरिपुसूदनहँ  
सेसकलदैतारी ॥ सिद्धिआदिसबराजकुमारी तेउ  
अतिभईसुखारी ॥ १ ॥ यहिविधिहँसिहँसायरघुब  
रसोंदैदिवायमृदुगारी ॥ नानाभाँतिमनोरथमनके  
लार्गीकरनसुखारी ॥ कोउसखिरामसमीपजायके  
कहतिकछूलगिकानै ॥ कुँवरकपोलपरशिकैप्यारी  
जनमसफलकरिमानै ॥ २ ॥ कोइनिजकोमलक  
मलकरनतेचरणकमलप्रभुचापै ॥ बारबारहियला

यल्लाड़िलीदूरिकरैतनुतापै ॥ कोइगलसालउतारि  
 कुँवरकीडारिकंठनिजलेहीं ॥ रघुवरमिलनसरिससु  
 खपावैवारिअपनपौदेहीं ॥ ३ ॥ कोउचंदनचढ़ा  
 इरघुवरउरपुनिनिजतनुहिलगावै ॥ स्वेदसुगंधपर  
 शिकैप्यारीतीनहुँतापमिटावै ॥ कोइकरकंकनलैमृ  
 दुअंजनखंजनदृगदैदेही ॥ विलगनमानहिंरामरै  
 गीले आपनजानिसनेही ॥ ४ ॥ कोइचुनिकली  
 अलीअतिसुंदरिरचिकलंगीशिरदीनी ॥ रामकुँवर  
 करछुवतछबीलीछकितरहीरसभीनी ॥ कोउसखि  
 पानखवायरामको पुनिनिजमुखलियेमेली ॥ प्री  
 तप्रसादजानिकैसुंदरिमगनभईअलबेली ॥ ५ ॥  
 निजनिजरुचिअनुरूपरामसोंकियोभावनाप्यारी ॥  
 चितचढ़गईसांवलीमूरतिभईप्रेममतवारी ॥ रसिक  
 शिरोमणिश्रीरघुनंदन नवलनेहअभिलाखी ॥ ज  
 सजाकेजियरहीलालसातसतेहिकीरुचिराखी ॥ ६ ॥  
 अवधछैलदिलदारयारसोंलगीअलिनविचप्यारी ॥

परबशपरीं प्रेमपिंजरीमें उड़िन सकै सुकुमारी ॥ रघुनं  
 दनतबक ह्यो सिद्धि सों जो तुम देहुनि देशु ॥ तौ अबह  
 मगमनै जनवासे जहँ श्री अवध नरेशू ॥ ७ ॥ सुनि  
 यहवाणी रामकुँवर की कांपि उठी उर आली ॥ सिद्धि  
 आदि सब राजकुमारी बोलीं बिरह बिहाली ॥ नेह ब  
 ढाय छाया रूप रस आपु अवध अब जैहँ ॥ हम बिर  
 हिन के प्राण लाडिले कहौ कौन बिधि रैहँ ॥ ८ ॥ नृप  
 किशोर चित चोर छबीले तबक सप्रीति लगाई ॥ हम  
 अबल न अब मारि साँवरे चाहत अवध सिधाई ॥ कीतु  
 मलाल यहै बिधिराख्यो जब जैहँ ससुरारी ॥ करिहौ  
 कतल जनक पुरनारि न मारि प्रीति तरवारी ॥ ९ ॥  
 हम अबला अवध्य सब भांति न सो तुम कानि न मानी ॥  
 मारेहु नैन बाण विष वारे भौह कमान हितानी ॥ लोक  
 लाज कुल कानि बडाई यह छनमहँ सब दूटै ॥ सुनिये  
 रसिक रायरघुनंदन लागि प्रीति नहिं छूटै ॥ १० ॥  
 नीच ऊँच कौनिहु जातिन सों जो सनेह लागि जाई ॥ मि



दैनंतरसदरसबिनदेखेकोदिनकरैउपाई ॥ यदपि  
 मीनकीमूरतिनिशिदिनहियमेंदसतिविशेसे ॥ तर  
 सतरहतदोऊदृगपापीमानतनहिंबिनुदेखे ॥ ११ ॥ जो  
 लनिचलनिहँसनिप्रीतमकीहियतेहोतिनन्यारी ॥  
 तऊतासुमिलिवेकीलालनरहतिलालसाभारी ॥  
 याजगमेंबहुपुरुषदेखियतसुंदरसुघरसुजाती ॥ विनु  
 देखेनिजप्यारयारकेहोतिनशीतलछाती ॥ १२ ॥  
 छनछनविरहदहैरघुनंदननैनलगनिजेहिलागी ॥  
 ज्योंभूनेकीलियेकाँकरीजबछिरकैतबआगी ॥ नि  
 शिदिनताहीमेंसुखमानतगनतननीतिअनीती ॥  
 प्रीतिकिरीतितेईयहजानैजिनकेहाथबितीती ॥  
 ॥ १३ ॥ भरिभरिआवैनैनवियोगीसूखतजातश  
 रीरा ॥ प्रीतिमानपहिंचानहिंप्यारेप्रीतिमानकीपी  
 रा ॥ बरुसबतेनिराशहैरहियेसकलजगतसुखभोगू ॥  
 परमपुनीतविनीतप्रीतकोदैवनदेइवियोगू ॥ १४ ॥  
 जोकरतारसुनैममविनतीदेइइहैकरिछोहू ॥ अति

दिलदारपियारयारकोकबहुँनहोइबिछोहू ॥ परवश  
 परैजायबरुसरबससबतजिहायविदेही ॥ स्वपन्यो  
 मेंबिछुरैनविधाताआपन यारसनेही ॥ १५ ॥  
 भोगैनरकनिकायजनमभरिहैस्वच्छअरुतापी ॥  
 पैकबहुँबिछुरैनविधाता अपनायारमिलापी ॥ करम  
 धरम बरुत्यागिजगतमेंफिरैप्रेममतवारो ॥ पैकबहुँ  
 बिछुरैनविधाता आपनप्राणपियारो ॥ १६ ॥ ब  
 रुजलभीतरबसैजनमभरितपकरितनहिझुरावै ॥  
 पैस्वपनेहुँअपनप्रीतमकोविधिनवियोगकरावै ॥  
 वरुसुखखाकलगायचायभरिखायघरनकेदूका ॥  
 पैकरतारपियारयारसोंकबहुँपरैजनिचूका ॥ १७ ॥  
 जातिपांतिबरुगोइखोइकुलसबतजिहोइभिखारी ॥  
 कबहुँनहोइमीतकीमूरति इनआँखिनतेन्यारी ॥  
 दोहा ॥ जेतेसुखसबजगतमें, सुनियेराजकुमार ॥  
 तेसबदुखहोइजातहैं, बिछूरतआपनयार ॥ १८ ॥

इति श्रीरामनाथप्रधानविरचिते रामकलेवारहस्य-  
 ग्रंथे षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

छंददोवै ॥ यद्यपिहमअबलारघुनंदननीच  
 जातिसबभाँती ॥ पैलगिजाहिप्रीतिउरजासोंता  
 हिकेहाथविकाती ॥ अतिनिरदैहिरदैस्वारथरतसब  
 दिनचलहिंअनीती ॥ पैहियकपटन राखहिंतासों  
 बांधहिंजासोंप्रीती ॥ १ ॥ हमतियनीचमीचकी  
 सूरतिसदाअसाँचहिभारखँ ॥ पैलगिप्रीतिकरँहमजा  
 सेंतेहितनमनदैराखँ ॥ पतिपितुपुत्रबंधुपरिजनते  
 रहँसबनतेन्यारी ॥ पैकछुबीचनराखहिंतासोंबांधहिं  
 जासोंयारी ॥ २ ॥ हमतेनीच नअबजगरघुवरतुम  
 तेऊँचनकोई ॥ पैहियप्रीतिजुतोलिलीजियेगुरुहमा  
 रीहोई ॥ सुनिइमिआरतबैनतियनकेतरुणकरुणरस  
 साने ॥ कोमलचितकृपालुरघुनंदनप्रीतिरीतिभल  
 जाने ॥ ३ ॥ बोलेवचनभक्तभयभंजनसुनहुतियहुसब  
 कोई ॥ अबमैंकहाँस्वभावआपनोतुहँनराखहुँगोई ॥  
 शिवसनकादिआदिब्रह्मादिकइनते औरनभारी ॥  
 तिनहूँतेतुमअधिकपियारीसुनुसिधिराजकुमारी ॥

॥ ४ ॥ जोकोउप्रीतिकरैमेरेपरहोतजोजानअजा ॥  
 नों॥प्राणसमानसदातेहिराखौऔगुणएकनमानों ॥  
 मेरीहैयहबानिलाड़िलीप्रीतिवंशजनजानै ॥ नतुखो  
 जतबागैमोहिंप्राणीकरिजपतपव्रतध्यानै ॥ ५ ॥  
 जिनजिनप्रेमिनकेरिजगतमेंसुनियतबड़ीबड़ाई ॥  
 तिनतिनमेंविचारिजोदेखोसबमेंएकखुटाई ॥  
 हिमतनुदहैनकहैकबौंकछुपुनितेहिलखिसुखमानै॥  
 ऐसीदरदकमलकेदिलकीभानुबिनाकोजानै ॥ ६ ॥  
 तरसतरहतदरसबिनुपायेनितताकततेहिपाहीं ॥  
 असचकोरकीप्रीतिचंदकेनेकुचुभीचितनहीं ॥ घुम  
 डीघटा देखि प्रीतमकी नाचत दादुरमोरा ॥ ताकी  
 औरतनिकनहिंताकैऐसोमेघकठोरा ॥ ७ ॥ पीउ  
 पीउकरि जौनपपीहा प्राणत्यागकरि दीन्हों ॥  
 पीउकेजीउ दयानहिंआईबरुहत्याशिरलीन्हों ॥  
 सरबसत्यागिपरितेहिकेवशछांड़तिनहिंदिनराती ॥  
 ऐसीमीनकि देखि मिताई जलकी फाटि न छाती

॥ ८ ॥ जातपतंगसमीपदीपकेमोहिज्योतिछनया  
 हों ॥ तेहितजुदाहतमैंकृशानुकेभईदयाकछुनाहीं ॥  
 ऐसेबहुतप्रीतिवाननकीदेखीचालअधीरा ॥ इकतो  
 प्राणदेतवाकेपरयकराखतनहिंपीरा ॥ ९ ॥ असन  
 हिंप्रीतिहमारीप्यारीसुनहुसिद्धिसुखधामा ॥ अपने  
 प्रीतिमानप्राणीकोपल भरितजौनठामा ॥ छोटमा  
 निमोरेप्रीतमकोजोकोउगुर्वदेखावै ॥ अतिशयबड़ो  
 बनाऊँताकोब्रह्महुमाथनवावै ॥ १० ॥ सिंगरेलोक  
 नमाहँलाड़िलीसबसेतेहिपुजवाऊँ ॥ ब्रह्मादिककी  
 कौनचलावैमैंतेहिमाथनवाऊँ ॥ अपनेऔवाकेशरी  
 रमैनेकहुभेदनराखौं ॥ कबहूँछोहनछाँड़ौंताकोचूक  
 करैजोलाखौं ॥ ११ ॥ तीनिलोककाराजकाज  
 सबसंपतिसुतवैदेही ॥ येसबप्यारनलागहिंमोको  
 जसमोहिंप्यारसनेही ॥ नानारूपधरौंजिनकेहित  
 बनबनबिचरतजागौं ॥ केतीविपतिसहौंशिरऊ  
 परपैनिजयारनत्यागौं ॥ १२ ॥ गणिकागिद्धग

यंदअजामिलशबरीऔकपिराऊ ॥ जाम्बवंतहनु  
 मंतबिभीषण जानहिंमोरस्वभाऊ ॥ जोनिजमनस  
 भेटिसबथरतें बांधहिंममपदप्रीती ॥ ताकेसाथदास  
 समडोलीं असिहमारिहैरीती ॥ १३ ॥ मोतेप्रीति  
 लगायकरैजोऔरदेवकीआसा ॥ कोटिनविनयकरै  
 ब्रह्मप्राणी मैंनजाहुँतेहिपासा ॥ प्रेमपरायनअतिचि  
 तचायन मित्रभावहियलेखे ॥ ऐसीप्रीतिवंतप्राणी  
 को कलनपरहिबिनुदेखे ॥ १४ ॥ मनमेंस्वारथसु  
 खपरमारथकपटप्रेमदरशावै ॥ ऐसीमूढमीतकीसू  
 तस्वपनेहुँमोहिंनभावै ॥ महाप्रलयजबहोतजगत  
 की बचतनकोउनरनारी ॥ नाशनहीं मेरेप्रीतमको  
 सुनहु सिद्धि सुकुमारी ॥ १५ ॥ जाकोमैंराखनमन  
 चाहों तेहिकोमारनहारा ॥ जाकोचहोंउथापनप्यारी  
 तेहिको थापनवारा ॥ तनकहुजासुचहोंमनतैंमैंमं  
 गलमोदभलाई ॥ ताकी तेंतिसकोटिदेवताकरहिंस  
 दासेवकाई ॥ १६ ॥ छनमहंकरौंविरंचिरंकसमरंकवि

रंचिबनाऊँ ॥ शिवसनकादिकआदिदेवतासबक  
 हँमहीनचाऊँ ॥ कर्मधर्मवीरताधीरतायोगसिद्धिच  
 तुराई ॥ ज्ञानध्यानविज्ञानसुजनताराजनीतिनिपु  
 णाई ॥ १७ ॥ इनतेजीतिसकैनहिंमोहीकोटिनक  
 रैउपाई ॥ हारिजाउँप्रेमीप्राणीते तहांनमोरवसाई ॥  
 तेतुमसबैप्रेमकीमूरति सूरतिकीबलिहारी ॥ सिद्धि  
 आदिसबरजकुमारीमोहिंप्राणहुँते प्यारी ॥ १८ ॥  
 तुम्हरेहियअभिलाषआजुजो सोसबभाँतिपुजैहो ॥  
 लोककीलाजबचायलाडिलीतुमतेविलगनहैहो ॥  
 हमसबभांतुम्हारसांवलीतुमसबभाँतिहमारी ॥ सत्य  
 सत्ययेसत्यवचनमममानहुराजकुमारी ॥ १९ ॥  
 दोहा ॥ रघुनंदनकेबचनसुनि, खुलिकेकपटकिवार ॥  
 बढ्योप्रेमसबतियनके, तनिकहुँनहींसम्हार ॥ २० ॥

इति श्रीरामनाथप्रधानविरचिते रामकलेवारहस्य

ग्रंथे सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

छंददोवै ॥ पुनिधरिधीरजअलीभलीबिबि

जोरिपंकरुहपानी ॥ सिद्धिआदिसबराजकुमारी  
 बोलींअतिमृदुबानी ॥ धन्यभाग्यहमरोरघुनंदन  
 हमतेबडकोउनाहीं ॥ बूढतरहींजगतसागरमेंराखि  
 लीन्हगहिबाहीं ॥ १ ॥ हमनारीसबभाँतिअना  
 रीकियेप्रीतिसुदमोई ॥ रामकुमाररावरेकेसमकीन  
 कृपानहिंकोई ॥ प्रतिउपकारहोतनहिंहमतेजसतुम  
 कीन्हेहुँप्यारे ॥ चंद्रसमानहोइंनहिंकबहुंजुरहिंहजा  
 रनतारे ॥ २ ॥ जेहिजेहियोनिकर्मवशहमकोज  
 नमविधातादेही ॥ तहँतहँरसिकरायरघुनंदनतुम  
 हीमिलहुसनेही ॥ बरुविधिकोटिनकरैयातनाया  
 तनछनछनछूटै ॥ हमरीतुम्हरीलगनलाडिलेकौ  
 न्योजन्मनदूटै ॥ ३ ॥ सुनिबानीकरुणारससानीर  
 रघुवरअंतरजानी ॥ सनमान्योसबराजकुमारिनक  
 हिकहिकोमलबानी ॥ सबसोंबिदामाँगिरघुनंदन  
 अनुजसहितपगधारे ॥ निकसेमानहुँसिद्धिमहल  
 तेचारिचंद्रछबिवारे ॥ ४ ॥ रामहिंपानखवावत



साथहिचलीसिद्धिसुखएना ॥ आयेराजमहलमें  
 सिंगरेजहँश्रीमातुसुनैना ॥ चरणप्रणामकीनरघु  
 नंदनजोरिसरोरुहपानी ॥ विदाहेतुपुनिवचनसुना  
 ये कहिअतिकौमलबानी ॥ ५ ॥ सुनियेवैना  
 सासुसुनैनाभरेप्रेमजलनैना ॥ रहोकिजाहुनकछु  
 कहिआवैभूलिगईसबचैना ॥ पुनिधरिधीरअनेक  
 अभूषणजेवडमोलकेजानी ॥ अनुजसखनयुतराम  
 कुँवरकोदीनसुनैनारानी ॥ ६ ॥ पायपोशाकना  
 यशिरचरणहिं लहिअशीशमुदग्रामा ॥ तवकरजो  
 रिसिद्धिभइठाढीसुनौरामसुखधामा ॥ हमराउरच  
 रणनकीदासीप्रेमपियासीनारी ॥ हमपरछोहनछां  
 डबप्यारेआपनविरदविचारी ॥ ७ ॥ दृगजलपरि  
 बोलेरघुनंदनहमतुम्हारबँदिप्यारी ॥ असकहिवोध  
 दियेबहुभाँतिन तवसिधिमहलसिधारी ॥ रघुनंद  
 नतबअनुजसखनयुतजनकसभापगुधारे ॥ सादर  
 कियेजुहारचरणछुइपायरजायसिधारे ॥ ८ ॥ ल

क्षमीनिधियुतराजकुँवरसबआदिपौरिजबआये ॥  
 सेवकसकलतयारीकीन्हेबाहनसबबुलवाये ॥ को  
 उत्तुरंगपरकोउमतंगपरआपुरुचिरसुखपाला ॥ को  
 उसुंदरस्यंदनचठिराजैबाजैविपुलविशाला ॥ ९ ॥  
 फहरैसुभगनिसानगजनपरविपुलनकीबपुकारै ॥  
 चहुँदितेजाँगेरेअलापै बंदीबिरदउचारै ॥ कोउशि  
 रकियेछत्रकीछाया कोउकरव्यजनपसारै ॥ कोउ  
 रचिपानखवावैरामैचमरदोऊदिशिठारै ॥ १० ॥  
 इमिरचनायुत श्रीरघुनंदनचढेचलेसुखपाला ॥ ल  
 लकिझरोखनझांकनलागीजनकनगरकीबाला ॥  
 कोउकहदामिनिवरणबनीजसश्रीमिथिलेशकिशो  
 री ॥ तैसेश्यामसुभायसलोनेरामकुँवरकीजोरी ॥  
 ॥ ११ ॥ कोउकहकौनजन्मधौपूजहियहलालसा  
 हमारी ॥ कछुबातैकरिरामकुँवरसोंमिलतीभुजाप  
 सारी ॥ कोउकहधन्यराजकुलनारीपूर्वपुण्यभलकी



न्हो ॥ हँसिहँसायश्रीरामकुँवरसोंजन्मसफलकरि  
 लीन्हों ॥ १२ ॥ आजजन्मधनिजगमहँषयोश्रीनिमि  
 राजकुमारी ॥ सुंदरपायसाँवलीमूरतिउरतेकरीन  
 न्यारी ॥ कोउकहकहांकुँवररघुवंशीकहँहमनारिगँ  
 वारी ॥ केहिबिधिमिलनोहोयविधातावीत्योजन्म  
 बृथारी ॥ १३ ॥ कोउकहहोतभागभरिसजनीशो  
 चसरौकतप्यारी ॥ इतनैरह्योसँयोगहमारोनैनन  
 लीननिहारी ॥ इमिआरतसुनिवचनतियके  
 अतिकरुणारसधीने ॥ तिनकीदिशिछुपाछुर  
 घुनंदन चितैप्रबोधहिदीने ॥ १४ ॥ इमिमग  
 होतविलासबहुतविधिआयेसबजनवासा ॥ उतरे  
 अनुजसखनयुतरघुवरद्वरतचलेपितुपासा ॥ अव  
 धराजकोदेखिदूरतेसानुजकीन्हप्रणामा ॥ भूपति  
 धायलायउरलीनोकहिनजायमुदग्रामा ॥ १५ ॥  
 ढिगबैठारिदुलारिसुतनकोपूँछतअवधभुवाला ॥

केहिविधिरामकलेऊकीन्होसबकहिजाहुहेवाला ॥  
 रायरजायपायररघुनंदनअतिआनंदउरछाये ॥ स  
 बकहिगयेमहलकीबातैरघुवरसहजसुभाये ॥ १६ ॥  
 सुनिबिहँसेमहराजसभायुत बरणिनजायहुलासू ॥  
 पुनिनृपदियेरजायसुतनकहँगेसबनिजनिजवासू ॥  
 इमिआनंदजनकपुरवासीनितप्रतिपावतलोगू ॥  
 कोटिनइंद्रनजरनहिंआवतनिरखतबहुसुखभोगू ॥  
 ॥ १७ ॥ रामकलेवारहसचरितयहलघुमतिकवि  
 किमिगावै ॥ शेशगणेशमहेशशारदातेऊपारनपा  
 वै ॥ जोकोउप्रीतिरीतिउरचाहैसोग्रंथहियहिबाँचै ॥  
 पूरणपावैप्रेमरामकोपुनिजगनाचननाचै ॥ १८ ॥  
 रामकलेवारहसग्रंथयहरसिकजननअधिकारा ॥ जा  
 केश्रवणपरतरसबातैहियेनउठतविकारा ॥ ज्येष्ठदश  
 हरातेअरंभकरिक्कौरदशहराकाहीं ॥ रामकलेवारह  
 सग्रंथयहपूरणभोमुदमाहीं ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

निजपैतालिसवरसकी, उमिरिजानिपरमान ॥  
कियोकलेवाग्रंथयह, रामनाथप्रधान ॥४०॥

इति श्रीरामनाथप्रधानविरचितेरामकलेवारहस्य  
ग्रंथे अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥  
श्री सीतारामचन्द्रार्पणमस्तु ॥

 रामकलेवा 

समाप्त.



## सवैया.

ब्राह्मण पैठि पताल छल्यो बलि

ब्राह्मण साठि हजारको जान्यो ॥

ब्राह्मण शोखि समुद्र लियो अरु

ब्राह्मणही यदुवंश उजान्यो ॥

ब्राह्मण लात हनी हरिके उर

ब्राह्मण क्षत्रिनको दल मान्यो ॥

ब्राह्मणसे जानि बैर करो कोउ

ब्राह्मणसे परमेश्वर हान्यो ॥ १ ॥

## पदरामायण.

इसे मुरारीरामात्मज मिश्र गंगाराम ब्राह्मणने रामानु-  
रागियोंके हितार्थ अपूर्व रचना किया है. जिसमें सातो  
कांड रामायणका अनुवाद सरल सुललित हिन्दी भाषाके  
पद, भजन होरी आदिमें वर्णन है. कि-जिसके देखतेही  
मन हरण होता है इसलिये अनेक गीतज्ञ महाशयोंकी  
प्रेरणासे इस उत्तम ग्रन्थको हमने बहुतही शुद्ध कराके  
रागरागिनियोंके भेदोंसे सुभूषित कराके उत्तम कागजपं  
छपवायके तैयार किया है. सो इस हमारे परिश्रमका सा-  
फल्य तो तभी होगा, कि-जब महात्मा सुजन जन एक-  
वार देखेंगे. कीमत १० आ. टपालखर्च २ आना.

## हरिप्रसाद भगीरथ

कालकादेवीरोड़ रामवाड़ी

मुंबई.







